CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

# लयब्रह्म के उपासकद्वय

डॉ. वनमाला पर्वतकर

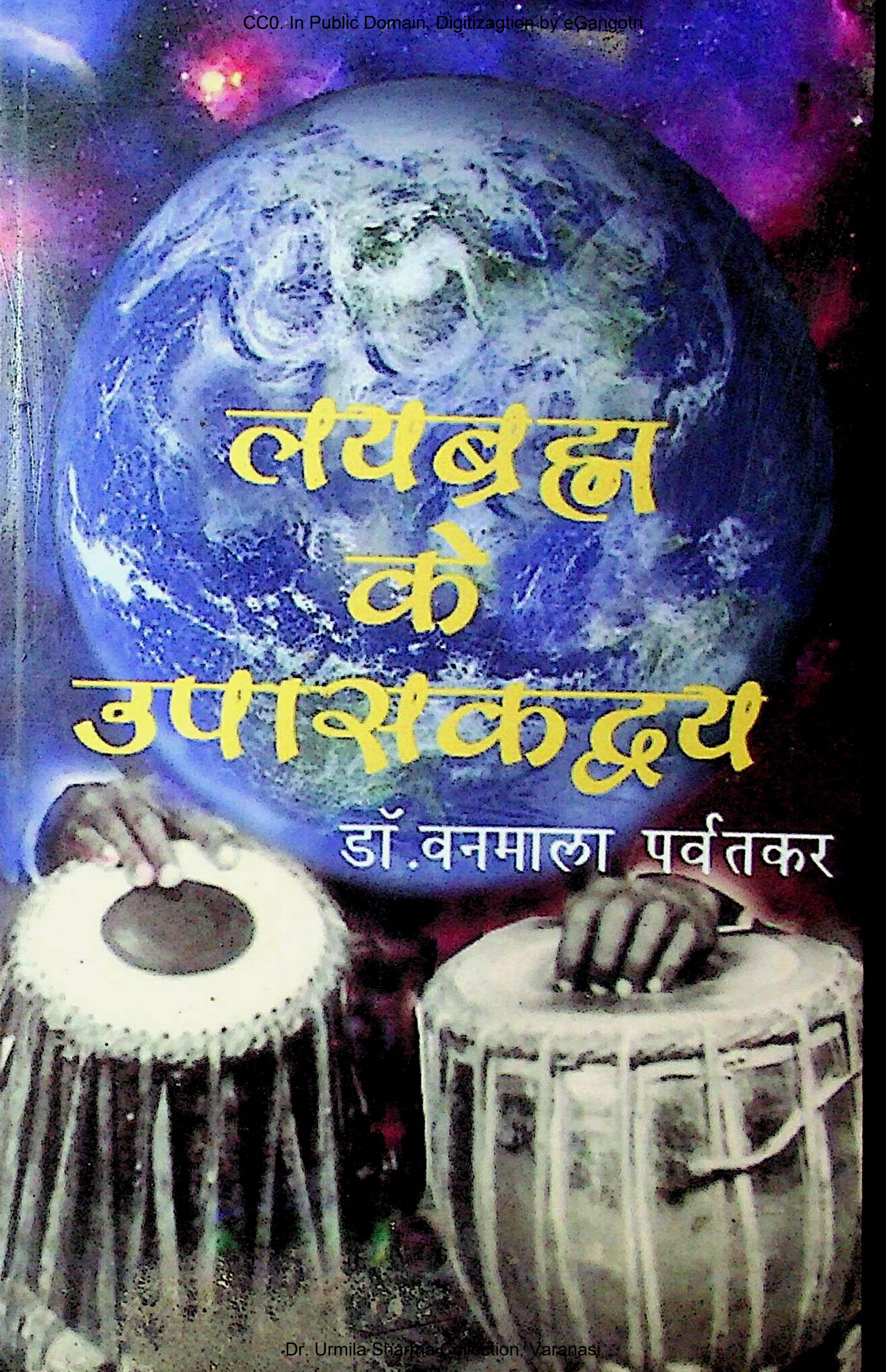

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुखपृष्ठ परिकल्पना :
रवि पर्वतकर

ISBN : 978-93-81999-23-3

प्रथम संस्करण 2016

मूल्य : 500.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# लयब्रह्म के उपासकद्वय

## खाप्रूमामा उर्फ लक्ष्मणराव पर्वतकर
## और
## रामकृष्ण लक्ष्मण पर्वतकर

(विद्वानों के लेखों का संकलन)

हिन्दी अनुवाद एवं सम्पादन

**वनमाला पर्वतकर**

शारदा संस्कृत संस्थान
वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक :
**शारदा संस्कृत संस्थान**
सी० 27/59, जगतगंज, वाराणसी।
दूरभाष : (0542)2204168, मो09839245365
Email-sharadabhawan@yahoo.co.in
ISBN-978-93-81999-23-3

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रथम संस्करण 2016

मुद्रक :
**साधना प्रेस**
वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# शुभकामना

मैं, श्रीमती वनमाला पर्वतकरजी का हृदय से अभिनंदन करता हूँ। आप श्री 'श्यामभास्कर' स्वापरजी पर्वतकर और श्री. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर इन दोनोंका जीवन चरित्र लिख रही हैं।

भावी पिढ़ीके लिए यह बहोतही उपयोगी और ज्ञानवर्धक रहेगा। मेरी शुभकामनाएं सदैव आपके साथ हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## शुभकामना

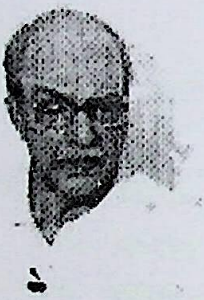

लय भास्कर खाप्रुमाम पर्वतकर यांची नात असलेल्या श्रीमती वनमाला पर्वतकर यांनी त्यांचे वडील रामकृष्ण पर्वतकर आणि आजोबा लय भास्कर यांच्या वरील सर्व लेखांचे संकलन करून त्यांचा हिन्दी अनुवाद केला आहे. त्यामुळ उत्तरे कडील चाहत्यांना ह्या दोघाच्याही कार्याची चांगली ओळख होण्यास मदत होणार आहे। मी सर्व लेख वाचलेले आहेत. हिन्दी जाणणारया सर्वाना रामकृष्ण बुवा पर्वतकर आणि खाप्रुमाम पर्वतकर यांच्या कार्याची आणि विशेषतः त्यानी संगीतासाठी केलेल्या सेवेची चांगली ओळख होणार आहे. म्हणून त्यांच्या ह्या हिन्दी पुस्तकास मी मनःपूर्वक शुभेच्छा देत आहे. तसेच त्यांना माझे हार्दिक आशीर्वाद देत आहे. ह्या पुस्तका चे स्वागत हिन्दी जाणणारया सर्व वाचकांकडून उत्तम प्रकारे होईल अशी मी आशा वाळगतो.

माधव पंडित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Bhikoo H. Pai Angle

'LAXMI'
House No. 110, Ward 11,
Abade Faria Road,
Madgaon, Goa 403 601
Phone : 271 17 18
Mobile : 90114 34042

ॐ

श्री रामनाथस्य नमः ।

22/02/2012

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परमदैवतम् ।
गुरोः परतरम् नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

[signature]
22/02/2012

श्रीमती वनमालाताई आंसरी,

वादन क्षेत्रांतले प्रेरक कै. भास्कर रघुनाथ पर्वतकर
यांच्या नावस्मृती जागृत ठेवण्यासाठी पुस्तक लिहीत असल्याचे
कळून आनंद झाला. संगीतक्षेत्रातील वादकांना त्यातून प्रेरणा
मिळून त्या संशोधनाकडे वळण्याची इच्छा व्हावी आणि त्यामुळे
तुमच्या लेखनाला अमरत्व प्राप्त होवो अशी शुभकामना, यासाठी
कुलांच्या आशीर्वादानी श्री सरस्वती देवीपाशी प्रार्थना करतो.

शुभं भवतु

आपला,

मडगांव, गोमंतक

[signature]
22/02/2012

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रो. श्रुति सडोलीकर-काटकर
कुलपति
Prof. Shruti Sadolikar-Katkar
Vice-Chancellor

भातखण्डे संगीत संस्थान सम-विश्वविद्यालय
BHATKHANDE MUSIC INSTITUTE DEEMED-UNIVERSITY

दिनांक : 20 मार्च, 2016

प्रति,

सुश्री वनमाला पर्वतकर

96, जवाहर नगर, एक्सटेंशन

भेलूपुर, वाराणसी - 221010

महोदया,

आप द्वारा आपके लेखन कार्य की जानकारी मुझे दी गई है जिसके लिए मैं आपका हार्दिक अभिनन्दन करती हूँ।

आपके लेखन से भविष्य के उदीयमान संगीतकारों को बहुत प्रेरणा तथा मार्ग दर्शन मिल सकता है। इस प्रयास के लिए आप धन्यवाद की पात्र हैं।

अनेक शुभकामनाओं सहित।

सस्नेह,

Shruti Sadolikar Katkar

(प्रो. श्रुति सडोलीकर-काटकर)



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

*Padmashri*
Pt. Balwantrai Bhatt 'Bhavarang'
Mrs. Vasundhara B. Bhatt

पद्मश्री
पं. बलवन्तराय भट्ट 'भावरंग'
श्रीमती वसुन्धरा भट्ट

Date : ...............................

दिनांक : 30.04.16

अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि प्रिय बेटी वनमाला गोमान्तक प्रदेश की यशस्वी संगीत परम्परा के सिद्ध पुरुष खापुरमामा एवं उनके सुपुत्र रामकृष्ण पर्वतकर के जीवन पर पुस्तक प्रकाशन कर रही है।

देर से ही सही, उन अलौकिक यादों को दोहराने से इतना लाभ जरूर होगा कि किसी को बताने पर उन बातों को केवल काल्पनिक कहकर टाल नहीं सकते। यह कार्य और पहले होना था, किन्हीं कारणों से बनारसी संगीत परम्परा वाली पुस्तक पहले आयी। खैर सम पकड़ लिया इसकी शाबासी देता हूँ।

रामकृष्ण पर्वतकर जी की लयसिद्धि का मैं साक्षी रहा हूँ, उनके साथ मंच साक्षी भी रहा हूँ, और इसका गौरव अनुभव करता हूँ।

एकबार पुनः हार्दिक आशीर्वाद।

श्रीराम

बलवन्तराय भट्ट

"Nada-Tanu", B.33/33-31, Rohit Nagar Colony, Nariya, P.O. BHU, VARANASI - 221 005
"नादतनु" बी 33/33-31, रोहित नगर कॉलोनी, नरिया, पो० का० हि० वि० वि०, वाराणसी – 221 005
✆ 0542 - 312743

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# शुभकामना

राजवैद्य पं. शिवकुमार शास्त्री
ए.बी.एम.एस., एफ.आर.ए.एस. (लन्दन)

धन्वन्तरी निवास
पं. रघुनन्दन जी वैद्य गली
सुडिया, वाराणसी - २२१००१

गोवा में प्राचीन काल से संगीत की परम्परा बनी है। उसमें जो मन्दिर हैं उनके उपासक संगीत की साधना करते हैं। मंगेशी मन्दिर की परम्परा से स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर का जुड़ा है। उसी प्रकार पर्वत के मन्दिर से पर्वतकर की परम्परा जुडी है। पर्वतकर की परम्परा में आठ दस पीढ़ियों का उल्लेख मिलता है। उसी में से एक खाप्रूमाम लक्ष्मणराव पर्वतकर विशेष व्यक्ति हुये। खाप्रूमाम ताल-लय के क्षेत्र में चमत्कारी पुरुष थे। अनेक तालों की विभिन्न लयकारी करना, एक साथ अनेक ताल बोलना आदि अनेक चमत्कार करते थे। इसीलिये उन्हें लयभास्कर की उपाधि मिली थी। वे गाने के भी आचार्य थे।

गायन वादन की उनकी परम्परा उनके पुत्र श्री रामकृष्ण पर्वतकर को संस्कार रूप में प्राप्त थी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में तबला शिक्षक के रूप में उन्होंने कार्य किया। उनकी पुत्री वनमाला ने भी गायन की शिक्षा लेकर उसी जगह कार्य करके सेवा-निवृत्त हुई। उनकी इस पुस्तक के लिये मेरी शुभकामना है।

ह० शिवकुमार शास्त्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रो. पं. चित्तरंजन ज्योतिषी 'चित्तरंग'
पूर्व कुलपति
राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला
विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म. प्र.)
Prof. Pt. Chittaranjan Jyotishi 'Chittarang'
Ex. Vice-Chancellor
RAJA MANSINGH TOMAR MUSIC & ARTS UNIVERSITY, GWALIOR (M.P.)
सदस्य- बी.एच.यू. कार्यकारिणी परिषद्

पूर्व विभागाध्यक्ष गायन (संगीत) एवं पूर्व संकाय प्रमुख
संगीत मंच कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी (उ.प्र.) भारत
Ex. Head Deptt. of vocal Music &
Ex. Dean Faculty of Performing Art
Banaras Hindu University, Varanasi(U.P.) India
MEMBER OF E. C. B.H.U.

Ref. No................ Date..01.06.2016..

## शुभ संदेश

प्रिय बहन डॉ. वनमाला पर्वतकर ने एक दीर्घ अन्तराल के बाद अपने बाबा 'लयभास्कर' पंडित लक्ष्मणराव पर्वतकर (खाप्रूमाम) एवं पिता 'लयपर्वत' पंडित रामकृष्ण लक्ष्मण पर्वतकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्बन्ध में अति महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित कर अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है।

इसके पूर्व ऐसी कोई पुस्तक नहीं आई है जिससे उक्त द्वय विभूतियों के संबंध में जानकारी मिल सके, जो भी सामग्री थी वह इधर-उधर बिखरी हुई थी एवं संगीत के कुछ विद्वानों की स्मृति में शेष थी, जिसे वनमाला जी ने बहुत परिश्रम करके संकलित की है।

इस पुस्तक में संकलित विभिन्न विद्वानों द्वारा बताई गई ज्ञानवर्धक सामग्री एवं चमत्कृत कर देने वाले प्रसंगों से संगीत जगत के विभिन्न साधको व कलाकारों को अवश्य ही लाभ होगा तथा उन्हें लयकारी के सन्दर्भ में अधिकाधिक प्रगति करने में प्रेरणा प्राप्त होगी, इसमें सन्देह नहीं।

मैं डॉ. वनमाला पर्वतकर जी के इस प्रशंसनीय कार्य के लिए हृदय से बहुत-बहुत धन्यवाद एवं बधाई देता हूँ।

शुभेच्छु

शुभेच्छु
[signature]

निवास : बी. 24/14ए-1 'स्वरांगन'
काश्मीरीगंज (रामंदिर के पीछे)
वाराणसी - 221010 (उ0प्र0) भारत
Ph. : 0542-2313120
Mob. : 8576027413
Address : B. 24/14 A-1 'Swarngan'
Kashmiri Ganj (Behind Ram Mandir)
Varanasi-221010(U.P.)India

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# प्रकाशकीय

प्रस्तुत कृति में भारतवर्ष के यशस्वी कलाकार गोवाप्रान्तवर्ति स्व. लक्ष्मणराव पर्वतकर 'लयभास्कर' एवं तत्तनुज स्व. रामकृष्णराव पर्वतकर 'लयकार' के सन्दर्भ में दुर्लभ तथ्यों को उपस्थापित किया है। उक्त दोनों संगीत मनीषी की जीवनयात्रा भी स्वतः में अनुपम रही। सन् 1880 में गोमन्तक (गोवा) प्रान्त के पर्वतशिखर पर इनका जन्म हुआ। कुलदेवता चन्द्रेश्वर भूतनाथ की अनन्य उपासना से कुलक्रमानुगत संगीत विद्या में पूर्व-पूर्वजों के कृपाप्रसाद से ऐसी ख्यातिलब्ध की, जो इतिहासप्रसिद्ध हो गयी। दोनों साधकों के जीवनी से सम्बन्धित अनेक अप्रसिद्ध दस्तावेज, जो दस-पाँच प्रतिशत संगीतशास्त्र के विद्वानों को ही विदित है, ऐसे महान् तपःपूत साधकों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को आधार मान कर इस कृति की संरचना हुई।

स्व. लक्ष्मणराव संगीत विद्या के विविध क्षेत्रों में यथा— नाट्यसंगीत, भजन, तबला, पखावज आदि में निपुण थे। इन्होंने कठिन साधना से इस विद्या में उच्चोच्च कीर्तिमान भी स्थापित किया, जिन्हें संगीतकारगण पूर्ण सम्मान के साथ 'लयविद्या के सम्पूर्ण पंचाङ्ग' के रूप में स्वीकार करते थे। 'खाप्रूमाम-खाप्रूमामा-लयभास्कर' आदि अनेक नाम, उपनाम एवं उपाधियों से इनकी पहचान तत्कालीन सामान्य जनमानस में सुप्रसिद्ध रही।

उस काल में नेपालादि देशों में जिनका यश गूँजता था ऐसे कलाकार के आजन्म इतिवृत्त के एक-एक तिनके (तृण) को जोड़-जोड़ कर सामग्री का संकलन करना महाकवि कालिदास के शब्दों में 'उडुपेनास्मि सागरम्' की कल्पना को सार्थक करने जैसा श्लाघ्य प्रयास सम्पादिका का है।

'आत्मा वै जायते पुनः' वेदवाक्यानुरूप सम्पादिका ने दूसरे महान् साधक अपने पिताश्री स्वर्गीय रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर, जो अपने पूज्य तातचरण (स्वर्गीय लक्ष्मणराव पर्वतकर) के सदृश अद्वितीय कलाकार, चित्रकार, लयकार आदि गुणों से परिपूर्ण थे तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मंच कला संकाय में जिनकी सेवाएं आज भी प्राचीन साधकों के स्मृतिपटल पर अमिट यादगार के रूप में अंकित है। ऐसे महान् पिता-पितामह के त्याग एवं सेवाभाव को पुस्तक के रूप में प्रकाशित कराना 'मील के पत्थर के समान' कार्य है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



स्वर्गीय रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर का संगीत की सभी विधाओं के अतिरिक्त इनका एक अद्भुत शौक था 'पेन्सिल चित्रकारी का'। अनेकानेक क्षेत्रों के विशिष्ट लोगों की आकृति को तत्क्षण पेन्सिल से उकेरने की कला में इन्हें दक्षता प्राप्त थी, कुछ ऐसे दुर्लभ चित्र इस पुस्तक में चित्रित हैं।

इन दोनों ही विभूतियों के कला एवं विशिष्ट गुणों का प्रमाणमात्र सम्पादिका ही हैं ऐसा नहीं, अपितु जिनकी यशःसुरभि सात समुद्र पार भी थी, उनके सम्बन्ध में न केवल गोमन्तक विद्वानों, कलाकारों ने प्रत्युत अखिल भारतीय स्तर पर संगीतशास्त्र के विद्वान् लेखकों ने अपने लेख एवं वक्तव्य के माध्यम से प्रमाणित किया है।

वाराणसी को इस बात का गौरव है कि सुदूरप्रान्तीय शास्त्रीय संगीत के इस विशिष्ट विद्वान् ने काशी में निवास करते हुए आन्त संगीत की साधना की, कुलपरम्परा का सम्यक् निर्वाह किया, परिवार को अपनी विरासत सौंपी।

अतएव यह पुस्तक संगीत साधकों, अनुसन्धाताओं, गुणग्राहकों के लिये सर्वथा संग्रहणीय, पठनीय, मननीय एवं चिन्तनीय भी है।

**– विनोदराव पाठक**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# प्रस्तावना

गोमंतक के श्री चन्द्रेश्वर भूतनाथ की कृपा से श्री काशी विश्वनाथ की नगरी में आने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ।

गोमंतक नैसर्गिक दृष्टि से सम्पन्न प्रदेश है। गोमंतक के सुजलाम सुफलाम भूमि ने आम, कटहल, श्रीफल, सुपारी, काजू, अनन्नास इत्यादि अनेक फलों को देकर गोमंतक को समृद्ध किया है उसी प्रकार कलाकारों की भी बहुत समृद्ध परम्परा इस भूमि ने भारतवर्ष को दी है। गोमंतक के कलाकारों की कुछ विशेषताओं के कारण उन्हें कलाश्रेणी में विशेष स्थान प्राप्त हुआ। गोमंतक लगन के बहुत पक्के थे इस कारण जो कार्य करना उसके लिये जीने मरने की भी परवाह न करके एक लगन से उसमें लगकर उसे प्राप्त करके ही छोड़ना उनका स्वभाव था। गोमंतक को कलाप्रेम निसर्ग से ही प्राप्त हुआ है।

गोमंतक के लोग अत्यंत श्रद्धालु होने के कारण सारे कुलधर्मों का, कुलाचारों का नियम से पालन करना उनका स्वभाव था। इसी श्रद्धा का परिणाम था कि वे देवधर्म के कार्यों को करने में हमेशा तत्पर रहते थे। इसी कारण मंदिरों में कार्यक्रम करके देवता को प्रसन्न करना इनका पहला कार्य रहता था।

गोवा का निसर्ग इतना समृद्ध है कि लगता है ईश्वर ने यह भूमि केवल आध्यात्म साधना और कलासाधना के लिये निर्माण की है। इसी का परिणाम है कि गोमंतक ने हमें अनेक कलाकार दिये। उसी में से एक नाम 'लयभास्कर' खाप्रूमाम लक्ष्मणराव पर्वतकर लयब्रह्म के उपासक।

खाप्रूमाम कौन हैं इसे जानने में अनेक वर्ष बीत गये । एक बार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पुणे में मेरे पिताजी श्री रामकृष्ण पर्वतकर बीमार पड़े थे। खाप्रूमाम उन्हें देखने आये थे। उस समय हम लोग बहुत छोटे थे। पिताजी के बिस्तर के पास उनका बिस्तर लगा था। खाप्रूमाम दिन रात ए ऽ ऽ ऽ क, दो ऽ ऽ ऽ ऽ, तीन ऽ ऽ ऽ न इस प्रकार लय के चिंतन में लगे रहते थे। हम सब भाई बहन बाहर आकर उनका मजाक बनाते थे। बाद में पता लगा वे हमारे दादाजी (आजोबा) हैं। लय तत्त्व में लीन। जीवन की लय बिगड़ने पर प्रलय, ऐसे लय के उपासक, साधक मेरे दादाजी लयभास्कर खाप्रूमामा हमारे घर आये थे।

इसके कुछ वर्षों बाद हमलोग अपने पिताजी के साथ काशी आये। पिताजी की नियुक्ति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संगीत कॉलेज में तबला प्राध्यापक के पद पर हुई थी। हम सब भाई बहन अपनी अपनी पढ़ाई करने में व्यस्त थे। पिताजी की साधना भी गृहस्थी के बोझों को सहन करते हुये चल रही थी। उनका बनारस में अच्छा नाम हो रहा था लेकिन विधि का विधान कुछ और था। अल्पायु में ही हम सबको छोड़कर चले गये।

परिवार का पोषण बहुत बड़ी समस्या थी अतः उसके लिये आवश्यक शिक्षा प्राप्त करके नौकरी उसी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में की और अब सेवा निवृत्त भी हो गई हूँ। बड़ा लम्बा समय बीता। अनेक कलाकारों द्वारा पता लगा कि हमारे दादाजी खाप्रूमाम बहुत बड़े लयकार थे। उन्हें जानने की मन में इच्छा जागृत हुई। उसके लिये प्रयास करना शुरु किया।

डॉ. ना. र. मारुलकर जी जो मेरे पिताजी के घनिष्ट मित्र थे उनके 'गोमंतकीय संगीतकार' पुस्तक में खाप्रूमामा पर लिखा लेख पढ़ा। डॉ. बी. आर देवधर जी का संगीत कला विहार और "थोर संगीतकार' का भी लेख पढ़ा। जिज्ञासा बढ़ती गई। खाप्रूमाम के लय के चमत्कार के बारे में कुछ जानकारी हुई। समझ में कुछ नहीं आता था केवल यह कार्य अत्यंत विकट है इतना ही समझ में आता था। अतः इसके बारे में सामग्री एकत्रित करना शुरु किया। 10-12 बड़े बड़े विद्वानों द्वारा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


लिखे लेख प्राप्त हुये। श्री राजन पी. परिक्करजी द्वारा इंटरनेट पर लिखी जानकारी प्राप्त हुई। भारतरत्न पंडित रविशंकर जी द्वारा खाप्रूमाम के बारे में उनका वक्तव्य प्राप्त हुआ साथ ही खाप्रूमाम की आवाज में उनके लय के चमत्कार की रिकार्डिंग खाप्रूमामा की आवाज में मिली। बहुत प्रसन्नता हुई।

पिताजी श्री रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर के बारे में भी जानकारी प्राप्त करनी शुरु की। इन सब कार्यों के लिये बहुत विलंब हो चुका था। इन दोनों लय साधकों के बारे में व्यक्तिगत रूप से जानने वाले बहुत सारे लोग दिवंगत हो चुके थे।

'जीवन विकास' नामक एक पत्रिका मिली जिसे खाप्रूमाम की युवावस्था में स्वामी विवेकानन्दजी के साथ मुलाकात का उल्लेख मिलता है (पृष्ठ 434 सप्टेंबर 1993)। सांस्कृतिक वार्तापत्र विशेषांक 'छळाकडून बळाकडे' गोवा मुक्ती 50 विशेषांक इसमें तथा 'योद्धा संन्यासी' वसंत पोतदार द्वारा लिखित पुस्तक में भी स्वामी विवेकानंदजी की गोवा यात्रा में खाप्रूमाम के साथ भेंट का उल्लेख मिलता है।

इस प्रकार जितनी सामग्री मुझे प्राप्त हुई सब मराठी भाषा में मिली। समझ में आया कि इस जानकारी को मराठी भाषा जानने वाले ही समझ सकते हैं या गोवा के आसपास के लोग ही जानते होंगे। उत्तर प्रदेश, या मध्य प्रदेश के लोगों को खाप्रूमाम के बारे में जानकारी नहीं होगी। खाप्रूमाम ने लय के सूक्ष्म से सूक्ष्म भेदों को जानने के लिये जिस स्तर की साधना की, भीतर एक प्रकाश का दर्शन किया और उसी दर्शन से लय के विकट से विकट प्रश्न हल करने का प्रयास किया। उसे आज के सभी तबला वादकों को ही नहीं संगीतज्ञों भी जानना आवश्यक है।

अतः मैंने प्राप्त सभी लेखों का हिन्दी में अनुवाद किया और पाठकों और कलाकारों को जानकारी देने के लिये उसे पुस्तक रूप में प्रस्तुत करने का मेरा छोटा सा प्रयास है। इसमें मेरा अपना कुछ भी ज्ञान नहीं है। मैं तो अभी भी इस लय तत्त्व के गूढ प्रयोगों से अनभिज्ञ हूँ। लयब्रह्म के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


जिज्ञासुओं को जानकारी देने का छोटा सा प्रयास मात्र है। वह भी विद्वान संगीतकारों की लेखनी से लिखित लेखों द्वारा। अनुवाद करते समय बहुत कठिनाई आई। कुछ मराठी शब्दों का उचित हिन्दी शब्द नहीं मिल रहा था तो कहीं कहीं भावानुवाद से काम चलाया है।

मेरे पिताजी ने भी अपने पिता खाप्रूमाम द्वारा प्राप्त ज्ञान को दर्शकों, श्रोताओं के सामने प्रदर्शन करने में सफलता प्राप्त की थी। उनके बारें में भी जो लेख आज के कलाकारों द्वारा प्राप्त हुये हैं उन्हें भी इस पुस्तक में दिया है।

पिताजी शास्त्रीय संगीत, नाट्यसंगीत, भजन आदि गाते थे। नाटक में काम करने के साथ ही उच्चकोटि के तबला वादक भी थे लेकिन अवसर न मिलने के कारण और अल्पायु में ही दिवंगत हो जाने के कारण आज के कलाकारों के संपर्क में नहीं आये। फिर भी भारतरत्न भीमसेन जोशी, भारतरत्न पं. रविशंकर, गानतपस्विनी मोगुबाई कुर्डीकर, सुरश्री केसरबाई केरकर आदि कलाकारों को जानते थे। अनेक कलाकारों के साथ वे तबला संगत कर चुके थे।

पिताजी का एक गुण जिससे बहुत लोग परिचित नहीं हैं वह है उनकी चित्रकारी। केवल पेन्सिल से बनाये उनके अनेक चित्रों को भी इस पुस्तक में देने का कारण इससे भी संगीत जगत के लोगों को उनके गुणों की जानकारी हो।

कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि तीव्र इच्छा होकर भी कई कार्य घटित नहीं होते। जब ईश्वर इच्छा होती है तभी सब योगायोग अपने आप जुटते हैं और कार्य अनायास बनते जाते हैं। संभवतः यह पुस्तक उसी का परिणाम है।

एक दृष्टि प्राप्त लेखों के संदर्भ में। डॉ. बी. आर. देवधरजी द्वारा लिखित लेख हिन्दी में ही उपलब्ध हुआ। उसमें खाप्रूमाम से लिये साक्षात्कार का विस्तार से वर्णन है। श्री चन्द्रकांत पर्वतकरजी ने भी लय के चमत्कारों का वर्णन किया है। श्री वसंत जोतकरजी ने खाप्रूमाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


के धुमटवादन में विशेष योग्यता, रंगभूमि पर आगमन, गोरा कुंभार का अभिनय, नाटक में भी अभिनय का उल्लेख किया है। श्री लक्ष्मणराव सरदेसाई जी ने खाप्रूमाम के अंतर्मन प्रकाश का उल्लेख किया है। खाप्रूमाम के सुपुत्र श्री रामकृष्ण पर्वतकर ने शिवनाथ की कथा, खाप्रूमाम के सारंगी वादन का चमत्कार, भीतर के प्रकाश उल्लेख किया हैं। मानपत्र के बारे में विशेष उल्लेख किया है। श्री गोपालकृष्ण भोवेजी ने "खाप्रूमाम लय के संपूर्ण पंचाग थे" ऐसा कहा है। जिस प्रकार तिथि, वार, ग्रह, नक्षत्र, योग, करण, मूहूर्त आदि का सूक्ष्म विचार ज्योतिष में करते हैं और उनके द्वारा मानव जीवन के महत्त्वपूर्ण पहलूओं पर विचार किया जाता है उसी प्रकार खाप्रूमाम ने लय के सूक्ष्म से सूक्ष्म भेदों को जानकर लयक्षेत्र में अनेक चमत्कार किये। इसीलिये संभवतः उन्हें लय के संपूर्ण पंचांग कहा है। शिमगोत्सव (होली) का वर्णन करते हुये खाप्रूमाम को लयकारी के लिये निर्णायक घोषित किया है। उसी प्रकार बनारस के रामसहाय जी के तबला घराना का भी उल्लेख किया है। श्री माधव गडकरी जी ने लयब्रह्म भास्कर के बोलो को पर्वत पर सुनाई पड़ने का उल्लेख, साथ ही गोवा को ताल दिया, श्रोताओं की रसिकता को मुखड़ों का मोल दिया ऐसा वर्णन किया है। डॉ. ना. र. मारुलकर जी ने खाप्रूमाम को धुमट वादन के विशेषज्ञ के रूप में बताया। सुश्री कल्याणी इनामदार ने गान तपस्विनी मोगुबाई कुर्डिकर जी के संदर्भ में खाप्रूमाम को एक तपस्वी के रूप में उल्लेख किया है। श्री धनंजय देशपांडेजी की पुस्तक 'दिव्य स्पर्श' में डॉ. राम भोसले के संदर्भ में खाप्रूमाम के पखावज वादन में उनकी ऊंगलियों के चमत्कार का वर्णन मिलता है। श्री काशीनाथ पर्वतकर ने खाप्रूमाम के जीवन की घटनाओं का वर्णन किया है। श्री माधव पंडित जी ने उनकी लयकारियों के साथ उनके रिकार्डिंग की चर्चा की है। श्री नरोत्तम पर्वतकर जी अपने गुरुजी की शिक्षण प्रक्रिया पर प्रकाश डाला है। श्री भिखू पै. आंगलेजी ने उनके ऊपर सरस्वती की कृपा का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


उल्लेख किया है। तालयोगी श्री सुरेश तळवलकर जी ने उनकी विशेषताओं का उल्लेख किया है। सबसे अन्त में खाप्रूमाम के द्वितीय पुत्र श्री सूर्यकांत पर्वतकर की बहू सौ. शोभना सुहास पर्वतकर ने खाप्रूमाम पर कविता लिखी और उसमें खाप्रूमाम के जीवन का अंतिम प्रश्न है जो उन्होंने अपनी बहू वसुन्धरा को पूछा था कि लय की दिशा कौन सी है? इसी के साथ हिन्दी में पहला अध्याय समाप्त है। श्री राजन पी. परिक्करजी द्वारा इंटरनेट पर लिखी खाप्रूमाम के बारे में जानकारी अंग्रेजी में दी है उनकी अनुमति से मैं इस पुस्तक में दे रही हूँ। उसी के साथ भारतरत्न पंडित रविशंकर जी का खाप्रूमाम के बारे में बोला हुआ वक्तव्य भी इसमें दे रही हूँ। इसके बाद खाप्रूमाम से संबंधित उपलब्ध सभी चित्र दिये हैं।

दूसरे विभाग में खाप्रूमाम के सुपुत्र रामकृष्ण पर्वतकर के बारे में प्राप्त लेखों को दिया है। सन् 1959 जब पिताजी दिवंगत हुये थे उस समय "संगीत कला विहार" पत्रिका में डॉ. ना. र. मारुलकर जी द्वारा लिखित लेख इस पुस्तक में उद् धृत है। दोनों घनिष्ट मित्र थे अतः विस्तार से लिखा है। डॉ. प्रेमलता शर्माजी ने पिताजी के जीवन के विरोधाभासों को अत्यन्त मार्मिक ढंग से लिखा है। श्री विष्णु कुमार अग्रवाल जी ने भी उनकी विशेषतायें लिखी हैं। पद्मश्री पंडित बलवंतराय भट्ट जी 'भावरंग' पिताजी के घनिष्ट मित्र थे। विद्यालय में नित्य साथ उठना बैठना, संगीत की चर्चा करना, लयकारी चर्चा करना इत्यादि में उनका समय व्यतीत होता था। दोनों बहुत प्रसन्न रहते थे। उन्होंने अपने विचार प्रगट किये हैं। पिताजी के दिवंगत होते ही भावरंगजी ने गुर्जरी तोड़ी में पिताजी पर बहुत सुंदर रचना बनाई है उसे स्वरलिपि सहित दिया गया है। पिताजी के शिष्य वर्ग प्रो. चित्तरंजन ज्योतिषि, प्रो. पुष्पा बसु, डॉ. नरेन्द्रनाथ शर्मा, तबला वादक पं. ईश्वरलाल मिश्रा, डॉ. अविनाश जगताप, डॉ. दामोदर होता, प्रो. सुशीला पंत, प्रो. आर. पी. शास्त्री, श्री काशीनाथ पर्वतकर, श्रीमती कुसुम च. पर्वतकर, प्रतिभा,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



वनमाला, शोभा (तीनों पुत्रियाँ) सभी ने अपने अपने ढंग से यादगार क्षणों को लिखने का प्रयास किया है। डॉ. दामोदर होता द्वारा संकलित पिताजी के कुछ तबले के बोल, साथ ही अंत में श्री रामदास पाल द्वारा लिखित कविता दी गई है। पिताजी द्वारा हस्तलिखित बोल जो उन्होंने अपने विद्यार्थियों के कॉपी में लिखें थे उसकी फोटोकॉपी दी गई है।

अंत में श्री रामकृष्ण पर्वतकरजी से संबंधित चित्र और उनके द्वारा बनाये गये पेन्सिल के चित्रों को पर्वतकर जी के चित्रकला गुण की जानकारी हेतु दिये जा रहे हैं।

इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य यह है कि खाप्रूमाम ने लयब्रह्म की साधना करके लयभास्कर की उपाधि निर्विवाद प्राप्त की। खाप्रूमाम और उनक सुपुत्र रामकृष्ण पर्वतकर द्वारा प्राप्त ज्ञान की जानकारी आज के तथा कल के संगीत अध्ययन करनेवाले विद्यार्थियों के लिये स्फूर्तिदायक, मार्गदर्शक बनेगी। असंख्य विद्यार्थियों में से एक विद्यार्थी भी गूढ़साधना करता है तो वो भीतर के प्रकाश का दर्शन कर सकता है और संगीत जगत का कल्याण कर सकता है। पुस्तक रूप में संगीत के इतिहास के पृष्ठों में भी कलाकार द्वय जीवित रहेंगे।

यह पुस्तक मेरी अपनी रचना नहीं है। संगीत के विद्वानों द्वारा लिखित लेखों का सुन्दर पुष्प गुच्छ है। आशा करती हूँ कि सभी पाठकगण उसके सौन्दर्य और सुगंध को इस पुस्तक द्वारा ग्रहण करने में समर्थ होंगे। इस पुस्तक द्वारा पितृऋण चुकाने का छोटा सा प्रयास मात्र है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# कृतज्ञता ज्ञापन

विघ्नहर्ता भगवान गणेश, माँ सरस्वती, गोमंतक के हमारे कुलदैवत श्री चंद्रेश्वर भूतनाथ एवम् काशी के श्री विश्वेश्वर तथा अन्नपूर्णा के चरणों कोटिशः नमन जिनकी कृपा से "लयब्रह्म के उपासकद्वय" पुस्तक रूप में प्रकाशित करने जा रही हूँ।

मेरे प्रातःस्मरणीय श्रद्धेय दादाजी स्व. खाप्रुमाम पर्वतकर एवम् परमपूज्य पिताजी स्व. रामकृष्ण पर्वतकर एवम् पूजनीया माँ कुंदबाला के कुल में जन्म लेने का सौभाग्य मुझे मिला, वह भी गोमंतक की पावनभूमि पर जहाँ मुझे विरासत में संगीत संस्कार मिले। मैं आप की सदैव ऋणी रहूँगी।

मेरे परम श्रद्धेय गुरु स्व. पद्मश्री बलवन्तराय भट्ट "भावरंग" और गुरु माँ श्रीमती वसुंधरा भट्ट के स्नेहिल सानिध्य में मैंने संगीत की शिक्षा प्राप्त की। आप दोनों संगीत क्षेत्र में उन्नति करने हेतु मुझे सदैव प्रेरित करते रहे। स्व. कनकराय त्रिवेदी, स्व. पं. माधव ठकार, स्व. डॉ. एम् आर गौतम, स्व. डॉ. प्रेमलता शर्मा, स्व. लालमणि मिश्रा आदि सभी गुरुजनों ने अपनी ही पुत्री समझकर स्नेह का वर्षाव किया एवम् संगीत क्षेत्र में उन्नति करने हेतु सतत् मार्गदर्शन किया। गुरुजनों, आप सबके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ। मैं आप सभी को प्रेम और आदर के साथ स्मरण करती हूँ। आप के मार्गदर्शन एवम् स्नेहिल सहयोग के कारण मैं संगीत क्षेत्र में कार्यरत हो सकी।

मैं अपने श्रद्धेय गुरुजी पं. शिवकुमार शास्त्री जी को प्रणाम करती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



हूँ। आपके स्नेहिल सानिध्य में रहकर मैंने ज्ञानार्जन किया। संगीत के अध्ययन के साथ जीवन सम्बन्धी अनेक बातों से मुझे अवगत कराया। आपने मुझे जीवन जीना सीखाया। प्रसन्न रहना सिखाया। मेरी पुस्तक के लिये शुभकामनायें दी। आपको शतशः नमन।

मातृतुल्य श्रीमती रत्नप्रभा ठकार एवं प्रिय राहुल भट्ट से दादाजी एवं पिताजी संबंधित लिखित सामग्री उपलब्ध कराने में सहायता मिली। मैं आपकी हृदय से आभारी हूँ।

मेरी पुस्तक के लिये शुभाशिर्वाद एवम् शुभकामनाएँ देने के लिये गोवा के संगीतकार श्री माधव पंडित एवम् रंगमंच के प्रसिद्ध कलाकार, शिक्षाशास्त्री प्राचार्य भीकू पै. आंगले जी से मैंने मुलाकात की। आप दोनों विद्वानों ने खाप्रूमामा का नाम सुनते ही मुझे सहर्ष स्वीकृति दी। आपके सौहार्दपूर्ण सहयोग के लिये मैं हृदय से आभारी हूँ। प्रोफेसर श्रुति साडोलिकर भातखण्डे संगीत संस्थान सम-विश्वविद्यालय की वर्तमान कुलपति हैं। मेरे निवेदन पर आपने तुरंत शुभकामना पत्र दिया। तालयोगी श्री सुरेश तळवलकर जी ने व्यस्तता के बावजूद अपना अमूल्य समय देकर खाप्रूमाम संबंधी अपने विचारों से मुझे लाभान्वित किया और मेरी पुस्तक के लिये शुभकामना की। "विद्या विनयेन शोभते" के प्रतीक इन विद्वद्जनों की मैं हृदय से आभारी हूँ।

स्व. पद्मश्री पं. बलवंतराय भट्ट "भावरंग" मेरे पितृतुल्य और प्रो. चित्तरंजन ज्योतिषि मेरे लिये आदरणीय बड़े भाई हैं। आपने भी मेरी पुस्तक के लिये शुभकामना दी है। मैं हृदय से इनकी भी आभारी हूँ।

जिन विद्वानों के लेख प्राप्त हुये हैं उन सबकी मैं हृदय से आभारी हूँ। सभी लेखक मेरी पुस्तक के आधार स्तम्भ हैं। यह पुस्तक उन्हीं की देन है। ये सब मेरी पुस्तक के अलंकार हैं। उन्हीं से यह पुस्तक शोभायमान है। सब पुस्तक के प्राण हैं। अतः उन्हें मैं धन्यवारद कैसे दूँ? सब मेरे लिये आदरणीय और हृदय के निकट हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



श्री राजन पी. परिक्करजी की मैं विशेष आभारी हूँ। आप अमेरिका में रहते हैं। आपने Internet पर खाप्रूमाम संबंधी जानकारी दी है। साथ ही भारतरत्न पंडित रविशंकर जी का खाप्रूमाम के प्रति वक्तव्य दिया है। उनके इस कार्य में जिन विद्वानों ने सहायता की है उन सबके साथ श्री परिक्करजी की मैं हृदय से आभारी हूँ। उनको बहुत धन्यवाद देती हूँ कि उन्होंने अपनी दी हुई जानकारी को मेरी पुस्तक में देने की अनुमति दी है।

खाप्रूमाम संबंधी पत्रिकाओं में छपे लेख प्राप्त करने में तथा संबंधित चित्र उपलब्ध कराने में मेरे चचेरे भाई (जो गोवा में रहते हैं) विलास, सुहास प्रदीप और किरन ने बहुत सहायता की है। विलास ने पुस्तक हेतु आर्थिक सहायता भी की है। उदय पर्वतकर, विभव पर्वतकर द्वारा खाप्रूमाम के कुछ शिष्यों के चित्र प्राप्त हुये हैं। मैं सबको हृदय से धन्यवाद देती हूँ। इन सबके सहयोग बिना इतनी सामग्री एकत्रित करना मेरे लिये संभव नहीं था।

संकलित लेखों का अनुवाद करने में मेरी बड़ी बहन प्रतिभा ताई ने बहुत मदद की। उसके प्रति मैं कृतज्ञता कैसे व्यक्त करूँ? ईश्वर उसे अच्छा स्वास्थ्य और प्रसन्नता दे यही प्रार्थना। मेरे छोटे भाई रविकुमार ने चित्रों को सुंदर रूप देने में योगदान दिया है। दादाजी और पिताजी के प्रति कर्तव्य भाव से मुखपृष्ट भी उसी ने बनाया है। उसकी पत्नी सौ. नीलम, उसकी दोनों पुत्रियाँ सौ. नेहा एवं शुभांगी ने भी इस कार्य में सहयोग दिया है। मैं इन सबको शुभाशिर्वाद देती हूँ तथा इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

मेरी छोटी बहन श्रीमती शोभा अब्दागिरि एवम् उसके पुत्र राहुल अब्दागिरि ने भी पुस्तक संबंधी सामग्री उपलब्ध कराई है। इन सबके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

2 अक्टूबर 2011 को रविन्द्रभवन, मडगाव, गोवा में लयभास्कर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


खाप्रूमाम पर्वतकर ताल-वाद्य महोत्सव आयोजित हुआ था। उसी प्रकार 20-21 फरवरी 2016 में कला अकादमी, पणजी, गोवा द्वारा खाप्रूमाम पर्वतकर ताल-महोत्सव आयोजित किया गया। उन कार्यक्रमों के कुछ चित्र भी मैंने इस पुस्तक में लगाये हैं। कार्यक्रमों के आयोजकों के प्रति हम सब पर्वतकर परिवार के सदस्य आभारी हैं।

इस पुस्तक के प्रकाशक शारदा संस्कृत संस्थान, जगतगंज, वाराणसी के श्री विनोदराव पाठक जी का मैं धन्यवाद कैसे करूँ समझ में नहीं आता है। इस पुस्तक को सुंदर रूप देने में आपका पूरा योगदान है। मैंने तो केवल सामग्री मात्र ही दी है। इसकी पूर्ण सजावट का भार इन्होंने अपने उपर लिया है। अपने घर का कार्य सोचकर बड़ी निष्ठा से आपने कार्य किया है और मेरा सपना साकार किया है। मैं आपकी हृदय से आभारी हूँ।

संगणक - डॉ. संजीव शर्मा जी ने भी पूर्ण मनोयोग से कार्य किया है। इन्होंने भी प्रसन्नता से एक ऋषि की सेवा सोचकर कार्य किया है। इनकी भी मैं हृदय से आभारी हूँ।

मुद्रण का कार्य गौरीशंकर प्रेस, बड़ा गणेश, वाराणसी ने किया है। सुंदर व स्पष्ट मुद्रण के लिये मैं इनकी भी हृदय से आभारी हूँ।

बहुत अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है मेरे पितृतुल्य स्व. पद्मश्री पंडित बलवंत राय भट्ट 'भावरंग' तथा स्व. श्री नरेन्द्रनाथ शर्मा दोनों ही पुस्तक प्रकाशन के पूर्व ही दिवंगत हुये। दोनों का आशीर्वाद मुझे प्राप्त हुआ। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

पुस्तक में कुछ त्रुटियाँ हो सकती हैं। पाठकों से सविनय निवेदन है कि वे मुझे इसके लिये क्षमा करेंगे और पुस्तक के प्रचार-प्रसार के लिये शुभेच्छा देंगे।

—वनमाला पर्वतकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# लयब्रह्म के उपासकद्धय
# खाप्रूमामा उर्फ लक्ष्मणराव पर्वतकर
# और
# रामकृष्ण लक्ष्मण पर्वतकर
## ( विद्वानों के लेखों का संकलन )
## विषयसूची


| खाप्रूमामा उर्फ लक्ष्मणराव पर्वतकर | पृ० सं० |
|---|---|
| 1. लयभास्कर खाप्रूमामा उर्फ लक्ष्मणराव पर्वतकर —बा. र. देवधर | 1-10 |
| 2. स्व. 'लयभास्कर' खाप्रूजी उर्फ लक्ष्मणराव पर्वतकर —चन्द्रकान्त पर्वतकर | 11-14 |
| 3. गुरुवर्य लयभास्कर लक्ष्मणरावजी पर्वतकर —वसंत रा. जोतकर | 15-18 |
| 4. खाप्रूमाम, गोमंतक के ख्यातिप्राप्त कलावंत स्व. लयभास्कर लक्ष्मणराव जी पर्वतकर इनका व्यक्तिचित्र —श्री लक्ष्मणराव सरदेसाई | 19-25 |
| 5. लयभास्कर लक्ष्मणराव पर्वतकर जी की कलासाधना —रामकृष्ण पर्वतकर | 26-34 |
| 6. लयब्रह्मभास्कर स्व. खाप्रूजी पर्वतकर —गोपालकृष्ण भोबे | 35-43 |
| 7. लयभास्कर खाप्रूजी पर्वतकर —माधव गडकरी | 44-47 |
| 8. लयब्रह्म के सर्वश्रेष्ठ उपासक योगीराज स्व. खाप्रूमाम पर्वतकर —ना. र. मारुलकर | 48-55 |
| 9. तपस्वी खाप्रूमामा पर्वतकर (गान तपस्विनी मोगुबाई कुर्डीकर से उद्धृत) —कल्याणी इनामदार | 56-59 |
| 10. लयभास्कर खाप्रुमाम पर्वतकर —माधव पंडित | 60-68 |
| **खाप्रूमामा उर्फ लक्ष्मणराव पर्वतकर जी से सम्बन्धित चित्र–** | |
| 11. लयभास्कर पर्वतकर —धनंजय देशपांडे | 69-75 |
| 12. स्मृति के झरोखे से— लयभास्कर खाप्रूमामा उर्फ लक्ष्मणराव पर्वतकर —श्री काशीनाथ पर्वतकर | 76-79 |


Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


13. खाप्रुमाम -श्री नरोत्तम पर्वतकर से साक्षात्कार 80-81
14. खाप्रूमाम -श्री भिकू पै आंगले से साक्षात्कार 82-84
15. खाप्रूमाम पर्वतकर -पं. सुरेश तळवलकर से साक्षात्कार 85-87
16. गीताञ्जलि : लयब्रह्म भास्कर खाप्रूजी
—सौ. शोभना सुहास पर्वतकर (नातसून) 88-89
17. Khaprumama – A Remembrance
Introduction by Rajan P. Parrikar 90-106
18. Pt. Ravi Shankar's Tribute to Khaprumam 107-109

## स्व. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर

1. सुप्रसिद्ध तबलावादक एवं गायक स्व. रामकृष्णजी पर्वतकर
—डॉ. ना. र. मारुलकर, पूना 111-117
2. श्रद्धा कुसुमाञ्जलि — स्व. रामकृष्ण ल. पर्वतकर
—डॉ. प्रेमलता शर्मा 118-124
3. अद्वितीय लयकार स्वर्गीय रामकृष्ण पर्वतकर
—श्री विष्णु कुमार अग्रवाल 125-131
4. एक सुसंस्कृत तबलावादक और गायक स्व. रामकृष्ण पर्वतकर
—डॉ. ना. र. मारुलकर 132-138
5. स्व. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर
—पद्मश्री पं. बलवंतराय भट्ट 'भावरंग'
पंडित बलवंतराय भट्ट 'भावरंग' जी द्वारा रचित रचना राग गुर्जरी तोड़ी, ताल आड़ा चौताल स्वरलिपि सहित। 139-145
6. लयकारी के 'पर्वत' थे पंडित रामकृष्ण पर्वतकरजी
—प्रोफेसर चित्तरंजन ज्योतिषी 146-152
7. स्मरणाञ्जलि -तालशास्त्र के प्रकाण्ड पंडित
श्री रामकृष्ण पर्वतकर —प्रोफेसर पुष्पा बसु 153-155
8. आदरणीय गुरुजी —श्री नरेन्द्र नाथ शर्मा 156-158

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



9. संस्मरण -पं. रामकृष्ण पर्वतकर —पं. ईश्वरलाल मिश्र 159-160
10. मेरे श्रद्धेय गुरुजी —अविनाश बा. जगताप 161-165
11. पूज्य गुरुजी रामकृष्ण पर्वतकर —डॉ. दामोदर होता 166-174
स्व. श्रीरामकृष्ण ल० पर्वतकर की कुछ चमत्कारपूर्ण रचनाएँ
श्री दामोदर होता एम० म्यूज० द्वारा संकलित
ताल सवारी* चक्करदार परन —1, चक्करदार परन —2,
आड़ा चौताल-चक्करदार परन, रुद्रताल मात्रा 22 परन,
लक्ष्मी ताल मात्रा 21 चक्करदार परन
12. प्रसंग पुण्य स्मृति
स्व. पं. रामकृष्ण पर्वतकर (महान तबला कलाकार)
—प्रो. सुशीला पंत 175-179
13. संगीताचार्य स्व. पं. रामकृष्ण पर्वतकर जी
—प्रो. आर. पी. शास्त्री 180-183
14. स्व. रामकृष्ण पर्वतकर —श्री काशीनाथ पर्वतकर 184-186
15. स्वर्गीय रामकृष्ण लक्ष्मण पर्वतकर
—श्रीमती कुसुम चं. पर्वतकर 187-188
16. स्मृतियों के झरोखे से —प्रतिभा पर्वतकर 188-195
17. मेरे प्रिय बाबा —वनमाला पर्वतकर 196-205
18. बचपन के बाबूजी —शोभापर्वतकर (अब्दागिरी) 206-209
19. कविता —श्री रामदास पाल 210

(1) स्व. रामकृष्ण पर्वतकर जी से सम्बन्धित चित्र।
(2) स्व. रामकृष्ण पर्वतकर जी द्वारा हस्तलिखित तबले के बोलों की फोटोकॉपी।
(3) स्व. रामकृष्ण पर्वतकर जी के पेन्सिल से बनाये चित्र।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# समर्पणम्

## स्व. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर

धन्या लक्ष्मणरावपर्वतकरा गान्धर्वविद्याधरा,
विश्वे सद्गुणगौरवाहितयशाः मान्याः बभुवुर्बुधाः।
तत्पुत्रोऽपि तथैव पूतचरितः श्रीरामकृष्णोऽभवद्,
ग्रन्थोऽयं वनमालया सुकलितस्तस्य स्मृतौ कल्प्यते॥

- वनमाला पर्वतकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# लयब्रह्म के उपासकद्वय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# लयभास्कर खाप्रूमामा उर्फ लक्ष्मणराव पर्वतकर

**– बा. र. देवधर**

लयभास्कर खाप्रूमामा उर्फ लक्ष्मणराव पर्वतकर को बम्बई प्रांत के संगीत-रसिक एवं संगीत-कलाकार भली प्रकार जानते हैं। इनकी पदवी पर ही उनके विषय में अथवा कला-अंग का ज्ञान, वाचक सहज कर सकते हैं। मुझे ठीक-ठीक स्मरण नहीं, किन्तु 1918 अथवा 1919 में, गु. पं. विष्णु दिगम्बर द्वारा आयोजित संगीत-परिषद में वे उपस्थित थे। एक-दिन, रात के जल्से में, उन्होंने हाथों द्वारा लय व ताल पकड़ कर, लय़ के अनेकों प्रकार प्रस्तुत किये थे, तथा उस समय उपस्थित समस्त संगीत विद्वानों ने एक मुँह होकर उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। उस समय प्रस्तुत लेखक एक विद्यार्थी था, तथा मुझे संगीत का ज्ञान भी प्रारंभिक श्रेणी का ही प्राप्त हुआ था। अस्तु, उन्होंने उस प्रभुत्व को प्राप्त करने के लिये जो घोर-परिश्रम किया था, उसका वास्तविक महत्व मैं उस समय नहीं जानता था। अतः मैं केवल उनके मुँह से निकलने वाली ए-ए-ए-एक, दो-ओ-ओ-ओ; यह मात्राओं की गिन्ती कौतुहलपूर्वक सुन रहा था।

संगीत का चस्का, एक प्रकार का पागलपन ही है। किसी को नित नये रागों के शोध की लगन होती है, तो कोई मंद्रसाधना ही में लीन हो जाता है। अस्तु, खाप्रूमामा को लयकारी की ही लगन लगी थी। उन्होंने अपने समस्त जीवन की बाजी लगाकर, बड़े-बड़े नामांकित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कलाकारों से भी साध्य न हो सकने वाले लयकारी के अनेक प्रकार, अपने घोर और अखंड लौ के बल से साध्य कर, वे प्रत्यक्ष रूप से साकार कर दिखाये। लय, संगीत का प्राण है, तथा जिन्होंने इस साधना में अपना जीवन बिताया है, उनके अतुल परिश्रम की मुक्त-कंठ से सराहना करना, प्रत्येक कलाकार का कर्तव्य है।

श्री लक्ष्मणराव का जन्म, गोवा प्रांत के 'पर्वत' नामक ग्राम में, सन् 1880 में हुआ था। उसका जन्म एक पुरातन कलाकार कुटुम्ब में होने के कारण कई पीढ़ियों से, उनके घराने में गायन, तथा सारंगी व तबला वादन-इन विषयों की आराधना होती थी। नामकरण-संस्कार के दिन उनका नाम लक्ष्मण रखा गया था, किन्तु घर में बड़े-बूढ़े उन्हें खाप्रू नाम से पुकारते थे और वे उसी नाम से बाद में प्रसिद्ध हुए। बचपन में उनके मामा श्री रघुवीर ने उन्हें सारंगी की श्रेष्ठ तालीम दी थी और उनके चाचा (काका) श्री हरिश्चन्द्र ने उन्हें तबला-वादन सिखाया था। उनके समय में धवळी नामक ग्राम में, अनंतबुआ धवळीकर नामक एक धृपदिये रहते थे। किन्तु, पर्वत-निवासियों ने व्यय-भार अपने ऊपर लेकर, उन्हें पर्वत पर ही बुला लिया था। अतः खाप्रू जी ने उनसे धृपद-धमार की तालीम पाई थी। श्री अनंतबुआ धवळीकर, ग्वालियर के वामनबुआ धृपदी के शिष्य थे। अतएव जन्म से संगीत का अंग विद्यमान होने के कारण, खाप्रूजी बड़ी जल्दी संगीत में निपुण हो गये और वे अच्छे-अच्छे गायकों तथा अच्छी-अच्छी गायिकाओं की सारंगी की साथ करने लगे। वे तबले की साथ भी उतनी ही कुशलता से करते थे। इस प्रकार, उन्होंने 20-25 वर्ष तक अपना जीवन बिताया।

**लयकारी की लगन** – खाप्रू जी के चाचा कुशल लयकार थे और उन्हीं के पास उन्होंने शिक्षा पाई थी। इसके अतिरिक्त उनका सारंगी का व्यवसाय भी अच्छा चल रहा था। किन्तु एक दिन उन्होंने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कौतुहल पूर्वक, हरिश्चन्द्र जी से पूछा कि, "आप समस्त तालों में चौगुन तक लयकारी प्रस्तुत करते हैं। परन्तु पँचगुने, सात-गुने और नौगुने प्रकार, आप क्यों नहीं करते?" उत्तर में हरिश्चन्द्र जी ने कहा, "यह काम बड़ा कठिन है और आज तक किसी ने उसे साध्य भी नहीं किया है।" किन्तु, खाप्रूजी ने निश्चयात्मक रूप से कहा, "ये प्रकार— अर्थात् 1 से 16 गुने तक करना अवश्य संभव है।" चचा भतीजे का यह वाद-विवाद बढ़ता ही गया और संकल्प-निष्ठ खाप्रू जी इन प्रकारों को प्रत्यक्षतः कर दिखाने का प्रयत्न करने लगे। वे एकांत में बैठकर हाथों द्वारा मात्रायें गिनते हुए, लयकारी की साधना करने में ही अपने तन-मन की सुध भूल गये। उन्हें भूख-प्यास का भी होश न रहा। किन्तु 6 महीने में ही, उन्होंने 1 से 17 गुने तक के लयकारी के प्रकार साध्य कर लिये और जिस समय उन्होंने उनका प्रत्यक्ष प्रदर्शन किया, तो स्वयं हरिश्चन्द्र जी आश्चर्य-चकित हो गये और उनके नयनों में आनंदाश्रु बह उठे। उन्होंने प्रोत्साहनात्मक रूप से खाप्रू जी को शाबाशी दी। तभी से जो लयकारी का चस्का उन्हें लगा, वह आजतक कायम है। बस, इससे एक हानि हुई, तथा वह यह कि उनका गायन व सारंगी वादन का शौक छूट गया।

खाप्रूमामा, बारंबार बम्बई आते हैं, तथा वर्षभर में कई महीने यहीं रहते हैं। मैंने विभिन्न स्थानों पर उनके कार्य-क्रम सुने हैं। किन्तु लय, यह विषय अत्यंत दुर्गम होने के कारण उनकी तालियों के साथ-साथ उनके बोलों का प्रवाह और तत्पश्चात् आनेवाली सम, बस इतना ही मैं समझ पाता था। ठीक यही स्थिति कई गायकों की है। खाप्रूजी जो प्रदर्शन करते हैं, वह अगम्य व अत्यंत गूढ़ होने के कारण, उनकी वाह-वाह करना ही, वे अपना कर्तव्य समझते हैं।

यथावकाश, समय-समय पर वे मेरे पास आया करते हैं। अतः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


एक दिन मैंने उनसे पूछा, "खाप्रू मामा! आप है जो ये लयकारी प्रदर्शन करते हैं, वे मैं आज तक भी नहीं पूर्णतः समझ पाया हूँ; तथा मेरी तरह, अनेकों गायक-वादक भी नहीं समझ पाये होंगे। इसलिए क्या मुझे इसका मर्म समझा देने की कृपा करेंगे।" खाप्रूमामा स्वभाव से अत्यन्त शांत व उदार और सादगी-पसंद हैं। अतः उन्होंने मेरे इस प्रश्न की स्पष्टोक्ति का बुरा न मानते हुए, बड़ी शांतिपूर्वक उत्तर दिया, "मेरी कला आज तक कोई नहीं समझ पाया है। लोग मुझे सम्मानपूर्वक निमंत्रित करते हैं और घंटे-आध घंटे मेरा लयकारी का प्रदर्शन सुनते हैं, परन्तु उसका मर्म अथवा तत्व समझाने देने की इच्छा आजतक किसी ने भी व्यक्त नहीं की। अच्छा हुआ कि, आपने प्रश्न किया। आपको अवकाश हो, तो मैं समझाने का प्रयत्न करूँ।" मैं भी तो यही चाहता था। अतः मैंने तुरंत उत्तर दिया कि, मुझे इस समय और कोई काम नहीं है। (अर्थात् मुझे पर्याप्त अवकाश है)। अतः उन्होंने कहा, "पहिले-पहल मैंने 4 मात्रा से आरंभ किया। फिर 4 मात्रा के तीन भाग अर्थात् पौन-गुना, पाँच-भाग अर्थात् सवा-गुने, छः-भाग अर्थात् डेढ़-गुने और सात-भाग अर्थात् पौने -दो गुने, इस प्रमाण में 4 मात्रा के 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15 और 16 गुने तक मैंने साध लिया। पहिले-पहल यह अत्यन्त कठिन प्रतीत हुआ, किन्तु सच्ची लगन के साथ 6 महीने तक निरंतर अभ्यास करते रहने के पश्चात्, विभिन्न क्रम तथा प्रमाण के अनुसार मैंने तबले और मृदंग के बोलों में पढ़त करना आरंभ किया, तथा वह भी मुझे साध्य हो गया।

**"करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।**
**ज्यों रसरी आवत जात के, सिल पै होत निसान॥"**

अस्तु, उन्होंने 4 मात्रा तीन-भाग से, बिल्कुल समान प्रमाणानुसार, 4, 5, 6, 7......16 तक गिनकर बताया। अब मैंने उनसे प्रश्न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पूछा, ''क्या आप 4 मात्रा में 17 तक भी कर सकते हैं?'' उत्तर में उन्होंने कहा, ''17 ही क्यों ? 64 तक भी मैं कर सकता हूँ।'' अतः, उन्होंने वह भी प्रदर्शित किया। उनकी उस तैयारी को देखकर, मैं आश्चर्यचकित हो गया।

तत्पश्चात्, उन्होंने हाथों द्वारा त्रिताल शुरू किया और 16 मात्राओं में ही उन्होंने झपताल, धमार व सवारी इत्यादि सबके बोल कहे। ये ठेके त्रिताल की पहली मात्रा से आरंभ होकर, पुनः सम तक ही समाप्त हो जाते, जब कि तीन ताल की तालियां पूर्ववत् चालू ही रहतीं। फिर उन्होंने हाथ सवारी (15 मात्रा) का ताल देना और मुँह से धमार का ठेका कहना आरंभ किया। इन दोनों तालों की सम बिल्कुल ठीक आती थीं। फिर हाथ से सवारी-ताल देते हुए उन्होंने धमार के बोलों की दुगुन, आड़, सवाई इत्यादि अनेक प्रकार भी करके बताये। अंत में, हाथ से सवारी-ताल पूर्ववत् देते हुए मुँह से धमार (14 मात्रा) के भिन्न-भिन्न लय के बोल भी उन्होंने सुनाये। यह बिना किसी भूल-चूक के, ठीक-ठीक गणितानुसार कर सकना कितना कठिन है, इसे तो केवल इस विषय से संबंधित रसिक ही जान सकते हैं। इसके बाद, मैंने उनसे कुछ और प्रकार करने के लिये निवेदन किया। उन्होंने इस बार तो और भी कठिन एवं विकट प्रकार करके दिखाया। उन्होंने तबले पर चौताल (12 मात्रा) का ठेका बजाना आरंभ किया और उसी के साथ धमार (14 मात्रा) के बोल कहने लगे। फिर उन्होंने तबले से निकलने वाले चौताल के बोलों के साथ ही धमार के बोल भी कहना आरंभ किया। इस सबमें कहीं कोई भी भूल-चूक न होते हुए, दोनों तालों का 'सम' ठीक साथ-साथ आता था। अस्तु, इतना लिख चुकने के पश्चात् आशा है वाचक इस बात की कल्पना कर सकते हैं कि, खाप्रूमामा ने कितनी तपस्या के बाद इस कठिन, एवं विकट तत्व को साध्य किया है?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तदनन्तर, मैंने उनसे पूछा, "खाप्रूमामा, मैंने सुना है कि, आप एक ही साथ दोनों पैरों से दो भिन्न ताल, दोनों हाथों से कोई और ही दो ताल; तथा मुँह से और कोई ताल के ठेके दे सकते हैं—क्या यह सत्य है?" यह सुनते ही, उन्होंने उत्तर दिया, मैं यह भी कर दिखाता हूँ।" बस, उन्होंने एक पैर से त्रिताल, दूसरे से झपताल, एक हाथ से लय और दूसरे से चौताल तथा मुँह से सवारी का ठेका कहना आरंभ किया। इन सब तालों की सम ठीक-ठीक और अचूक रूप से आती थी; किन्तु कोई 4-5 जगह पर ध्यान देना मेरे लिये भी कठिन था।

अस्तु, खाप्रूमामा की लय-साधना कैसी है, इसकी थोड़ी बहुत कल्पना तो वाचकों हो ही गई होगी। यह विषय मनोरंजक नहीं है। तबला अथवा मृदंग वादन सुनकर, श्रोताओं का मुग्ध हो जाना संभव है, किन्तु हाथ और मुँह से लय और बोलों के विविध प्रकार आनंद-दायक नहीं होते। विशेषतः यह धनोपार्जन का साधन तो है ही नहीं। इन सब बातों को जानते हुए भी खाप्रूमामा ने इसमें अपना जीवन व्यतीत किया, वह केवल अपने खुद के मन के समाधान के लिये। जिस काम को करने की उन्होंने ठानी, अन्त में उसमें परिपूर्णता प्राप्त कर ही ली। एक दिन, खाप्रूमामा सहज ही मेरे पास आये थे। उस दिन मैंने उनसे पूछा "मामा, आप 1 मात्रा से 64 तक, सभी प्रकार के लय के खेल सहज कर सकते हैं। अब तो आपके मन में संतोष हुआ न?" यह सुनकर खाप्रूमामा ने उत्तर दिया, "जो बात मुझे आरंभ से असंभव सी प्रतीत हुई वह मैं साध्यकर सका यह आनंद की बात तो अवश्य है; परन्तु मैं जैसे जैसे आगे बढ़ने लगा, मुझे आगे का मार्ग अपने आप दिखने लगा है, ओर अब, मैं 64 से भी आगे के प्रकारों की साधना में लगा हुआ हूँ; तथा वह शीघ्र साध्य नहीं हो रहे हैं, इसलिये वास्तव में मुझे अपनी सफलता से असंतोष ही है।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


**स्वभाव** –खाप्रू मामा का स्वभाव अत्यंत सादा, भोला व शांत है। जितनी स्वतंत्रता से वे अपने बराबर के लोगों में घुल-मिल जाते हैं, उतनी ही स्वतंत्रतापूर्वक एवं स्वत्व के साथ, वे अपने छोटों में समरस हो जाते हैं। उन्हें किसी भी प्रकार का व्यसन नहीं है। उनका यह लयकारी का छंद, सड़क पर चलते-फिरते भी चालू रहता था। उनके हाथों द्वारा लय का और मुँह से बोलों का ताँता, देख कर लोग कहने लगे थे कि, "अब मामा पागल होने वाले हैं।" यह लोकापवाद व कुचेष्टा ज्ञात होते हुए भी, उन्होंने क्षोभ व्यक्त नहीं किया और न ये किसी से उस सम्बन्ध में कुछ कहने ही गये। उन्होंने अपने कई शिष्य तैयार किए हैं, जिनमें से बालकृष्ण पर्वतकर और श्री दत्ताराम पर्वतकर इन दोनों को उन्होंने सारंगी की तालीम दी थी; तथा इन दोनों ने अपने फन से खूब नाम कमाया। इनके अतिरिक्त, उनके पुत्र श्री रामकृष्ण लक्ष्मण पर्वतकर को भी उन्होंने उच्च शिक्षण प्रदान किया है तथा उन्होंने मैट्रिक तक अध्ययन भी किया है। वे पूना में एक स्वतंत्र संगीत विद्यालय का संचालन कर रहे हैं। मैंने एक बार उनसे पूछा था कि, "क्या आपके चिरंजीव (सुपुत्र) लयकारी के ये सब प्रकार कर सकते हैं?" इसके उत्तर में उन्होंने कहा, यह विषय अत्यंत कठिन व रुक्ष है, अतः इस पर ध्यान देने वाले लोग बहुत कम होते हैं। किन्तु, सौभाग्य से मेरे पुत्र ने इस विषय के कुछ तत्व सीख लिये हैं। इस प्रकार, उसे लगभग रुपये में दो आने के बराबर विद्या ही साध्य हुई है।

**मान-सम्मान** –आजकल संगीत के साधारण ज्ञान में वृद्धि होने के कारण व विशेषतः तबला-वादन का शौक खां साः तिरकवा के कारण, महाराष्ट्र में विशेष व्याप्त हो जाने से, गत 10-15 वर्ष में खाप्रू मामा की कदर होने लगी है। बारह वर्ष पूर्व, बम्बई के बहुत से कलाकारों ने खाप्रू मामा का सन्मान-सभारंभ करना निश्चित किया था। उस समय अल्लादिया खाँ साः जीवित थे। उन्हें यह विचार बहुत पसन्द

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


आया और वे स्वयं उक्त प्रसंग के समय वहाँ उपस्थित थे। तभी, सबने एकमत होकर यह निश्चित किया था कि, खाप्रू मामा को 'लय-भास्कर' की पदवी से सुशोभित किया जाय। निदान्, खाप्रू मामा को लयभास्कर पदवी, खाँ साः अल्लादिया खां के कर-कमलों द्वारा प्रदान की गई थी। इस समारंभ के अवसर पर सुप्रसिद्ध मृदंग-वादन श्री मखनजी भी उपस्थित थे। उन्होंने उस अवसर पर अपना मृदंग-वादन भी श्रोताओं को सहर्ष सुनाया था। तभी खाप्रू मामा 'लयभास्कर' के नाम से प्रसिद्ध हुए। इस संबंध में ध्यान देने योग्य विशेष बात यह है कि, यह पदवी-सम्मान समारोह सभी गायक-वादकों ने एक मत होकर और पूर्ण स्वतंत्रता पूर्वक, खुशी से किया था। तत्पश्चात्, लगभग दो वर्ष पूर्व पूना-निवासियों ने भी खाप्रूमामा का एक शानदार सन्मान किया था, जिसमें उन्हें धन-राशि (थैली) भी भेंट दी गई थी। उक्त अवसर पर खाँ साः विलायत हुसैन, व पं. रविशंकर इत्यादि नामांकित कलाकारों ने अपना सहयोग प्रदान किया था। उसी वर्ष, बम्बई के कलाकारों ने भी उनका सन्मान करके उन्हें 1000 रुपये की थैली अर्पण की थी।

खाप्रू मामा की आयु आज 70 वर्ष की है; किन्तु आज भी आप का स्वास्थ्य अच्छा है। यह जानकर भी की, लय साधना द्वारा धनोपार्जन संभव नहीं है, उन्होंने किसी प्रकार का आर्थिक लोभ न करते हुए, जो सेवा की है, वह प्रशंसनीय है। अन्त में, ईश्वर से हमारी प्रार्थना है कि, वह उन्हें दीर्घायु करें।

---

**साभार :** संगीत कला बिहार के जुलाई 1950 के अंक (पृष्ठ संख्या.16 से 20 तक) से प्राप्त खाप्रूमामा पर लिखा लेख। प्रो. बी. आर. देवधर पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी के शिष्य थे। कुशल संगीतकार और शास्त्रज्ञ।

* विशेष बात डॉ. देवधरजी ने खाप्रूमामा से बातें करके उनकी लयकारी के चमत्कारों को समझने का प्रयत्न किया है और पाठकों तक पहुँचाने का महत् कार्य किया है। यह लेख हिन्दी में प्राप्त है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सन् 1952 के अगस्त महीने में हमारे विद्यालय में पंडित विष्णु दिगंबर समारोह चल रहा था। एक नामांकित तबला वादक का तबलावादन चल रहा था उस समय कामूराव मंगेशकर, श्री खाप्रूमामा, सुंदरप्रसाद (कथ्थक) व अनेक तबला वादक हाजिर थे। आड़ा चौताल ताल का स्वतंत्र तबला वादन चल रहा था। पास ही में चाय पानी देने के लिये कमरा था वहाँ मैं बैठा था। 5-6 तबला वादक धीरे-धीरे वहाँ आये। उनका आपस में वाद-विवाद शुरु हुआ कि रंगमंच पर आड़ाचौताल में जो बजाया जा रहा है वो खास आड़ाचौताल के ही पेशकार कायदे हैं या तीन ताल के कायदे तोड़कर बजाये जा रहे हैं। सभी हाथ से ताल देकर अपने को परंपरा के कायदे किस प्रकार आते हैं यह दिखाने लगे। 10-12 मिनट होने पर भी उनका वाद-विवाद ख़तम नहीं हो रहा था। ये सब ख़तम कैसे करें इस बारे में मैं सोच रहा था। इतने में मुझे एक युक्ति सूझी। मैंने सबको विनम्र भाव से बताया कि "आप सब विद्वान हैं, परंतु मुझे एक शंका है वा यह है कि आप जिन बोलों की हाथ से ताल देकर पढंत कर रहे हैं वा मेट्रोनम (लय मापने का यंत्र) के साथ ठीक से आयेगा क्या? उसमें कुछ ने आवेश के साथ कहा "हम क्या कच्चे गुरु के चेले हैं? ले आइये आपका मेट्रोनम। हम उसके साथ बजाकर दिखाते हैं।" मेट्रोनम लाया गया। उसमें चाभी भरकर उन्हें चाहिये ऐसी लय में उसे चालू किया। एक एक तबला वादक उसके साथ ताली बजाकर बोल बोलने लगा परंतु उन्हें नजर आने लगा कि दो-तीन मिनिटों में ही मेट्रोनम के ठोके और उनके हाथ की ताली अलग होने लगी। धुरंधर तबला वादक मेट्रोनम की लय के साथ बोल नहीं पा रहे हैं। ऐसा देखते ही एक-एक व्यक्ति उस कमरे से निकल कर समारोह की जगह पर जाकर बैठ गया। अंत में कमरे में अकेले खाप्रूमामा बचे। उनके आगे मैंने मेट्रोनम रक्खा तो उन्होंने कहा "इन लोगों को सधा नहीं मुझे जमता है क्या देखता हूँ।" ऐसा कहकर उन्होंने मेट्रोनम के साथ हाथ से ताली देकर पढंत करना शुरु किया। दो-तीन मिनट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तक पढंत चलती रही लेकिन मेट्रोनम का ठोका और खाप्रूमामा की ताली इसमें थोड़ा भी फरक नहीं पड़ा। मेट्रोनम की लय बढ़ाकर देखा, धीरे करके देखा लेकिन खाप्रूमामा एक यंत्र के समान बिना गलती किये लय में बोल कहने लगे। कितनी बड़ी तपश्चर्या।

खाप्रूमामा दमा के कारण अस्वस्थ थे। इसलिये बाद में गोवा छोड़कर बाहर जाना कम कर दिया था। गुरुवार 3 सितम्बर 1953 को उनका देहावसान गोवा के पर्वत गाँव में हुआ।

उनका जन्म 1880 सन् का था ऐसा उनके रिश्तेदारों से सुना इसलिये मृत्यु के समय उनकी उम्र 73 वर्ष की थी।

नाना पानसे घराने के शागीर्द स्व.पंडित पांडोबा गुरव वाईकर ने कहा –

"खाप्रुजी आपने अपनी कला में अद्वितीयत्त्व संपादन किया है। हमने आज ब्रह्म देखा है। अब मौत भी आये तो हर्जा नहीं है।"

---

साभार : 'थोर संगीतकार' (नवंबर 1973) नामक पुस्तक से प्राप्त मराठी लेख का अनुवाद पृष्ठ संख्या 258 से 259। लेखक - बी. आर देवधर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# स्व. 'लयभास्कर' खाप्रुजी उर्फ लक्ष्मणराव पर्वतकर

– चन्द्रकांत रा. पर्वतकर

स्व. खाप्रुमामा का जन्म गोमंतक के 'पर्वत' गांव में ई. स. 1878-79 के करीब हुआ।

इस 75 वर्ष की कालावधि में खाप्रुमामा ने उज्ज्वल प्रतिभा और दीर्घ तपस्या के बल पर तबला वादन शास्त्र के ताल विभाग में अनुपमेय प्राविण्य प्राप्त करके 'ताल व लय' इन दोनों क्षेत्र में केवल 'कलावान' कहलाकर नहीं तो शास्त्रज्ञ कहलाकर भी अद्वितीय कीर्ति संपादन की।

खाप्रुमामा का घराना विद्वानों में गिना जाता था। उनके बचपन में गाँव में गायन, वादन व नृत्य और नाट्य इन कलाओं की आठों प्रहर आराधना चलती रही। इस वातावरण में उन्होंने अपने मामा स्व. रघुवीर पर्वतकर के पास सारंगी व काका श्री हरिश्चन्द्र पर्वतकर और स्व. रामकृष्ण पर्वतकर के पास तबलावादन के पाठ पढ़ने शुरु किये और उम्र के 18 वर्ष तक उसमें बहुत प्रगति की। एक दिन "ठाह, दुगुन, चौगुन इत्यादि त्रिताल की गुन करते हैं तो तीन, पाँच, सात ये बीच की गुन क्यों नहीं करते?" ऐसा बड़े-बड़े वादकों की मति कुंठित करनेवाला प्रश्न उन्होंने गुरुजी हरिश्चन्द्रजी से पूछा। उससमय उनकी यहकल्पना सबको असंभव व हास्यास्पद लगी। बाद में खाप्रुमामा ने उसे संभव करने का प्रयत्न शुरु किया। उस चिंतन में इतने मगन हो गये कि सब लौकिक सुखों से अलिप्त रहने लगे। आहार, निद्रा इत्यादि नित्यकर्म

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


के आचरण में भी इनको इस ज्ञानात्मक प्रश्न की धुन लगी। इस प्रकार अनन्यभावसे की हुई कला की सेवा से कलादेवता उनपर प्रसन्न हुई और उनके विनम्र मस्तक पर अपना वरदहस्त रखने के कारण उनको इस लयरूपी प्रकाश का दर्शन हुआ।

अपने मौलिक सिद्धान्तों से वादन शास्त्र में क्रांति लाकर त्रिताल के एक से सोलह गुन करके दिखाकर अपने गुरुजी को 'शिष्यादिच्छेत् पराजयम्' इस उक्ति के समान सहर्ष चकित किया। आगे तो उन्होंने लयशास्त्र में आसानीसे अद्‌भूत चमत्कार करके दिखाये। आगे चलकर इनकी प्रतिभा इतनी सूक्ष्मसंवेदी व पारंगत हुई कि वे त्रिताल के 64 गुन करके दिखाने लगे। एक मात्रा के 16वें अंश का आकलन उनकी बुद्धि को होने लगा। वे वादन शास्त्र की किसी भी विकट समस्या को आसानी से हल करते थे।

संगीत, वादन व नृत्य इन कलाओं का मंदिर जिस पर निर्माण किया जाता है उस ताल व लय के शास्त्रों का पुनर्निर्माण किया और वे 'कलाशास्त्रज्ञ' इस पद पर आरूढ़ हुये।

सन् 1918/19 में पंडित विष्णु दिगंबरजी द्वारा आयोजित संगीत परिषद में इनकी विद्वत्ता का प्रथम दर्शन हुआ। उस समय उन्होंने लयकारी के अनेक प्रकार करके दिखाये। अनेक विद्वानों ने इनकी स्तुति की। उसी समय सुप्रसिद्ध नाना पानसे घराने के शागीर्द कीर्तिवंत पखावजी पांडोबा गुरव वाईकर के आग्रह से खाप्रुजी ने उनको आड़, कुवाड़, गोवाड़ और ब्रह्मआड़ ऐसी पाँचों लय करक दिखाई। उस समय पांडोबा गुरव ने "खाप्रुजी आपने अपनी कला में अद्वितीयत्त्व संपादन किया है" ऐसे समाधान सूचक उद्‌गार निकाले।

सन् 1921 में पंडित भास्करबुवा बखलेजी को एक महफिल में लय व ताल का जब कौशल्य दिखाया तब उन्होंने "लय क्षेत्र में जगह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


रखने का एक अंग है उसे आपको ही सौंपना चाहिये। आप उसमें ईश्वर हैं।'' ऐसा विजय पत्र बहाल किया।

सन् 1933 में जब संगीत सम्राट उस्ताद अल्लादिया खाँ साहब, विलायत हुसेन खाँ और अनेक प्रसिद्ध तबलावादकों की एक बड़ी महफिल हुई, तब '12 का 13 करनेवाला वो सच्चा लयबाज' ऐसी व्याख्या वहाँ हुई। उस समय खाप्रुजी ने यह कार्य इतनी सरलता व सफाई से करके दिखाया कि उससमय गायन सम्राट अल्लादिया खाँ साहब ने ''आपके ज्ञान के आगे व कला के आगे तोबा! तोबा!'' ऐसे उद्‌गार निकालकर खाप्रुजी को गले लगाया।

सन् 1935 में श्री मोगुबाई कुर्डीकर ने श्री रघुवीर रामनाथकरजी द्वारा खाप्रुजी का पुतला तैयार करवाकर उन्हें भेंट किया। उस समय समारंभ में हैद्राबाद के दो सुप्रसिद्ध तबला वादकों को लयबाजी क्या है इसका दिग्‌दर्शन करवाया। उस समय ''लय के क्षेत्र में आप सूर्य के समान दैदिप्यमान हैं'' कहकर खाप्रुजी का अभिनंदन किया।

उस समय प्रसिद्ध गायक अमान अलीखाँ व हैद्राबाद के तबलावादक अब्दुल करीम खाँ के साथ एक बैठक में उनकी लयकारी पर चर्चा हुई। $13\frac{1}{2}$ मात्रा में तीन 'धा' लगाकर खाप्रुजी ने तुरंत एक ठेका निबद्ध किया और उनके द्वारा रचित अलग अलग मात्राओं की बन्दिशों पर बोल बैठाकर, ठेका बनाकर दिया, तब उन दोनों ने खुद का कान पकड़कर कर खाप्रुजी के पैर पर सिर रक्खा। साथ ही ''आबा आखा जनम हम तो आपके लय की हवा में ही फिरते रहेंगे'' ऐसे उद्‌गार निकाले।

सन् 1939 में मुंबई के कलाकारों ने खाप्रुजी का सत्कार करके उस्ताद् अल्लादिया खाँ के हाथ से मानपत्र देकर ''लयभास्कर'' उपाधि दी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सन् 1942 में सब गोमंतकों की ओर से उनका सम्मान करके उन्हें मानपत्र व 'ताल कंठमणि' उपाधि से सम्मानित किया।

पुणे में बैरिस्टर बाबा साहेब जयकर जी की अध्यक्षता में उनका गौरव करके उन्हें थैली भेंट की गई। मुंबई के कलाकारों ने प्रो. देवधरजी के विद्यालय में सत्कार करके उन्हें थैली अर्पण की।

ऐसा यह दिनप्रतिदिन ज्ञानप्रदीप्त लयभास्कर 3.9.1953 को पूर्णरूप से अस्त हो गया।

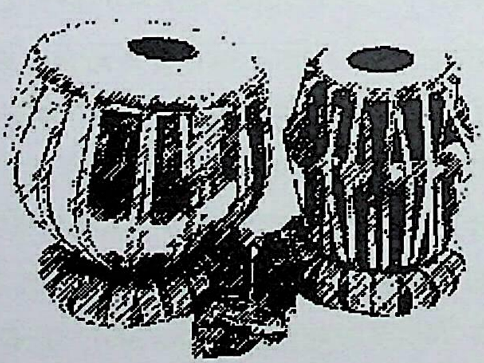

---

**साभार :** गोमंतक मराठा समाज की पत्रिका "समाज सुधारक" के अक्टूबर 1953 के अंक में छपे लेख का अनुवाद, पृष्ठ संख्या 189-190। लेखक -श्री चन्द्रकान्त पर्वतकर, श्री रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर के कनिष्ट भ्राता हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गु. लयभास्कर लक्ष्मणरावजी पर्वतकर

**– वसंत स. जोतकर**

हमलोगों के परमपूज्य गुरुजी लयभास्कर लक्ष्मणरावजी पर्वतकर उर्फ खाप्रुमामा का पारोडे गाँव के श्री चन्द्रनाथ पर्वत के थलवाडी में, अपने घर में 3 तारीख को वृद्धावस्था में कमजोरी बढ़ने के कारण निधन हुआ। यह विद्युतगति से आई सूचना पढ़कर मेरे जैसे उनके शिष्य कहलानेवाले और असंख्य चाहनेवाले लोगों को दुःख का बड़ा जोरदार झटका लगा। उनका नाम बताकर उनसे प्राप्त विद्या द्वारा मैं अपना जीवनयापन कर रहा हूँ। उनके जीवन के अंतिम क्षणों में कुछ दिन उनकी सेवा करना यह हम जैसे शिष्यों का कर्तव्य था। यह मेरे द्वारा हुआ नहीं इसका मुझे दुःख हुआ। वास्तव में मेरे जैसे लोगों द्वारा उनका कुछ भी काम रुका नहीं था। केवल मेरा कर्तव्य मेरे द्वारा पार पड़ना चाहिये था। अब उनकी स्मृति में आदरपूर्वक श्रद्धांजलि देना इतना बाकी है।

स्व. लक्ष्मणरावजी का जन्म गोमंतक के श्री चन्द्रनाथ पर्वतपर करीब सत्तर वर्ष पूर्व कलाकार घराने में हुआ था। स्व. रघुवीर पर्वतकर इनके मामा उत्तम सारंगीवादक थे। लक्ष्मणरावजी के विद्यार्थी जीवन में हमारे पर्वतपर स्व. रामकृष्ण पर्वतकर हरिश्चन्द्र पर्वतकर, विनायक पर्वतकर तबला वादक और श्री चंद्रू पर्वतकर, दत्तु पर्वतकर वगैरे सारंगीवादक थे। अपने खाली समय में अपनी विद्या दान देने में उन्होंने कभी कमी नहीं की। स्व. रामकृष्ण पर्वतकर तबला, मृदंगवादक थे,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


वैसे ही घुमट वादक भी थे। घुमट वादन के पक्के ज्ञान रखनेवाले व्यक्ति ताल में कभी हारते नहीं हैं ऐसा सृष्टि का नियम है। ऐसे ज्येष्ठ व श्रेष्ठ कलाकारों से लक्ष्मणराव जी ने तबला वादन की शिक्षा ग्रहण की व सारंगी की संगत पर उसे कैसे बजाना ये अपने ही घर में रघुवीर मामा से समझ लिया था। तबला वादन व घुमट वादन की विद्या उन्होंने प्राप्त की लेकिन उसका उपयोग कभी व्यवसाय के लिये किया हो ऐसा सुनने में नहीं आया। भजन, कीर्तन व कभी कभी नाटक में बजाते थे वो भी शौकिया। उन्होंने विद्या ग्रहण की लेकिन वे उससे कभी तृप्त नहीं हुये। उन्हें उस विद्या के एकदम गहराई में जाने की इच्छा हुई। उसी धुन में वे अपना समय बिताने लगे। उन्हें ताल की सूक्ष्म गति खोजनी थी। उनकी शंका का समाधान करनेवाला उन्हें कोई दीख नहीं रहा था। स्वयं प्रयत्न करके देखें, इसके लिये वे प्रयत्नशील रहे। इसका इनके स्वास्थ्य पर भी असर हुआ, लेकिन वे लगे रहे। कुछ क्षण 'अपने को सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म तालों का साक्षात्कार हो रहा है' ऐसा आभास होता था, लेकिन वह सच नहीं है ऐसा भी लगता था। इसी भ्रम में कुछ दिन बीतने के बाद उनको साक्षात्कार हुआ और उसीका आकार रूप बनाकर उसे दृढ़ किया। उस अनुभूति को अपने साथ के कलाकारों को समझाने का प्रयत्न किया लेकिन स्वयं अनुभूति न होने के कारण अपनी तपश्चर्या असफल तो नहीं हो रही ऐसा लगा। लेकिन वे कभी हताश नहीं हुये। अपने पूणे-मुंबई की यात्रा में गायन-वादन शास्त्रज्ञों को प्रयोग करके दिखाये और अपनी बोलभाषा में उसे समझा दिया। उन्होंने तबलेपर बजाये बोल व अतिसूक्ष्म ताल रसिक और जानकार लोगों को समझ में आये, लेकिन उनकी इस गहन विद्या का किसी ने लेखन किया हो इसमें संदेह है। हम लोग जैसे थोड़े गाँव के लड़कों ने उनसे तबला वादन सीखा। उनके लयकारी के प्रयोग भी देखे, लेकिन इनके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


स्वयंसंशोधित विद्या का कभी यथार्थ ज्ञान हम लोगों को नहीं हुआ। यदि किसी को भी हुआ हो, तो उसको जानना व खोजना जरुरी है। यह ज्ञान बहुत मुश्किल है। प्रयास से साक्षात्कार होगा तभी प्राप्त होगा। उन्होंने बहुत कष्ट से उसे प्राप्त किया और दुनिया के सामने प्रस्तुत किया यह उनका बड़प्पन है। उन्हें गायन शास्त्र का ज्ञान था। लेकिन वह गायक के रूप में आगे नहीं आये। पर्वत के पर्वतकर नाटकमंडली के साथ बचपन में देवस्थान के आमंत्रण पर जाकर घुमटवादन में भी भाग लेते थे। वे चन्द्रावली गाते तो उस समय रसिक लोग उनकी वाहवा करते वह केवल उनके गाने के लिये नहीं तो उनकी लयदार व तालबद्ध गायकी के लिये। रंगभूमि पर भी उनका आगमन हुआ लेकिन उसमें अधिक यश नहीं मिला। उस समय पर्वतपर 4-5 वर्ष रहे। दिगंबरबुवा गवई द्वारा निर्देशित संगीत नाटक 'गोरा कुंभार', पर्वतकर नाटक मण्डली द्वारा मंचित किया गया। उसमें लक्ष्मणराव पर्वतकर जी ने मुख्य पात्र गोरा कुंभार का उत्तम अभिनय किया। जहाँ पर्वतकर मंडली जाती थी वहाँ वह नाटक करने का आग्रह होता था ऐसा उस समय के बुजुर्ग लोग बताते हैं। बाद में उनक गले में कुछ विकृति होने से बोलने में आवाज खराब होने से उन्होंने नाटक में काम नहीं किया।

वे स्वभाव से सज्जन व शांत थे। उनके गुणों का लाभ हम पर्वतकरों को मिल रहा था। उनको घमंड नहीं था, व्यसन नहीं था और इन्हीं गुणों के कारण उन्हें किसी भी समाज में मान मिलता था। उनका किसी ने अपमान किया हो ऐसा कभी सुनने में नहीं आया। सम्मान कैसे देना और कैसे लेना यह समझकर व्यवहार करना, किस तरह अपने हित में है इनका हम लोगों को उपदेश करते थे। उनके उपदेश को ध्यान में रखकर और उनके गुणों का अनुकरण करके यदि हम लोगों ने जीवन व्यतीत किया तो उनकी पूज्य स्मृति को योग्य आदर देने के समान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


होगा। हम सबको परमेश्वर सद्बुद्धि दें और उनको उत्तम गति दें यही उनके चरणों में प्रार्थना।

गायन सम्राट अल्लादिया खाँ साहब ने कहा –
"आपके ज्ञान के आगे व कला के आगे तोबा! तोबा! आपके ज्ञान के सामने सौ बार सिर झुकाता हूँ।"

**साभार :** गोमंतकर मराठा समाज की पत्रिका "समाजसुधारक" के अक्टूबर 1953 के अंक में छपे लेख का अनुवाद, पृष्ठ संख्या— 193-194। लेखक : श्री वसंत स जोतकर, श्री रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर के स्नेही हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# खाप्रुमाम

## गोमंतक के महान कलावंत स्व. लयभास्कर लक्ष्मणराव जी पर्वतकर का व्यक्तिचित्र

– श्री लक्ष्मणराव सरदेसाई

श्री खाप्रुजी का उपनाम पर्वतकर। वे पर्वतपर रहनेवाले। गोवा के 'चन्द्रेश्वर' पर्वत को लोग पर्वत कहते हैं। इस पर्वत की चोटी पर बीस-पच्चीस छोट-छोटे घर हैं। एकदम ऊपर की चोटी पर महादेव का अर्थात् चन्द्रेश्वर का मन्दिर हैं वहाँ खड़े होकर देखने से संपूर्ण गोवा का आश्चर्यजनक दृश्य आँखों के सामने खड़ा होता है। पश्चिम की तरफ समुद्र का पट्टा, पूर्व की तरफ पर्वतों की नीली रेखा, जहाँ तहाँ चमकते नदियों के जाल, नमकागार और खेत, मनःपूर्वक खा-पीकर प्रसन्नचित्त से चित्त होकर लेटे हुये जानवरों के समान सुशोभित होनवाली छोटी छोटी पर्वत शृंखलायें, नारियल के बाग, पुराने गोवा के गगनचुंबी ख्रिच्श्रियन मठ एवं चर्च के शिखर आदि सब दृश्य विविध रंगों के प्रकाश में इतने विविध रूपों में दिखने लगते हैं कि अपूर्व हर्ष की भावना का संचार अपने शरीर में होता है और ऐसा आभास होता है कि निसर्ग छोटा सा होकर अपने पैरों के नीचे खेल रहा है। अपने हाथ आसमान को छू रहे हैं। पर्वतों के दोनों और नरियल के पेड़ों के पुष्ट हरे पत्ते अपने पैरों को स्पर्श करने के लिये प्रयत्नशील हैं, पास ही में पानी के छोटे कुंड हैं, झरने हैं और सृष्टि के ईश्वर प्रदत्त एकांत में छोटे से घर से सितार के बोल गूँज रहे हैं, घुमट पर बजाई कठोर तालबद्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


थपकी पास के घर से गर्जना कर रही है, तीसरे घर से गायिका के गले से स्वरमाला गूँज रही है, चौथे घर में कलावंत के हाथ से दुलराता तबला जीता जागता बोल निकला रहा है, पाँचवे घर सारंगी नाटकीय विलाप कर रही है। पास ही में घुंघरु से पदाघात करती नर्तकी नर्तन कर रही है। सांसारिक कोलाहल से दूर ही नहीं इस ऊँचाई पर स्थित ऐसे विलक्षण जगह पर कला के संसार में निरपेक्ष होकर पच्चीस घरों के पचास साठ लोग लगन से, निष्ठा से नटराज के सान्निध्य में शान से बैठे हैं। ऐसे वातावरण में खाप्रुजी का जन्म हुआ, बड़े हुये और योगी बन गये।

हाँ! मैं उनको योगी ही कहता हूँ। कला के शास्त्र में इतनी लगन लगानेवाला मनुष्य शायद ही किसी ने देखा होगा। भक्तिमार्ग में जैसे तुकाराम वैसे कलाशास्त्र में खाप्रुमाम। चन्द्रेश्वर के समान विरक्त और त्यागी। उसी का मानवी अवतार। साधना के बिना तप नहीं और तप के बिना महान कला की प्राप्ति नहीं हो सकती है। खाप्रुमामा की साधना कितनी लोक विलक्षण! बचपन से 'व्यवहार' का ध्यान नहीं, पैसे की परवाह नहीं, कपड़े पहनने का ध्यान नहीं। बचपन में 'लोटा' लेकर जहाँ जाते वहीं दो-दो घंटे हाथ से ताल देते बैठे रहते। घर के लोग बुलाकर घर लाते। मडगाव में रहते समय कभी कभी मेरे घर आते तब मध्यरात्री में जागृत अवस्था या निद्रावस्था में, दोनों हाथ बिछौने के दोनों तरफ किसी ताल में ऊपर नीचे होते रहते थे। इनकी इस लगन का परिणाम ऐसा हुआ कि गंगाराम पर्वतकर नामक सारंगीवाला इनके बगल में सोया था वो भूत! भूत! कहकर चिल्लाकर उठकर बैठा। घर के सब लोग जागकर बैठे तो देखा तो खाप्रुमामा के हाथ का ठेका गंगाराम के पेट के तबले पर पड़ रहा था और उसी से वो चिल्लाया था। इतनी लगन के कारण ही वे 'लयभास्कर' बन गये। उनका मन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


और इन्द्रियाँ ताल लय के संपर्क में दिन रात मगन रहती थी। वैसे देखा जाय तो 'पुस्तकी शिक्षण' एकदम कम था। थोड़ा लिखना पड़ना आता था। चेहरे पर पूर्वकालीन ऋषि का तेज था। आँखें अपनी लय के स्वप्न में तैरती हुई, चेहरे की रेखा-रेखा से विरक्ति ती छटा दीखती थी। यह सीधा कलाकार न होकर तालशास्त्र का महान संशोधक  है यह उनकी औलिया पोशाक में सुशोभित उनकी अलिप्त मुद्रा सिद्ध करने में समर्थ थी। उनके द्वारा प्राप्त खोज जानकार लोगों के लिये भी असंभव थी। उसको चमत्कार नाम देना ही ठीक होगा। चमत्कार तो है ही लेकिन खाप्रुमामा उसे शास्त्रोक्त विधि से करके दिखाते थे।

इस सन्दर्भ में मैंने उन्हें एक बार प्रशन किया तो उन्होंने कहा अंतर्मन में प्रकाश दीखता है उसी का परिणाम है। "प्रकाश" इस एक ही शब्द में genius की व्याख्या समा जाती है। भौतिक शास्त्रों को न सुलझने वाले चमत्कार हम इस दुनिया में कम नहीं देखते। प्रकृति पर विजय प्प्रप्त किये योगियों के हाथ से ऐसे चमत्कार होते हुये हम लोग कभी कभी देखते हैं। चौबीस घंटे जमीन में अपने को गाड़कर रहना यह चमत्कार नहीं क्या? केवल हवा पानी पर महीना-महीना जीवित रहने वाले सिद्ध पुरुष अभी भी हैं। तात्पर्य यह है कि किसी क्षेत्र में तप की पराकाष्ठा होती है और आत्मिक बल की प्राप्ति होने पर मनुष्य के हाथ से होनेवाले कार्य का ज्ञान प्रकृति के सर्वसाधारण ज्ञात नियमों से नहीं होता है। खाप्रुमामा के चमत्कार जिन्होंने देखे होंगे उन्हें ऐसा ही अनुभव हुआ होगा। पहली बार मैंने उन्हें तबला बजाते देखा तो मुझे मेरा दम घुट रहा है ऐसा अनुभव हुआ। श्री रघुवीर रामनाथ के समान कुशल हार्मोनियम वादक लेहरा बजा रहे थे। उनको संभालकर बजाने में उनकी परेशानी स्पष्ट दिख रही थी और खाप्रुमामा की 'काल' के साथ जो लड़ंत चल रही थी उसे देखकर मेरे जैसे अनभिज्ञ को भी ऐसा लगा कि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


प्रकरण असाधारण है। पुराण में वर्णित 'कालियामर्दन' यहाँ चल रहा है। लवचिक एवं अदृश्य काल को खींचकर, ढ़ीला छोड़कर, उसको मरोड़कर अपनी इच्छानुसार विभिन्न तालों की चौकट में ठूँसनेवाले खाप्रुमाम की प्रचंड शक्ति देखते देखते दर्शक चकरा जाते थे। जानकार बताते हैं कि खाप्रुमामा का यह करतब देखनेवालों की आँखों के सामने अंधेरा छा जाता था। एक मात्रा को चौंसठ भागों में विभाजित करके उसे अलग अलग मात्रा में भरते जाना कितना विकट काम। किसी भी ताल में कितनी भी मात्रा भरते जाना, उसे करके दिखाते समय अलग अलग ताल मुँह से, हाथ, पैर ऐसे अलग अलग अवयवों से एक ही समय करके सम दिखाना यह अजब कारीगरी आज तक न किसी ने करके दिखाई है और यह सुनने में भी नहीं आया है ऐसा ताल के विद्वानों ने स्वीकार किया है।

ताल के अलग अलग प्रकार हम लोग केवल नाम से जानते हैं लेकिन उनका प्रयोग करके किसी ने भी दिखाया नहीं था। ऐसी आड़, कुआड़, दुआड़, भरतआड़, इनके समान अनेक दूसरी कितनी करामातें इतनी आसानी से करके दिखाते थे कि जानकार प्रेक्षक आश्चर्यचकित होते थे। उस समय के प्रख्यात पखावजी पांडोबा गुरव जैसे ने आनंदित होकर ऐसे उद्‌गार निकाले कि "हमने आज ब्रह्म देखा! अब मौत आये तो हर्ज नहीं।" काल की गति को नापने वाले, इससे भी ज्यादा तरल मानवी बुद्धि एवं मन के अलावा ऐसा अन्य कौन सा वजन-माप होगा? खाप्रुजी की बुद्धि ऐसे अज्ञात क्षेत्र में चमत्कारकर्त्री हुई और परंपरागत ताल में अपनी साधना के बल पर उन्होंने नयी-नयी खोज की, वृद्धि की। अल्लादिया खाँ जैसे संगीतज्ञ ने उन्हें 'लयभास्कर' की उपाधि से सम्मानित किया यह साधारण बात नहीं। बड़ी-बड़ी महफिलों में ताल-लय के अनेक प्रश्न खाप्रुमामा ने छोटे बच्चों के समान उत्साह से हल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


करके बताया। वे जब भी काल की गणना करने बैठते पैर या हाथ का ठेका शुरु होते ही घड़ी को भी अपनी शिथिलता मान्य करती पड़ती और अलग अलग मात्रा के चार ताल जब एक ही शरीर के चार अवयवों से दिखाकर सम पर आते तो बड़े-बड़े कलाकारों का, शास्त्रज्ञों का सारा अहंकार पिघल जाता और वे उनके पैर पर अपना मस्तक रखते। इतनी महान प्रतिभा का यह शास्त्रज्ञ, कलाकार कितना निरभिमानी था कि अहंकार लेशमात्र भी नहीं था, बालवृत्ति सरलता की कोई सीमा नहीं।

जिस दिन हम लोगों ने गोवा में सत्कार करके गोमंतक की ओर से 'मानपत्र' दिया उस दिन सबेरे-सबेरे यह व्यक्ति बदनपर एक ढीलाढाला कुर्ता, एक घुटने तक धोती, पैर में टूटी चप्पल और हाथ में एक गठरी इस वेश में हमारे घर आया। उन्हें देखकर मुझे कैसा लगा होगा इसकी कल्पना कीजिए। कार्यक्रम के लिये उन्हें सजाकर ले जाना पड़ा। मानपत्र लेते समय वे इतना घबड़ाये, शर्माये कि पूछो ही मत। हमेशा लोगों की भीड़भाड़ से दूर भागते, विज्ञापन से आलिप्त। प्रशंसा नहीं, कीर्ति नहीं। कोई देने लगे तो घबड़ा जाते थे जैसा की अपना कोई अधिकार नहीं। यह क्षेत्र अपना नहीं।

आज के अहंकारी कलाकार देखें तो खाप्रुमाम कितने पूजनीय लगते हैं। कलाकार माने तो इन्द्रिय की पूजा, विषय की आराधना आती है। व्यसन के बिना जैसे कला जीवित ही नहीं रहती। खाप्रुमामा की कला देखने के बाद तो ऐसा लगता है कि कला की साधना में इतर सब इच्छायें, शौक छोड़े बिना अत्युच्च कला की प्राप्ति नहीं होती है। जहाँ विरक्ति है वहीं कला का परमोत्कर्ष। विषयभोग ही नहीं, देहधर्म को भी जब कला उपासक भूल जाता है तो अंधेरे में नये प्रकाश से मार्ग उज्ज्वलित हो जाते हैं और नये क्षितिज अवलोकित हो जाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


खाप्रुमाम प्रारंभ में सारंगी बजाते थे, तबला बजाते थे। उसी का पेशा आगे चलाया होता तो स्व. दत्ताराम नानोडकर या कामुराव मंगेशकर से भी आगे जाकर सर्वसाधारण रसिकों का मनोरंजन करके लोकप्रियता व पैसा कमाया होता, लेकिन उन्होंने संशोधन का जो टेढ़ा मार्ग स्वीकारा उसमें लोकप्रियता व पैसा दोनों ही कठिन। आत्मविस्मृति के बिना ब्रह्मप्राप्ति नहीं। देहभान न रहने से ही भक्तों को परमेश्वर की प्राप्ति होती है। पैसों के मोह से अलिप्त होकर, विषय भोग से इन्द्रियों को निवृत्त कर जब कलाकार कला की उपासना में लीन हो जाता है तभी श्रेष्ठ कला अवतीर्ण हो जाती है। संगीत व वादन कला की नींव ही ऐसी है कि ताल व लय में नये नये शोध करके उन्होंने इस कला के क्षितिज को विस्तृत रूप दिया। उनकी 'सुदर्शन परन' से तज्ञ व्यक्ति परिचित हैं। उन्होंने की हुई खोज पुस्तक के रूप में होने पर ही इस शास्त्र की महिमा लोगों को मालूम होगी।

इनका असली नाम लक्ष्मणराव। लेकिन गोवा के लोग इन्हें 'खाप्रुमाम' कहते थे। खाप्रुमामा का उनको कितना अभिमान! इनके शिष्यत्वको गोवा के आसपास के सामान्य तबलावादक, मृदंगवादक भी अभिमान से स्वीकारते थे। हमारे देहात का अन्ना देवळी खाप्रुमामा का नाम सुनकर ही छाती फुलाकर कहता है 'मेरा यह ज्ञान माने खाप्रुमामा का प्रसाद है।' पर्वत पर पैर भी न रक्खे हों ऐसे तबलची भी खाप्रुमामा की परम्परा पर अपना हक बताते थे, तो श्रीमती मोगुबाई कुर्डिकर जैसी विख्यात गायिका ने उन्हें पिता समान मान दिया तो क्या आश्चर्य? कलाकारों के पास जो ईर्ष्या, द्वेष सामान्यतया रहते हैं। गोमंतक का कलाकार वह किसी भी क्षेत्र का हो, स्त्री या पुरुष, उम्र से छोटा, बड़ा या वृद्ध हो खाप्रुमामा उनको ऋषि के समान लगते हैं ये सत्य है। वैसे देखें तो उनका जीवन तपस्वी का ही हुआ। वैदिककालीन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


ऋषि ऐहिक वैभव से दूर रहकर तत्त्वचिंतन में अपना जीवन बीताकर मानव के लिये कल्याणप्रद सत्य इस संसार को देते हैं, उसी प्रकार खाप्रुमामा ने तालशास्त्र के नये खोज की धुन से संसार के सब सुख सुविधाओं की ओर से पीठ घुमाकर उच्च कला की आराधना करने में अपना जीवन बिताया और नये सत्य से संगीतशास्त्र संपन्न करके श्रेष्ठ कलाकार-शास्त्रज्ञ का अत्युच्च आदर्श महाराष्ट्र ही नहीं संपूर्ण भारत को दिया और वे पंचतत्व में विलीन हुये।

आश्चर्य की बात ये कि मृत्यु के कुछ दिन पूर्व उनकी सुधबुध खो गई थी लेकिन पूरे जन्म भर मन व इन्द्रियों को लगी घुन इतनी बड़ी लगी कि (उस निश्चेष्ठ अवस्था में भी) उनकी आत्मा ताल-लय की खोज में लगी थी और उनके हाथ पैर ताल दे रहे थे। इस तत्त्वज्ञ कलाकार का चरित्र अपने छोटे-बड़े कलाकारों को मार्गदर्शन दे यही परमेश्वर से प्रार्थना।

हैद्राबाद के घरानेदार उस्तादों ने कहा है –
"लय के क्षेत्र में आप सूर्य के समान दैदिप्यमान हैं।
"आफताबे मौसिकी"

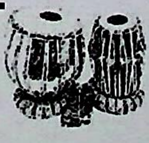

**साभार :** महाराष्ट्र के 'केसरी' के ललित लेखन में रविवार 27 डिसेंबर 1953 में आये लेख का अनुवाद पृष्ठ संख्या 9-10। श्री लक्ष्मणराव सरदेसाई नामांकित साहित्यकार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# लयभास्कर लक्ष्मणराव पर्वतकर जी की कलासाधना

– श्री रामकृष्ण पर्वतकर

गोमंतक के चन्द्रनाथ पर्वतपर मेरे पिताजी महर्षि खाप्रूजी पर्वतकर इनका जन्म हुआ। इस पर्वतपर बाईस छोटे से घर हैं। ये सब कलाकारों के हैं। उसमें से अधिकांश नामवंत कलाकार परमेश्वर चरण में लीन हो गये हैं। इस घर से आधे मील दूरी पर पर्वत के शिखर पर चन्द्रेश्वर (शंकर) का मंदिर है। यहाँ से पूर्ण गोवा का दृश्य सृष्टि सौन्दर्य से भरपूर, अत्यंत आल्हादकारक एवं रमणीय दिखता है। निसर्ग जैसे अपना दास होकर अपने पैर के पास क्रीडा कर रहा है ऐसा आभास होता है और ईश्वर के अस्तित्व की कल्पना तुरंत मन में स्वीकृत होती है।

मेरे दादाजी स्व. रामकृष्ण पर्वतकर, स्व. रघुवीर पर्वतकर, उनके शिष्य स्व. हरिश्चन्द्र पर्वतकर व शांबा पर्वतकर इनके पास ही मेरे पिताजी ने अपनी कला की प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की।

बचपन में पन्द्रह वर्ष की उम्र में विद्वान कलाकार ने हमारे पिताजी से प्रश्न पूछा "ताल के एक मात्र के चार विभाग (एक चतुर्थांश भाग) क्यों नहीं करते हो?" पिताजी ने उत्तर दिया "हो सकते हैं, चार क्या, सोलह विभाग भी हो सकते हैं परंतु बहुत प्रयत्न करके एक चतुर्थांश भाग का ज्ञान प्राप्त करना पड़ेगा।"

**एकलब्य के समान साधना** – उसी क्षण से अर्थात् उम्र के 16वें वर्ष से ही पिताजी ने तालशास्त्र की अत्यंत विकट साधना प्रारंभ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


की। धीरे धीरे उनको चार विभागों का पूर्ण ज्ञान हुआ। आगे स्वयं ही अपने गुरु बनकर दिन-रात प्रयत्न करके एक तप के बाद सोलहवें गुन के (एक बटे सोलह अंश (1/16) मात्रा का पूर्ण ज्ञान उन्होंने प्राप्त किया। त्रिताल के सोलह मात्रा में सात, नौ, दस, ग्यारह, तेरह, पन्द्रह व सत्रह मात्रा वे आसानी से भरकर दिखाते थे। आगे-आगे उनकी लगन बढ़ती गई। सर्व सामान्य रसिकों का मनोरंजन करके लोकप्रियता, कीर्ति, पैसा कमाना आदि से वे हमेशा निर्लिप्त रहे। लय क्षेत्र में अद्‌भुत चमत्कार करके, विद्या प्राप्त करके मरने के अंतिम क्षण तक संशोधन चालू रखकर उन्होंने विद्या आत्मसात् करने में अपना पवित्र जीवन व्यतीत किया।

जागृत अवस्था में ही नहीं निद्रावस्था में भी उन्हें तालशास्त्र की धुन लगी थी। आड़, कुआड़ गोआड़, भरतआड़ वह ब्रह्मआड़ ऐसे पाँचों ही लय प्रकार करीब करीब तीन तप साधना करके साध्य किये थे। ये नये नये सिद्धान्त आत्मसात् करने की इच्छा से उन्होंने गृहस्थी के सब उपभोग हमेशा के लिये दूर कर दिये थे। उनका यह रूप देखकर लोग उन्हें तुकाराम कहने लगे थे। 'ब्रह्मानंदी लागली टाळी। कोण देहाते सांभाली।' सच में उनके बाद के जीवन में उनकी ऐसी स्थिति हो गयी थी। पर्वत के जंगल में अपने नित्यकर्म करने जाते, उसी जगह घंटों लयानंद में लीन होकर बैठे रहते थे। घर के लोगों को उन्हें वहाँ जाकर लाना पड़ता था। मेरे बाद उन्हें एक लड़का और हुआ उसका नाम शिवनाथ रक्खा था। दैवयोग से उम्र के पाँचवे वर्ष में काल ने उसे छीन लिया। उसकी मृत्यु के समय हमारे पिताजी एक विशिष्ट लय हस्तगत करने में लगे थे। उनकी मित्र मंडली ने व मेरी माताश्री ने पुत्र को अंतिम क्षण मिलने का निवेदन किया। गाँव के सब लोग शिवनाथ के चारों ओर एकत्रित हुये थे। दुःख चरम सीमा पर था। परंतु पिताश्री की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



लय साध्य करने की एकाग्रता व तन्मयता इतनी जबरदस्त बढ़ गई थी कि उनका तन-मन सब लय क्षेत्र में विलीन हो गया था। "ये इतना बोल तैयार होते ही पाँच मिनट में मैं आता हूँ।" ऐसे बुलाने वालों को उत्तर दिया। शिवनाथ परलोक की एक एक सीढ़ी चढ़ रहे थे। इधर पिताजी कला देवता के मन्दिर की सीढ़ी चढ़ रहे थे। लयसाधना में आत्मरूप होकर ब्रह्मानंद प्राप्त कर रहे थे। पाँच मिनट में शिवनाथ का देह श्री चन्द्रेश्वर में लीन हो गया। इधर हमारे पिताजी ने साध्य करने के लिये जो विद्या ली थी वो उन्हें प्राप्त हुई। पुत्र के साथ उनकी भेंट नहीं हुई। इससे उनके अलौकिक रूप की कल्पना कर सकते हैं। भक्तिमार्ग में जैसे तुकोबाराय वैसे कलाशास्त्र में खाप्रुमाम हुये। गोमंतकीय कलाकार उन्हें खाप्रुमाम कहते थे।

पाँच साल पहले की बात है। पुणे में मैं हाइड्रोसिल की बिमारी से बीमार था। दो महीने मैं बिस्तर पर ही था। मैं जीवित बचूंगा ऐसी किसी को भी आशा नही थी। ईश्वर की कृपा से मेरा पुनर्जन्म हुआ। पिताजी तब मेरे बगल में ही सोते थे क्योंकि मैं पाँच वर्ष का था तो मेरी माँ परलोकवासी होने के कारण मैं मातृसुख से वंचित था। मध्यरात्री के आस पास 105 डिग्री तक बुखार चढ़ जाता था, नींद बिल्कुल नहीं आती थी। मैं तड़प रहा था ऐसी परिस्थिति में भी पिताजी हमेशा लय साधना में पूर्ण रूप से तल्लीन दिखते थे। मैं तड़प रहा था इसका उन्हें ध्यान ही नहीं था। अपनी तन्मयता और साधना के बल पर लयशास्त्र में नये नये असामान्य सिद्धान्त में बढ़त करते-करते गायन सम्राट खाँ साहब अल्लादिया खाँ द्वारा "लयभास्कर" यह महान उपाधि प्राप्त की।

**विनम्र और विरक्त वृत्ति** – ग्वालियर दरबार के मृदंगाचार्य स्व. पर्वतसिंहजी ने पिताजी के मानपत्र की कॉपी सिर पर लेकर "आज मैं धन्य हो गया! मैं यह विद्या प्राप्त नहीं कर सका तो भी भारतभूमि के दूसरे एक मेरे कलावंत बंधु ने यह असामान्य विद्या प्राप्त की इसका

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मुझे अभिमान है।'' ऐसे उद्‌गार निकाले। उनको लयभास्कर पदवी मिलने के दस दिन बाद वे गोवा जा रहे थे। रास्तें वे पुणे में रुक गये। संगीत चूड़ामणि श्री विनायकराव पटवर्धन जी ने अपने गांधर्व महाविद्यालय में उनका सत्कार किया। गौरव के समय उपाधि का ''मानपत्र'' देखने की इच्छा व्यक्त की। पिताजी जेब में खोजने लगे। काफी देर बाद किसी जेब में मुचड़ी हुई अवस्था में मानपत्र उन्हें मिला। उस मानपत्र का क्या वर्णन किया जाय? उस अनमोल मानपत्र की एकदम रद्दी हो गई थी। 'लयभास्कर' पदवी के मानपत्र की यह दुर्दशा देखकर श्री विनायकराव जी को बहुत दुःख हुआ। इस मानपत्र पर अल्लादिया खाँ, फैयाज खाँ, विलायत हुसैन, बी. आर. देवधर, जगन्नाथ बुवा पंढरपुरकर, मृदंगाचार्य माधव सिंह, मथुरा के पखावजी मख्खनजी, हबीबहुद्दीनजी, महाराष्ट्र संगीत विद्यालय के बाबूराव गोखले आदि अनेक कलातपस्वियों के हस्ताक्षर थे। परंतु कीर्ति का थोड़ा भी संपर्क नहीं चाहिये ऐसे माननेवाले पिताजी को मानपत्र की कैसी परवाह होगी। इस अनमोल मानपत्र के लौकिक संसार से अनेक गुना उच्च ऐसे उदात्त संगीत क्षेत्र में उनकी आत्मा घूम रही थी। वे कलादेवता के बहुत पास पहुँच गये थे।

सन् 1946 में आयु के करीब 65वें वर्ष में पुणे में श्रीमंत आबासाहेब मुजुमदार इनकी अध्यक्षता में पिताजी का सत्कार बहुत बड़े पैमाने पर हुआ। 'पुणे में ऐसा सत्कार किसी भी कलाकार का नहीं हुआ।' ऐसा पुणे के कलाकारों व रसिकों ने उस समय प्रशंसोद्गार निकाला था।

उस सत्कार के समय पिताजी ने भाषण दिया था। उससे उनके विनम्र स्वभाव की पहचान होती है। उन्होंने कहा ''ये मेरा सत्कार नहीं है कलादेवता का है। संगीत कलासागर में अनेक प्रकार के अमूल्य रत्न हैं। भगीरथ प्रयत्न से मेरे हाथ में एक दो मोती लगे हैं, केवल सेवा मानकर मैंने आपके सामने सादर प्रस्तुत किया है। 'काय म्यां पामरे,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


बोलावी उत्तरें। परि त्या विश्वंभरे बोलविले!' मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है। सर्वशक्तिमान दयाघन परमेश्वर की लीला अगाध है। केवल उसी की पूर्ण कृपा से व कलादेवता के वरद् हस्त से थोड़ी साधना मैं कर सका। भीतर स्वच्छ प्रकाश हुआ है। इस प्रकाश की सहायता से कलादेवता के मंदिर की सीढ़ियाँ मैं चढ़ सका। उत्तरोत्तर प्रकाश उज्ज्वल होता जा रहा है। इस असामान्य विद्या को मर्यादा नहीं है। कठिन विषय प्राप्त व आत्मसात करने का मेरा प्रयत्न दिन रात चल रहा है। जीवन के अंतिम क्षण तक मैं यह संशोधन कार्य चालू रखकर ब्रह्मानंद प्राप्त करनेवाला हूँ। इसके बिना मुझे मुक्ति नहीं मिलेगी। यही मेरा मोक्ष है। पुणे के कलाकारों व रसिकजनों ने कलादेवता का गौरव किया है इसके लिये मैं आपका अत्यंत ऋणी हूँ।''

यह भाषण देते समय पिताजी के आँखों से लगातार अश्रुधारा बह रही थी।

गोमंतक व मुंबई में इनके ऐसे अनेक सत्कार हुये जिसमें मानपत्र मिले। संगीत मार्तंड पंडित ओमकारनाथ ठाकुर जी ने भी सूरत में बहुत बड़े प्रमाण से इनका गौरव किया था।

**आनुवंशिक संस्कारों की विरासत –**

हमारे घराने में लयशास्त्र बहुत पुराना भी कह सकते हैं। मेरे दादा स्व. रामकृष्णबुवा पर्वतकर घुमट बजाने में अद्वितीय थे। ''ठीक से ताल पकड़ो, रुको! घबड़ाना नहीं'' ऐसा कहकर भरी सभा में पिताजी को भी गलत सिद्ध कर देते थे। मेरी मौसी स्व. दुलुबाई पर्वतकर स्व. भास्करबुवा की शिष्या थी। दत्तारामजी नानोडकर के समान नामांकित तबला वादक को भी ''आप कितना मीठा व कठिन बजाते हैं। लेकिन मुझे गलत कीजिये। इतना कठिन बजाइये कि मैं आसानी से गलती करुंगी। मेरी गलती होने पर ही मुझे सच्चा आनन्द मिलेगा।'' ऐसा वह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



भरी महफिल में उत्साहवर्धक आह्वाहन देती थी। "ठुमरी गायी जाय जो वह दुलुबाई द्वारा। ऐसे प्रशंसोद्गार उस समय पुराने कलाकारों के मुख से निकलते थे।

मेरे पिताजी बचपन से सारंगी बजाते थे। उनके पट्टशिष्य श्री दत्तारामजी पर्वतकर महाराष्ट्र में मशहूर हैं। इनके बड़े भाई स्व. बालकृष्ण पर्वतकरजी को पिताजी ने लय का ज्ञान दिया था। पिताजी के सारंगी वादन का एक चमत्कार मैंने सुना है। ऐसा कहते हैं कि मुँह पर बुरका डालकर वे सारंगी बजाते थे। बजाते समय सारंगी के साथ उनका शरीर भी ढाँका जाता था। सारंगीवादन सुनते समय ऐसा लगता था कि दो कुशल कलाकार दो समान सारंगी अलग अलग सुरों में बजा रहे हैं।

यह रहस्य क्या है उन्होंने कभी किसी को बताया नहीं। परंतु ऐसी कल्पना की जाती है कि वे स्वयं बहुत अच्छा गाते थे। उनकी आवाज अत्यंत सुरीली थी इस कारण सारंगीवादन के समान ही आवाज सुनाई पड़ती रही होगी।

एक बार मुंबई के अमान अली खाँ जी ने भरी महफिल में पिताजी से कहा "खाप्रुजी, मैं एक तराना गाता हूँ। उसकी मात्रा पहचानकर आप उसकी तिहाई लगाइये। मेरा तराना खतम होगा उसी समय आपकी तिहाई भी खतम होनी चाहिये। वह तराना मैं तीन बार गाऊँगा। तीसरी बार भी आप तिहाई नहीं लगा सकेंगे तो आप हार गये।" ऐसा आह्वाहन दिया।

"यदि मैंने कुछ तपश्चर्या की होगी तो तराने के पहली बार में ही तिहाई लग जायेगी। तराना शुरु कीजिये।" ऐसा उत्तर पिताजी ने दिया। तराना शुरु हुआ। पखावज हाथ में लेकर, पहली ही बार पिताजी ने तीन मुखड़े लगाये तराने की और तिहाई की सम एक साथ आई और प्रेक्षकों की ओर से "तोबा! तोबा! धन्य खाप्रुजी!" ऐसे उद्गार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


निकाले। खाँ साहब ने "हमारा दिल आपने खींच लिया।" ऐसा कहकर पिताजी को कसकर गले लगाया। एक बार पुणे में भी त्रिताल के एक आवर्तन में नौ, अठारह, चौबीस, व सत्ताईस मात्रा की चौपल्ली भरने के लिये सितारवादक मंगलप्रसादजी ने लगाई शर्त को एक क्षण में जीतकर वाहवाही प्राप्त की थी।

"एक ताल के बारह मात्रा में तेरह मात्रा समान प्रमाण में करके दिखाएगा वही सच्चा लयबाज" ऐसी व्याख्या एक कलाकार ने मुंबई में एक महफिल में की। तब पिताजी ने "तेरह क्या साढ़े तेरह मात्रा भी बारह मात्रा में भर सकते हैं।" ऐसा कहकर प्रत्यक्ष करके दिखाया। सवा गुन की सवा गुन भी तुरंत करके दिखाते थे। लयकारी करते समय वे समाधि में हैं ऐसा आभास होता था।

**ये सब उन्हीं की कृपा का फल –**

सव्वा सौ धा की धमार, चौताल व सवारी ताल की सुदर्शन परनें भी उन्होंने मुझे सिखाई है। उसी तरह पौने सोलह मात्रा का परब्रह्म ताल भी उन्होंने मुझे सिखाया है। एक एक परन तैयार करने में उन्हें एक एक साल लगा था। वे सब परन स्वयं बजाते समय मैं देहभान भूल जाता हूँ। धमार ताल की परन उन्होंने ग्वालियर के पर्वतसिंह के चिरंजीव माधवसिंह व मथुरा के मृदंगाचार्य मख्खनजी को सिखाई थी। उन दोनों ने वह परन याद की, बैठाई, परंतु महफिल में पिताजी के सामने वे परन बजाने की कभी हिम्मत नहीं करते थे क्यों कि उनकी मनोदेवता उन्हें कहीं वे गलती करेंगे ऐसा आभास देती थी। सृष्टि नियम के अनुसार पिताजी के आधे गुण मेरे भीतर आने के कारण मैंने परने तैयार करके कलकत्ता के संगीत परिषद में बजाकर दिखाई थी। धमार ताल के परनों का लेहरा बजाने के लिए "मैं" "मैं" कहनेवाले कलाकार बिल्कुल तैयार नहीं होते थे। परंतु भाग्यवश पंडित ओमकारनाथजी के पट्टशिष्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


व मेरे कलाकार बंधु प्रो. बलवंतराय भट्ट इन्होंने मेरे साहचर्य के कारण परिषद में 14 मात्रा का लेहरा बाँधा और उन्हीं के मजबूत लेहरे के कारण लय क्षेत्र का असामान्य ऐसा कार्य मुझे कलकत्ता के अखिल भारतीय संगीत परिषद में रसिकजनों के सामने प्रस्तुत करने में आसानी हुई। वादन चल रहा था उसी समय पंडित ओमकारनाथ जी ने 'सुनो! सुनो! क्या अद्‌भुत लयकारी है।' ऐसा कहकर श्री अनोखेलाल मिश्र, हबीबुद्दीन आदि कलाकारों को मेरे बगल में बैठाया। यह मेरे पिताजी व मेरे पूर्वजन्म के पुण्य का फल है ऐसा मैं समझता हूँ।

पंडित ओमकारनाथजी की कृपा से पिताजी की असामान्य कला उत्तर हिन्दुस्तान में अलग अलग जगहों पर मैं दिखा सका। हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि पंडितजी के नेतृत्व में भारत सरकार ने अफगानिस्तान में भेजे सांस्कृतिक मण्डल के साथ मैं काबुल जाकर आया। वहाँ इस विद्या का बहुत गौरव हुआ।

पंडित जी की कृपा से ही मुझे पंडित मालवीय जी के विश्वविद्यालय में संगीत प्राध्यापक की पवित्र जगह प्राप्त हुई। ऐसे इस श्रेष्ठ कलाकार को मेरा विनम्र प्रणाम।

अंतिम चार साल पिताजी गोवा में दूर रहने के कारण लयकारी के और अनेक प्रकार मैं सीख नहीं सका इस बात का रह रहकर मुझे दुःख होता है। उनका अधूरा कार्य अर्थात् भारत की जनता को इस कला की जानकारी करवाना, उसका संशोधन चालू रखना, इस महान व पवित्र कार्य का ईश्वरदत्त अधिकार मेरे पास ही रहने के कारण मैं पिताजी का नाम चिरस्थाई करके उनकी आत्मा को शांति देने का अटूट प्रयत्न करूँगा। परंतु मेरे पीछे परिवार की चिंता रहने के कारण कुछ सिद्धि मैं बिल्कुल साध्य नहीं कर सका। लय के प्रकार जो मेरे लिये एकदम असंभव थे वे पिताजी के आशीर्वाद से मैं साध्य कर सका। इससे भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कठिन लयकारी हस्तगत करने की मेरी इच्छा है लेकिन 'सावधान, सावधान! ऐसा उच्चार मेरे अन्तर्मन में होता है क्योंकि मेरे पाँच बच्चों को किसी का आधार नहीं हैं।

ऐहिक व सांसारिक सुख का त्याग करने से ही मोक्ष मार्ग सुलभ हो सकता है यह सच है। परंतु मैं इस सुख का त्याग कैसे कर सकता हूँ। पिताजी का प्रसाद रूप में रुपये में चार आना प्राप्त विद्या रसिकजनों को दिखाना यही मेरा कर्तव्य है और वही पिताजी का सच्चा स्मारक है। ऐसा मैं समझता हूँ।

धनुर्धारी में श्री रामकृष्ण पर्वतकरजी का परिचय प्रारंभ में दिया है -

(स्वर्गीय लक्ष्मणराव उर्फ खाप्रुमामा पर्वतकर इनके पुत्र श्री रामकृष्ण पर्वतकर ये अपने पिता की महनीय परंपरा आगे चलानेवाले श्रेष्ठ कलाकार हैं। सम्प्रति पंडित मालवीय जी के बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में संगीत के प्राध्यापक के रूप में कार्य कर रहे हैं। अपने पिताजी के अलौकिक व्यक्तित्व का और असामान्य कला साधना का उन्होंने जो परिचय दिया वह हमारे कलाप्रेमी पाठकों के लिये ज्ञानवर्धक होगा। खाप्रुमामा की यह अलौकिक विद्या ध्वनिमुद्रित हुई होगी ऐसा नहीं लगता है। उनके चिरंजीव से भारतीय नभोवाणी विभाग ने पर्वतकरजी के लयशास्त्र का अमूल्य संशोधन कम से कम जीवित रखने और चिरंतन करने की कोशिश करनी चाहिये।)

---

**साभार :** महाराष्ट्र के 'धनुर्धारी' दिनांक 6 मार्च 1954 में आये लेख का अनुवाद, पृष्ठ संख्या - 5 और 11 । स्व. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर खाप्रुमामा के सुपुत्र हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# लयब्रह्मभास्कर स्व. खाप्रुजी पर्वतकर

**– गोपाल कृष्ण भोवे**

कुशाग्र बुद्धि के बिना लय का अंतरंग पहचानना कठिन। स्वर कष्ट साध्य है परंतु लय जन्मजात होती है। बड़े-बड़े उस्ताद लय से घबड़ा जाते हैं। स्वर और लय पर जिनका अधिकार हुआ उन्हें संगीत का मर्म समझ में आया ऐसा कहना चाहिये। जीवनभर साधना करके स्वर अधिकार में आता है। सामान्य लय के अतिरिक्त लयकारी के चमत्कार उसे साधना कठिन होता है। ऐसे चमत्कार के लिये खून में लय का अंश होना अनिवार्य है और ऐसा जिनके पास है वे तुरंत ख्याति प्राप्त कर लेते हैं और लोगों के प्रिय बन जाते हैं।

केवल लय का अंतरंग ही नहीं, उसका निचोड़ निकाल कर ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिये उसकी गहराई में डुबकी लगाकर सिद्धि प्राप्त करके ताल को अपनी मुठ्ठी में रखनेवाला, साधना से असंख्य चमत्कार करनेवाले और लय का गहराई से गूढ़ तत्त्व जिसे समझ में आया ऐसा एक तपस्वी हाल में ही गोमंतक में हुआ। यह तपस्वी पहले के किसी रसिक संस्थानिकों के पास होता तो अमीर खुसरो, तानसेन, सदारंग या भगवान दास पखावजी के समान अमर हो जाता। उसका एक विद्यापीठ बनता। उसकी खोज पर ग्रंथ बनते। बाद की पीढ़ियाँ उपनिषद् के समान ग्रंथ सिर पर रखकर नाचतीं लेकिन कहते हैं न - जहाँ उगता है वहाँ बिकता नहीं.....("जिथे पिकते तिथे विकत नाही...." ।)

इस तपस्वी का नाम "लयब्रह्मभास्कर" स्व. खाप्रुजी पर्वतकर। खाप्रूजी ने शरीर में से प्राण निकलने तक अखण्ड रूप से लय की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


साधना की। वह करते समय किसी भी प्रकार की सांसारिक महत्त्वाकांक्षा नहीं की थी। उन्हें लय की शक्ति पर विजय प्राप्त करनी थी। वह प्राप्त करते समय शरीर का प्रत्येक अवयव लयलीन हो गया था। आध्यात्म की खाल उखाड़कर साधुओं ने जितना आसान रूप बनाकर मुमुक्षुओं को ज्ञान दिया था उसी प्रकार खाप्रुजी ने लयब्रह्म की विकटता को आसान करके सामान्य लोगों को समझा दिया।

लय के खाप्रुमामा एक संपूर्ण पंचांग थे। ग्रह ज्ञान की बारीकी के समान लय के सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंशों का ज्ञान उन्हें मालूम हो गया था। लयशास्त्र का इतना बड़ा विद्वान पूरे भारतवर्ष में अन्य कोई हुआ होगा, संदेह है। या ऐसा कोई हुआ ही नहीं ऐसा छाती ठोंककर कहें तो गलत नहीं होगा ऐसा विचार करने पर लगता है। जो उन्होंने किया वो व्यवस्थित ग्रंथ रूप में बनाकर रखना चाहिये था। लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा हुआ नहीं। इस कारण ऐसा एक पुरुष गोमंतक में हुआ था ऐसा कहने के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है। जिस पीढ़ी ने खाप्रुमामा को देखा, सुना वे भाग्यवान और जिन्हें उनका सानिध्य मिला वे वास्तव में बहुत बड़े भाग्यवान। मैंने खाप्रुमामा को पहली बार देखा वह प्रसंग जैसा का तैसा मुझे याद है।

शिमगोत्सव(होली) पूजा की पहली रात। पूर्णिमा के पूर्ण चन्द्र प्रकाश के साथ स्पर्धा करनें वाले चौदह बत्ती के लामण दिया (विशेष दिया) के जोरदार प्रकाश में "श्री भगवंता यादवांच्या राया हो"यह चन्द्रावल (विशेष गीत प्रकार) शुरु हुई। गाँव के और पंचकोसी के मेहमान वादक गोलाकार बनाकर खड़े हो गये। पांच छः घुमट, दो समेल, दो कांसाली, ट्रँगल, मृदंग, पखावज (अलग अलग प्रकार के ताल तथा लय वाद्य) को बजाकर 'भगवंता" शब्द पर सम दिखाकर गायन (सुवारी) शुरु हुआ।

उत्सव के लिए केवल घुमट बजाने के उद्देश्य से और उत्साह से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


आये अतिथि कलाकार ने अपना कौशल दिखाने के लिये धीरे से एक मुखड़ा लेकर परन बजाकर वह सम पर आया। दुर्भाग्यवश उसका मुखड़ा गलत हुआ। सम ठीक से नहीं आई। गाँव वाले सब हँसने लगे। अतिथियों का हँसने से अपमान हुआ। अतिथि और अन्य लोगों में वाद-विवाद शुरु हुआ। स्वाभाविक ही दो गुटों में वाद-विवाद काफी बढ़ गया। कुछ समझदार लोग आगे आये और कहा 'पूजा में बाधा मत डालो' कल सबेरे खाप्रुमामा को बुलाकर कौन सही है इसका निर्णय करेंगे। बजाना सशंकित मन से चालू रहा।

दूसरे दिन खाप्रुमामा गाँव में आये। सिर पर भूरे रंग की चपटी टोपी, बंद गले का पारसी फैशन का कोट, साधारण सी धोती और कोल्हापुरी चप्पल। वेष अत्यंत साधारण था। चेहरे पर की सफेद मूँछों ने प्रारंभ में ही ध्यान आकर्षित किया था और उनकी अर्धोन्मीलित आँखें साधनारत होने की साक्ष दे रही थीं। खाप्रुमामा ने निर्णय दिया वह सर्वसामान्य होकर उत्सव खुशी से आगे चलता रहा। यहाँ मैंने खाप्रुमामा का घुमट पर सवारी में (एक ताल प्रकार) सहज घुमनेवाला वजनदार हाथ सुना।

कालांतर में खाप्रुमामा के शिष्य श्री विश्वंभर पर्वतकर के विद्यालय में उनके लयकारी के प्रकार देखने-सुनने को मिले। लय यह क्या है इसकी समझ आने पर खाप्रुमामा की लयकारी के चमत्कारो के बारे में बहुत सुना था यह क्या है समझ में आने लगा। कार्यक्रम प्रत्यक्ष शुरु होने तक विशेष कुछ नहीं लगा लेकिन बाद में जो सुना और देखा उससे एकदम आश्चर्यचकित हुआ, मंत्रमुग्ध हुआ।

पांच 'धा' का चक्रदार, सात 'धा' का चक्रदार, आठ, नौ, दस, पंद्रह, बीस करते करते पैंतीस और चालीस 'धा' के चमत्कार उन्होंने विश्वंभर के तबले पर बजानेवाले ठेकापर बोलकर दिखाये। उसके बाद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सम, विषम मात्रा की जोड़ करना, घटाना, गुणा करना, भाग देना इत्यादि गणित के प्रकार भी उन्होंने दिखाये। दूसरी आश्चर्यजनक और असंभव बात माने स्वयं तबला हाथ में लेकर मुँह से चौदह मात्रा का बोल और हाथ से सोलह मात्रा का त्रिताल का बोल बजाकर दोनों को एक साथ सम पर लाना। लंबा चौड़ा एक त्रिपल्लवी का चक्रदार मुँह से उलटे क्रम से बोलकर, उसी समय हाथ से तबले पर सीधे क्रम से बजाकर दोनों एक साथ सम पर ले आये। उस समय महान आश्चर्य की अनुभूति हुई। मैं उस महान तपोनिष्ठ विद्वत्ता के सामने नतमस्तक हुआ। ऐसा चमत्कार आज तक हिन्दुस्तान में किसी ने किया ऐसा सुनने में भी नहीं आया। शायद आगे भी कोई करेगा इसमें संदेह है। क्योंकि खाप्रुमामा के समान चिन्मात्रस्वरूप कलाकार अनेक शतकों में एक ही बार जन्म लेते हैं और उन्हीं के साथ आश्चर्यचकित करनेवाली कला भी अस्त हो जाती है।

खाप्रुमामा का जन्मग्राम 'पर्वत'। किसी भी आधुनिक सुखसुविधा विहीन गोमंतक का 'माथेरान'। इस पर्वत के उच्चशिखर पर श्री चन्द्रेश्वर का स्वयंभू लिंग का एक छोटा सा मंदिर है। इस मंदिर के आसपास सोलह सत्रह खपड़ैल के घर। यही गाँव की बस्ती। जीवनोपयोगी सामान के लिये यहाँ के लोगों को चार मील टेढ़े-मेढ़े रास्ते से नीचे पारोड़ा गाँव में आना जाना पड़ता है। यहाँ के प्रत्येक घर ने श्री चन्द्रेश्वर की कृपा से असामान्य कलाकार दिये।

विख्यात गायिका दुलुबाई पर्वतकर यहीं की हैं। श्रीमती मोगूबाई कुर्डीकर यहीं की। हरिश्चन्द्र पर्वतकर उत्तम पखावज वादक हुये। शांबा पर्वतकर, रघुवीर पर्वतकर, बालकृष्ण पर्वतकर ने सारंगी जैसे कठिन वाद्य में अपनी निपुणता दिखाई। आज की पीढ़ी के दत्तारामजी पर्वतकर ने सारंगी में नाम कमाया। वे कलाकार पर्वत के ही हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


खाप्रुमामा का जन्म 1878 से 79 के आसपास पर्वतपर हुआ। उनका पालने का नाम लक्ष्मण। लेकिन उनकी मातोश्री लाड़ से खाप्रु कहती थीं। वही नाम प्रसिद्ध हुआ। प्रथम खाप्रुमामा सारंगी बजाते थे। पर्वत के कलाकार समाज में आठों प्रहर गायन, वादन और नर्तन चलता था। इस वातावरण में यहाँ बच्चे अपने आप तैयार होते थे। यहाँ बजने वाले सभी वाद्यों के साथ बच्चों के नाते जुड़ते थे। जिस भी वाद्य को हाथ लगाते थे वो वाद्य उनके वश में हो जातां था। रघुवीर पर्वतकर ये खाप्रुमामा के मामा व हरिश्चन्द्र व रामकृष्ण पर्वतकर इनके चाचा। इन तीनों से सारंगी, पखावज इनकी प्रारंभिक शिक्षा खाप्रुमामा को प्राप्त हुई।

तबले का शिक्षण लेते समय लड़के के मन में ऐसा विचार आया कि यदि सम प्रमाण में दुगुन, तिगुन, चौगुन कर सकते हैं तो यही नियम विषम प्रमाण में क्यों नहीं कर सकते? बुजुर्गों को यह प्रश्न पूछा तो उन्होंने ऐसे विषय पर ध्यान न देकर जो सरल है उसी का रियाज करने का उपदेश दिया, लेकिन खाप्रुमामा का समाधान नहीं हुआ। वे खोज में लग गये और नये साक्षात्कार में इतने मग्न हुये कि आते-जाते, उठते-बैठते, काम करते समय, खाते-पीते "देतां देतां वदनि वदतां ग्रास गिळितां?" घरी दारी सबका अस्तित्व भूलकर अनेक पहेलियां हल करने लगे। स्वयं को भूल गये, लय लीन हो गये। ताल शास्त्र का एक एक कूट प्रश्न लेकर दिन-रात सप्ताह-सप्ताह महीना-महीना उस पर विचार करके उस पर सिद्धान्त बांधने लगे।

सन् 1919 में पं. विष्णु दिगंबर पलुस्करजी ने आयोजित किये संगीत परिषद में खाप्रुमामा ने अपने लयशास्त्र की कठिन पहेलियों को सुलझाने का पहला कार्यक्रम दिया था। उस समय वहाँ उपस्थित हिन्दुस्तान के अनेक विद्वान तबलावादक एवं पखावजवादकों ने खाप्रुमामा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


को प्रणाम किया। अपने को इस विषय के अतिविद्वान समझने वाले इंदौर के ख्यात नाम श्री नाना पानसे के शिष्य श्री पांडोबा गुरव वाईकर ने पूछी फरमाइश का आसानी से मिले उत्तर को सुनकर "खाप्रुजी, आप अद्वितीय हैं। इस कला का वास्तविक साक्षात्कार आपको हुआ है।" ऐसे उत्साहवर्धक उद्‌गार पांडोबा गुरव ने निकाले।

सन् 1921 में पं. भास्कर बुवा बखले द्वारा आयोजित महफिल में खाप्रुमामा ने लयकारी के अनेक प्रकार दिखाकर महफिल में रंग भरा तब स्वयं भास्कर बुवा व बखलेजी ने "खाप्रुजी, लयशास्त्र में आप ईश्वर हैं।" ऐसा मानपत्र उन्हें दिया।

सन् 1933 में मुंबई में एक बहुत बड़ी महफिल हुई। संगीत सम्राट खाँ साहेब अल्लादिया खाँ, खाँ साहेब विलायत हुसैन खाँ, आफताबे मौसिकी फैयाज खाँ और भारत के अन्य नामी गायक, वादक, तंत्रकार व तबला वादक इस महफिल में हाजिर थे। उपस्थित तबला वादकों ने मजाक उड़ाने के लिये "आप बारह मात्रा के तेरह समान भाग करके बारह मात्रा के लय में ठेका बांधिये ऐसी चुनौती दी।

खाप्रुमामा ने इस तरह के कार्य अपने आप ही करके देखे थे। उन्हें यह बात बिल्कुल कठिन नहीं लगी। उन्होंने तेरह मात्रा में ठेका निबद्ध किया और तेरह मात्रा के वजन में 'तिहाई' लगाकर उसे पूरा किया। उस समय मजाक करनेवाले तबलावादक आश्चर्यचकित तो हुये लेकिन संगीत सम्राट अल्लादिया खाँ साहब ने "तोबा! तोबा! धन्य हैं आप! आपके ज्ञान के सामने सौ बार सिर झुकाता हूँ।" ऐसे उद्‌गार निकाले।

खाँ साहेब अमानअली ऐसे ही एक महफिल में बोले थे "अमा, हमारी आखी जिंदगी आप की लय की हवा में घूमती रहेगी" साढ़े तेरह मात्रा के ठेके में 'तीन धा' की तिहाई डालकर खाप्रुमामा ने उस महफिल में ठेका बांध दिया था। वहाँ हैद्राबाद के एक तबलावादक ने खाप्रुमामा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


के पैर पर अश्रुपूर्ण आँखों से सिर रक्खा था। सन् 1935 में श्रीमती मोगूबाई कुर्डीकर जी ने खाप्रुमामा का एक पुतला तैयार करवाकर समारंभ में उन्हें अर्पित किया था। उस समय हैद्राबाद के कुछ घरानेदार उस्तादों ने खाप्रुमामा की लय की योग्यता का विश्लेषण करके "लय क्षेत्र का चमकने वाला सूर्य" (आफताबे मौसिकी) ऐसा उनका गौरव किया। सन् 1939 में मुंबई के कलाकारों ने जो उनका सत्कार किया वो उनके जीवन की साधना का गौरव था।

सारंगी, गायन, पखावज इनमें खाप्रुमामा पारंगत थे। उनके सारंगी के भी शिष्य हैं। लयकारी की धुन में अन्य विषय छोड़ दिये। तालब्रह्म में लीन हो गये। एक लय लेना, उसकी आधी, पौन गुन, सवा गुन, डेढ़ गुन, पौने दो गुन उसमें आधी मात्रा मिलाना, पाव मात्रा मिलाना ऐसे करते करते लय के प्रकार बनाते बनाते इस तपस्वी ने अपना शरीर अर्पित किया। ये करते समय सुध बुध खो बैठे। भूख प्यास भूल गये, स्नान करने जाते थे तो पानी में लोटा डालते डालते कुछ हिसाब ध्यान आता। ऐसा होने पर अपना गीला शरीर पोंछने का भी ध्यान नहीं रहता था, गीला वस्त्र वहीं पर छोड़कर नग्न अवस्था में बाहर आते थे "आर्किमिडिस" की तरह। अंत अंत में जांध पर, पैर पर, छाती पर, मस्तक पर जहाँ सुलभ होगा वहाँ ताल बजाते मात्रा भरते बैठना यही उनकी दिनचर्या हुई।

पौने सोलह मात्रा का 'परब्रह्मताल' यह उनकी 'एकमेवाद्वितीयम्' ऐसी निर्मिती थी। यह ताल खाप्रुमामा ने अष्टांग परिपूर्ण किया। इस पौने सोलह मात्रा के ताल में एक सौ पच्चीस 'धा' की 'महासुदर्शन' नाम की तालशास्त्र की अत्यंत कठिन परन निबद्ध की। ताल ज्ञाता लोगों ने उसे सुनने के बाद 'नेति नेति' ऐसे उद्‌गार निकालकर प्रणाम किया। इस चमत्कार से उनकी संपूर्ण भारत में प्रसिद्धि हुई। इस ताल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


को परिपूर्ण करते समय इस महापुरुष का पूर्ण शरीर (रंध्र न रंध्र) लय मग्न हुआ था। गाढ़ी निद्रा में भी जमीन पर उनके हाथ महासुदर्शन परन में घूमते थे।

हजारों मुखड़े उन्हें कंठस्थ थे। स्वयं सैकड़ों गतें, रेले, तोड़े व परन बांधे थे। उनके ताल प्रकार के बारे में बोलने लगे तो महाभारत के समान ग्रंथ लिखना पड़ेगा। मन से वे अत्यंत उदार थे। किसी ने एक मुखड़ा या बोल मांगा तो प्रेम से उसे चार पाँच मुखड़े व गतें सिखाते थे। उसे समझाकर वे अच्छी तरह से समझ में आने तक परिश्रम करते थे। उन्हें विद्या माँगनेवाला चाहिये था। अपना ज्ञान कोई चुरायेगा ऐसी गलत धारणा उन्हें नहीं थी। जिसने-जिसने माँगा उसे-उसे मुक्त मन से दिया। जैसे ज्ञानी थे वैसे दानी भी थे। पं. रामसहायजी जैसे बनारस घराने को जन्म देने का उनका सामर्थ्य था। परंतु पं. रामसहायजी के साथ सब बनारसवाले खड़े हुये वैसे खाप्रुमामा के साथ नहीं हुआ। सिद्ध पुरुष कहकर पं. रामसहायजी को जैसे पूज्य स्थान मिला वैसा खाप्रुमामाजी के जीवन में घटित नहीं हुआ। उनकी साधना का गौरव हुआ लेकिन वह गौरव हवा में विलीन होनेवाला था। चिरस्थाई स्वरूप में रहे ऐसा कुछ घटित नहीं हुआ।

ऐसा यह लयब्रह्मभास्कर स्वभाव से अत्यंत प्रेमी और नम्र था। रास्ते पर मुलाकात होती तो कुशलक्षेम पूछे बिना आगे नहीं जाते थे। बोलते बोलते भी वे लयमग्न हैं ऐसी उनकी आँखों से आभास होता था। ऐसे समय मुँह के पान का रस उनके शरीर पर गिर रहा है उसे बताने पर कचरा हटाने जैसा झटका देकर धीरे धीरे उँगलियों की हलचल करते करते आगे जाते थे।

परसों थिरकवा साहब ने कहा "ओ तो लय का औलिया था।" यंग इंडिया ग्रामोफोन कंपनी ने उनकी कुछ ध्वनिमुद्रिकायें बनाई थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


आज जिनके पास वो होंगी उनके पास अमूल्य धन है। यंग इंडिया कंपनी अब अस्तित्व में नहीं है। अतः ध्वनिमुद्रिका भी समाप्त हो गई।

मरने के पहले खाप्रुमामा सुध-बुध खो बैठे थे। उनके पेट में दवा भी नहीं जाती थी। लेकिन शरीर लय का कोई गूढ़ प्रश्न हल करने में लगा था। होठों की अज्ञात हलचल हो रही थी। अपने निर्माण किये सिद्धान्त, प्रमेय व लय के गहन चमत्कार साथ लेकर तारीख तीन सप्टेंबर 1953 को इस अभिजात, अजोड़, ऋषितुल्य कलाकार की आत्मा लय रूप में विलीन हो गयी। उनका असामान्य कर्तृत्त्व उनके साथ अंतर्धान हो गया। युग की शक्ति युग के साथ ही अंतर्धान होती है वैसी।

स्व. भास्कर बुवा बखले ने कहा है –
"लय के क्षेत्र में आप ईश्वर हैं।"

साभार : "कलात्म गोमंतक" (1972) पुस्तक से प्राप्त लेख का अनुवाद, पृष्ठ संख्या 30 से 38। स्व. गोपाल कृष्ण भोबे - कुशल संगीतकार, संगीत लेखक, समीक्षक, चित्रकार, साहित्यकार आदि अनेक गुणों की खान थे। ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# लयभास्कर खाप्रुजी पर्वतकर

**– माधव गडकरी**

गोमंतकीय स्त्रीकलाकार संबल में श्री0 भोबे लिखित कहानियों का स्मरण करते करते मैं खड़ा था एक लयभास्कर के घर के दरवाजे के पास —'चन्द्रनाथ पर्वतपर। पारोडा के चन्द्रनाथ का दर्शन किया और पर्वत गाँव में चहलकदमी कर रहा था। किसी ने कहा, "लयभास्कर खाप्रुमाम यहीं रहते थे, यहीं इनका घर है, यहीं इनका स्मारक है। क्षणभर ऐसा आभास हुआ कि उस पर्वत के माटीसे तबले के बोल सुनाई पड़ रहे हैं। गोवा पद्धति का एक खपरैल का सादा-सा घर, सामने बरामदा और अन्दर पाँच कमरे। लय भास्कर जिनका नाम संगीत के क्षेत्र में चमक रहा था उन खाप्रुजी पर्वतकर का यही जन्म हुआ और यहीं निधन।

खाप्रुजी के घर के अंदर मैंने प्रवेश किया और घूम घूम कर दीवार पर लगे पुराने चित्र देखे, कुछ एकत्रित कर अपने साथ ले भी आये। उन चित्रों का अवलोकन करते हुए ऐसा आभास हो रहा था कि गोवा की संगीत परंपरा के पृष्ट खुल रहे हैं।

लयभास्कर खाप्रुजी पर्वतकर ने तबलावादन में असंख्य चमत्कार करके दिखाए। आखिर ये खाप्रुमाम है कौन? यह प्रश्न हर समय मेरे मानसपटल पर रहता था। मैं वहीं पर उनका चित्र ढूँढने लगा। सिर पर भूरे रंग की टोपी, बंद गले का पर्सियन कोट, धोती एवम् कोल्हापुरी चप्पल चेहरे पर आकर्षक सफेद मूँछे "ऐसा उनके व्यक्तित्व का वर्णन स्व. गोपालकृष्ण भोबे ने अपनी पुस्तक कलात्म गोमंतक" में किया है।

1878-79 के आसपास उनका जन्म। प्रारंभ में खाप्रुजी सारंगी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



ही बजाते थे। पर्वत गाँव के कलावंत समाज में घर-घर में नित्य गायन वादन चलता था। इससे खाप्रुजी को भी अपने आप संगीत में रुचि पैदा हुई, और उनका संगीत क्षेत्र में पदार्पण हुआ। उनका मन संगीत के स्वर से अधिक लय में रमने लगा स्वर अभ्यास से आत्मसात कर सकते हैं लेकिन लय जन्मजात प्राप्त होती है। खाप्रुजी पर्वतकर जी के मन और हाथ की ऊँगलियों में लय साकार हुई थी। सारंगी और पखावज बजाते बजाते खाप्रुजी के हाथ में तबला आया और इस वाद्य से जैसे उन्हें लय का साक्षात्कार हुआ। "यदि लय की समप्रमाण में दुगुन, तिगुन, चौगुन कर सकते हैं तो यही विषम प्रमाण में क्यों नहीं कर सकते?" यह प्रश्न उनके मन में आया और वहीं लयभास्कर का जन्म हुआ। उनका पूर्ण शरीर, पूर्ण व्यक्तित्व इस लय में इतना लीन हुआ कि कहीं वे पागल तो नहीं हो रहे हैं ऐसा उनके परिवार वालों के मन में डर का निर्माण हुआ।

खाप्रुजी पर्वतकर के कर्तृत्व का पहला प्रदर्शन सन् 1919 में पंडित विष्णु दिगंबरजी द्वारा आयोजित संगीत परिषद में हुआ। ताल शास्त्र की कुछ कठिन पहेलियों को लोगों के सामने उन्होंने सुलझाया। उसे सुनकर भारतवर्ष के अनेक तबलावादक और पखावज वादक खाप्रुमाम के सामने नतमस्तक हुए। सन् 1921 में पंडित भास्कर बुवा बखलेजी द्वारा आयोजित महफिल में खाप्रुजी पर्वतकर ने चित्रकार के समान लीला प्रकट की तब भास्कर बुवा बखलेजी ने कहा "लयशास्त्र में आप प्रभु हैं।" सन् 1933 में उत्तर भारत के गायकों ने उनकी सत्त्वपरीक्षा ली। मुंबई में एक बड़ी महफिल में संगीत सम्राट अल्लादियाँ खाँ साहेब, विलायत हुसेन खाँ, फैयाज खाँ जैसे नामवंत गायक और उनके साथीदार नामांकित तबलावादक एवम् तंत्रवादक उपस्थित थे। उनमें से किसी एक ने खाप्रुजी का मजाक उड़ाते हुए कहा "बारह मात्रा के तेरह समान विभाग करके बारह मात्रा की लय में ठेका बाँध लीजिए। खाप्रुजी ने तुरन्त तेरह मात्राओं में ठेका निबद्ध किया और उसमें तिहाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


बजाकर ठेका पूरा कर दिया। संगीत सम्राट अल्लादिया खाँ साहेब द्रवित होकर "तोबा तोबा" कहते हुए उनके पास गए और बोले "आप के ज्ञान के सामने सौ बार सिर झुकाता हूँ। एक बार एक महफिल में साढ़े तेरह मात्रा के ठेके में तीन धा की तिहाई डालकर ठेका बाँध दिया था। एक लय लेकर उसकी आधी, पौन, सवा, डेढ, पौने दोगुन करके उसमें आधी मात्रा मिलाना आदि उद्यम करते रहते थे। यह विषय मेरी बुद्धि के लिये अनाकलनीय है इसलिए गोवा के कुछ अच्छे तबलावादकों से उसे समझने का प्रयत्न किया। अनेकों ने प्रयत्न किया, कुछ कलाकारों ने विभाग करके दिखाया। और "इसके आगे हमलोग नहीं कर सकते हैं, इसीलिये खाप्रुमाम महान हैं।" कहकर रुक गए।

पौने सोलह मात्रा का "परब्रह्म ताल" उनकी अपूर्व रचना है। यह ताल उन्होंने अष्टांग परिपूर्ण किया। इन पौने सोलह मात्रा के ताल में 125 धा वाली 'महासुदर्शन' नामक एक अत्यंत कठिन "परन" की रचना उन्होंने की। आगे संगत करना यह उनका कार्यक्षेत्र रहा ही नहीं परंतु लय के टुकड़े टुकड़े से दिन-रात खेलते रहना यही उनका व्यसन रहा। कभी कोई सीखने आ गया तो अपने संग्रह के हजारों मुखड़ों में से कुछ मुखड़े दे देते थे। उत्तर भारत में जब दो घरानों में आपस में विवाह होता था तो भेंट के रूप में कुछ खास बंदिशे दी जाती थी। यह कल्पना ही कितनी भव्य है। खाप्रुजी पर्वतकर मुंबई या गोवा आते जाते मुखड़े बाँटते रहते या अपने पसंद की लय के साथ खेलते रहते थे। तबला के एक घराने का जन्म खाप्रुजी द्वारा हुआ लेकिन वह घराना पल्लवित या पुष्पित नहीं हुआ क्योंकि इस क्षेत्र में तपश्चर्या करनेवाले तबला वादक ही नहीं थे। सन् 1936 में श्रीमती मोगुबाई कुर्डीकर ने खाप्रुमाम का एक पुतला तैयार करवाया और उनको सम्मान के साथ भेंट रूप में दिया। उस समय हैदराबाद के घरानेदार उस्तादों ने खाप्रुजी को "आफताबे मूसिकी" (लयक्षेत्र में जगमगाता सूर्य) उपाधि से सम्मानित किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


1939 में मुंबई में कलाकारों ने उनका सम्मान किया। "यंग इंडिया" नामक ग्रामोफोन कंपनी ने उनकी कुछ ध्वनि मुद्रिकाएँ भी बनायी लेकिन वे अभी समाप्त होने के समान ही हैं। 3 सितम्बर 1953 में यह लय भास्कर अपने पर्वतपर ही कलाकारों की भूमि में अस्त हुआ।

"वह तो लय का औलिया था।" ऐसा वर्णन थिरकवाँ साहेब ने किया है। उनकी स्मृति तुलसी वृंदावन के रूप में आज भी खड़ी है।

आज भी "धाक् तिक्, तिक् धा, तिक् धा" तबले के बोल संपूर्ण वातावरण में गूँज रहे हैं ऐसा वहाँ वहाँ खड़े रहने पर आभास होता है।

गोवा के कलामय जीवन को जिसने लय दी, ताल दिया, श्रोताओं की रसिकता को मुखड़ो का मोल दिया उस लयब्रह्म भास्कर खाप्रुजी पर्वतकर की कल विस्मृति भी हो सकती है।

चन्द्रनाथ पर्वत उतरकर मैं नीचे आ गया था। वहाँ के चन्द्रनाथ को मैं क्षणभर भूल गया था। ऐसा आभास हो रहा था कि महफिल अभी भी चल रही है और खाप्रुजी पर्वतकर आज भी शायद संगत करने हेतु बैठेंगे।

स्व. गोपाल कृष्ण भोवे ने कहा –
"खाप्रुमामा लय के संपूर्ण पंचांग थे।"

साभार : "असा हा गोमंतक" (1975) पुस्तक पृष्ठ संख्या 199 से खाप्रुजी पर्वतकर के बारे में प्राप्त जानकारी का अनुवाद। लेखक - श्री माधव गड़करी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# लय ब्रह्म के सर्वश्रेष्ठ उपासक योगीराज स्व0 खाप्रुमाम पर्वतकर

**– डॉ. ना. र. मारुलकर**

गोधूलि की बेला थी। मैं अपनी शिष्या को राग मारवा सिखा रहा था। "मारवा राग में ऋषभ धैवत की स्थिति, श्रुतितंत्र की दृष्टि से ये स्वर किस तरह लगाने चाहिए, राग का स्वरूप शुद्ध रखने के लिए स्वरों को भी लय की अतिशय आवश्यकता होती है। कौन-सा स्वर कितनी देर तक लगाना चाहिए इस पर हमारे राग का रूप निर्भर करता है। किसी एक राग में कोई विशिष्ट स्वर कम या अधिक देर तक लगाने से एक नये राग की उत्पत्ति हो जाती है। इसलिए हमारे शास्त्रीय संगीत में स्वर एवम् लय दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं। इतना ही नहीं गायकी में सौंदर्य एवम् उसमें संतुलन लयपर ही निर्भर है।" .....यह सब मैं अपनी शिष्या को समझा रहा था। उसी समय मेरे अभिन्न मित्र श्री0 रामकृष्णबुवा पर्वतकर मेरे घर आए। उनके साथ एक साठ वर्षीय वृद्ध गृहस्थ थे। पर्सियन पद्धति का बंद गले का लम्बा कोट, पुरानी सी काली टोपी, एवम् सफेद धोती -इस वेशभूषाा में आपने मेरे घर में प्रवेश किया।

ये सज्जन रामकृष्ण बुआ के कोई गाँव वाले या कोई दूर के रिश्तेदार होंगे आदि विचार मेरे मन में आ रहे थे। रामकृष्ण बुआ तो प्रतिदिन मेरे घर आया करते थे परन्तु ये वृद्ध सज्जन मेरे घर पहली बार आए थे। अपने आसन से उठकर मैंने उनका यथोचित आदरपूर्वक स्वागत करके उन्हें आसनस्थ किया। रामकृष्ण बुआ ने "ये मेरे पिताजी" कहकर परिचय कराया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


अल्लादिया खाँ साहेब जैसे ज्ञान सम्राट से जिन लयब्रह्म के सिद्धपुरुष के संबंध में, जिनके लयचमत्कार के बारे में मैं बचपन से सुनता आ रहा था, थिरकवा खाँ साहेब जैसे तबलासम्राट अपना कान पकड़कर जिनके नाम का उच्चारण करते थे, मृदंगवादन में पण्डित बलवन्तराय बाटवे जैसे सर्वश्रेष्ठ कलाकारों से जिनकी लयसाधना का गौरव सुनता आ रहा था, वे महान योगिराज मेरे घर आकर मेरे सामने बैठे थे, मैं धन्य हो गया था। जिन्दगी में ऐसे ही कुछ महत्त्वपूर्ण क्षण आते हैं कि उनका स्मरण हम आजन्म करते रहते हैं। लयभास्कर स्व0 खाप्रुमामा की वह पहली मुलाकात मेरे लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण थी। रामकृष्ण बुवा ने मेरे बारे में जरुर कुछ अच्छा कहा होगा क्योंकि उस दिन से वे निरंतर मेरे घर बहुत ही प्रेम से आने लगे। उनके रूप में एक ऋषितुल्य अभिभावक का लाभ मेरे लिए बहुत सुखदायी था।

मैंने बचपन में सांगली में स्व0 गुरुवर्य मोरोबुवा मोहिते जी से ध्रुपद गायकी की तालीम ली थी। उससे लय और लयकारी से थोड़ा परिचय हुआ था। कुछ लयकार तबलावादक मेरे स्नेही बने। उनके सान्निध्य में मैंने भी लयकारी का अभ्यास शुरु किया। रामकृष्ण बुवा पर्वतकर के स्नेहिल सानिध्य से "लयशास्त्र" कितना कठिन है इसका साक्षात्कार होने लगा। स्वयं रामकृष्णबुवा सूक्ष्मातिसूक्ष्म लयकारी हँसते खेलते सहज करते थे और कहते थे, "मेरे पिताजी के ज्ञान भंडार में मेरा यह ज्ञान रुपये में एक पैसा भी नहीं है।" लयकारी का अभ्यास मैं भी कर रहा था क्योंकि संगीत शिक्षण में उसका उपयोग भी होता था।

लयशास्त्र का ज्ञान होने से संगीत में सौन्दर्य का प्रादुर्भाव होने लगा है यह मुझे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। गायन कला में गहरी रुचि रखनेवाले को लयशास्त्र का भी अध्ययन एवम् अभ्यास करना चाहिए। इस तरह विचार मन में आ रहे थे —संयोग कहिए -उसी समय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



"परब्रह्म" मेरे घर अवतरित हुए। उस समय 'परब्रह्म आए गृही" ऐसी मेरी आनन्दावस्था हुई।

गोमंतक की सुजलाम् सुफलाम् भूमि ने संगीत क्षेत्र में अनेक अभिमानास्पद कलाकार सृजित किए हैं इस बहु प्रसवा भूमि ने धनधान्य की उपज के समान कलावंतों की उपज भी अपने अनंत हाथों से हमलोगों को दी है।

गोमंतक के एक पहाड़ पर "चंद्रेश्वर पर्वत" नामक एक गाँव है। जहाँ 20-25 परिवार रहते थे। इसी गाँव में लक्ष्मणराव उर्फ खाप्रुमाम का जन्म हुआ। उस समय गोमंतक में घर घर में संगीत साधना चलती थी। लयवाद्य में "घुमट" नामक चर्मवाद्य को अग्रपूजा का मान दिया जाता था। गोमंतक के प्रत्येक मंदिर में "घुमट वादन एक अति आवश्यक संस्कार के रूप में किया जाता था। अनेक कलाकारों ने इस वाद्य की मनःपूर्वक साधना की है। खाप्रुमाम ने भी अपनी साधना की शुरुआत इसी वाद्य से की है। और इसी साधना में सर्वश्रेष्ठ घुमट वादक होने का सम्मान भी प्राप्त किया है, नृत्य में तत्कार और तबले के कुछ बोल इतनी ही सामग्री से घुमटवादकों ने लयकारी का विश्व उज्ज्वलित किया। कायदे, लग्गी, आड़, अनागत आदि अनेक प्रकार के आश्चर्यजनक वादन के प्रकार सुनाकर उन्होंने तत्कालिन रसिकों का अचम्भित कर दिया। खाप्रुमाम इन सब कलाकारों के सम्राट थे। एक कुशल नर्तिका के समान खाप्रुमाम का घुमट वादन भी शानदार हुआ करता था। उन्होंने तबला, मृदंग और सारंगी बजाने का भी अभ्यास किया। विभिन्न राग एवम् विभिन्न तालों का प्रयोग करके अनेक तरानों की रचना की। श्रीमती मोगुबाई कुर्डीकर जैसी श्रेष्ठ गायिका को ये तराने सिखाए। साढ़े चौदह, साढ़े पंद्रह मात्राओं के तालो में रचित अनेक तराने उन्होंने अपने सुपुत्र रामकृष्णबुवा को भी सिखाए थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


गोमंतक के कुछ विद्यर्थियों को सारंगी भी सिखायी थी। खाप्रुमाम रचित एवम् मोगुबाई द्वारा गायी हुई ध्वनिमुद्रिकाएँ भी बनी हुई हैं।

ये सब करते हुए उनका मन सिर्फ लयकारी में ही तल्लीन हुआ करता था। आगे चलकर वाद्ययंत्र एवम् वादन उनके लिए गौण विषय बना और लय एवम् उनके सूक्ष्म विभाग में संशोधन करना यही एक धुन उन्हें लगी थी। और इसी धुन ने उन्हें जीवनभर साथ दिया। लयभास्कर की इस धुन से सारी लयसृष्टि उज्ज्वलित हुई और लयब्रह्म साकार हुआ। खाप्रुमाम ने अपने पिताजी स्व0 रघुवीर पर्वतकर जी से तबलावादन सीखा था। "लय" श्री खाप्रुमाम के जीवन का स्थायी भाव बन गया था। मैंने जब भी उन्हें देखा लयतत्व के शोधकार्य में ही लीन होते हुए देखा। कभी अन्य विषयपर बातचीत करते समय अचानक रोककर कहते थे, "अब इस लय की मजा देखिए।" कहकर अनाकलनीय लयकारी करके दिखाते थे।

कुछ विद्वान लयकारों से मैंने सवाई, देड़की, आड़, कोआड़ जैसी लयकारियाँ सुनी थी। परन्तु खाप्रुमाम की नजर में इन्हें कोई स्थान नहीं था क्योंकि उसके आगे गोआड़, भरत आड़ और सुदर्शन आड़ जैसी लयकारी उन्होंने स्वयं की है। लय की विकट फर्माइश वे तुरन्त करके दिखाते थे। किसी एक ताल में दूसरा ताल बजाकर दोनों की सम एक साथ लाना, एक हाथ से एक ताल, दूसरे हाथ से दूसरा ताल, दोनों पैरों से दो विभिन्न ताल, मुँह से पाँचवा ताल और तबले पर छठा ताल ..... और सब की सम एक साथ लाना यह लयकारी का काम सिर्फ खाप्रुमाम ही कर सकते थे। लय के अंश उस अंश के पुनः अंश खाप्रुमाम समझाते थे। और स्वयं करके दिखाते थे। किसी रँगलर (गणितज्ञ) के लिए अनाकलनीय यह गणित पाठशाला में एक या दूसरी कक्षातक अध्ययन किए हुए खाप्रुमाम जैसे कलाकार ही अति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सरलतापूर्वक हल कर देते थे। लयकारी के संबंध में कठिन विकट, अशक्य ये शब्द उनके शब्दकोष में नहीं थे। लयकारी उनका अंगीभूत स्वभाव बन गया था। सारा जीवन लय के साथ एकरूप हो गया था। सच्चे अर्थ में लय ही उनका श्वास हो गया था।

खाप्रुमाम की महान लयविद्या उनकी अपनी कमाई थी। यह विद्या गोमंतक के लिए विशेष गौरव का विषय है। भविष्य के लिए इस विद्या का संरक्षण होना आवश्यक है। "स्वरमंच" नामक एक संस्था खाप्रुमाम के स्मरणार्थ शुरु की है यह एक आनंददायकक समाचार है। "स्वरमंच" संस्था एवम् गोमंतक सरकार की "कला अकादमी" इन संस्थाओं को अपनी कार्यवाही "लयविद्या" के शिक्षण हेतु स्वतंत्र एवम् महत्त्वपूर्ण स्थान देना चाहिए एवं खाप्रुमाम के शिष्यों द्वारा शिक्षण की योजना तुरन्त शुरु करनी चाहिए। क्योंकि इस प्रकार की विशेष योजना भारतवर्ष में अन्यत्र कहीं भी नहीं है और ऐसी योजना शुरु करना भी सुलभ नहीं है। यह विद्या गोमंतक की अपनी संपत्ति है इसका संरक्षण करना गोमंतकवासियों की अपनी जिम्मेदारी है।

लयभास्कर का सारा जीवन एक बहुत बड़ी पहेली है। व्यावहारिक दृष्टि से देखें तो उनकी यह विद्या अर्थोपार्जन की दृष्टि से पूर्णतः निरुपयोगी थी। उनकी इस साधना से उनके जीवन में किसी भी प्रकार कमाई नहीं हुई थी, लेकिन उन्हें किसी प्रकार का दुःख नहीं था। किसी भी साधक के लिए उनकी साधना ही आनंदायक होती है। उसका मूल्य रुपये पैसे में नहीं किया जा सकता है। साधना के समय सतत होने वाली प्रगति एक सच्चे साधक को मगन कर देती है उसी दिव्यानंद में वह सदैव तल्लीन हो जाता है। साधना ही उसका दैवत बन जाता है। उनके आचार और विचार साधनामय हो जाते हैं। उच्च ध्येय संपन्न विचारों को छोड़कर, व्यावहारिक मैदान मे उतरकर लौकिक दृष्टि से यशस्वी होना यह कल्पना ही उन्हें अभद्र सी प्रतीत होती है। ऋषि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


मुनियों की तरह ध्यानमग्न अवस्था में अपने जीवन को समर्पित करने की धुन उनपर सवार थी। इसी संदर्भ में एक घटना का उल्लेख करना चाहता हूँ। एक बार मैंने उनसे हेतुपूर्वक एक प्रश्न पूछा, "आप की इस विद्या से कुछ आमदनी प्राप्त होना असंभव सा प्रतीत होता है, फिर आपकी गृहस्थी कैसे चलती है? उन्होंने कहा, "जैसी आप की गृहस्थी चलती है उसी तरह ईश्वर की कृपा से मेरी भी गृहस्थी चलती है। आप पैसे कमाते हैं इसलिए खुश है और मैं पैसे नहीं कमाता हूँ इसलिए आपसे लाखगुना खुश हूँ।

लयभास्कर जी ने अपना सारा जीवन गोवा में ही व्यतीत किया। कुछ समय मुंबई में रहकर विद्या दान का पवित्र कार्य किया। मुंबई पुणे आदि शहरों में संगीत शास्त्र के अनेक विद्वानों द्वारा उनका सत्कार हुआ दि0 24 अगस्त 1948 के दिन पुण्यनगरी के रसिकों द्वारा उनका सत्कार समारोह हुआ। उस समय लयकारी के विविध प्रयोग दिखाकर उपस्थित तबलावादकों को अचम्भित कर दिया। एक सत्कार समारोह में उन्हें मानपत्र देकर गौरवान्वित किया। गोवा में मडगांव शहर में गोमंतकीय रसिकों द्वारा सम्मानित करके "ताल कण्ठमणी" की उपाधि प्रदान की। गानसम्राट अल्लादिया खाँ जैसे श्रेष्ठ विद्वान द्वारा "लयभास्कर' उपाधि से सम्मानित किया गया। खाप्रुमाम की दसवीं पुण्यतिथि के समय उनके स्मरणार्थ दि0 3 अक्टूबर 1964 के दिन "स्वरमंच" नामक संस्था की स्थापना की गयी। गायन एवम् वादन कला का शिक्षण शास्त्रोक्त पद्धति से देना, नित्य कार्यक्रम प्रस्तुत करना, संगीत कला संबंध में वाङ्मय प्रसिद्ध करना आदि विविध कार्य संस्था तन-मन-धन लगाकर कर रही है। संगीत कला एवं कलाकारों का उद्धार करने हेतु यह संस्था सतत प्रयत्नशील है।

खाप्रुमाम ने गोमंतक के अनेक लोगों को विद्यादान दिया। गोमंतक एक बड़े जमींदार संगीत कला के मर्मज्ञ श्रीमंत मलबाराव सरदेसाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


एवम् श्री० विश्वंभर बुवा पर्वतकरजी खाप्रुमाम की विद्या से लाभान्वित हुए हैं। खाप्रुमाम की लयचमत्कार से मैं भी अन्य लोगों की तरह अचम्भित हुआ करता था। इस शास्त्र में लयकारी का अभ्यास हमें करना चाहिए ऐसा मैं भी सोचने लगा था। खाप्रुमाम हँसते खेलते, सुलभ तरीके से जो चमत्कार दिखाते थे, उन्हें सुनते समय बहुत ही सरल से प्रतीत होते थे परन्तु स्वयं उस लयकारी को करने की कोशिश करते समय यह कार्य अत्यधिक कठिन-सा प्रतीत होता था। एक बार मैंने खाप्रुमाम से प्रश्न पूछा, "आप इस तरह लयकारी में तरह तरह के प्रयोग करते हैं, अनेक आश्चर्यकारक प्रयोग आप करते हैं आपको यह सब कैसे साध्य होता है। क्या इस विद्या के अभ्यास हेतु कुछ निश्चित मार्ग उपलब्ध है?"

खाप्रुमाम ने मेरे प्रश्न का तुरन्त उत्तर देकर कहा, "लय के संदर्भ में विचार करते समय मुझे मन के अंदर स्वच्छ प्रकाश दिखाई देता है और उस प्रकाश में मुझे सब कुछ स्पष्ट दिखाई देने लगता है। इसमें कोई विशेष बात नहीं है। आप नियमित रूप से प्रयत्नपूर्वक अभ्यास करेंगे तो आप को भी सब कुछ साध्य होगा।" साधना मार्ग की जिन्हें थोड़ी भी जानकारी होगी उन्हें आत्मतत्त्व से संबंधित लयतत्व के प्रकाश की मन ही मन में जानकारी होगी।

संगीत सम्राट अल्लादिया खाँ अक्सर कहते थे कि "खाप्रुजी संगीत सृष्टि में एक महान् आश्चर्य है एक बहुत बड़ी पहेली है।" आप के सुदीर्घ जीवन का एक ही लक्ष्य था "लयब्रह्म की खोज"। निरंतर खोज। इसी शोधकार्य हेतु आप संगीत सृष्टि में अवतरित हुए, आपने साधना की और फलप्राप्ति के बाद ही दिनांक 3 सितम्बर 1953 के दिन अपनी जन्मस्थली "पर्वत" गाँव में ही अवतार की समाप्ति की।

खाप्रुमाम का निवास जब पुणे में था, मैं उनसे मिलने पुणे गया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


था। खाप्रुमाम एक पतली सी चादर ओढ़ कर सो रहे थे। रामकृष्णबुवा बोले, "आजोबा सो रहे हैं।"(मैं उन्हें आजोबा कहता था।) कुछ समय तक उन्हें देखकर मैंने कहा "आजोबा जग गए हैं!" "आप को कैसे पता?" रामकृष्ण बुवा ने उलट प्रश्न किया। मैंने कहा, "आजोबा की ऊँगलियाँ और हाथ हिल रहे हैं। इस हँसते हुए रामकृष्ण बुवा बोले "इनका ऐसे ही चलता रहता है। —निद्रावस्था— में भी।" यह कहकर उन्होंने तीन चार बार आजोबा को आवाज दी। परंतु आजोबा निद्राधीन थे और उनके हाथ एवम् ऊँगलियाँ लयब्रह्म के बीजमंत्र की उपासना करने में लीन हो गयी थी।

लयब्रह्म के इस महान् उपासक ने अपने जीवन से एक मात्र दिव्य संदेश दिया, "उपासना नियमित रूप से करते रहो, निरंतर आगे बढ़ो —कलारूपी मार्ग से ब्रह्मपद तक तुम निश्चित रूप से पहुँच सकोगे।"

स्व. अमान अली खाँ (गायक), हैद्राबाद के तबलावादक अब्दुल करीम खाँ दोनों ने अपना कान पकड़कर खाप्रूजी के पैर पर सिर रख कहा – "आबा आखा जनम हम तो आपके लय के हदे में ही फिरते रहेंगे!"

साभार : "गोमंतकीय संगीतकार" (1976) नामक पुस्तक के लेखक डॉ० ना. र. मारुलकर के लेख का अनुवाद, पृष्ठ संख्या 1 से 9 डॉ० ना. र. मारुलकर संगीत क्षेत्र में प्रसिद्ध गायक, लेखक एवं समीक्षक थे। पर्वतकर जी के घनिष्ट मित्र थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# तपस्वी खाप्रुमामा पर्वतकर

## ( गान तपस्विनी मोगुबाई कुर्डीकर से उद्धृत )

**– कल्याणी इनामदार**

खाप्रुमामा पर्वतकर पड़ोस में ही रहने आये थे। माई (मोगुबाई कुर्डीकर) के जीवन में सांगीतिक विश्व के ये संकेत बहुत महत्व के हैं। खाँ साहब (अल्लादियाँ खाँ साहब) के रूप में स्वर दरवाजे पर आकर खड़ा हुआ और खाप्रुमामा के रूप में साक्षात् लय पड़ोस में। कहा जाता हे कि लय जन्मजात होती है। माई को भी बाल्यावस्था से ही लय का ज्ञान था। इसलिए उनका ताल पर अधिकार एवम् लयकारी देखकर खाँ साहब भी मन ही मन प्रसन्न रहते थे............।

आज हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में ताल एवम् लय पर इतना प्रभुत्व रखने वाला उनके बराबर कोई कलाकार नहीं है।.......कलाविश्व के खाप्रुमामा का सत्संग माने लय के अंतरंग का दर्शन।

तंतुवाद्य में सारंगी और चर्मवाद्य में तबला ये दोनों वाद्य अत्यंत कष्टसाध्य और उतने ही कठिन। बड़े बड़े उस्ताद भी लय से घबड़ाते हैं। कहा जाता है कि स्वर और लय जिनके स्वाधीन हुई उन्हें संगीत का मर्म समझ में आया। खाप्रुमामा को "लयभास्कर" उपाधि मिली थी। शरीर से प्राण निकलने तक अखंड रूप से लय की साधना उन्होंने की थी। साधना करते समय वे किसी भी सामान्य महत्वाकांक्षा के प्रति आकर्षित नहीं हुए। उन्हें लय नामक शक्ति का दर्शन करना था। उसे प्राप्त करते समय शरीर का प्रत्येक अंग लयलीन हो गया था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


खाप्रुमामा ने गूढ़ लयब्रह्म को आत्मसात किया। उसके कठिन तत्व सामान्य से सामान्य व्यक्ति समझ सके इतने सरल करके उस अगाध ज्ञान को समझाया। खाप्रुमामा को मोगु (मोगुबाई कुर्डीकर) की लय की समझ का बहुत ही अभिमान था। ........................ ....................................।

खाप्रुमामा के अनेक ठेके माई ने उन्हीं के द्वारा सुने हैं। ''पाँच'' धा का चक्रदार, ''सात'' धा का चक्रदार, आठ, नौ, दस, पन्द्रह बीस करते करते पैतीस और चालीस ''धा'' के चक्रदार उन्होंने तबले पर बजानेवाले ठेके के साथ बोलकर दिखाए। उसके बाद सम विषम मात्राओं को जोड़, गुणा, घटाना और भाग देना आदि गणित के प्रकार भी दिखाए। मोगु (मोगुबाई कुर्डीकर) ये सब बोल कितनी एकाग्रचित्त होकर सुनती है और अपने स्वरविश्व में उसे समाने की प्रचंड शक्ति रखती है, इसका उन्हें बहुत ही आश्चर्य हुआ करता था। ....... माई को भी इस अद्वितीय कलाकार के प्रति बहुत अभिमान था। उनका दिनरात कला का ध्यान उनकी तपोनिष्ठा देखकर माई का भी स्वर मजबूत हुआ करता था। ''ऐसा औलिया आजतक इस क्षेत्र में पैदा नहीं हुआ'' इस का ज्ञान माई को हमेशा रहता था।

खाप्रुमाम बहुत ही मन से उनसे रियाज करवाते थे। .......।

सन् 1933 में मुंबई में एक बहुत बड़ी महफिल का आयोजन हुआ। संगीत सम्राट अल्लादिया खाँ, विलायत खाँ, फैयाज खाँ और भारत के अनेक नामी गायक, वादक एवम् तबलावादक उस महफिल में उपस्थित थे। वहाँ एकत्रित तबलावादकों ने मजाक में ही इस लयकार से कहा, ''आप बारह मात्रा के तेरह समान विभाग करके बारह मात्राओं की लय में ठेका बाँधिए'' खाप्रुमाम ने इस तरह की चीजें सैकड़ों बार स्वयं कर के देखी थी। उनको यह बात बिल्कुल कठिन नहीं लगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


उन्होंने तेरह मात्राओं में ठेका निबद्ध किया और तेरह मात्रा के वजन में तिहाई लगाकर ठेका पूरा किया। उस समय मजाक करनेवाले तबलावादक आश्चर्यचकित हो गये। अल्लादियाँ खाँ साहब भावविह्वल होकर बोल, "तोबा! तोबा!, धन्य हैं आप! आपके ज्ञान के सामने मैं सौ बार सर झुकाता हूँ।"

किसी भी छोटे या बड़े लोगों की प्रशंसा से वे आकर्षित नहीं होते थे। वे हमेशा लयकारी की धुन में और तालब्रह्म में लीन रहते थे। माई को उनकी इस सरलता में ही उनकी महानता का दर्शन होता था। उनके सानिध्य में माई का स्वर, लय और ताल की गहराई में डुबा था। माई ने गायी हुई साढ़े पन्द्रह मात्रा के योगताल में रचित यमन राग में तराने की ध्वनिमुद्रिका बनी है। उस तराने की रचना मूलतः स्व. बालकृष्णमामा पर्वतकर ने ही की थी। उसे योगताल में खाप्रुमामा ने निबद्ध किया। ..... इस ध्वनिमुद्रिका का किस्सा बताने लायक है। एच् एम् व्ही में जिस दिन तराने की रिकार्डिंग हुई उस दिन बहुत कठिन स्थिति उत्पन्न हुई थी। सुबह साढ़े दस बजे रिहर्सल शुरु हुई, लेकिन तबलावादक गलती करे, तो कभी सारंगीवादक! इस परिस्थिति में घबड़ाकर माई की भी गलती हो रही थी। साढ़े पन्द्र मात्रा का ताल मेल नहीं बैठ रहा था। उस समय एच्0 एम्0 व्ही के श्री रूपजी साहब भी एकदम परेशान हो गए थे। ध्वनिमुद्रिका की एक तरफ की रिकार्डिंग हो गयी थी, दूसरी तरफ की रिकार्डिंग कैसे पूर्ण होगी? इस बात की चिन्ता से वे चिन्तित हो गए थे। शाम हो गई, बार बार वही गलती हो रही है। अंत में माई ने रूपजी साहब से कहा, "गाड़ी भेजकर खाप्रुमामा को ले आईए। वे यहाँ मेरे सामने बैठेंगे तो ही रिकार्डिंग आसानी से पार पड़ेगी।" और अन्त में यही हुआ। लयभास्कर खाप्रुमामा सामने आकर कुर्सी पर बैठे और पाँच मिनट में ही रिकार्डिंग सम्पन्न हुई। सब लोग अचम्भित हुए।

तपस्वी व्यक्ति के अस्तित्व के प्रभाव पर माई का अनुभवनिष्ठ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


विश्वास था। समर्पण से ईश्वर के चरणों पर विसर्जित होनेवाले व्यक्ति की शक्ति भी निरपेक्ष होती है। इस तरह के अनेक अनुभवों के अनमोल उपहार माई के पास थे। इसलिए बड़े-बड़े तबलावादकों ने माई के गायन के साथ संगत करने में अपने को धन्य माना। संगीतज्ञों को समझ में आता कि उनके स्वरलय की अभिन्नता बिल्कुल कठिन है, यहाँ स्वर एवम् लय का अलग अस्तित्व रहता ही नहीं है, दोनों का एक रसायन बन जाता है, और यही उनकी गायकी का माध्यम। स्वर और लय दोनों ही लीन हो जाते हैं और उनके साथ गायक एवम् श्रोता दोनों ही लीन हो जाते हैं उसे ही लय कहते हैं।

..... एक बार माई से सावनी कल्याण और मारुबिहाग सुनकर खाप्रुमामा को लयकारी प्रदर्शन करने की इच्छा हुई ........।

खाप्रुमामा ने माई से ताल देने के लिए कहा और श्रोताओं को नाद के अनोखे विश्व में ले गये। खाप्रुमाम इस नादविश्व की सूक्ष्मता के बहुत बड़े माध्यम थे। उन्होंने तबला हाथ में लेकर मुँह से चौदह मात्रा का चौताल का बोल और हाथ से तबले पर सोलह मात्रा का त्रिताल का बोल बजाकर दोनों को एकसाथ सम पर लाकर दिखाया और लंबा-सा त्रिपल्लवी नामक चक्राकार बोल मुँह से उलटे क्रम से बोलकर एवम् उसी समय तबले पर हाथ से सीधे क्रम में बजाकर दोनों को एक साथ सम पर दिखाया। उस समय सब लोग अत्यधिक अचम्भित हुए और खाप्रुमामा "हमने कुछ किया ही नहीं" इस निर्लिप्त भाव से श्रोतृवर्ग में आकर बैठ गये।

---

**साभार :** "गान तपस्विनी मोगुबाई कुर्डीकर" (1986) की जीवनी की लेखिका कल्याणी इनामदार ने खाप्रुमामा का उल्लेख तपस्वी के रूप में किया है। पुस्तक के कुछ अनुच्छेदों का अनुवाद। पृष्ठ संख्या 54 से 58 ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# लयभास्कर खाप्रुमाम पर्वतकर

**– माधव पंडित**

मडगाव से केपे जाते समय रास्ते में पाड्डे गांव पड़ता है वहाँ से दाहिने तरफ जो हराभरा पहाड़ दिखता है उसे चन्द्रेश्वर पर्वत कहते हैं। इस पर्वत के शिखर पर महादेव का मंदिर है। आसपास के पहाड़ पर घनी झाड़ी है। महादेव के मंदिर में जाने के लिये सीढ़ियाँ चढ़कर जाना होता है। उन सीढ़ियों तक पहुँचने के लिये अब अच्छा रास्ता बना है। इस पर्वतपर आज भी कुछ लोगों के घर हैं और वहाँ लोग भी रहते हैं। लोग रहते हैं फिर भी वहाँ चहलपहल नहीं है। करीब सौ साल पहले इसी पर्वत पर गोवा के नामवंत कलाकारों का जन्म हुआ। यहाँ के एक एक घर में संगीत की साधना चालू थी। एक घर से तानपूरे के सुरीले स्वरों के साथ मधुर आलाप सुनाई पड़ते थे तो दूसरे घर से तबले का ठेका और घुमट पर बजाई थाप सुनाई पड़ती थी। तो तीसरे घर से सारंगी पर बजाई मधुर धुन सुनाई पड़ती थी। किसी घर से नृत्य के तालबद्ध पदाघात चालू रहते थे। इस प्रकार प्रत्येक घर में संगीत साधना चालू थी। एक तरफ प्रकृति का रमणीय संगीत दूसरी तरफ प्रत्येक घर में भरा हुआ स्वर संगीत।

इन दोनों प्रकार संगीत से परिपूर्ण वातावरण में एक महान कलाकार ने 1880 में जन्म लिया। उनका असली नाम लक्ष्मणराव पर्वतकर था। लेकिन गोवा के लोग उसे प्यार खाप्रूमाम कहते थे। यही खाप्रूमाम आगे कुछ वर्षों के बाद अपनी संगीत साधना के बल पर 'लयभास्कर' खाप्रूजी पर्वतकर नाम से पूरे भारतवर्ष में प्रसिद्ध हुये। उन्होंने लयकारी के अद्भुत चमत्कार करके प्रसिद्धि पाई और उस छोटे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



से गोवा का नाम भारत के संगीत जगत में फैलाया। उसे हिमालय के समान ऊँचाई दी। आज भी इस नाम के साथ तुलना करनेवाला कोई भी कलाकार हमलोगों के बीच में नहीं है। यह महान् कलाकार कैसा था? उसने आश्चर्यजनक संगीतसाधना कैसे की? तो लयकारी करता था माने क्या करता था।

ये महान कलाकार दिखने में एकदम सीधा था। धोती, पर्शियन नमूने का बंद गले का कोट, सिर पर काली टोपी ये खाप्रुमाम का पहनावा था। परंतु उनकी आँखों में विद्या का ऐसा तेज दिखता था कि उनकी ओर देखने से अपने आप हाथ प्रणाम करने के लिये जुड़ जाते थे। मैंने 1951-52 के आसपास डॉ. ना. र. मारुलकर जी घर पहली बार खाप्रूमाम को देखा। अत्यंत शांत मुद्रा में एक योगी के समान कुर्सी पर बैठी उनकी मूर्ति आज भी मेरे आँखों के सामने आती है। पहली ही मुलाकात में खाप्रुमाम के व्यक्तित्त्व की छाप उनको देखनेवाले के मन में पड़ती थी। यह सब तेज था उनके संगीत साधना का। तालशास्त्र की लयकारी की अमूर्त कला प्राप्त करने के लिये खाप्रूमाम ने जो तपश्चर्या की थी वो उनके चेहरे और आँखों के तेज से झलकती थी। खाप्रुमाम के घराने में अनेक पीढ़ियों से संगीत साधना चली आ रही थी, गायन वादन चलता था। उनके घराने में सारंगी वादन और तबला वादन इनकी विशेष परंपरा थी। बचपन में एक मामा ने उन्हें सारंगी बजाना सीखाया। हरिश्चन्द्र नाम के चाचा ने उन्हें तबला बजाना सीखाया। इस प्रकार इनकी संगीत साधना बचपन से ही शुरु हुई।

खाप्रुमाम के बचपन में ढवली नामक गांव में अनंतबुवा ढवलीकर नाम के ध्रुपद गायक थे। इस गायक को पर्वत के लोगों ने सीखने के लिये पर्वत पर बुलाकर रक्खा था। इन अनंतबुवा से खाप्रुमाम ने ध्रुपद-धमार सीखां संगीत सीखने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होने के कारण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


खाप्रूमाम ने धमार की गायकी में प्राविण्य प्राप्त किया। सारंगी भी बजाने लगे। अच्छे गायकों के साथ सारंगी की संगत भी करने लगे। उसी समय अवसर मिलने पर तबला संगत भी करने लगे। इस प्रकार संगत करने का यह कार्य बीस-बाइस वर्ष तक चलता रहा। संगत करना उन्हें अच्छा नहीं लगता था। स्वयं कुछ नया करके दिखाने की धुन सवार हो गई। इसके लिए मन में बेचैन रहने लगे।

खाप्रुमाम के हरिश्चन्द्र नाम के चाचाजी साधारण तबलावादक व लयकार थे। एक दिन खाप्रुमाम ने हरिश्चन्द्र काका को जिज्ञासा से पूछा "काका आप सब ताल में चौगुन तक लयकारी करते हैं परंतु पाँचगुन, सातगुन, नौगुन इस प्रकार लयकारी के प्रकार क्यों नहीं करते हैं? हरिश्चन्द्र काका ने बताया "ऐसी लयकारी करना अत्यंत कठिन है। आजतक यह किसी को भी साध्य नहीं हुआ है।" काका के इस उत्तर पर खाप्रुमाम ने कहा, "लयकारी के एक गुन से सोलह गुन तक के प्रकार आना ही चाहिये।" इस बात पर चाचा-भतीजे में बहुत बहस हुइ। इस प्रसंग के बाद से खाप्रुमाम को लयकारी करने की धुन लगी। तबसे खाप्रुमाम एकांत में अकेले बैठ कर हाथ से ताली देकर लयकारी की साधना करने लगे। यह लयकारी करने की धुन इतनी लगी कि खाने-पीने का भी ध्यान नहीं रहा। देहभान भूल गये। इतना ही नहीं नींद में भी इनकी साधना चलती रहती थी।

खाप्रूमाम की एक घटना प्रसिद्ध साहित्यकार लक्ष्मणराव सरदेसाई ने लिखी है। लक्ष्मणराव मडगाव में रहते थे तब खाप्रूमाम उनके घर बीच बीच में आते जाते रहते थे। एकबार गंगाराम पर्वतकर नाम का सारंगीवादक और खाप्रूमाम दोनों ही पास पास सोये थे। घर के सभी लोग भी सोये थे। मध्यरात्री के आसपास गंगाराम पर्वतकर "भूत भूत' कहकर चिल्लाकर उठ बैठे। उनके चिल्लाने से घर के सभी लोग जग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



गये। देखते हैं तो खाप्रूमाम गाढी नींद में सो रहे हैं और एक हाथ से गंगाराम के खुले पेट पर ठेका देकर लयकारी कर रहे हैं। कितनी यह लयकारी की धुन! कितनी तन्मयता! इस प्रकार खाप्रूमाम का मन और इन्द्रियाँ रातदिन ताल-लय की धुन में विचरण कर रही थी।

लयकारी का विषय वास्तव में अत्यंत कठिन इस कारण खाप्रूमाम जो लयकारी के प्रकार करते थे वो बड़े बड़े गायक वादकों को भी समझ में नहीं आते थे। जिज्ञासा होती थी। ये हमलोगों को समझना चाहिये ऐसा लगता था। ऐसे एक जिज्ञासु गायक और संगीतज्ञ प्रो. बी. आर. देवधर थे। जब देवधरजी ने खाप्रूमाम के अद्भुत चमत्कार देखे तो उसे समझने की इच्छा उन्होंने खाप्रूमाम के पास व्यक्त की।

देवधर जी ने खाप्रूमाम को पूछा "यह लयकारी की साधना आपने कैसे की यह मुझे स्पष्ट करके बताइये।

खाप्रुमाम ने बताया "प्रारंभ में चार मात्रा से लयकारी करना शुरु किया। चार मात्रा में पाँच मात्रा माने सवा गुन, चार में छह माने डेढ़ गुन, चार में सात माने पौने दो गुन, इस प्रकार चार में आठ से सोलह गुन तक का मैंने अभ्यास किया। इसी प्रकार से तबला और मृदंग के बोलों की पढंत शुरु की। बहुत दिनों के अभ्यास के बाद यह लयकारी की विद्या प्राप्त करने में यश मिला।" आगे आगे तो चार मात्रा में सोलह नहीं तो 17 से 64 तक की लयकारी खाप्रूमाम आसानी से करके दिखाने लगे।

खाप्रूमाम अपने हाथ से ताली देकर त्रिताल दिखाते थे और मुँह से रूपक, झपताल, एकताल, आड़ाचौताल, धमार, सवारी ऐसे ठेके के बोल बोलकर दिखाते थे। एक ताल में दूसरे ताल के मात्राओं के विभाग करते समय वो इतने अचूक रहते थे कि उस समय प्रो. देवधर जी ने मेट्रोनम नाम के लय मापने वाले यंत्र के साथ खाप्रूमाम की दिखाई लय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


को देखा और उनके लय के पक्केपन पर उनका पूरा विश्वास हुआ। खाप्रूमाम के इस यंत्र पर लय देखने के पूर्व उस समय के अनेक प्रसिद्ध तबलावादकों ने भी उस पर लय देने का प्रयत्न किया था लेकिन किसी को भी उसमें यश नहीं मिला था।

खाप्रूमाम लयकारी का एक और चमत्कार करके दिखाते थे। दो पैरों से दो अलग अलग ताल की मात्रा दिखाना, दो हाथों से दो अलग-अलग ताल की मात्रा दिखाना और मुँह से एक और ताल की मात्रा कहकर पाँचों अलग अलग मात्रा के तालों की सम एक जगह दिखाना और वे ताल चौताल, धमार, सवारी के समान कठिन। इन एक एक ताल की विलंबित लय दिखाना कितनी कठिन है यह प्रत्यक्ष ठेका बजाने वाले तबलावादकों को पता है। लेकिन खाप्रूमाम इन सब तालों को एकत्र करके उन्हें अपने को चाहिये जैसे, चाहिये वैसे लय में लेकर खेलते थे इससे यह पता चलता है कि खाप्रुमाम का अपने अपने इन्द्रियों पर कितना अधिकार था।

खाप्रूमाम ने अपने ये लयकारी के चमत्कार अलग अलग संगीत परिषदों में उपस्थित विद्वानों को करके दिखाये सन् 1918-19 में मुंबई में आयोजित पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर संगीत परिषद् में खाप्रुमाम ने लयकारी दिखाई थी उस समय परिषद् में उपस्थित सब विद्वानों ने खाप्रूमाम की प्रशंसा की थी।

सन् 1944-45 में मुंबई में खाप्रुमाम का बहुत बड़ा सत्कार हुआ। उस सत्कार में गानसम्राट खाँ साहेब अल्लादिया खाँ हजर थे। उनके द्वारा खाप्रूमाम का सत्कार करके उन्हें "लयभास्कर" की उपाधि दी थी। इस सत्कार की महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि यह सत्कार भारत के सभी नामी गायकवादकों ने एकमत से और प्रसन्नता से स्वीकार करके उपाधि दी थी। इस सत्कार में खाँ विलायत हुसैन और पं.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


रविशंकर इन नामी गायकवादकों ने भाग लिया था। इन दोनों सत्कारों के बाद कुछ वर्षों बाद गोवा के संगीत प्रेमियों ने मडगाव में उनका सत्कार कियां

लेकिन खाप्रूमाम की दृष्टि इस सत्कार, सम्मान का कोई महत्त्व नहीं था। उनकी वृत्ति विरक्त थी। श्री लक्ष्मणराव सरदेसाई और ना. र. मारुलकर इन्होंने खाप्रूमामा को योगी कहा है। लक्ष्मणराव लिखते हैं "भक्तिमार्ग में जैसे संत तुकाराम वैसे संगीतशास्त्र में खाप्रूमामा! चन्द्रेश्वर के समान विरक्त और त्यागी! खाप्रूमाम की लयकारी की साधना लोक विलक्षण थी। वे एक औलिया कलाकार थे।

खाप्रूमाम ने साढ़े पन्द्रह मात्रा का एक ताल बनाया था। इस ताल में गानतपस्विनी मोगुबाई कुर्डिकर ने तराना गाया है। इनकी ध्वनिमुद्रिका हैं यह तैयार करने के पहले एक साल तक मोगुबाई ने रियाज किया था तो भी ध्वनिमुद्रिका बनाते वक्त गड़बड़ी हो ही गइ। सबेरे दस बजे शुरु हुये ध्वनिमुद्रण रात के दस बज गये तो भी ठीक से नहीं हो रहा था। कभी तबलेवाला गलती करे, कभी सारंगीवाला, कभी स्वयं गायिका। अंत में मोगुबाई ने खाप्रुमाम को स्टूडियों में बुलाकर कुर्सी पर बैठाया और उनकी उपस्थिति में रिकार्डिंग का काम पूरा हुआ।

खाप्रूमाम की लयकारी की साधना कितनी टेढ़ी थी ये समझ में आता है परंतु इन उदाहरणों से उनकी लयकारी का परिचय नहीं हो सकता है क्योंकि खाप्रुमाम ने अपना सारा जीवन लय की खोज करने के लिये और उसका हिसाब व्यवस्थित रूप से दिखाने में खर्च किया था। किसी कार्यक्रम में कोई तबलावादक या पखावज वादक जब तैयारी के साथ अपना वादन प्रस्तुत करता है तो श्रोता को उनके वादन का आनंद मिलता ही है। लेकिन जब तबलापटु हाथ से लय देकर बोल बोलने लगता है तो श्रोता को उसमें की सूक्ष्मता समझ में नहीं आती,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



क्योंकि हाथ से ताल देकर बोल बोलना यह कोई मनोरंजन या आनंद का विषय नहीं है। पेट भरने का तो बिल्कुल भी नहीं। मूल में लय संपूर्ण विश्व में होने पर भी अमूर्त है वह स्थूल मान से दिखाना कठिन है तो उसका एक एक कण स्पष्ट करके दिखाना कितना कठिन होगा इसकी कल्पना करना ही ठीक है। इस लय के कण कण का हिसाब अपने सारी इन्द्रियों द्वारा जानकार श्रोताओं के सामने प्रस्तुत करने के लिये खाप्रूमाम ने कितनी साधना और कैसी साधना की यह खाप्रूमाम ही जानते हैं। उसके लिये उन्होंने अपना पूरा जीवन बिताया ऐसा कहने से किसी को भी आश्चर्य लगेगा। ऐसा करनेवाला पागल ही होगा ऐसा सबको लगेगा।

उस समय के लोग भी खाप्रूमाम को पागल ही समझते थे क्योंकि रास्ते चलते समय खाप्रूमाम तबले के बोल बोलते रहते थे, हाथ से ताल देते रहते और उनके पैर भी किसी लय में ही पड़ते थे। इस कारण लोग खाप्रूमाम का मजाक उड़ाते थे, उन पर हँसते थे परंतु इस योगी ने किसी के लिये मन से क्रोध नहीं किया, किसी के ऊपर ध्यान नहीं दिया। उनकी लयकारी की साधना अखण्ड रूप से चालू रहती थी। एक बार प्रो. देवधरजी ने कहा "मामा, अभी आप लय के एक से चौसठ तक मात्रा के प्रकार आसानी से करके दिखाते हैं। अब आपका मन संतुष्ट हुआ होगा?"

इस प्रश्न के उत्तर देते हुए खाप्रूमाम बहुत नम्रता से बोले "प्रारंभ में जो बातें एकदम असंभव लगती थी वो साध्य होने का मुझे संतोष है, परंतु इस लय के क्षेत्र में जैसे जैसे मैं आगे जा रहा हूँ वैसे वैसे आगे का प्रकाश मुझे दिख रहा है। अब मैं चौसठ मात्रा के आगे के प्रकार साध्य करने का प्रयास कर रहा हूँ। अभी मुझे यह बात साध्य नहीं हुई इसलिये मैं असंतुष्ट हूँ।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सच्चा कलाकार हमेशा असंतुष्ट होता है। वह यदि संतुष्ट हुआ तो उसकी प्रगति समाप्त हुई ऐसा समझना चाहिये। खाप्रूमाम तो लयब्रह्म में विलीन हुये एक अद्वितीय ऐसे महान कलाकार थे। इस कारण उनका असंतुष्ट होना यह बात समझने लायक है।

खाप्रूमाम ने अपनी यह लयकारी की विद्या अपने शिष्यों को देने का प्रयत्न किया। वास्तव में यह विद्या समझना ही कठिन था तो भी उन्होंने अपने पुत्र चि. रामकृष्ण बुवा पर्वतकर, डॉ. मलबाराव सरदेसाई, श्रीमती मोगुबाई कुर्डिकर, मनोहर बुवा शिरगावकर, विश्वंभर पर्वतकर इत्यादि को इस विद्या के सूक्ष्म भेद सिखाये। बालकृष्ण पर्वतकर और दत्ताराम पर्वतकर इनको सारंगीवादन का शिक्षण दिया। इसके अलावा खाप्रूमाम का कृपाप्रसाद हमको मिला है ऐसे कहनेवाले पिछली पीढ़ी के अनेक कलाकार गोवा के अलग अलग जगहों पर मुझे मिले।

खाप्रूमाम के लयकारी की एक रिकार्ड 1944-45 में बनाई थी। रिकार्ड में एक तरफ त्रिताल के मध्य लय के ठेका में नौ, दस और ग्यारह मात्रा के ताल बहुत आसानी से और लय के कण-कण के हिसाब से निबद्ध कर उनकी दुगुन की है और बोलकर दिखाया है। रिकार्ड के दूसरी तरफ त्रिताल के उसी लय में तेरह, चौदह और पंदरह मात्रा बोलकर दिखाकर उसकी भी दुगुन और चौगुन किया है। उस लय में मुखड़े और तिहाइयाँ बोलकर दिखाया है और ये सब इतने आसानी से और बिना गलती किये किया है कि उन्होंने बनाई प्रत्येक मात्रा के अंशों के विभाग जानकारों को आश्चर्यचकित करती है।

ऐसा ये महान लयभास्कर तीन सप्टेंबर 1953 को इस विश्व के लयब्रह्म में लीन हो गया। लेकिन लीन होने के पूर्व लयकारी के क्षेत्र में और भारत के संगीत जगत में अपना नाम अजरामर करके गया। अपनी जन्मभूमि को भी संगीत जगत में अजरामर करके गया। खाप्रूमाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



के निर्वाण को चालीस वर्ष हो गये तभी भी उनकी याद आते ही वे अपने बीच हैं ऐसा आभास होता है।

स्व. थिरकवा साहब ने कहा —
"वो तो लय का औलिया था।"

साभार : "कर्तृत्त्वाच्या दाही दिशा" (1994) लेखक माधव पंडित गोमंतक के प्रसिद्ध संगीतज्ञ, साहित्यकार, चरित्र लेखक, अनेक दैनिक, मासिक पत्रिकाओं में संगीत के अतिरिक्त विषय से संबंधित विद्वानों पर लेख। पृष्ठ 124 से 129 ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# खाप्रुमाम 'लयभास्कर'
# स्व. लक्ष्मणराव पर्वतकर जी
# के जीवन से संबंधित चित्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

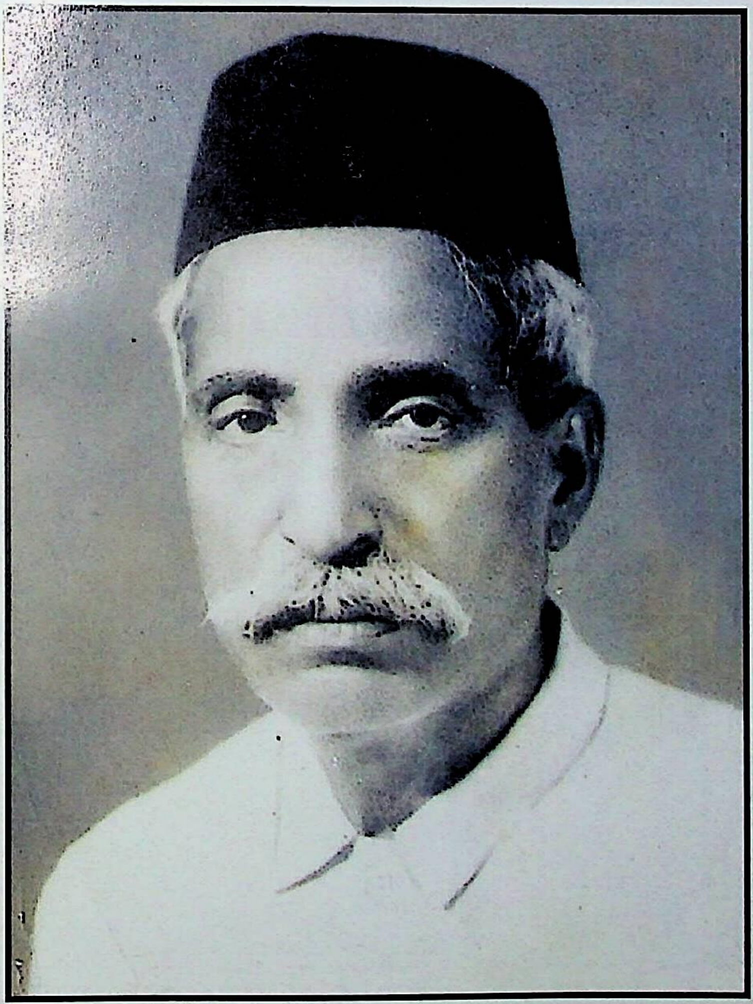

'लयभास्कर' खाप्रूमाम स्व. लक्ष्मणराव पर्वतकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खाप्रूमाम के कुलदेवता का पर्वत पर स्थित श्री चन्द्रेश्वर भूतनाथ मन्दिर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

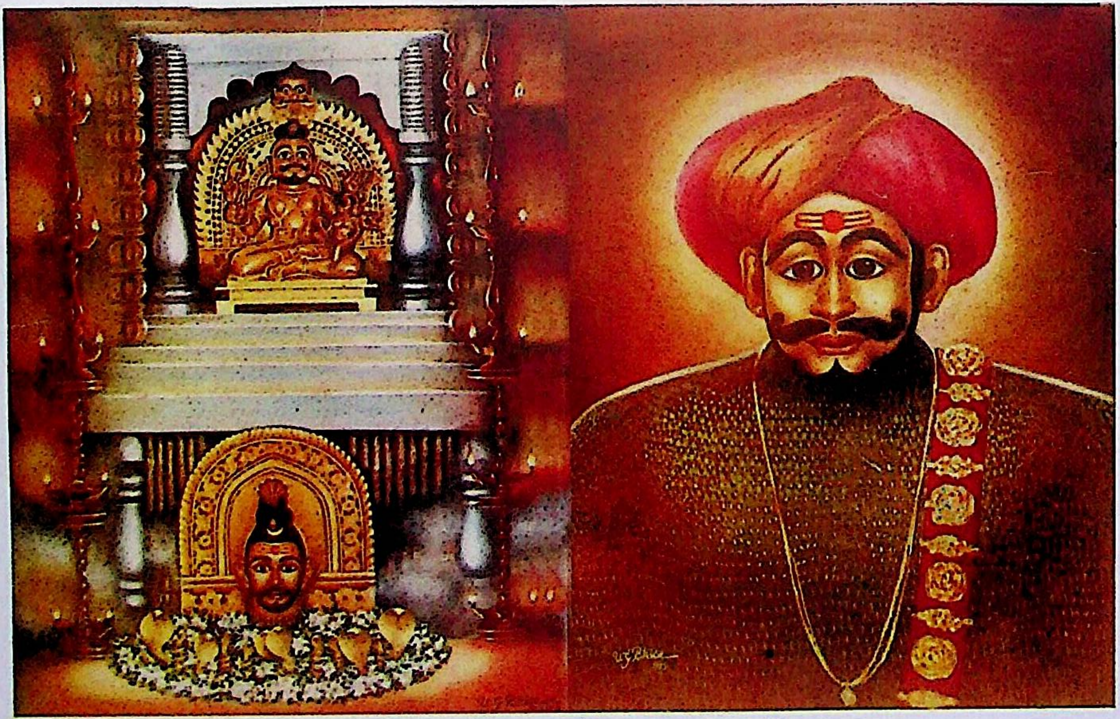

खाप्रूमामा के कुलदेवता चन्द्रेश्वर भूतनाथ मन्दिर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

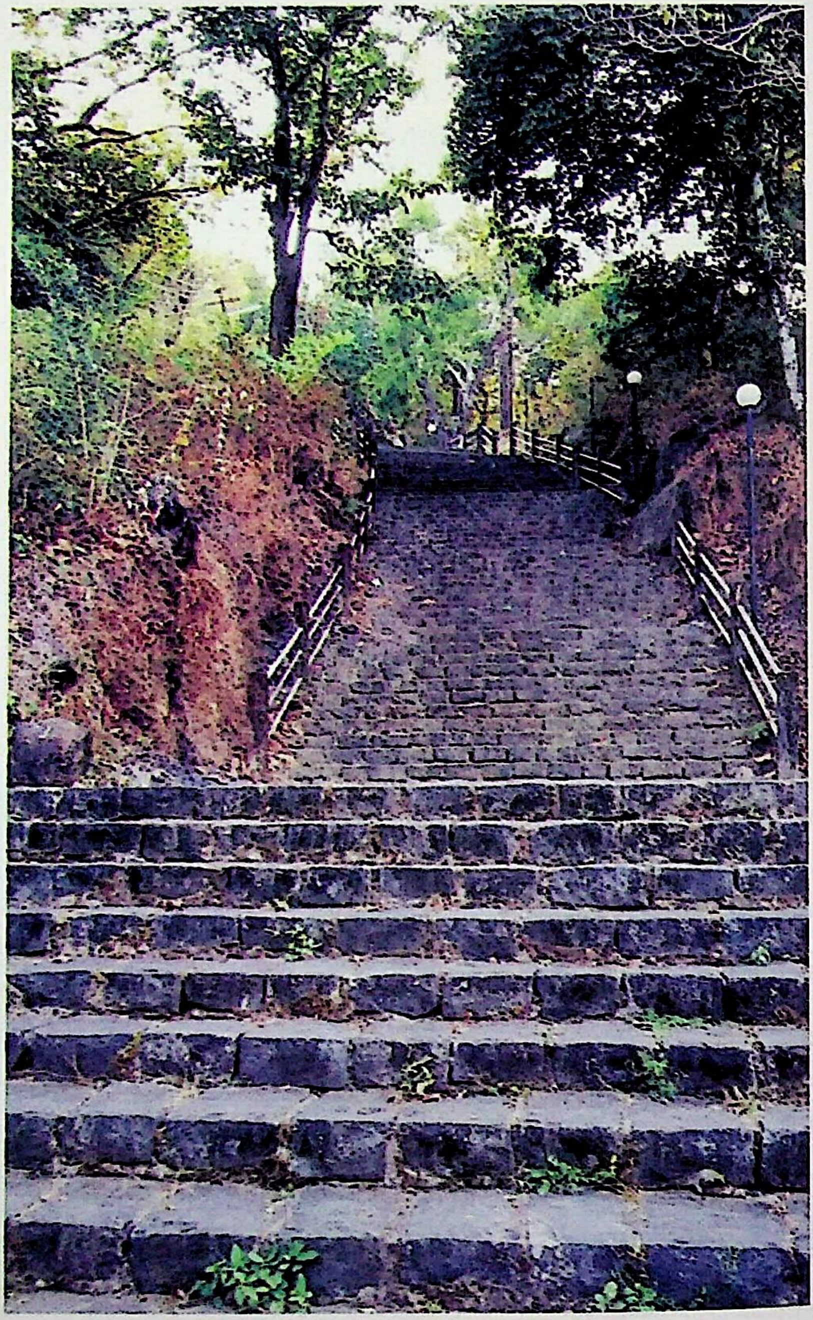

वर्तमान समय में मन्दिर जाने के लिये मन्दिर के पास
कुछ सीढ़ियाँ बनी हैं। यहाँ तक कार से आ सकते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

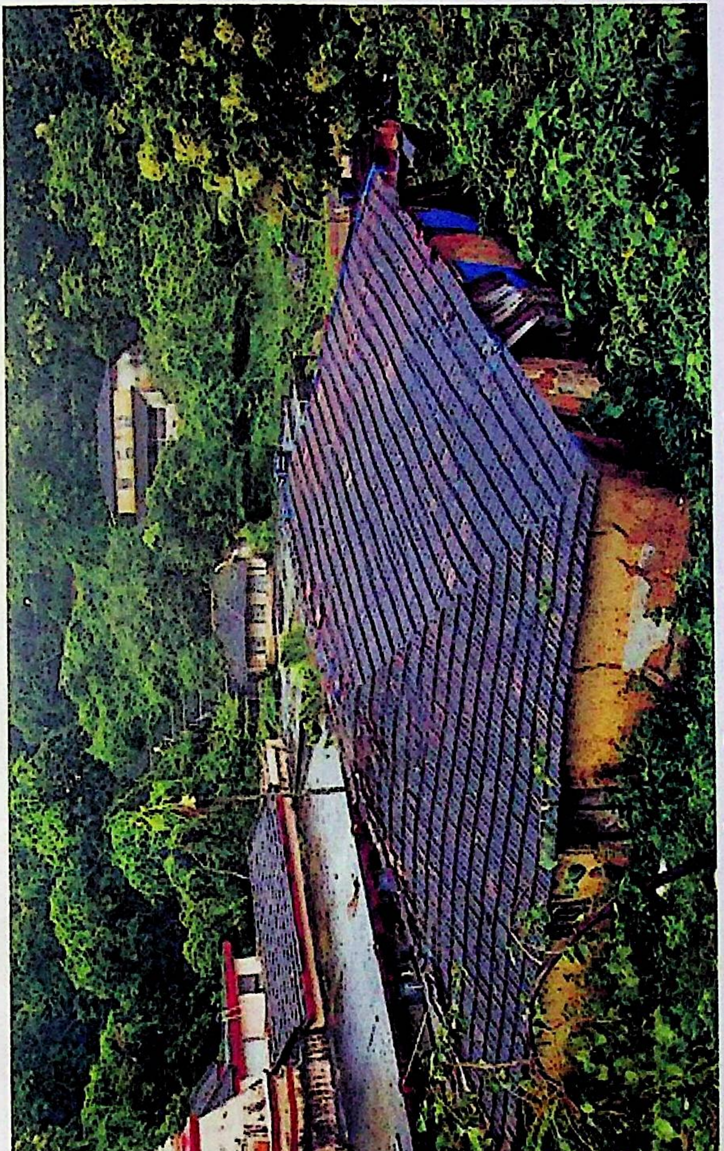

खाप्रूमाम का पर्वत पर स्थित मकान ( साधना स्थल )

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खाप्रूमाम के समय पर्वत पर जाने का दुर्गम मार्ग ( चारों तरफ झाड़ी ही झाड़ी )

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खाप्रूमाम का स्मारक तुलसी वृन्दावन के रूप में पर्वत पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

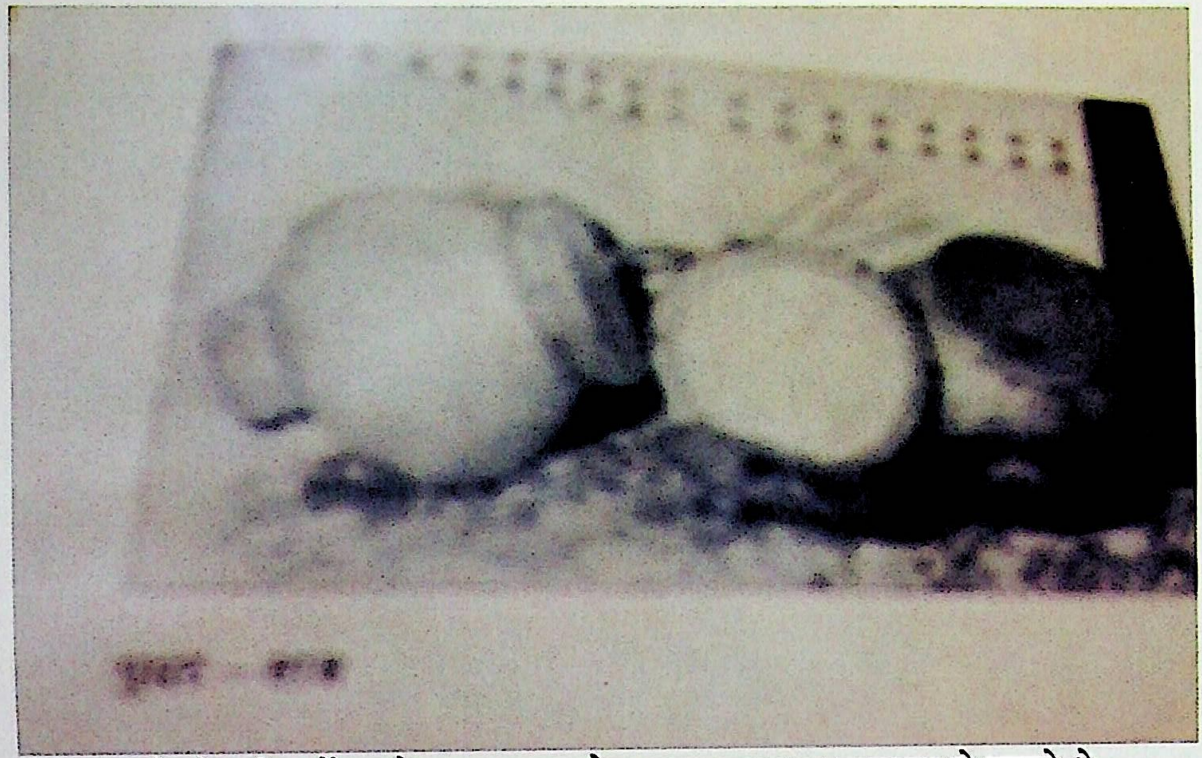

पर्वत के मन्दिर में बजने वाला घुमट लोक वाद्य, खाप्रुमाम कुशलता से बजाते थे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( दि. २१ - ८ - ३९ रोजीं श्री. पर्वतकरांना त्यांच्या असंख्य चहात्यानीं मुंबई येथे अर्पण केलेलं मानपत्र )

## 'लयभास्कर' रा. रा. लक्ष्मणरावजी पर्वतकर यांचे सेवेशीं –

आज ता. २१ ऑगष्ट १९३९ रोजीं आपल्या सन्मान गौरवार्थ भरलेल्या आपल्या अनेक स्नेही व चहाते लोकांच्या सभेंत आपणास हें मानपत्र अर्पण करतांना आम्हांस अत्यंत आनंद होत आहे.

आपल्या वयास सध्या ६० वर्षे पुरी झालींत. एवढ्या अवधींत आपण तबलावादनशास्त्रांत अनुपमेय प्राविण्य मिळवून 'ताल' व 'लय' या दोन्हीं क्षेत्रांत अखिल हिंदुस्थानांत जी अद्वितीय कीर्ति मिळविली आहे त्याबद्दल आम्हांस सानंद अभिमान वाटत आहे.

आपलें घराणें विद्वत्तेंत नाणावलेलें असल्याने व आपले मातुल कै. रघुवीर पर्वतकर यांच्या देखरेखीखालीं बाल्यावस्थेंतच आपण कै. रामकृष्ण पर्वतकर व हरिश्चंद्र पर्वतकर या दोहों कलाभिज्ञ गुरुजींपासून आपण वादनशास्त्रांत आपल्या प्रगतीचा ओनामा गिरविला. थोड्याच अवधींत त्रितालाचे १६ गुण करून दाखवून आपल्या गुरुजींस 'शिष्यदिच्छेत पराजयम्' या उक्तीप्रमाणे सहर्ष चकित केलें.

सन १९१८ किंवा त्या अंदाजांत सुप्रसिध्द नाना पानसे घराण्याचे शागीर्द कीर्तिवंत पखवाजी कै. पांडोबा गुरव वाईकर यांची व आपली गांठ पडली. त्यावेळीं कै. पांडोबा वाईकर यांच्या विनंतीस मान देऊन आपण त्यांना आड, कोआड, गोआड, भरतआड आणि ब्रह्माआड अशा पांचही लयी करून दाखविल्या आणि आपल्या कलेंत अद्वितीयत्व आहे याबद्दल समाधानाचे उद्गार कै. पांडोबा वाईकर यांजकडून आपणांस अर्पण करण्यांत आले.

लयक्षेत्रांत 'जागा ठेवण्याचें' जें विशिष्ठ अंग आहे त्या बाबतींत सन १९२१ सालीं ज्यावेळीं कै. भास्करबुवा बखले यांची व आपली गांठ पडली त्यावेळीं आपण जें कौशल्य त्यांना दाखविलें त्यावर त्यांनी 'जागा ठेवण्याचें' अंग यापुढें आपणावर सोंपविलें पाहिजे अशा तऱ्हेचें विजयपत्र आपणास बहाल केलें.

गायनसम्राट अल्लादिया खांसाहेब, खानसाहेब विलायखां आणि प्रसिद्ध तबलजी यांच्या सन १९३३ सालीं झालेल्या मैफलींत ज्यावेळीं "१२ चे १३" करणाराच खरा लयबाज अशी त्यांनी व्याख्या केली त्यावेळीं आपण हें कौशल्य इतक्या सफाईने व सहजरित्या दाखविलें कीं त्यावेळीं गायनसम्राट खांसाहेब अल्लादियां खां यांनी आपल्या ज्ञानापुढें व कलेपुढें "तोबा तोबा" असे अत्यंत आश्चर्याचे उद्गार काढले.

सन १९३५ सालीं श्री. मोगुबाई कुर्डीकर यांनी रा. रा. रघुवीर रामनाथकर यांजकडून आपला प्लास्टर पुतळा तयार करून आपणास तो अर्पण केला त्यावेळीं झालेल्या समारंभांत हैदराबादच्या दोन सुप्रसिद्ध तबलजींना 'लयबाजी' म्हणजे काय याचें आपण दिग्दर्शन केलें. त्यावेळीं लय क्षेत्रांत आपण सूर्याप्रमाणे दैदिप्यमान आहांत म्हणून त्यांनी आपलें अभिनंदन केलें.

आपल्या वयाचीं षष्ट्यब्दपूर्ती झाली आहे. या कलेचा आपणास जागृतावस्थेंतच नव्हे तर निद्रावस्थेंतसुध्दां ध्यास लागलेला आहे ही गोष्ट आपल्या स्नेहमंडळीस माहित आहे. आजच्या या गौरवप्रसंगीं आज आम्हीं आपला सर्व स्नेहीवर्ग आपणास अत्यंत यथोचित म्हणून

### " लयभास्कर "

ही पदवी सादर, सप्रेम आणि सविनय अर्पण करीत आहोंत आणि आपल्या कलेची हिंदुस्थानांत व इतरत्र बिनतोल अशी सेवा करण्यास यापुढेही आपणास उदंड आयुष्य मिळो अशी आम्ही जगन्नियंत्याकडे प्रार्थना करीत आहोंत.

आपले स्नेही व चहाते.

( हे मानपत्र दि. १७.३.१९४९ च्या "भारत" च्या अंकांत प्रसिध्द झाले असून तिथूनच साभार पुनःमुद्रित केलें आहे )
सम्राट वल्लभ कुडचडे - १६.३.९७

**खाप्रूमाम को मिला 'लयभास्कर' मानपत्र**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# " तालकंठमणि "

( मडगांवचें मानपत्र - १४.११.१९४२ )

लयभास्कर श्री. लक्ष्मणराव ऊर्फ खाप्रूजी यांस —

वादनशास्त्राच्या लय व ताल या अंगांत असाधारण ज्ञान प्राप्त करून घेऊन त्याच्या बळावर आपण हिंदुस्थानभर अद्वितीय तालशास्त्रज्ञ व लयभास्कर असा नांवलौकिक मिळविला आहे. अशा वेळीं गोमंतकीय हिंदुसमाज एकमुखाने आपल्या ज्ञानयुक्त तपस्ये बद्दल अत्यादर व्यक्त करीत आहे आणि या आनंदाच्या प्रसंगी आपणास आयुरारोग्य चिंतीत आहे.

आपण अपलें सगळें आयुष्य कलेच्या एकनिष्ठ सेवेंत व्यतीत केलें. लौकिक प्रतिमेचे देणे आपल्याला जन्मतःच लाभले म्हणूनच जे कलाविषयक संशोधन आपल्या उत्तर आयुष्यांत करून ज्ञानवादनतज्ञांना आपण स्तंभित केले, त्याची पूर्वकल्पना आपणास बाल्यावस्थेंतच झाली. ठाय, दुगुण, चौगुण इत्यादि त्रितालांचे गुण करतांना तीन, पाँच, सात हे मधले गुण कां करण्यांत येऊं नयेत, असा थोर वादकांची मति कुंठित करणारा प्रश्न आपण आपले मातुल सुप्रसिध्द तबलच्ये कै. हरिश्चंद्र पर्वतकर यांना केला. त्यावेळीं ही गोष्ठ सगळ्यांना अशक्य व हास्यास्पद वाटली. पण तिच्या चिंतनात आपण इतके व्यग्र होऊन गेलां कीं, सगळ्या लौकिक सुखांपासून अलिप्त अशा वृत्तीने आपण संसारात वागूं लागलां, त्यामुळें आपले शेजारी पाजारी आपणास तुकाराम म्हणूं लागले. आहार, निद्रा इत्यादि नित्यकर्माचरणांत देखील आपणांस आपल्या ज्ञानात्मक प्रश्नाचा निदिध्यास लागला. अशा स्थितींतच आपण काहीं वर्षे कलेची अनन्य सेवा केली, तिचे फळ म्हणून लयभास्कर कलादेवता आपल्यावर प्रसन्न होऊन तिनें आपल्या विनम्र मस्तकावर वरदहस्त ठेवला, आणि आपणास प्रकाशाचें दर्शन झालें. असल्या मौलिक सिध्दांतानीं वादन शास्त्रांत क्रांति घडवून आणली. वादनशास्त्रांत अद्भूत चमत्कार आपण लिलया घडविले, आपली प्रतिमा इतकी परिणत झाली कीं आपण त्रितालाचे बत्तीस गुण करूं लागलां, एका मात्रेच्या सोळाव्या अंशाचे आपल्या प्रज्ञेला आकलन होऊं लागलें आणि वादन शास्त्रांतील कोणतीही बिकट कोडीं आपण सहजतेने उलगडून दाखवूं लागलां. ज्याच्यावर कलेचें मंदिर उभारलें जातें त्या शास्त्राची आपण पुर्नघटना केली. त्यामुळें आपण आज केवळ कलावादनांच्या भूमिकेवर नसून कलाशास्त्रज्ञाच्या किंवा कलातत्वज्ञानाच्या उच्च भूमिकेवर आरूढ झालां आहां.

आपल्या ज्ञानाचा उत्कर्ष पाहून, अल्लादियाखां या सारख्या संगीतशिरोमणीनीं आपणास मानपत्र देऊन आपला गौरव केला आणि आनंदाने असे उद्गार काढले कीं, "लय व ताल या शास्त्रांतील ऋषिप्रणीत उज्वल परंपरा जी एका काळीं तुटली होती तिचें पुनरुज्जीवन आपण सध्या केलें आहे."

वरीलप्रमाणे कलेची सेवा करून आपण चिरंतन कीर्ति मिळवींत गेलां, पण ज्ञानाच्या व लौकिकाच्या धुंदींत आपण चारित्र्याकडे दुर्लक्ष केलें नाही. इतकेंच नव्हे तर आपण आपल्या वर्तनावरून असें सिध्द करून दाखविले कीं, कलोपासकाच्या आत्यंतिक विकासाला ज्याप्रमाणे खडतर तपस्येची आवश्यकता आहे त्याचप्रमाणे निष्कलंक चारित्र्याचीही आहे. तात्पर्य, उज्वल प्रतिभा व दीर्घ तपस्या या दोहींच्या बळावर मिळवलेलं अगाध ज्ञान आणि धवल चारित्र्य या सर्वांच्या योगाने आपण आज कलेच्या इतिहासांत अनन्यसामान्य स्थान प्राप्त करून घेतले आहे. त्या बद्दल आदर मान करून आम्हीं गोमंतकीय आपल्यासारख्या थोर समाजबांधवाला आज ता. १४ नोव्हेंबर १९४२ रोजीं मडगांव गर्वानें हें मानपत्र विनम्र भावानें अर्पण करून आपणास या सुप्रसंगी 'तालकंठमणि' ही पदवी अर्पण करीत आहोंत.

( हें मानपत्र दि. १७.३.१९४९ च्या "भारत" च्या अंकांत प्रसिद्ध झालें असून तिथूनच साभार पुनःमुद्रित केलें आहे. )

सम्राट क्लब कुडचडे - १६.३.९७

**'ताल कंठमणि' सम्मान का मानपत्र**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

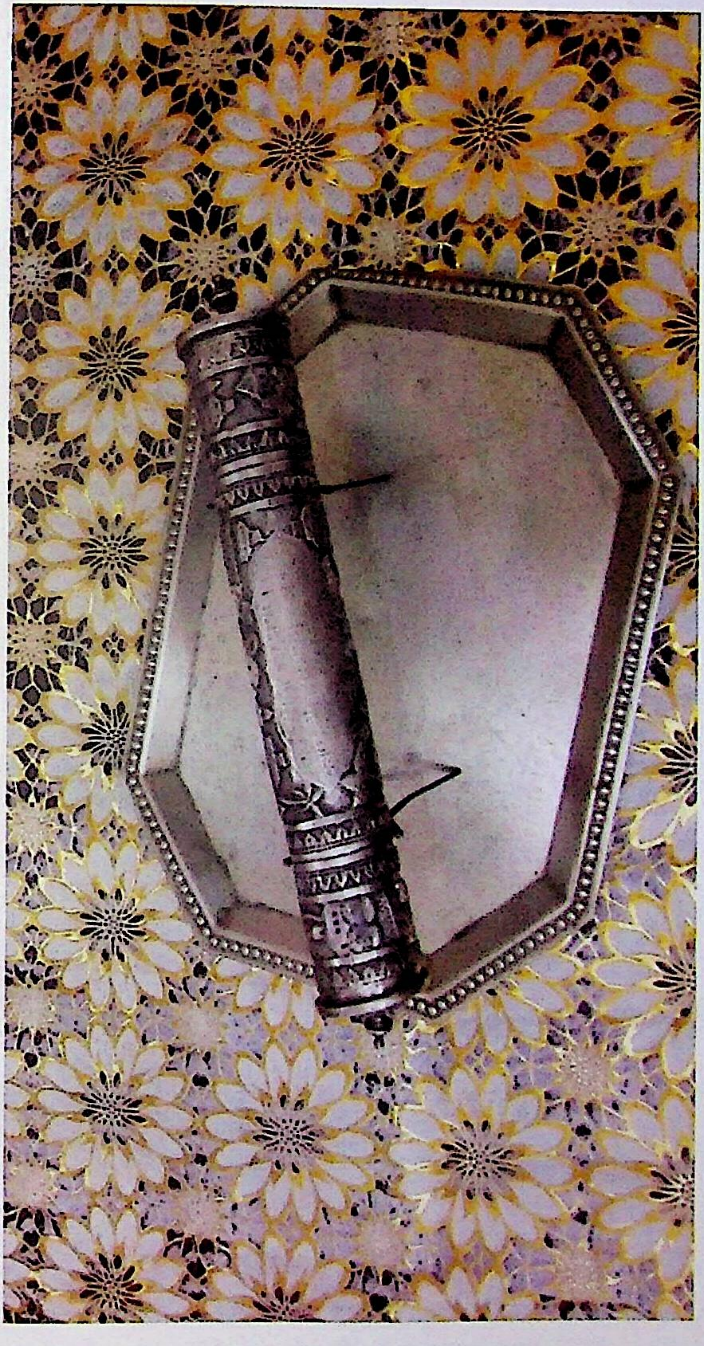

मानपत्र ताल कंठमणि सम्मान का आवरण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

**गान तपस्विनी मोगुबाई कुर्डिकर द्वारा अर्पित**
**स्व. खाप्रुमाम की प्रतिमा**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

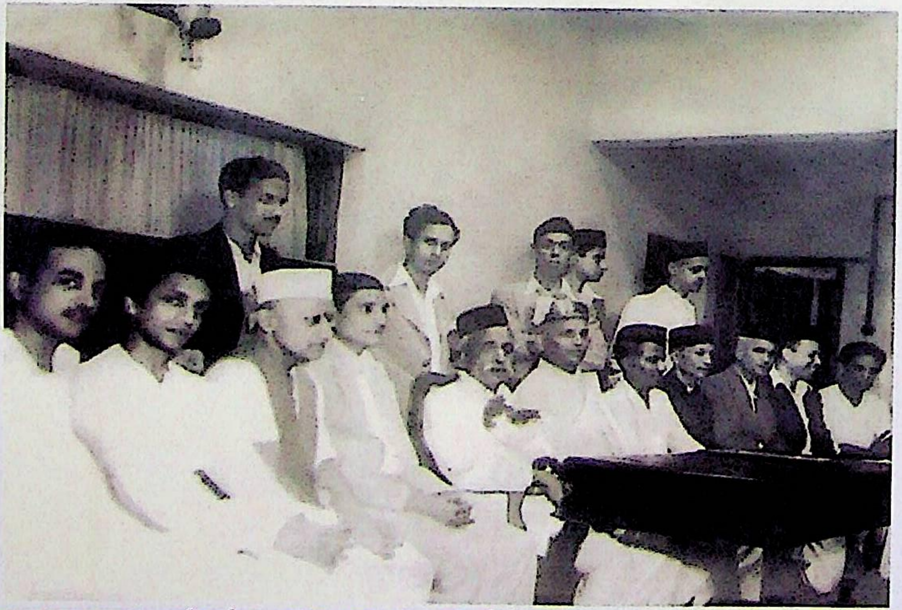

पुण्याला सुप्रसिद्ध लयभास्कर खाप्रुजी पर्वतकर यांचा झाला त्या प्रसंगाचे हे दुर्मिल झालेले छायाचित्र. या छायाचित्रात आहेत बसलेले ( डावीकडून )-1 ) पं किशन महाराज, 2 ) पं. रविशंकर, 3 ) बालगंधर्व, 4 ) खाँ विलायत हुसेनन खाँ, 5 ) खाप्रुजी पर्वतकर 6 ) आबासाहेब मुजुमदार, 7 ) रामकृष्णबुवा पर्वतकर, 8 ) दत्ताराम पर्वतकर, 9 ) सुब्रायमाम, 10 ) ओळखता येत नाहीत, 11 ) गुलाम रसूल. उबे ( डावीकडून )-1 ) डॉ. वा. र. मारुलकर, 2 ) पं.रत्नकांत रामनाथकर, 3 ) खांडेकर, 4 ) पं. खळीकरबुआ, 5 ) गणुकाका कात्रे
लयभास्कर खाप्रूमाम इकहत्तर वर्ष के हुये थे उस समय उनका सम्मान पुणे में हुआ था। उस समय का चित्र साभार - दै. लोकशक्ती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

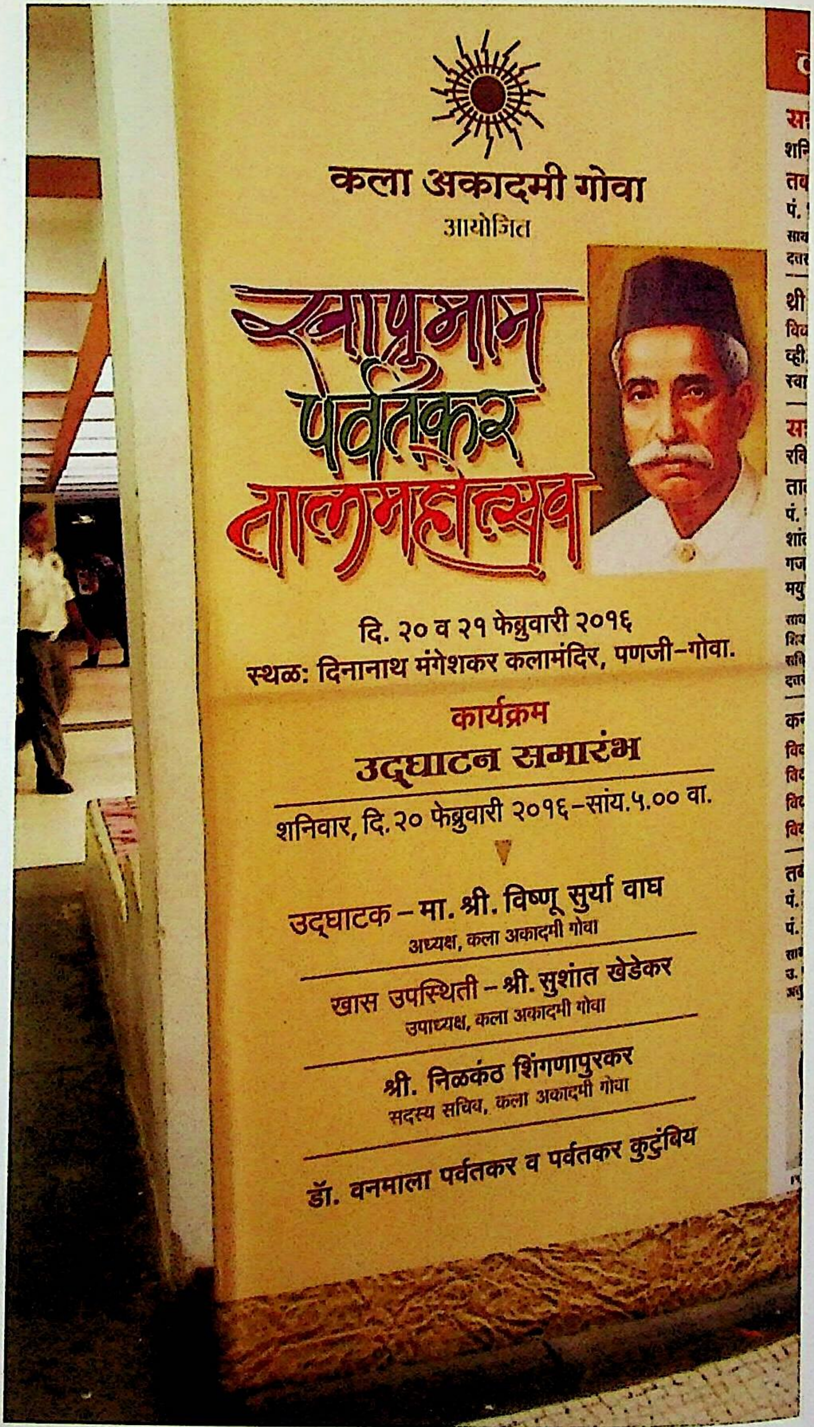


**20-21 फेब्रुवरी खाप्रूमाम पर्वतकर तालमहोत्सव का सूचनापट्ट**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# लयभास्कर पर्वतकर

**( डॉ. राम भोसलेजी के जीवन से संबंधित चित्रात्मक उपन्यास में लयभास्करजी का संदर्भ दिया है )**

**– धनंजय देशपांडे**

राम पिछले पंद्रह दिनों से बुआ (खाप्रुमामा) से मिलने के लिए यहाँ आये हैं लेकिन उनसे मुलाकात नहीं हो पा रही है। क्या करना है? ऐसी शिकायत पं0 दीनानाथ मंगेशकर जी (लता मंगेशकर के पिताजी) ने की ...........वे गोवा में केवल राम को प्रख्यात पखावज वादक लयभास्कर पर्वतकरजी का शागीर्द बनवाने के लिए आये थे।.....

दूसरे दिन श्रावण सोमवार था। मंगेश के मंदिर में भीड़ तो थी ही। ग्यारह बजे करीब लयभास्कर पर्वतकरजी ने महादेव की पूजा के लिए प्रवेश किया।

बुवा (खाप्रुमाम) का ठाठ देखने लायक था। उनके सांवले सतेज खुले शरीर पर रेशमी बैंगनी रंग का नया पीतांबर, शरीर पर पीली गमरेशमी शाल थी, हाथ में पूजा की सामग्री लिये चाँदी का लोटा था और उनके शागीर्द विनम्रता व आदर से कुछ दूरी रखकर उनके पीछे आ रहे थे।

बुवा ने गर्भगृह में प्रवेश किया, गर्भगृह में कोई ठीक ठाक पखावज बजा रहा था। उसे सुनकर दाद भी दिया लेकिन दूसरे ही क्षण एक मात्रा की गलती हो गई उनकी भौंहें चढ़ गईं क्रोध से चेहरा लाल हो गया, हाथ का चाँदी का लोटा उन्होंने गर्भगृह की ओर फेंका और कहा "कौन महामूर्ख ऐसा गलत पखावज भगवान शंकर की सेवा में बजा रहा है?"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



गर्भगृह में से राम और दीनानाथ बाहर आये। "हुजूर! मैं बजा रहा था पखावज" राम ने विनम्र भाव से हाथ जोड़कर कहा।

"जो बाज तुम बजा रहे थे वो चन्द्रकान्त बुवा का है।"

"हाँ मैंने उनसे थोड़ी शिक्षा ली है।"

"लेकिन बजाते समय एक मात्रा की गलती हुई तुमसे।"

"ठीक है, मैंने जान बूझकर यह गलती की है, मुझे आपका ध्यान आकर्षित करना था। मैं आपसे पखावज सीखने के लिए गोवा आया हूँ लेकिन पंद्रह दिन से आपसे मुलाकात नहीं हो रही है इसीलिए मुझे यह युक्ति करनी पड़ी।

बुवा ने आँखें बारीक करके राम को ध्यान से देखा।

"पखावज यह भगवान शंकर का वाद्य है। ये सीखकर बाजार में पैसा कमाना है क्या?"

"नहीं हुजूर! मैं मसाजिस्ट हूँ। स्पन्दन से रोगियों को मसाज करना मेरा काम है। सब स्पंदन मेरुदंड से शरीर में जाते हैं, कुंडलिनी जागृति भी स्पन्दन जागृति से होती है। मेरी रुग्ण सेवा को मदद मिले इसीलिये मैं पखावज सीखकर, स्पन्दन का रहस्य आपसे समझना चाहता हूँ।

बुवा तृप्त हुये "कौन है वहाँ, गंडा ले आवो" उनके शागीर्द दौड़कर आये और उनके हाथ में एक गंडा दिया। गंडाबंधन विधि का समारंभ हुआ और उस दिन से राम, बुवा के शिष्य बन गये।

राम कृतार्थ हुये, बहुत दिनों की महत्वाकांक्षा उनकी फलीभूत हुई

लयभास्कर का शिष्य होना ये कोई सामान्य प्राप्ति नहीं थी। संगीत के क्षेत्र में उस समय बुवा के समान कोई पखावज वादक नहीं था। पखावज पर उनकी थाप पड़ते ही सुनने वाले के शरीर में बिजली का संचार नहीं हुआ ऐसा कभी नहीं हुआ। उनके हाथ में युवा-युवती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



के पदन्यास की कोमलता थी, उसी प्रकार विद्युल्लता की कड़कड़ाहट थी, क्रोधायमान भगवान् शंकर के प्रलयकालीन डमरु का गड़गड़ाहट करनेवाला नाद था वैसे ही मंद पवन से आनेवाले हवा के झोंके से दोलायमान कोमल पत्तों की सरसराहट भी थी।

अच्छे अच्छे वादकों को पसीना छूटेगा ऐसी 125 मात्रा की 'चक्रपरन' बजाना और भी प्रभुत्व के साथ से केवल बुवा ने साध्य किया था। बुवा उस समय कीर्ति के उच्च शिखर पर थे।

राम का बुवा के साथ भ्रमण और शिक्षण साथ ही शुरु हुआ। साथ में और शागीर्द भी थे।

घूमते-घूमते बुवा अपने परिवार के साथ सब हिंदूओं और शिव प्रेमियों का पूजास्थान पशुपतिनाथ पहुँचे। भीड़भाड़ के दिन थे तो भी किसी तरह मंदिर के पास धर्मशाला में सबको जगह मिली।

कलाकार व वैभवसम्पन्नता इस समीकरण का उस समय जन्म नहीं हुआ था। सरस्वती और लक्ष्मी की मित्रता भी नहीं हुई थी। कला जगत में परमोच्च स्थान प्राप्त करना, रसिकों से वाहवाही मिलना इसके कारण कलाकार अमीर होगा ऐसा नहीं था। अधिकतर कलाकार गरीब ही थे लेकिन दीन नहीं थे। किसी के सामने हाथ फैलाना यह स्वप्न में भी नहीं सोचते थे।

पर्वतकर भी इस नियम के लिये अपवाद नहीं थे। कला जगत में लक्षाधीश थे, मन से अमीर थे। हाथ से दानी थे। किसी भी शागीर्द को विद्या देते समय अपने पास विद्या चुराकर नहीं रक्खी थी। लेकिन आर्थिक स्थिति की ओर हमेशा दुर्लक्ष किया। गरीबी, पैसे का अभाव और अपने कुटुंब के साथ शागीर्दों का भी पोषण करने की नैतिक जिम्मेदारी रहने के कारण कभी कभी बहुत संकट में पड़े।....

राम ने बुवा से पूछा "गुरुजी! संगीत में बहुत शक्ति है। दीप राग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



गाकर दीये जला सकते हैं। पूरी सृष्टि को सम्मोहित कर सकते हैं ये क्या सच है।

"अलबत्ता। सौ फीसदी सच है लेकिन उसके लिये संगीत की साधना ईश्वरोपासना, देवी आराधना सोचकर करनी पड़ती है। यहाँ मान-सम्मान, पैसा, वैभव, प्रसिद्धि इनका रत्तीभर भी स्पर्श नहीं होना चाहिए। तब कहीं जाकर संगीत में दिव्यत्व और चैतन्य का संचार होता है।

इसके बाद बुवा ने अनेक उदाहरण दिये और विषय वहीं समाप्त हुआ।

उस रात पशुपतिनाथ के मंदिर में ज्यादा भीड़ नहीं थी। बुवा ने प्रमुख पुजारी को बताया कि आज हम अपनी सेवा भगवान शंकर के सामने अर्पण करनेवाले हैं।

प्रमुख पुजारी प्रसन्न हुआ। धर्मशाला में पखावज बजाते समय उसने सुना था। उनकी होशियारी भी समझ में आने लगी थी। लेकिन पूरे समय सुनने का योग नहीं आया था। कलाकार की मर्जी से सुनना चाहिये इतनी समझ और अनुभव होने के कारण उसने बुवा को आग्रह भी नहीं किया था।

रात को गर्भगृह में बुवा के लिये आसन लगाया गया। दो भव्य दीप भी लगाये।

बुवा का पखावज आसन पर रक्खा गया। अन्य शागीर्दों ने अन्य सामान की व्यवस्था की और वे वहीं बैठ गये। आज विशेष बैठक (पर्वणी) है ये उनको समझ में आया था और गुरुजी के उँगलियों और हाथ की करामात देखने और सुनने के लिये बहुत उत्सुक हुये थे।

ठीक नौ बजे बुवा मंदिर में आये। उस समय उनकी शान ही कुछ और थी। सिर पर साफा बांधा था, रेशमी कुर्ता और जरी के किनारे का पीतांबर, गले में रुद्राक्ष की माला, माथे पर चन्दन लगाया था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



बुवा ने पशुपतिनाथ को प्रणाम किया। आसन पर बैठकर एक चक्रदार परन बजाकर बुवा सम पर आये और मंदिर में सबने सिर हिलकार समर्थन किया। उनके पखावज बजाने से संपूर्ण मंदिर गूँजने लगा। जब उँगलियों से मृदु स्वर निकलते थे तो लगता था कि कोई निर्झर बह रहा है। तीव्र और द्रुत बोलों में मयूर नर्तन कर रहा है ऐसा आभास होता था। कड़कने वाले बोल निकलते थे तो शंकर के मस्तिष्क पर स्वर्ग से गिरनेवाली गंगा (गंगौध) की याद आने लगी थी।

"सुनो, मेरे बच्चों अब यह गजराज बाज सुनो और भगवान शंभु को याद करो।" बुवा ने प्रसन्नचित्त से और अलग ही आत्मविश्वास से अपने शागीर्दों को बताया। बाज कठिन है और मुश्किल समझा जाता है। उसे बजाने के लिये वज्र के समान हाथ होने चाहिये। तपश्चर्या करनी पड़ती है। हृदय में विलक्षण भावविह्वलता होनी चाहिये।

बुवा ने बहुत तैयारी के साथ गजराज बाज बजाना शुरु किया। उस विलक्षण बोलों से व ताल से हम अपना अस्तित्व भूल रहे हैं ऐसा राम को लगने लगा। देखते-देखते बुवा द्रुत गति में बजाने लगे। लय दुगुनी, दुगुन से चौगुन और चौगुन से अठगुन तक पहुँच गई।

अचानक रास्ते पर हल्ला हुआ। कुछ भयानक घटना घटित होने वाली है, ऐसा मंदिर में सबको लगने लगा। सबकी आँखें रास्ते की ओर घूम गई। राम की इच्छा नहीं थी और बुवा को यह अच्छा नहीं लगेगा यह जानते हुये भी उसने रास्ते पर देखा.....और .... उनकी आँखों पर उनका विश्वास नहीं हुआ। उनकी आँखे खुली की खुली रह गईं ....आश्चर्यचकित होकर मुँह भी खुला का खुला रह गया.. राम की जो अवस्था हुइ वही अवस्था मंदिर के सब पुजारी प्रेक्षक और श्रोताओं की हुई।

नेपाल नरेश का प्रमुख हाथी ....ऐरावत...पैर के सिक्कड़ तोड़कर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पशुपतिनाथ के मंदिर में घुस रहा था .... घुस गया था। उसके पीछे उसका महावत, सैनिक, देखनेवाले सबका जत्था भागते हुये चिल्लाते हुये आ रहा था।

वह प्रचंड गजराज, ऐरावत मंदिर में घुस भी गया। देखनेवालों के कलेजे के ठोके चुक गये, हृदय भय से कांपने लगे। कुछ भयानक घटना होनेवाली है.....वह हाथी बुवा और उनके शागीर्दों को कुचल देगा ऐसा लगने लगा। सब अवाक् हो गये थे .... मौन हो गये थे ... उनके मुँह से आवाज ही नहीं निकल रही थी ........

बुवा को इसकी कोई कल्पना नहीं थी। वे अपने वादन में लीन हो गये थे।

उन्होंने क्षणभर सामने देखा। भागकर आनेवाले ऐरावत को देखा ...और प्रसन्न होकर मुस्कराये।

राम आश्चर्यचकित होकर देख रहा था।

अंत में गजराज मंदिर में आया।

और शांत होकर बुवा के सामने बैठा।

बुवा ने बजाना न रोकते हुये उसे प्रणाम किया और सुंदर शानदार परन बजाकर गजराज बाज की समाप्ति की।

उस रात राम ने और सब शागिर्दों ने बुवा की अत्यंत प्रेम भावना से और भगवान मानकर चरण सेवा की।

राम को संगीत के सामर्थ्य का अनुभव हुआ।

तपस्या का, निःस्वार्थ तपस्या का, अकिंचन तपस्या और अयाचित वृत्ति से की हुई तपस्या का महत्त्व समझ में आ चुका था।

अपना आगे का जीवन कैसा होना चाहिये इसका इससे दूसरा कोई भी परमोत्कृष्ट आदर्श नहीं मिलेगा ऐसा साक्षात्कार राम को हुआ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



लयभास्कर पर्वतकरजी के पास आने का फल उन्हें मिल गया था।

(सुप्रसिद्ध मसाजिस्ट डॉ. राम भोसले के जीवन में नौ रसों का समावेश हुआ था। वे उत्कृष्ट कथ्थक नर्तन, सितारवादक, तबला, पखावजवादक, कंठसंगीत, कुंडलिनी योग जानकर, उत्कृष्ट शिकारी, देशसेवा सेनानी इतने या इससे भी अधिक गुणों के जानकार होने के बावजूद स्वयं पैसा कमाने के उद्देश्य न रखते हुये सर्वश्रेष्ठ राजकीय नेता, राष्ट्रप्रमुख, कला क्षेत्र के दिग्गजों को अपनी मसाज विद्या से आराम पहुँचाया है। इसके लिये देश-विदेश सब जगहों पर ज्ञानार्जन और सेवा के लिये आपने अनेक यात्रायें की हैं। महात्मा गांधी, पं. जवाहरलाल नेहरु, योगी अरविन्द, स्टॉलिन, बर्नाड शॉ, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, विन्स्टन चर्चिल, ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ आदि अनेकों को उन्होंने मसाज किया। इसी संदर्भ में ज्ञानार्जन हेतु वे खाप्रुमामा पर्वतकरजी से मिले क्योंकि उनकी उँगलियाँ पखावज पर कितनी सुंदरता से पड़ती हैं। उसे सीखकर वह मरीजों को मसाज करके उन्हें ठीक करेंगे यह सोचकर इसे सीखने वे खाप्रुमामा पर्वतकर जी के पास गये। खाप्रुमामा के पखावज बजाने संबंधी विशेषताओं का वर्णन उन्होंने किया है। इसीलिये विशेष इस पुस्तक का संदर्भ दिया जा रहा है।)

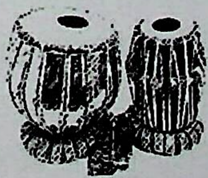

---

**साभार :** श्री धनंजय देशपांडे लिखित "दिव्य स्पर्श" (2003) उपन्याय से अनुवाद पृष्ठ संख्या 148 से 154।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

### स्मृति के झरोखे से –

# लयभास्कर खाप्रुमामा उर्फ लक्ष्मणराव पर्वतकर

**– श्री काशीनाथ पर्वतकर**

शास्त्रीय संगीत में तबला वादन को अत्यंत महत्त्व है। ताल के बिना सुर नहीं होता है और संगीत श्रवणीय नहीं बनता है। तबला वादन में और उस शास्त्र की गहराई से अध्ययन करके जिन्होंने सिद्धान्त बनाये ऐसे ये खाप्रुमामा साठ वर्ष पूर्व काल के अधीन चले गये, उनके बारे में आज लोगों को जानकारी करीब करीब नहीं के बराबर ही है।

लयभास्कर खाप्रुमामा को जिन्होंने देखा हो, उनकी आदतें, स्वभाव जिन्हें मालूम हों, उनकी यादें जिनके पास हों ऐसा कोई व्यक्ति आज मिलना आसान नहीं है। मैं उनसे मिला हूँ इसलिये उनके जीवन की कुछ विशेष जानकारी मिले ऐसा लेख लिखने के लिये मुझसे कहा गया।

सन् 1935 से 1940 के आसपास मैंने खाप्रुमामा का तारुण्य देखा और तबला के क्षेत्र में उनका योगदान देखा। वे अत्यंत सरल और मिलनसार स्वभाव के थे। उन्हें शान-शौकत का शौक नहीं था। इस कारण उनको कभी भी पूरे कपड़े पहने मैंने नहीं देखा। पूरा शरीर खुला रहता था। लज्जा के लिए कमर में लपेटी घुटने तक धोती यह उनका घरेलू वेष था। वे हमेशा अपनी धुन में लगे रहते थे। खाली समय में हाथ से ताली बजाते, और पैर गर्दन हिलाकर ताल देते रहते थे और कुछ समस्या का समाधान कर रहे हैं ऐसा भाव उनकी मुखमुद्रा पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



दीखता था। उनकी फोटो देखकर समझ में आयेगा कि इस व्यक्ति के चेहरे पर उनकी विद्वता की चमक दिखाई देती है। उनकी तीखी नाक, ऊँची ललाट और आँखों में दिखने वाली विद्वत्ता की चमक किसी को भी आकर्षित करनेवाली थी।

चन्द्रनाथ पर्वत गोवा का दुर्गम ग्राम था क्योंकि उन दिनों उस गांव में जाने के लिये रास्ता नहीं था। दो तीन मील पहाड़ पर चढ़ने पर उस में पहुँचते थे। ऐसे इस अरण्यमय गांव में इस औलिया का जन्म हुआ। प्रकृति का रमणीय सौंदर्य और शुद्ध झरने का पानी इन्हीं कारणों से यहाँ के लोगों में संगीत के प्रति रुचि निर्माण हुई होगी। गांव के घर-घर में किसी न किसी वाद्य विशेषता तबला, चौघड़ा, शहनाई, ताशा, ढोलक इत्यादि के स्वर गूँजते रहते थे। अतः इस गाँव को अन्य शहर के लोग रानवट या जंगली कहकर तुच्छ मानते थे। इस गाँव का वर्णन एक कवि ने किया है। यह कोंकणी भाषा में है—

"रानावट न्ही ते, नंदनवन त्ये
गोमंतकाचे नांव !
सगळो संसार सोधल्यारं असलो,
मेळचो ना तो गांव!

इसका अर्थ ऐसा है कि यह गाँव माने जंगल नहीं बल्कि गोमंतक का नंदनवन है और सम्पूर्ण विश्व ढूँढने पर भी ऐसा गाँव नहीं मिलेगा।

गुरुकुल परम्परा माने गुरुगृही रहकर शिष्य ने विद्यार्जन करना। इसी के अनुसार खाप्रुमामा ने अपने विद्यार्थियों को तबला वादन का उत्तम शिक्षण दिया। स्व. गणपतराव पर्वतकर इन्होंने तबला वादन की प्रारंभिक शिक्षा इन्हीं से प्राप्त की। वे ऑल इंडिया रेडिओ, धारवाड़ में ए क्लास आर्टिस्ट के रूप में बजाते हुये, वहीं से निवृत्त हुये। दूसरे शिष्य स्व. वसंत जोतकर ने खाप्रुमामा के पास तबला सीखकर अपना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



जीवन सफल बनाया। स्व. सूर्यकांत और रामकृष्ण बुवा ये खाप्रुमामा के पुत्र, इनके पास तबला सीखकर नामांकित कलाकार बने।

खाप्रुमामा के संबंध में बहुत सारे यादगार क्षण मेरे स्मृतिपटल पर हैं लेकिन इस लेख में सब लिखना असंभव है अतः एक मजेदार किस्सा नीचे उद्धृत कर रहा हूँ।

लय जिसके शरीर के अणु-अणु में विद्यमान थी वह सामान्य जीवन में इस लयशास्त्र का कैसा उपयोग करता था यह निम्नलिखित उदाहरण से समझ में आयेगा।

एक बार खाप्रुमामा बोट से यात्रा कर रहे थे। बोट समुद्र में आगे बढ़ने के बाद इंजन की आवाज सुनकर ऐसा आभास हुआ कि इंजन की लय कुछ बिगड़ गई है। वे तुरन्त उस बोट के कप्तान से जाकर मिले और कहा कि आपकी बोट का इंजन ठीक नहीं चल रहा है। आप इसकी जाँच पड़ताल कीजिए। कप्तान ने उनसे पूछा "आप को कैसे समझ में आया? खाप्रुमामा ने उनसे कहा "लयशास्त्र का अध्ययन करता हूँ। इंजन की आवाज से ही मुझे मालूम हुआ कि इंजन की लय बिगड़ गई है।

खाप्रुमामा का रहन सहन अति सरल। भात और मछली उनके पसंद का खाना था। उनका जीवन अत्यंत सुख से व्यतीत हुआ था। गाँव का उनका घर माने राजवाड़ा था। बाहर के प्रतिष्ठित लोग या सरकारी अधिकारी आने पर वे खाप्रुमामा के घर ही रहते थे। ये पंचक्रोशी के नामांकित व्यक्ति थे। सबका आदर करने में सबसे आगे रहते थे। उस गाँव में शिक्षण की व्यवस्था नहीं थी फिर भी "केशरी" जैसा अखबार पढ़ने लायक उन्होंने अक्षरज्ञान प्राप्त किया था। ऐसे इस बुद्धिमान व्यक्ति का और उनके कर्तृत्व का ज्यादा प्रचार प्रसार नहीं हुआ। उनकी वृद्धावस्था में वे मुंबई आये और फ्रेंच बिज्र पर स्थापित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



देवधर संगीत अकादमी में उन्होंने अपने ताल संशोधन का प्रात्यक्षिक करके दिखाया। उनकी यह अजब खोज देखकर सब संगीतज्ञ आश्चर्यचकित हुये और सबने मिलकर मरहूम उस्ताद अल्लादियाँ खाँ साहेब के हाथ से इन्हें 'लयभास्कर' यह पदवी प्रदान की।

मुझे इस प्रसंग में याद आती है रामनुजम् गणितज्ञ की। उनके गणित के खोज भारत के लोगों को समझ में नहीं आये। लेकिन जब इंग्लैंड के हार्डिंग साहब ने उनके शोध का अध्ययन किया और उन्हें इंग्लैंड बुलाया तब इस अज्ञात व्यक्ति का नाम भारत में सबको ज्ञान हुआ। हमलोगों के खाप्रुमामा की यही अवस्था थी। उन्हें भी वृद्धावस्था में प्रसिद्धि मिली। उस समय आधुनिक संसाधन, तांत्रिक उपकरण आदि उपलब्ध नहीं थे इसी कारण उन्होंने किया ताल-लय का संशोधन कहीं भी मुद्रित नहीं हुआ। इसी कारण आज की युवा पीढ़ी को उसका अध्ययन करना असंभव हो गया है यही एक शोकांतिका है।

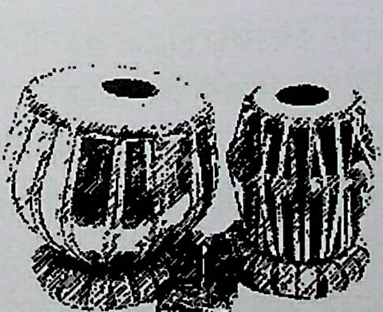

श्री काशीनाथ पर्वतकर रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर के स्नेही हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# खाप्रूमाम

## साक्षात्कार–श्री नरोत्तम पर्वतकर

*मैं कला अकादमी गोवा द्वारा आयोजित लयभास्कर खाप्रुमाम पर्वतकर ताल महोत्सव (21-21 फरवरी 2016) में गोवा गई थी। गोवा में ही मेरे एक बंधु से मेरी मुलाकात हुई। जिन्होंने खाप्रुमाम से तबले की प्रारम्भिक शिक्षा ली थी। उनके द्वारा ज्ञात खाप्रुमाम संबंधी जानकारी —*

1947 को मैं खाप्रुमाम के पास तबला सीखने गया। 1951 तक केवल चार वर्ष ही सीख पाया क्योंकि उसके बाद खाप्रुमाम बीमार पड़े। खाप्रूमाम के विचार से तबला बजाना आसान है परंतु प्रारम्भिक रूप में सर्वप्रथम उसपर हाथ रखना कठिन है। सर्वप्रथम तबला और डग्गा पर हाथ कैसा रखना, कौन सी ऊँगली कहाँ रखना यह सीखना अनिवार्य है। तबले के बोलों में त और ग ये मूल अक्षर ध्यान से सीखकर तीन ताल के धा धिं धिं धा इन चार अक्षरों की अच्छी प्रॅक्टिस की तो कोई भी ताल बजा सकते हैं यह उनके सीखाने का तरीका था। उसके बाद उसकी पढंत कैसी हो? और उसके बाद उसको दुगुन तिगुन आदि कैसे करना सीखाते थे।

त्त, क्डधीं, धिलांग, धान्न, धेत्त् धिनगिन, तगोऽन्न धिंतिरकिट धीऽक्ड, तराऽन्न, आदि तबले के बोल कैसे निकालना इस पर रियाज करवाते थे। इसे सीखने में किन ऊँगलियों का प्रयोग करना वो कैसे करना बताते थे। इसे सीखने में मुझे चार वर्ष लगे। उसके बाद खाप्रूमाम के दूसरे शिष्य श्री विश्वंभर पर्वतकर के पास आठ वर्ष गुरुशिष्य परम्परा में उनके घर रहकर विद्या प्राप्त की और बाद में अनेक जगहों पर नौकरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



की। 2006 मार्च में गोवा सरकार ने नरोत्तम पर्वतकर का सम्मान किया। आज भी वह कार्यरत हैं। इन्हीं का बताया यह किस्सा है — अपने शिष्य गोवा के जमींदार श्री मलबाराव सरदेसाई के पास अधिकतर खाप्रुमाम जाते रहते थे। उन्हीं के घर भी रहते थे। 17 वर्ष वे उनके साथ रहे। बीच बीच में अपने घर पर्वत पर जाते रहते थे। 1892 में स्वामी विवेकानंद जी गोवा आये थे तो मडगांव के दामोदर मन्दिर में खाप्रुमाम से उनकी मुलाकात हुई थी और उसी समय श्री मलबाराव उन्हें अपने घर सावईवेरे लेकर गये और उनसे तबला सीखने लगे। दोनों गुरुशिष्य दिन दिन रात ताल और लय से खेलते रहे। श्री मलबाराव जी ने खाप्रुमाम से लयकारी की बहुत सारी सूक्ष्मतायें, ताल के प्रकार आदि सीखे। एक बार खाप्रुमाम से उन्होंने पूछा मैं आपको क्या गुरु दक्षिणा दूँ? तो खाप्रुमाम ने क्या मांगा होगा? धन, सम्पत्ति, जमीन! वह तो विरक्त योगी थे, सासांरिकता तो उन्हें ज्ञात ही नहीं थी। मन में कोई लालच नहीं! केवल लय के साम्राज्य में लीन लयशास्त्रज्ञ। उन्होंने श्री मलबाराव जी से कहा कि मुझे सिर्फ एक टोपी देना। शायद वही टोपी लगाये हुये उनकी फोटो हम सब आज तक देख रहे हैं। यह घटना श्री मलबाराव जी ने श्री नरोत्तम पर्वतकर को बताई थी। श्री मलबाराव जी ने अपने पूजा के स्थान पर खाप्रुमाम की फोटो लगाई थी।

आज यदि हम तुलना करें तो आज के गुरुजी शिष्य से गुरुदक्षिणा के रूप में क्या क्या मांगते हैं इसकी हम सबको, उस क्षेत्र में कार्यरत सभी लोगों को बहुत अच्छी तरह जानकारी है। कुछ बिरले ही खाप्रुमाम की तरह विरक्त दिखेंगे।

---

लेखिका के निकटस्थ बंधू उनका नाम नरोत्तम पर्वतकर है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# खाप्रूमाम

## श्री भिकू पै आंगले से साक्षात्कार

*खाप्रूमाम पर्वतकर ताल महोत्सव 20-21 फरवरी 2016 को गोवा में आयोजित था। उसके बाद मैंने गोवा के प्रसिद्ध विद्वान् श्री भिकू पै आंगले से साक्षात्कार लिया। उनके उद्‌गार —*

कला उपासना का विषय है। उपासना से उसका महात्म्य समझ में आता है। खाप्रूमाम ने लय-ताल की उपासना-साधना की। उन्हें उसका महत्त्व समझ में आया। वे उसके संशोधन करने के लिये प्रवृत्त हुये।

भगवान् कृष्ण ने अवतार लेकर कुरुक्षेत्र में युद्ध किया उसी प्रकार ताल क्षेत्र में अवतार लेकर खाप्रुमाम ने लय के साथ युद्ध करके उसपर विजय प्राप्त किया। संगीत क्षेत्र में वीणापाणि सरस्वती ने खाप्रूमाम के रूप में अवतार लिया। सरस्वती देवी चौंसठ कलाओं की खान है। उन कलाओं में वादन कला में लयभास्कर पदवी प्राप्त करने वाले खाप्रूमाम एकमात्र हैं। स्वामी विवेकानन्द युवा पीढ़ी को सामर्थ्य देने वाले एकमेव व्यक्ति उसी प्रकार लय के क्षेत्र में कार्य करनेवाले एकमेव व्यक्ति खाप्रूमाम हैं। यह सहज कलावृत्ति नैसर्गिक है। यह वृत्ति खून में रहनी आवश्यक है। यह जन्मजात होती है।

खाप्रूमाम ने विरासत में प्राप्त ताल और लय को गोमंतक में स्थापित किया। ताल और लय के सूक्ष्म भेद करके दिखाये। अलग अलग ताल बनाकर दिखाये। इन सबका प्रात्यक्षिक करके विद्वानों को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



अचंभित किया। अतः यह परमेश्वरी प्रेरित व्यक्ति ताल और लय के क्षेत्र में अवतारी पुरुष बन गये। इनके रोम रोम में लय और ताल बसा था। निद्रावस्था में भी लयकारी चलती रहती थी। लय के सूक्ष्म भेदों का प्रात्यक्षिक करके दिखाना सरस्वती की कृपा के बिना असम्भव था अतः सरस्वती ने खाप्रूमाम के रूप में अवतार लेकर लयक्षेत्र में बहुत बड़ा चमत्कार करके दिखाया।

अपने शिष्य गोवा के बहुत बड़े जमींदार श्री मलबाराव सरदेसाई जी के घर खाप्रूमाम 15-15 दिन रहते थे। संगीत पर चर्चा होती थी। दोनों ही लय व ताल के क्षेत्र में खो जाते थे। मलबाराव सौन्दर्यवादी दृष्टि के धनी थे। गोवा में सब कलाकारों का स्वागत करते थे, आदर से अपने घर में सबको रखते थे। 15 दिन केवल ताल के ऊपर वार्ता करना, चर्चा करना, उसी में लीन होना यह ईश्वरीय वरदान है, ईश्वर प्रेरित है।

काल से निर्मित ताल के अप्रचलित प्रकार देनेवाले केवल खाप्रूमाम थे। इनका वादन नियम से हटकर होता था लेकिन उनके अपने नियम में इतने ठीक बैठते थे कि इसी ने उन्हें 'लयभास्कर' और 'तालकंठमणि' बनाया। ऐसा महान् कलाकार फिर से होना कठिन है।

खाप्रूमाम को समझना, उनके चमत्कार का विश्लेषण करना अत्यंत कठिन है। ऊपरी व्यक्तित्व का चित्र खींचना, छाया चित्र बनाना आसान था लेकिन अंतर्मन बाह्य मन से भी विशाल था उसे समझना सबके लिये बहुत कठिन था। अंतर्मन ताल और लय से पूर्ण रूप से भरा हुआ था। वह यह विद्या सबको बाँटना भी चाहते थे। सबको समझाना भी चाहते थे लेकिन उनको समझनेवाले ही मिलना कठिन था। इनके शिष्यों में इनके सुपुत्र स्व. श्री रामकृष्ण पर्वतकर, स्व. डॉ. मलबाराव सरदेसाई, स्व. श्री विश्वंभर पर्वतकर, स्व. श्री सुब्राय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पर्वतकर, स्व. श्री पंढरीनाथ नागेशकर, स्व. श्रीनंदकुमार पर्वतकर, गानतपस्विनी स्व. मोगुबाई कुर्डीकर आदि हैं।

स्व. पं. किशन महाराज ने कहा –
लयदार तीन प्रकार के होते हैं –
(१) सबसे ऊपर प्रतिष्ठित लयदार (२) विशिष्ट
(३) साधारण
उ.विलायत खाँ, पं. रविशंकर, पं. निखिल बैनर्जी सब लयदार थे तुम्हारे पिता और दादा लयभास्कर थे। तुम्हारे दादाजी जन्मजात लयदार थे। वे लय में ही लीन रहते थे। स्वर की साधना रियाज करके साध सकते हैं परंतु लय खून में ही होनी चाहिये।

श्री भिकू पै आंगले ने शिक्षण क्षेत्र व कलाक्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया है। उत्साही व्यक्तित्व। इस समय 91 वर्ष के हैं। नाट्यलेखन, के साथ साथ शैक्षणिक क्षेत्र में अनेक ग्रंथ लिखे हैं जिन्हें गोवा कला अकादमी, गोवा मराठी अकादमी के पुरस्कार प्राप्त हुये हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# खाप्रूमाम पर्वतकर

**साक्षात्कार - पं. सुरेश तळवलकर**

मुझे ऐसा लगता है कि हमारे लय के प्रदेश में लयताल पर प्रभुत्व करने वाला खाप्रूमाम के समान कोई भी व्यक्ति नहीं है। मैं उन्हें देख नहीं सका क्योंकि जब वे गुजर गये तो मैं मात्र पांच वर्ष का था। लेकिन मेरे गुरुजी पंढरीनाथ नागेशकर ने कुछ दिन उनसे सीखा उसी प्रकार यशवंतराव केरकर जी ने भी कुछ दिन उनसे सीखा। मैंने इन लोगों से बहुत सारी बातें सुनी हैं। मैंने खाप्रूमाम के सभी रिकार्डस् सुने। उससे समझ में आता है लय ताल का प्रकांड पंडित ऐसा उनका व्यक्तिमत्त्व था। स्वर-राग की तुलना की अपेक्षा लय-ताल यह विषय थोड़ा कठिन है। क्योंकि काल मापन का संबंध लय मापने के लिये आता है। अतः काल मापन माने मर्यादा। दो मात्रा का काल संपूर्ण ताल में निभाना ये बंधन ताल लय की क्रिया का पहला बंधन। इस बंधन से उन्होंने ताल के संपूर्ण विश्व का दर्शन किया।

ताल में 12 मात्रा में 16 मात्रा, 16 में 12, 12 में 18, 18 में 16 ये सब क्रियायें एक समय एक ही व्यक्ति कैसे कर सकता है? यह पहली स्थिति जिसे प्राप्त होती है उस समय मनुष्य अपने को चिंतन में डूबा देता है। ऐसे ही अहोरात्र चिंतन में खाप्रूमाम ने स्वयं को डूबा दिया। मेरी भी ऐसी स्थिति हो गई थी। तब समझ में आया कि विषय अत्यंत कठिन है।

मैं एक बार लयभास्कर खाप्रूजी की शिष्या गान-तपस्विनी मोगूबाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कुर्डिकरजी के पास गया था। मैंने उन्हें लय ताल की अनेक क्रियायें करके दिखाई थी। तब उन्होंने पूछा था यह सब कैसे करते हो? तो मैंने बताया मेरे गुरुजी रामनरेश्वरन से सीखा। वे कौन हैं? मैंने बताया वे मद्रास के हैं, मृदंग बजाते हैं। उन्हें ये पता था कि वहाँ सब लय के चमत्कार करते हैं।

वास्तव में लय में चमत्कार करने के लिये, उनके सूक्ष्म भेद जानने के लिये लय में डूबना पड़ता है। आज 60-63 वर्ष के बाद भी लयभास्कर कौन है यह सब जानते हैं। यह ऐसा व्यक्तिमत्त्व था कि उन्होंने अनेक कूट प्रश्न के हल निकाले थे। चक्रदार के अनेक तरह से हिसाब लगाये थे। पौने सोलह मात्रा में कमानी चक्रदार बांधा। शारीरिक रियाज तो बहुत लोग करते हैं लेकिन खाप्रूमामा का बौद्धिक रियाज था। अखंड साधना में अपने को समर्पित किया। लय ताल पर आत्मविश्वास के बल पर अनेक कठिन से कठिन समस्याओं का आसानी से हल निकाला। इन सबका श्रेय खाप्रूमामा को है उन्होंने अपने शिष्यों पर जैसे नागेशकर गुरुजीपर संस्कार डाला। नागेशकर गुरुजी ने हमलोगों पर संस्कार किया। गुरु परंपरा से अपने शिष्यों को विद्यादान दिया। परंपरा में स्थापित मूल्य, विचार सबके सामने प्रस्तुत किये। उनका प्रदर्शन किया। आज इनके ये विचार समाज के लिये ज्ञानबोधक हैं।

लय ताल में उनके डूबने की स्थिति इतनी गहरी थी कि जब गूढ प्रश्नों के उत्तर नहीं मिलते थे तो उसी में लीन रहते थे जैसे ही उत्तर मिलता था जिस अवस्था में रहते उसी अवस्था में लोगों के सामने आते जैसे नहाने गये तो उत्तर प्राप्त होने पर नग्नावस्था में ही बाहर आते थे। उस समय अपनी कला को छोड़कर किसी का ध्यान नहीं रहता था। ये बहुत बड़ी साधना है। दीन दुनिया छोड़कर केवल अपने लय ताल के प्रश्नों का उत्तर खोजना।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



आज की परिस्थिति से उस समय की परिस्थिति भिन्न थी। उसी परिस्थिति में उन्होंने में विचार किया। अपनी अगली पीढ़ी का भी उन्हें ध्यान नहीं था। क्या गवाँ रहे हैं और क्या कमा रहे हैं इसका भी उन्हें ध्यान नहीं था। आज गँवाना और कमाना इसके विचार बदल गये हैं। लेकिन उनकी साधना से उनको सोना प्राप्त हुआ। उनकी उस साधना का आगे की पीढ़ी को फायदा हुआ। जैसे बीज कोई बोता है और फल तीसरी पीढ़ी खाती है। आज वही स्थिति है लयभास्कर की साधना पर आज की पीढ़ी विचार कर रही है। यह बहुत बड़ा व्यक्तित्व होकर तालशास्त्र को बहुत ज्ञान देकर गया।

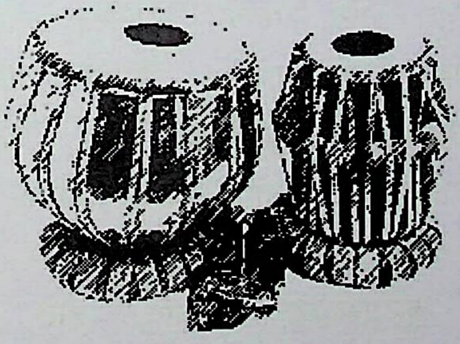

तालयोगी सुरेश तळवलकर तबला के क्षेत्र में प्रतिभावान सर्जनशील कलाकार, देश-विदेश से अनेक पुरस्कार प्राप्त कलाकार। उत्तर भारत दक्षिण भारत की शैली से अपनी विशेष शैली के निर्माता।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# गीताञ्जलि

## लयब्रह्मभास्कर खाप्रूजी

– सौ. शोभना सुहास पर्वतकर

रम्य मनोहर चंद्रनाथ डोंगरावर।
झाला 'लयब्रह्म भास्कराचा अवतार।
इंद्रिये होती लयतालाच्या नादात।
नयने चमकती लयीच्या स्वप्नात
प्रथमवादन होते सारंगीच्या स्वरांचे।
वेड लागले तया स्वरापेक्षा लयीचे।
पकवाज वादनात होता कुशल साकार
पकवाजा संगे हाती लागला तबला।
लयीच्या तुकडयाशी खेळ मांडला।
काललय मुठीत धरण्याची केली किमया।
एका लयीचे, होत असेल सम गुण।
प्रश्न पडला कां होऊ नये विषय गुण।
अशा कुटप्रश्नाच्या शोधात, होते मन।
नाना सिद्धांत बांधण्यात गुंतले तन
संगीत क्षेत्रात अढळ तारा चमकला।
लय शास्त्रातील महान संशोधक ठरला।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



खाप्रुजीच्या पहिल्या संगीत परिषदेत
विद्वान तबलयांनी वंदीले मानाच्या मुजऱ्यात।
केलेल्या फर्माशीचे हजर जबाव दिल्यावर
"तुम्ही अद्वितीय" पांडोबा गुरवांचे होते उद्गार
भास्कर बुआंच्या बड्या संगीत मैफलीत
खाप्रूजी गुरफटून गेले ताल ब्रह्मात।
तद्क्षणी भास्करबुवा बहु गहिवरले।
'लयशास्त्रातील प्रभू' म्हणत गौरविले।
कैक जिंकल्या मैफली अपुल्या किमयांनी
'लयभास्कर' दिला किताब अल्लादियाखाँनी।
'तालकंठमणी' दिली पदवी गोमंतकियांनी।
'लयीचा तळपकता सूर्य' गौरविले धरंदाज उस्तादांनी।
अखेरच्या क्षणी पुसे अपुल्या सुनेला
"साग वसुंधरे लय आहे कुठल्या दिशेला"
कदाचित सापडली नसेल दिशा लयीची।
दिशा शोधाया वाट धरली स्वर्गाची
संगीतज्ञ, मुरलीधर अन् नारद मुनीला।
पुसावया गेला असेल स्वर्गाला स्वर्गाला।

---

खाप्रूमाम के सुपुत्र सूर्यकान्त पर्वतकर के बेटे सुहास पर्वतकर की पत्नी शोभना सुहास पर्वतकर ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# Khaprumama – A Remembrance

## Introduction by Rajan P. Parrikar

Namashkar.

Among the refrains that filled the days of my childhood in Goa were the paeans sung to Goa's musical deities by my elders. Four were marked out for special worship, their stratospheric achievements inviting an excess of fervour. They were: Kesarbai Kerkar, Mogubai Kurdikar, Dinanath Mangeshkar and Khaprumama Parvatkar. In this hallowed pantheon it was Khaprumama's name that would often break ranks to be elevated even higher. At the time there were, still among the living several admirers who had seen and been around Khaprumama. Few of these elders could have appreciated the details or the nuances of laya, or even the extent of his stupendous mastery of laya-shastra, but they were all united in their recognition that a giant had lived among them and that they had been blessed to have made his acquaintance. It belongs to my dearly cherished memories the earful of stories of Khaprumama my brother and I got from the late maestro Taranath Rao (Hattangadi), then the tabla guru at Kala Academy, Panjim, and one of the very few who did understand and know Khaprumama and his work.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



Khaprumama is today all but forgotten and mention of his name in any gathering of music lovers is likely to evoke a quizzical expression. He leaves behind not a single published volume that could attest to his extraordinary ability, intelligence and industry, an occupational hazard for any exponent in a nuncupative tradition. No criticial mass of students evolved around him to plough, extend and propagate his knowledge and ideas. Therefore, when his mortal remains were consigned to ashes so was his lifetime's work. It was akin to burning down a huge library in one fell sweep. The nonagenarian Malbarrao Sardesai, an influential patron of the musical arts in Goa in whose house Khapru spent a generous amount of time, is perhaps the great man's only surviving disciple. A recording or two of Khaprumama gathers dust on the shelves of the hoarders and serves to preserve their bragging rights. (Note added later: We did manage to excavate some recordings. See below.)

Khaprumama devoted his entire life to laya-shastra – the theory and technique of tempo, its sub-divisions and rhythm. The propositions in this field are simple enough to state but their solution and implementation moves into very difficult territory very rapidly. An analogue is found in the realm of pure mathematics – Number Theory – where the propositions are facile to put down but their solution outside the ken of all but the most gifted mathematicians. There, too, we had Ramanujan, a swayambhu like Khaprumama.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



What made Khaprumama singular over and above his other accomplishments in tala-shastra was his ability to simultaneously hold in his mind multiple lines of rhythmic cycles and synchronize them in a manner of his choosing. Recall that Shri J.S. Bach, the ethnic composer from Western Europe displayed similar talents but with melodic lines. He is considered a great genius in Western Europe's ethnic musical tradition with yards of paper are pressed in his memory. Whereas Indians have to date produced approximately two small profiles on Khaprumama.

The profile on Khaprumama presented below is culled from an anthology in Marathi entitled Kalaatm Gomantak ("Talented Goa") by the late Shri Gopalkrishna Bhobe. It has been skillfully rendered into English by Dr. Ajay Nerurkar. The first public release of this transcript was on the Usenet newsgroup rec.music.indian.classical (RMIC) in 1996. Additionally, excerpts from Prof. B. R. Deodhar's essay from **Pillars of Hindustani Music** are attached.

Warm regards,

Rajan P. Parrikar

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## "LayaBhaskar" Khaprumama Parvatkar

**-by Gopalkrishna Bhobe**

(Translation: Dr. Ajay Nerurkar)

Without mental acuity it is impossible to touch the core of laya – rhythm with all its different facets. The swara can be mastered with effort, but the sense of Laya has to be inborn. Even venerable ustads are in awe of it. Those who are able to conquer both the swara and laya can be said to have understood the very essence of music. A lifetime's ardent devotion may be enough for someone to acquire sway over the swara but more than a bookish knowledge of Laya may still elude him. To perform the miracle of Laya, one needs to have it in one's blood, and thus blessed performers instantly acquire fame and admiration.

Not too long ago, in Goa there lived a person who had not only touched the core of Laya but had achieved a sort of enlightenment in this art. He immersed himself in the acquisition of this divine learning and as a result was able to grasp tala in its entirety. This ascetic-musician could have gained the immortality of an Amir Khusro, a Tansen, a Sadarang or a Pakhawaji Bhagwandas had he been in the court of an aesthete ruler in an earlier age. A university would have been built around his work, volumes written on his discoveries. These books would then have become the Word of God to future generations.

His name was "LayaBrahmaBhaskar" Khapruji Parvatkar. To his dying day, Khapruji devoted himself

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



to the study of Laya, unencumbered by any triumphal ambition. The only opponent he wanted to subdue was the power of Laya. In the process every part of his body had imbibe rhythm, as it were. Much as a sadhu would teach theology to his disciples by peeling away the skin to reveal what lay inside, Khapruji brought the science of laya under control and then simplified its most unfriendly aspects so that everyone could comprehend the substance of this profound body of knowledge.

Khaprumama was like a living almanac of Laya. He knew its minutest details. It is doubtful whether there has been another like him in India. Upon greater thought, one feels certain that he was infact in a class by himself. Unfortunately, he did not record his achievements systematically, so that today we can do no more than say that once upon a time Goa had produced such a person. The generation that saw and heard Khaprumama was lucky and the ones who knew him closely were truly fortunate.

I can still clearly remember how I first met Khaprumama.

It was Holi Poornima. The brightness of a fourteen-wick lamp was competing with the full moon as the devotional song Shri *Bhagwanta yaadavanchya raaya ho* began. Musicians from around were present and were standing in a circle playing in unison various kinds of drums, triangles and mridangams. The sam was on the first syllable of *Bhagwanta*.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



A visiting ghumat (a type of drum) player eager to show his skill, delicately played a mukhda, followed it up with a paran and attempted to catch the sam. As luck would have it, he erred in the mukhda and missed the sam. The audience laughed mockingly. This offended the visitor and a debate began between his side and the others. Wiser heads prevailed when this argument threatened to take a serious turn. They pleaded, "Let us not disrupt the worship. We can refer the issue to Khaprumama tomorrow and have him adjudicate." The proceedings resumed albeit with some misgivings on both sides.

The next day Khaprumama was in the village. He was wearing a flat, grey cap, a collarless Parsi-style coat, an ordinary dhoti and Kolhapuri chappals. His snow-white moustache attracted my attention first. The half-closed eyes attested to his being deep in thought. Khaprumama pronounced his verdict which everyone joyfully accepted and the festivities continued. I also got to see with what ease his hands moved over the ghumat and the solid sound they made.

At a later time, I had the opportunity to see him demonstrate various examples of his layakari at the music school of his student, Vishwambar Parvatkar. Ever since understanding what Laya was, I had heard a lot about Khaprumama's miraculous layakari. I was not much impressed by what I saw before the actual performance got under way. But once that happened, I was speechless, dumbfounded by the unbelievable display.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



A chakradhar with five dha's, some others with seven, eight, nine, ten, fifteen, twenty, all the way upto thirty five and forty dha's, proceeded from his mouth as Vishwambar held the theka. After this came some arithmetical tricks like adding whole and fractional matras, subtracting, multiplying or dividing them. However, I was truly wonderstruck when he played the sixteen-beat Chitaal on the tabla and at the same time recited the fourteen matras of the Chautaal theka, the two of which he then managed to bring to the sam synchronously. There was more – he played a chakradhar from a tripallavi on the tabla as he vocalised it in reverse and, of course, brought them simultaneously to the sam. I was humbled by this enormous wisdom. To this day I have not heard of anybody else reproducing these exploits. And it is doubtful whether this will ever happen. Such divine performers are born but once in a hundred years; and they take their amazing gift with them when they depart.

Khaprumama was born in 'Parvat', a village lacking all the conveniences of modern life. On a hilltop was a temple with a self-existent linga of Shri Chandreshwar (Lord Shiva) and surrounding this were 16-17 houses with brick-lined roofs. This was the entire village community. Residents had to walk four miles down a twisting and turning road to Parode to shop for necessities. But by the grace of Shri Chandreshwar every house in this village has produced extraordinary musicians.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



The famous singer Dulubai Parvatkar hailed from here. Smt.Mogubai Kurdikar was from around here too. Other names include Harishchandra Parvatkar, an excellent pakhawAji, Shaamba Parvatkar, Raghuvir Parvatkar, Balkrishna Parvatkar, all expert sarangi players. In the present generation, there are musicians like Dattaramji Parvatkar who has made a name for himself as a sarangiya.

Khaprumama was born around 1878-79. His given name was Lakshman. However, his mother lovingly called him Khapru and this name stuck. In the early years of his life, Khaprumama used to play the sarangi. The Kalavant community of Parvat filled their days with music and dance. This festive atmosphere moulded the minds of the children there. They built up an intimate relationship with all the musical instruments and could then easily master any instrument of their choosing. Khaprumama received his preliminary training on the sarangi from his uncle Raghuvir Parvatkar and on the pakhawaj from his cousins Harishchandra and Ramkrishna Parvatkar.

While learning to play the tabla the young boy wondered why, when a tempo can be speeded up twice, thrice or four times, it should not be possible to achieve a fractional speed-up. On asking elders about this, he was told to not concern himself with such matters and concentrate on the straight and the narrow instead. But this did not satisfy Khaprumama's searching mind. He began to research and found

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



himself so rivetted by this new field of study that this was all he did all day long. He forgot himself. Immersed in laya, he spent days, weeks and even months pondering over knotty questions of tala-shastra and theorizing about them.

At a music symposium organised by the late Pt. Vishnu Digambar Paluskar in 1919, Khaprumama presented, for the first time, his solutions to some of the most intricate riddles in the science of tala. Many learned tabla and pakhawaj players assembled there, saluted him. Late Pandoba Gurav Waikar(a disciple of the famed Nana Panse of Indore) who considered himself an authority in this field, spontaneously declared, "Khapruji, you have no equal. Only you have achieved true enlightenment in this art!", when Khapruji effortlessly answered a query he had raised.

In 1921, Khaprumama's rendering of various aspects of layakari regaled all those present at a mehfil organised by Pt.Bhaskarbuwa Bakhale. Panditji himself commended him with the words : "Khapruji, you reign supreme in layashastra".

In 1933, Bombay was the site of a mammoth mehfil. SangeetSamrat Khansaheb Alladiya Khan, Khansaheb Vilayat Husain Khan, Aaftaab-e-Mousiqui Faiyyaz Khan and other well-known vocalists, instrumentalists and tabla players had gathered. Some of the tabaliyas casually challenged Khaprumama to "produce a theka of thirteen beats and play it at the tempo of a twelve beat theka".

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



Khaprumama had privately done hundreds of such tricks. He did not find this much of a challenge at all. He not only built a thirteen matra theka but also topped it off with a tihai. The tabaliyas who had intended to poke fun at him were astonished. Even Alladiya Khan couldn't contain himself. Overcome with emotion, he exclaimed, "Good Lord ! I bow my head a hundred times before your learning."

At another such mehfil Khansaheb Aman Ali blurted out, "Amaa, my entire existence shall henceforth revolve around your laya". Khaprumama had produced a composition having a tihai with three dha's around a theka of 13.5 beats. A Hyderabadi tabaliya there fell at the feet of Khaprumama with tears in his eyes.In 1935, Mogubai Kurdikar had a statue made of him and ceremonially handed it to Khaprumama. On this occasion some distinguished ustads from Hyderabad, after analysing his mastery over laya, honoured Khaprumama with the title "The Shining Sun of Laya". Later, in 1939 artistes from Bombay feted him in what was a celebration of a lifetime's devotion to music. It was a celebration graced by the presence of the SangeetSamrat himself. Khansaheb Alladiya Khan presented him with the title "LayaBrahmaBhaskar." At a small function in his home-state of Goa, music lovers decorated him with the title "TalaKanthaMani" (The glittering jewel in the crown of tAla). He was also honoured in a ceremony in Poona with Barrister Babasaheb Jaykar in the chair.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



Khaprumama was a proficient sarangi player, singer and pakhawaj player as well, but his obsession with Laya forced him to give up everything else. He lost himself in the universe of rhythm. He occupied his mind with exercises such as : play a tala at a particular tempo, slow it down by half, by a quarter, speed it up by a quarter, by a half, by three-quarters, then add half a beat, perhaps a quarter-beat and so on. He occupied himself so thoroughly that he abstracted himself from his surroundings. He became oblivious of sensations like hunger and thirst. In the middle of a bath, he would think of something and without bothering to wipe himself dry, would come out, Archimedes-like, in the nude. Towards the end of his life, to use whatever was convenient – his lap, chest or head – to mark time, and fill in the bols within the matras, became a daily routine.

The ParaBrahma tala with 15.75 beats was a one-of-a-kind creation of his. He made it complete in all respects. Around this tala he weaved a MahaSudarshan paran, an extremely difficult tabla composition, that had 125 dha's. Cognoscenti of tala couldn't believe their ears when they heard it. This feat carried his fame all over the country.In perfecting this tala, Laya imbued every pore in his body. Deep in sleep, he would move his hands over the floor or on the board, as if playing the MahaSudarshan paran.

He knew thousands of mukhdas by heart. He himself had composed hundreds of gats, relas, todas

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



and parans. An attempt to describe his variations on the talas would require an epic of the size of the Mahabharata.He was of generous nature. Someone wanting to learn a mukhda or a bol would be taught four or five mukhdas and gats. He would tirelessly toil to get through to those who came to learn from him. He was untouched by the paranoia that someone might steal his knowledge. Whoever approached him was wholeheartedly given what he wanted. He was as much of a giver as he was learned. He had the capacity to establish a gharana of his own, much like Pt. Ram Sahay's Banaras gharana, but an entire Banaras had stood behind Pt. Ram Sahay and he had been revered as a saint. This was not the case with Khaprumama. There were oral praises sung to his devotion to his art, but such praise is evanescent. Nothing enduring was ever done.

Such was this LayaBrahmaBhaskar, ever affectionate and humble at heart, never failing to earnestly enquire after one's well-being even in the course of a small chat in the street. Even while speaking, his entranced eyes were proof of the spell laya had cast over him. When made aware of the betel juice that had trickled down from his mouth he would brush it off like it were dirt and with his fingers fidgeting, plod on.

The other day Thirakhwa Saheb said — "O to Laya ke auliya thhe" (He was a prophet of Laya). The Young India Gramophone Company made recordings

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



of him. They must be a treasure to those who possess them today. The Young India company is now no longer in existence and with it these recordings have also vanished.

Just before his death Khaprumama had lost consciousness. He was unable to swallow even his medicine. But his body was busy tackling some mysterious Laya conundrum. He was muttering something unintelligible. And on the Third of September 1953, this rare, noble sage's soul became one with Laya, taking with it all his propositions, theorems and the miracles he performed with laya. His uncommon achievements were lost for ever much like the spirit of an age dies with it.

**Addendum**

Prof. B. R. Deodhar has written about Khaprumama in his Pillars of Hindustani Music (Popular Prakashan, 1993, translated by Ram Deshmukh), an English rendering of the Marathi original ("Thor Sangeetkar"). Some excerpts are reproduced below:

...I requested [Khaprumama] to give a demonstration which he readily agreed to give. He clapped out the beats on one hand and starting with the (standard) four claps, he produced respectively 3, 5, 6, 7 up to 16 beats (in the basic interval) with perfect precision. I asked him, "Would you be able to do 17 beats in the space of 4?" "That is nothing," he said, "I can not only do 17 but as many as 64." To my amazement he did so. Then he started playing trital (a

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



tala of 16 beats) on his hand. Simultaneously, while he clapped out the sixteen beats on his hand, he went on to recite the bols of all other talas including – ektal, dhamar, zaptal and sawari. The bols invariably started from the first beat of the tala chosen and promptly terminated on the sam of that tala; all the while, the tala clapped out on his hand continued to be trital. After this he started sawari (a tala of 15 beats) in place of trital while reciting the bols of dharnar. The individual sams of the two talas were placed with complete accuracy. Thereafter, while continuing to beat out sawari with his hands, he went into numerous even and odd variations of the tempo of dhamar bols. Finally, to cap it all, while continuing to play sawari in the standard rhythm on his hand he recited the improvised bols of dhamar in a variety of rhythms.

Only those who are masters of the percussion art will realize how difficult it must be to achieve such complete proficiency in the arithmetic involved. When I requested him to demonstrate other interesting things he performed another amazing feat. He started counting out on his hand the 12 beats of chautal, and simultaneously proceeded to recite the bols of dhamar (14 beats). Gradually in place of the basic chautal rhythm being clapped out by his hands he introduced the bols of chautal while continuing to recite the bols of dhamar. This was followed by replacement of the standard rhythm of dhamar by the improvised bols (padhant), of dhamar. Rhythmically, the clapping and

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



recitation of bols were completely unrelated but both were true to their respective talas and the two time cycles accurately terminated on their sams. It might be clear to the reader by now how difficult the whole exercise must have been. I asked him, "Mama, I hear that you perform another impossible feat, viz. to stamp out two different talas by your feet, a third and fourth tala with your two hands, and simultaneously recite the bols of a 'fifth tala. Is that true?" He said, "Just watch me – I shall demonstrate it to you." With his left hand he proceeded to beat out the (16 beat) trital, with the right foot zaptal (10 beats), with his right hand dhamar (14 beats), with his left foot chautal (12 beats) while reciting the theka (standard or basic bols) of sawari (15 beats). The five different time cycles accurately terminated on their respective sams without any obvious effort on his part but I found it most taxing to watch what he was doing on all five fronts. The readers might now be in a position to understand the kind of mastery Khaprumama had achieved in the field of layakari...

... Each tabala player proceeded to demonstrate by clapping what was enjoined by his particular tradition. Several minutes passed but there was no sign of the discussion coming to an end. I was wondering how best to put a stop to the wrangling. An idea struck me. I respectfully said to them, "You are all experts in your field but I have one small doubt. You are clapping out the beats and reciting the bols of your tala. Would

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



they synchronize perfectly with the metronome?" Some of the tabala players indignantly said, "Do you take us for some half-baked tabala players? Bring along your metronome and see whether we keep pace with it." I sent for the metronome, wound it up and set it in the rhythm they indicated. Each tabala player proceeded to clap out the tala while reciting the bols. But they themselves noticed that within a few minutes the strokes of the metronome and their clapping were not perfectly synchronized. When the expert tabala players discovered that they were not able to stick to their rhythm and recite the bols accurately when measured against the instrument, they began to retrace their steps to the auditorium one by one. Only Khaprumama stayed behind. I placed the metronome before him. He said, "Others could not manage it. Let me try it." He, like the others, started clapping out the rhythm and reciting the bols. He went on doing it for two or three minutes but there was not the slightest lack of synchronization between his claps and the strokes of the metronome. I tried to run the instrument faster, then slower but Khaprumama's timing and the strokes of the metronome were identical. It was an amazing demonstration of his mastery of rhythm!...

**Acknowledgements:**

–AjayNerurkar

–ArunParvatkar(ex-Librarian,KalaAcademy,Goa)

–RaviShankar

– Sukanya Shankar

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



## Khaprumama In His Own Voice

In the first clip below, Khaprumama successively divides the 16-beats Teentala into 9, 10 and 11 matras following up each sub-division with its dugun (doubling in speed) as well as a short composition for each take.
**http://www.sawf.org/audio/khaprumama1.ram**

In the second clip, Khaprumama successively divides the 16-beats Teentala into 13, 14 and 15 matras following up each sub-division with its dugun (sometimes also chaugun) as well as a short composition for each take.
**http://www.sawf.org/audio/khaprumama2.ram**

In the thrird clip Khaprumama recites the bols of the 12-beats Ektala within a Teentala cycle of 16 beats, successively increasing the number of avartanas of Ektala within the 16-beats cycle.
**http://www.sawf.org/audio/khaprumama3.ram**

In the fourth clip, Khaprumama recites some darje in Teentala.
**http://www.sawf.org/audio/khaprumama4.ram**

**Acknowlegement:**

The recordings for the first two clips above were made available by Madhav Pandit of Margao, Goa.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

*Pt. Ravi Shankar's*

# Tribute to Khaprumam

It was mid 40's that I first met and I Came to know "Mama Khapru" of Goa. My Friend the wonderful tabala player and teacher Tara Nath Hattangadi was the one who gots together.

I had already known about Khapru ji as a pakhawaj player but more about his layakari and ginatkari. All the tremendous command over the calculatory approach of Laya tempo and taal rhythmic cycles. I even had heard his 78 RPM and 3.5 min's record of his were against a nagma of Lehera play on Sarangi playing teen taal on 16 beets. He first counted numbers ranging from 9 to 15 recited a short pakhawaj bol composition for each of the numbers. Here in this record I have marvelled at his unkindly Control and ability to do this. One form Such a perfect Control over Laya with very much Cared enough. Till about early 20th century mostly among the Dhrupad and Dhamar Singers and the Pakhawaj players and some kathak dancers. But the popularity of Khayal Singing along with the Sitar, Sarod, Sarangi, and Tabala, where most of the musicians developed and concentrated upon more

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



tayaari virtuously. Beauty and to attract, pleased and to excite the listener even more. Of course there were some rare exceptions where as in the Karnatak system of south precision of laya has always been there among singers instrumentalist and specially the drumers and it is more so to take even it. This aspect has improved in northern hindustani system in general. Since about 40-50 years. I presonally was attracted and applied layskari as much as Raagdari from my earliest musical carrier. I found Khapru ji may be is in 70's to be a very sweet nature, very simple old man, without any airs of being such a unique musician. Out of 3-4 times that I Saw him, he was once in my recitle at some music circle in Bombay, sitting in the front that evening was I nervesed. But I was rewarded after-words by his appriciation and blessing.

In the other meetings I remembere having requested him to recite some bandishes and complicated countings He laid it up and I heard some Mind boggling complex drum composition orally from him. He always was counting new ones even in his sleep. His breathing and even talking was affected by very fast pulses as microdivisions of beets. He even talk like this :

AAA PPP KKKAAIISSSEEE HHAAAIII ???
HHUMM ACCHHEE HHAAII... etc.

like some of the very great musician I have met

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



in my life. I have always cherished the memory of this astounding person **MAMA KHAPRU.**

With Thanks :-

Pt. Ravi Shankar's tribute to khaprumam.

On behalf of the lovely girls at SAWF I am pleased to offer a tribute to Khaprumama by one of the world's most eminent musicians, the sitar maestro Ravi Shankar. It was exclusively taped for this SAWF feature on May 19, 2001 in southern California. I would like to express my thank Smt. Sukanya Shankar and Ravi Shankar for their gesture.

Ravi Shankar's Tribute to Khaprumama

Specially recorded for this feature of SAWF

---

**With Thanks :** Recorded by Rajan P. Parrikar

Transcripted By Shubhangi Parvatkar

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# सुप्रसिद्ध तबलावादक एवम् गायक स्व. पं. रामकृष्णजी पर्वतकर

– ना. र. मारुलकर, पूना

कलाकारों का जीवन स्वयं ब्रह्मा के लिये भी एक पहेली है। कलाकार की कलासंपन्नता तथा उसकी आजन्म विपन्नावस्था जुड़वे भाई की तरह पाये जाते हैं। यदि कलाकार संपन्न होगा तो उसकी कला मरणासन्न होगी। कला के विश्व में यदि इसके विपरीत याने कला-धन-संपन्न कलाकार का उदाहरण किसी ने देखा होगा तो उसका अर्थ यही होगा कि हमारा नियम पूर्णतया प्रमाणित करने के हेतु वह अपवादात्मक उदाहरण अवतीर्ण हुआ है। जिसे न खाने पीने की सुध है न कला की चिंता है, शरीर की बात ही दूर यह कलाकार का वर्णन है। यदि उसे कोई चिंता हो तो केवल एक ही बात की, और वह यही कि उसकी कला किस प्रकार अधिक संपन्न होगी। जीवन के अंतिम क्षण तक जूझनेवाले योद्धा की तरह कला के चिंतन में वह एक एक क्षण चुगता है। कलाकार का गुणवर्णन करने के लिये मेरे पास उसके योग्य शब्द कहाँ से मिलें? उनकी महानता ही ऐसी है कि कलाभिमानी और रसिक, उसकी स्मृति में, या प्रत्यक्ष उसके सामने नतमस्तक हो जाँय, यही उसकी श्रेष्ठता का अंकन है। ऐसे ही त्यागी, कलोपासक, कलाकारों की पुण्यश्रेष्ठ-मालिका का एक मौक्तिक स्व. पं. रामकृष्ण जी पर्वतकर थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



## पूर्वेतिहास

स्व. पं. रामकृष्ण जी पर्वतकर गोमंतक प्रदेश के रहिवासी थे। सुप्रसिद्ध, अतुल गणिती (लय —) स्वर्गीय लयभास्कर खाप्रुमामा पर्वतकर के ये सुपुत्र थे। अपने वंश और घराने की लयविद्या एवम् वादन के पाठ अपनी बाल्यावस्था में पूर्ण करने के पश्चात् वे बहुसंख्य गोमांतकीयों के क्षेत्र बंबई में पधारे। यहाँ शालेय शिक्षा के साथ साथ वे गायन वादन का अभ्यास बराबर करते रहे। उनकी बाल-आवाज बहुत ही कर्णमधुर थी; 'राम-कृष्ण' बर्णी होते हुए भी नाक उठी हुई, आँखें चमकीली और मुखमंडल प्रसन्न, सहास्य, कार्यतत्पर दिखाई देता था। कद के छोटे थे, किंतु उपरोक्त गुणविशेषों के उपयोग से, तथा तत्कालीन नाटक-मंडलियों के सहज सुलभ आकर्षण के कारण वे गंधर्व नाटकी मंडली मे ंसम्मिलित हो गए। वहाँ उन्होंने 'शारदा' के समान कठिन अभिनय सुलभता से आविष्कृत किया। नटसम्राट बालगंधर्व इनके सद्गुण, सौजन्यतापूर्ण व्यवहार तथा मर्यादाशील-आचार विचार से बहुत प्रसन्न रहते थे, किंतु प्रकृति के धर्मानुसार उनका कंठ फट गया और उन्हें वह कंपनी छोड़नी पड़ी।

इसके बाद वे पूने चले आए। पूना में आने के बाद "मैट्रिक उत्तीर्ण अधिकारी- संगीत- अध्यापक" के पद पर शिवाजी मराठा प्रिपरेटरी स्कूल में उनकी नियुक्ति हो गई। वहाँ उन्होंने 7-8 वर्षों तक यह कार्यभार संभाला; तत्पश्चात "शारदा संगीत विद्यालय" नामक संस्था की स्थापना की। यहाँ कई विद्यार्थियों को उन्होंने गायन-वादन की आदर्श शिक्षा का दान किया। सुप्रसिद्ध तबलावादक स्व. मधुकर तिसगाँवकर इन्हीं के शिष्य थे। इनके अतिरिक्त श्रीमति मेनकादेवी शेलडेकर (गायिका), श्री. अनंतराव फाटक (वायलिन), श्री. केशवराव नांवलेकर, श्री. पी. आर. केलकर, वकील, श्री विनायकराव थोरात

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



(दौंड) श्री निलाखे (बारामती), श्री जे. पी. नाईक आदि कई गुणवान कलाकुशल एवम् कार्यतत्पर शिष्यों की परंपरा पीछे छोड़ गए हैं।

## संगीत के प्राध्यापक

पंडित रामकष्ण जी और पंडित ओंकारनाथ ठाकुर जी का इसी समय के करीब किसी संगीत परिषद के निमित्त परिचय हो गया। लगभग आठ वर्ष पूर्व वे पूना छोड़कर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ म्युजिक अँड फाइन आर्ट्स में तबलावादन के प्राध्यापक के पद पर कार्य करने लगे। उनके दुर्भाग्य से हो या अन्य कठिनाइयों के कारण हो, किंतु कई वर्षों तक उनकी नियुक्ति वहाँ निश्चित स्वरूप की हो न सकी। यह निश्चिती अभी अभी कुछ महीनों पूर्व ही उन्हें सूचित की गई थी। ज्येष्ठ अधिकारी उनसे संतुष्ट थे, और उनके पद में वृद्धि की तीव्र संभावना भी थी,.....किंतु उनका जीवनवृक्ष इसी बीच सूख गया। जीवन के सुनहरे दिन की प्रभात देख रहे थे कि एकाएक उन्हें शाम देखनी पड़ी। सोचा था कि उनके भालप्रदेश का लयविद्या का कुंकुम तिलक अधिक विशाल, शोभायमान दिखाई देगा, किंतु लयविद्या का 'बढा हुवा' कुंकुमतिलक, श्वेतधवल भाल हमें देखना पड़ा। इस असहनीय दुर्भाग्य का दोष भी किसे दें—क्या परमात्मा इतना निष्ठुर है या हमारा दुर्भाग्य बलवत्तर है?

## पंडित पर्वतकर जी की त्रिगुणात्मक कला

पंडित पर्वतकर जी निष्ठावान दत्तभक्त थे। उनकी भक्ति का प्रतीक स्वरूप ही समझिये, उनकी कला भी त्रिगुणात्मक ही थी। तबलावादन की कला में श्रेष्ठ ही थे। उनका हाथ ही इतना हल्का और निर्मल लगता था, चाहे कितनी ही तयारी का बोल क्यों न हो, इनका हाथ कभी न रुक सका। केवल सिखाई गई कला की पंडिताई की अपेक्षा कल्पनाचातुरी, संस्कार का प्रभाव, स्वयंस्फूर्त कला का आविष्कार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तथा सच्चे रसिक की आत्मीयता का अनुभव वे एक साथ ही कराते थे। लय की विभिन्न गणित क्रियाएँ उनके वादनशैली का केंद्र बिंदु, उसके प्राण थी। लय के अतिकठिन और विकट प्रकार वे बिनाकष्ट के बहुत ही सुगमता से दिखाते थे। लयकार श्रोता भी उनकी असाधारण कला देखकर दंग रह जाते। लय की एकगुन, दुगुन, चौगुन, तथा डेढ़गुन के प्रकार हम सभी कलाकारों से सुनते हैं। किंतु पर्वतकर जी के वादन मे पौना-गुन, सवाया आदि गणित होता था। स्वतंत्र तबलावादन के समय वे कई अपरिचित ताल सुनाते। प्रचलित सभी तालों के अतिरिक्त साढ़े ग्यारह, सवा पंद्रह, पौने सोलह आदि मात्राओं के ताल वे उतनी ही कुशलता से, तयारी से और गणित शुद्ध बजाते थे। कलाविहार के मर्मज्ञ पाठक इस गणित और उसके क्रियात्मक प्रदर्शन की कठिनता से भली भाँति परिचित थे। उनकी वादनशैली का अन्य पहलु था सभा में रंग भरना। वह उनका प्रासादिक गुण था। मैंने उनके कई कार्यक्रम देख-सुने हैं, किंतु निर्देश योग्य बात यही है कि उनमें से एक भी महफिल खाली नहीं गई। किसी भी समय देखिये, उनका हाथ उतनी ही तत्पराता से अपना कार्य करता था। प्रारंभ करने की ही देर थी, कि तुरन्त प्रसन्नता और सफलता हाथ जोड़ कर संगीत-सभा में आ पहुँचती। तबलावादन में उन्होंने कीर्ति प्राप्त की किन्तु वे श्रेष्ठ गायक भी थे। संगीत परिषद या नभोवाणी केन्द्र से भी प्रायः उनके कार्यक्रम होते रहते।

## पंडित पर्वतकर जी की गायकी

पंडित पर्वतकर जी ने मरहूम उस्ताद बशीर खाँ साहब से संगीत-शिक्षा प्राप्त की थी। खाँसाहब विलायत हुसैन खाँ के ज्येष्ठ भ्राता मरहूम उस्ताद महंमद खाँसाहब की शिष्यता में भी कई वर्षों तक संगीत साधना की थी। पर्वतकर जी की आवाज प्रकृति से महीन, सुरीली और कंठ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



प्रधान किंतु हल्की, और ऊँची उड़ान से युक्त थी। गायकी में विलंबित की अपेक्षा द्रुत प्रकार की अधिकता थी, और वह अधिक प्रभावी भी थी। तबलावादन की तरह गायकी में भी लयकारी की प्रतिभा थी। लयकारी के एक से एक बढ़कर सुंदरतम नमूने वे बहुत ही रसीले ढंग से, आत्मविश्वासपूर्वक दिखाते थे। लय-स्थानों की विकटता कभी कभी गायकों को भी भारी पड़ जाती थी। जिस समय वे पूना छोड़कर बनारस गए, उस समय हमने प्रेमादरपूर्वक उन्हें बिदा किया था। उस समय उनके गायन का कार्यक्रम हुआ था। सुगराई की आड़ा-चौताल की एक चीज उन्होंने सुनाई। गाते गाते बीच ही में उन्होंने चित्रमय और सुरीली लयकारी का एक नमूना दिखा दिया। सभी श्रोता इस अनपेक्षित कला से प्रभावित हुए। संगीत-सभा की रीति के विरुद्ध मैंने उन्हें "फिर से एक बार" की याचना की। उन्होंने बाद में 6-7 बार दिखाने पर भी मैं उसे समझ न सका। केवल यही कि उनकी लयकारी का आदर्श हमारे हृत्पटल पर सदा के लिये अंकित हो गया। यह प्रसंग मेरे लिये नवीन था; मुझे ऐसे किसी भी प्रसंग का स्मरण नहीं जब मैंने किसी कलाकार की कला समझी ही न हो। कुछ ऐसे कलाकार हैं भी, और केवल उन्हें मैं श्रेष्ठ मानता हूँ। पंडित जी की कला का रसास्वाद जिनके भाग्य में था उनके लिये यह वर्णन विस्तार से किया है। तबला वादन की तरह उनके गायन में भी सहजता, कल्पना विलास, और रसमयी शैली का अनुभव सूज्ञ रसिकों को अवश्यमेव होता था। गाते समय उनका प्रसन्न मुखमंडल, गायन के प्रारंभ के साथ ही रसिकों का ध्यान खींच लेता था। शास्त्रीय संगीत में ख्याल गायन से ठुमरी, नाट्यसंगीत, और गझल गायन तक सभी क्षेत्रों में वे सिद्धहस्त थे।

## प्रभावी चित्रकार

स्वर्गीय पर्वतकर जी के गायन-वादन कला से अधिकतर रसिक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



परिचित हैं किंतु उनकी सिद्ध तीसरी कला-चित्रकला-के बारे में बहुत कम लोग जानते होंगे। रसिकगण से अपरिचित किंतु पूर्ण सिद्ध चित्र कला के उपासक पर्वतकर जी, यदि उन्हें पर्याप्त समय मिल जाता तो वह क्षेत्र भी हस्तगत कर लेते इसमें संदेह नहीं है। सुप्रसिद्ध चित्रकार श्री हलदणकर जी द्वारा आयोजित बंबई की चित्रकला प्रदर्शनी में उनके "ऋषी' का क्रमांक सर्वश्रेष्ठ था। पाठक उनका अधिकार समझ सकें इस हेतु यहाँ नाममात्र निर्देश किया है।

## निष्कलंक चारित्र्य, विनम्रवृत्ति

पंडित रामकृष्ण जी शांत मिलनसार, खिलाड़ी स्वभाव के थे। वृत्ति इतनी सरल की उन्हें भोले थे कहना ही उचित होगा। बचपन से ही वे पापभीरु थे। अजातशत्रु पंडित रामकृष्णजी का किसी से साधारण स्वरूप का मतांतर भी सारी उम्र में नहीं हुवा, फिर द्वेष, ईर्ष्या और तिरस्कार की बात तो दूर। श्रेष्ठ आदर्शों के पालन में तत्पर श्री रामकृष्ण आजीवन शुद्ध, उदात्त, निष्कलंक रहे हों इसमें क्या आश्चर्य! सभी कलाकारों के प्रति आदर की भावना और गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता वे प्रायः प्रकट करते। जितनी नम्रता से गुरुजनों का आदर करते उतनी ही नम्रता से किसी बालक के सन्मुख प्रस्तुत होते थे।

## जीवन स्थिति

ऐसे प्रतिभाशाली कलाकार को सुख और शांति के दिन कब दिखाई दे? स्वास्थ्य उनका जैसा का तैसा ठीक था। जीवन की बिकट यात्रा का अंत, प्रायः इसी 'कलाकार-मय' अवस्था में दिनांक 14 फरवरी को, 51वें वर्ष की अवस्था में हो गया।

कविराज श्री माडगुलकर ने इस आशय की पंक्तियाँ लिखी हैं, "जन्म के साथ मृत्यु का नाता दोनों चले संग संग"। कटु सत्य है किंतु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



नित्य है; दुःख करने से कोई लाभ नहीं यह सब ठीक है। किंतु अंतर्याम की वेदना को रोकना-थामना किसी के बस की बात नहीं। परिस्थिति की ठोकरें खाते खाते श्री पर्वतकर जी की आयु समाप्त हो गई। जिस समय परिस्थिति में परिवर्तन होने की आशा-किरण दीख पड़ी, उसी समय यमराज के करालपाश में वे बद्ध हो गए। सुख का क्षण भी न देख पाए की कलाकार चल बसा। दुर्भाग्य की कठोर लीला का निष्ठुर उदारण और कौनसा होगा?

व्यक्ति की जीवन सफलता उसकी मृत्यु से संचित अश्रुप्रवाह से गिनी जाती है। यदि यही सत्य है तो पर्वतकर जी के स्वर्गवास से दुःखित छोटे बड़े, कलाकार रसिक, शिष्य-मित्र हितैषी – आप्तगण सभी के अश्रु इसके प्रमाण हैं। अब भी क्या उनका जीवन सफल नहीं हुआ? ईश्वर उनकी पुण्यात्मा को चिरशांति दे !!!

---

**साभार :** संगीत कला विहार एप्रिल 1959 पृष्ठ -168-171। लेखक-डॉ. ना. र. मारुलकर सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ, लेखक, समीक्षक। पर्वतकर जी के घनिष्ट मित्र।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# श्रद्धा कुसुमाञ्जलि

– डॉ. प्रेमलता शर्मा

(श्री कला संगीत भारती को अपने परिवार के एक परम माननीय सदस्य के चिर वियोग का मर्मान्तक आघात 14 फरवरी 1959 को सहना पड़ा। स्व. श्री रामकृष्ण ल. पर्वतकर की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि पर विद्यालय में 14, फरवरी,1960 को जो श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई थी, वही यहाँ प्रकाशित की जा रही है।–संपादक।)

[आज ताल-लय के अनुपम साधक और सिद्ध, कलाकार-प्रवर श्री रामकृष्ण ल० पर्वतकर की प्रथम पुण्य-तिथि है। वे हमारे श्री कला संगती भारती के विशाल परिवार के नितान्त आत्मीय, परम प्रीतिभाजन तथा विशेष समादर-पात्र सदस्य थे। इस पावन अवसर पर उनके पुण्य स्मरण में हम सबकी ओर से कतिपय वाक्य-कुसुमों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की जा रही है।]

1- भारतीय संगीत जगत् के लयाकाश में वह कौन सा नक्षत्र उदित हुआ था, जिसके उदयाचल और उदय-काल की खोज की किसी ने अपेक्षा नहीं रखी, कि जिसकी आभा, इस युग के, प्रदर्शन-कौशल के प्रचण्ड आलोक में, किसी के दृष्टिगोचर नहीं हुई। वह कौन सा महान् कलाकार था, जो माता शारदा का वरद-पुत्र होते हुए भी लक्ष्मी का कोप-भाजन, और कीर्ति का उपेक्षा-पात्र था।

2- वह और कहीं नहीं, कल हमारे ही बीच में तो थे —श्री रामकृष्ण पर्वतकर जिनके जीवन में अँग्रजों के एक कवि की सुप्रसिद्ध पंक्तियाँ चरितार्थ थीं?

Full many a gem purest ray serene,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



The dark unfathom'd caves of ocean bear,
Full many a flower is born to blush unseen,
And waste its Sweetness on the desert air.

3- गोमान्तक अथवा गोवा-प्रदेश के "पर्वत" नामक छोटे से ग्राम में उनका जन्म हुआ। उनकी कलासाधना भी तो पर्वत-शिखर के ही सदृश उच्च और सुदृढ़ थी।

4. जन्म से ही वे संगीतमय वातावरण में पले। कई पीढ़ियों से उनके वंश में संगीत की साधना, मुख्यतः तबला-वादन की कला की अखण्ड धारा प्रवाहित थी। अतः स्वर के प्रबल संस्कार उन्हें जन्मतः प्राप्त थे। लय-ताल की विद्या तो उन्हें सीधे अपने पिता से विरासत में मिली थी।

1. उनके पिता श्री लक्ष्मणराव पर्वतकर, उर्फ खाप्रुजी मामा की लय-सिद्धियाँ वर्णनातीत थीं। तत्कालीन संगीतज्ञों में उनका विशेष समादर था। संगीतोद्धारक परम गुरुदेव पं. विष्णुदिगम्बरजी के वे प्रिय और मान्य थे। हमारे पूज्यपाद गुरुदेव पं. ओंकारनाथजी उन्हें लय-योगी ही कहा करते हैं। स्व. उस्ताद अल्लादिया खां ने उन्हें 'लय भास्कर' उपाधि दी थी।

2. श्री खाप्रुजी मामा के चमत्कारों के एक दो उदाहरण कहूं—एक मात्रा के चौंसठवें भाग को पृथक् कर दिखाना अथवा तबले पर किसी टेढ़ी लय में कोई बोल बजाने के साथ-साथ उसी ताल में अथवा किसी किसी दूसरे ताल में कोई भिन्न लय का बोल मुंह से बोलना, इत्यादि सिद्धियाँ उन्हें सहज साध्य थीं।

3. हमारे श्री रामकृष्ण पर्वतकर को भी ऐसे अनेक चमत्कार साध्य थे। उनकी विकट लयकारियों में 16 मात्राओं में 7,9,11,13,14,15,17 इत्यादि संख्या की मात्राओं का संतुलित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



समावेश विशेष रूप से स्मरणीय है। इन्हीं लयकारियों को वे तबले पर भी बजा सकते थे। अर्थात् त्रिताल में रूपक, झपताल, आड़ा-चौताल, सवारी आदि ताल बजाने में भी वे पूर्ण समर्थ थे। $9\frac{1}{2}$ मात्रा के 'विचित्र' ताल में 14 मात्रा का आड़ा-चौताल बजाते भी उन्हें सुना था।

4. उनकी इन लयकारियों के साथ लहरा देना भी महा कठिन था। उनके अभिन्न मित्र श्री बलवन्तराय भट्ट ही पूर्ण स्थिरता के साथ लहरा दे पाते थे।

1. और अप्रचलित तथा विकट तालों पर भी उनका कैसा अधिकार था। अनेक बड़े संगीत-सम्मेलनों में उन्होंने विचित्र-ताल ($9\frac{1}{2}$ मात्रा) योग-ताल $15\frac{1}{2}$ मात्रा, परब्रह्म ताल ( $15\frac{3}{4}$ मात्रा ) के तालों में, सभी प्रकार की लयकारियों, कायदों, परनों आदि का प्रदर्शन किया था।

2. तबला-वादन भी तो कितना अनुपम था उनका! उनकी उंगलियां जिस हल्के ढंग से तबले पर पड़ती थीं, और कठिन से कठिन बोलों को जिस सरलता और स्पष्टता के साथ निकालती थीं, वह देखकर भूरि-भूरि प्रशंसा किए बिना रहा नहीं जाता था।

3. उनके बोल भी तो कितने असाधारण होते थे! प्रत्येक बोल में उनकी मौलिकता, कलात्मकता और चमत्कारपूर्ण लय-प्रयोग-कौशल का दर्शन होता था। तबले और मृदंग के बोलों का विशाल भाण्डार तो उनके पास था ही, किन्तु साथ ही स्वल्प-काल में नये बोल रचने की भी उनमें अपूर्व क्षमता थी। उन्हीं के एक विद्यार्थी दामोदर होता द्वारा हम अब उदाहरण-स्वरूप उनके कुछ बोलों का श्रवण कर लें।

4. यह तो हुई ताल-लय की बात। किन्तु गायन-कला की भी तो उन्होंने साधना की थी। उनका कण्ठ अत्यंत सुरीला और मधुर था। उनका गायन कुछ चंचल, किन्तु अतिशय स्वच्छ और प्रसाद-गुण-युक्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



होता था।

1. गायन की शिक्षा उन्होंने मरहूम उस्ताद बशीर खां से पाई थी। ख्याल, ठुमरी तथा मराठी भावगीत वे आकर्षक ढंग से गाते थे और रस-परिवेषण करते थे।

2. गायन में भी वे अन्तर्लयों के परस्पर-भेदन का ऐसा सुन्दर पुट देते थे कि श्रोता चमत्कार की अनुभूति से उल्लसित हो उठते थे। उनके गायन के साथ संगत करना सरल नहीं था। स्व. अनोखेलालजी ही उनकी संगत करते थे।

3. गायन-वादन के अतिरिक्त उनके कलाकार-व्यक्तित्व का एक और पहलू भी स्मरणीय है, जो अधिकतर अज्ञात ही रहा है। वे है— उनकी चित्रकला प्रवीणता। प्रसिद्ध चित्रकार श्री हलदंकर द्वारा बम्बई में आयोजित कला-प्रदर्शनी में उनके 'साधु' शीर्षक चित्र को प्रथम स्थान मिला था।

4. इस प्रकार कला उनके जीवन में ओतप्रोत थी। किन्तु ....मंच प्रदर्शन कौशल के प्रति उनकी उदासीनता ने उनके जीवन को 'अज्ञातवास' सदृश बना डाला था।

1. उनके कलाकार व्यक्तित्व का एक-एक अंग उन्हें उच्चकोटि के कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित करने में समर्थ था, किन्तु ......भारतीय संगीत जगत् के परम दुर्भाग्य से, उन्हें उचित सम्मान, प्रतिष्ठा और अर्थ-लाभ से सदैव वंचित रहना पड़ा।

2. अतिशय गहनता के कारण उनकी ताल-विद्या सर्व-साधारण तो क्या, सामान्य कोटि के गुणिजनों की भी समझ से बाहर थी। इसलिए उन्हें उचित मान्यता प्रदान करने वाले गुणिजन भी विरल ही थे।

3. जो वस्तु ताल-लय के अन्य कलाकारों के लिए असाध्य थी,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


उसकी उच्च कक्षा को स्वीकार करने को प्रांजलता और निश्छलता का भी आभाव रहा।

4. किन्तु, दूसरी ओर वे स्वयं कितने गुणग्राही थे। निन्दा, ईर्ष्या से दूर रहकर कला का सच्चा आनन्द लेना उन्होंने भरपूर सीखा था। राग-द्वेष से परे गुणग्राहिता भुलाई नहीं जा सकती।

1. साथ ही विनय के तो मानो वे मूर्तिमान रूप थे। गर्व तो उन्हें छू भी नहीं गया था! यदि कोई उनके गुण की प्रशंसा करता, तो वे तत्काल कह उठते "मेरे पिताजी की विद्या का तो शतांश भी मेरे पास नहीं है"। सभा या गोष्ठी में प्रदर्शन करते समय, वे लहरा पकड़ने वाले अथवा संगत करने वाले की भरपूर प्रशंसा करते और अपने चरम कौशल की सराहना की ओर से मानों निःस्पृह-से उठते थे।

2. उनके गुण को जो अल्प व्यक्ति समझते थे, उनकी-गुणग्राहिता को कितनी उदात्त दृष्टि से देखते थे वह। पूज्यपाद गुरुदेव पं. ओंकारनाथजी ठाकुर, पं. बलवंतराय भट्ट आदि के प्रति कितना समादर और स्नेह रखते थे वह! अन्तिम क्षण तक उन सबका सप्रेम स्मरण करते रहे।

3. कला द्वारा प्राप्त आनन्द में बाह्य अभाव-दुःख सबको भूल जाना उनकी बड़ी विशेषता थी। जिस रस को "ब्रह्मानन्द-सहोदर" माना गया है, उनके वे परम रसिक थे। उच्चकोटि के कला-प्रदर्शन को देख-सुनकर यही कह उठा करते थे..... "आह! आज तो साक्षात् परब्रह्म के दर्शन हो गए।" एक बार कलकत्ता की कान्फ्रेंस से लौटने के बाद पू. गुरुजी के गायन के लिए ऐसे ही उद्गार उनके मुख से सुनने को मिले थे।

4. विद्या को ही वे जीवन-सर्वस्व मानते थे। देहावसान के पूर्व जब तक उनकी वाणी सचेष्ट रही, तब तक उनके यही उद्गार सुनाई देते रहे कि उन्हें और किसी बात की चिन्ता नहीं, किन्तु-उनकी विद्या की सुरक्षा नहीं हो सकी, इसी का घोर दुःख था। उनके अंतिम शब्द भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



'गदि गन धा' ही थे।

1. और हमारा भी कितना दुर्भाग्य कि उनके विद्या वारिधि में से, कुछ बूंदों से अधिक कुछ भी सुरक्षित न रख पाए। हमारे सामने ही रत्नाकर सूख गया, माणिक्य अतल-गर्त में खो गए।

2- मृत्यु-शय्या पर जब उनसे यह कहा गया कि उनके अच्छे हो जाने पर उनकी विद्या का "टेप रिकॉर्ड" द्वारा तथा पुस्तक-प्रकाशन द्वारा रक्षण किया जायगा, तब उनके व्याधि-जर्जर शरीर में कैसी दीप्ति कौंध गई थी! वह आभा जिसने भी देखी, वही हृदय में उनकी एक अमिट छाप लेकर रह गया।

3 -नियति का कैसा क्रूर उपहास था कि जब वे अपने पद के स्थायित्व से प्रसन्न और पदोन्नति के लिए आशान्वित थे, तभी सुरलोक से उन्हें निमन्त्रण आ गया।

4 -उनका पूरा जीवन ही विरोधाभासों की शृंखला से बँधा था। परम मानद, किन्तु स्वयं अमानी, गुण के अपार धनी, किन्तु बाह्य रूप में निर्धन, सरलता में बालकवत्, किन्तु जीवन के निर्मम प्रहारों से अकाल-वृद्ध, कलाकौशल के अनन्त ऐश्वर्य से मण्डित, किन्तु सांसारिक दैन्य से पराभूत, कला आराधना में शांत-दांन्त, किन्तु जीवन-समर से क्लांत, भाव-जगत् के वासी, किन्तु अभावों से ग्रस्त, सिद्धि-गौरव के स्वामी, किन्तु शारीरिक लाघव से त्रस्त, चमत्कार-सिद्धि से दीप्त, किन्तु गुण-ग्राहकों के अभाव से म्लान, परम स्नेह-सिक्त-हृदय, किन्तु स्वयं स्नेह कण के लिए तृषित, काल के रहस्य को करतलवत बनाए हुए, किंतु स्वयं अकाल में ही काल के कवल ......यही तो है अल्प में उनके व्यक्तित्व का दर्शन..........उनकी जीवन-गाथा की झाँकी।

1 - और अन्त में, वे इस सब विरोधाभासों से मुक्त होकर, समरसता के साम्राज्य में प्रवेश कर गए, अपने अराध्य, लयदेव में लीन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



हो गए।

2 - शनिवार, 14 फरवरी, 1959 की उस अभागी घड़ी में स्वयं करुणा भी रो पड़ी थी, और आत्मीय, स्नेही-जन, बिलख उठे थे। एक और कारुण्य की सीमा, दूसरी ओर काल की क्रूरता की अवधि, और बीच में उनकी चिर-मौन, चिर शांत मुख-मुद्रा, इन त्रिवेणी का उस समय जिसने भी दर्शन किया, उसमें अवगाहन किया, वही भाव-विह्वल हो गया।

3 - उनकी शांति के लिए हम प्रार्थना क्या करें? शांति का अभाव उन्हें भला क्यो होने लगा? हमें केवल पुण्य-स्मरण का ही अधिकार है।

4 - हमारे शोध-विभाग के पं0 रतिनाथ झा के शब्दों में हम उनकी पुण्य-स्मृति में श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं :—

संगीतस्योपनिषत् साम्नः सौभाग्यसीमैव।
जयति सखीव कलाया ललितायाः कापि लयविद्या ।।१।।
अणुमपि गुणं पेरेषां श्लाघावाक्यामृतैः सिञ्चन्।
पर्वतमिव संप्रथयन् जीयात् पर्वतकरो नित्यम् ।।२।।
शीलेऽतुलो, निसर्गे मधुरो, निरहङ्कृतौ धुर्यः।
आर्जवमार्दवसिन्धुर्विनयनिधिः कोऽपि शं तनुताम् ।।३।।
देहे हन्त हतेऽपि स्फुरति पुरः सा तवोज्ज्वला कीर्तिः।
वितरति या स्पृहणीयं गुणगणमुत्कर्षमूलं नः।।४।।

---

**साभार :** 'नादरूप' 1960 पृष्ठ -16-19। डॉ. प्रेमलता शर्मा सुप्रसिद्ध संगीत शास्त्रज्ञ, शास्त्र विभागाध्यक्षा, संकायप्रमुख, मंचकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी। संस्कृत नाटकों की निर्देशिका, लेखिका।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# अद्वितीय लयकार स्वर्गीय रामकृष्ण पर्वतकर

**– श्री विष्णुकुमार अग्रवाल**

पंडित रामकृष्ण पर्वतकर तबले के विलक्षण विद्वान थे। वास्तविकता तो यह है कि उनके जैसा लय का आचार्य भारतवर्ष में कोई नहीं देखा गया। उनके पिता की बात मैं यहाँ नहीं करता, वे तो ताल-लय के क्षेत्र में चरम सिद्धि प्राप्त कर चुके थे। अपने पिता की लय विद्या का स्रोत भी रामकृष्ण पर्वतकर में बहता था। फिर भी संगीत-जगत में उनके नाम से इने-गिने लोग ही परिचित होंगे। एक तो खेद का विषय यह है कि आज भी हमारे संगीत में प्रायः तबले या सारंगी-वादक का दर्जा गायक से नीचे समझा जाता है, दूसरे श्री पर्वतकर जिस प्रकार की अति क्लिष्ट लयकारी के विशेषज्ञ थे उसका गायन-वादन में अधिक उपयोग न होने के कारण संगीत-जगत् ने उनकी उपेक्षा ही की। इस उपेक्षा में कहीं उनके कार्य को समझाने की असमर्थता और कहीं उसे समझने पर भी वैसा स्वयं न सकने के कारण उसे महत्व प्रदान करने में हीन-भावनाजनित संकोच काम कर रहे थे। इस विषय में एक रोचक प्रसङ्ग प्रस्तुत कर देना अनुचित न होगा। एक बार रेडियो से अपना तबला-वादन प्रसारित होने से पहले रिहर्सल के समय जब उन्होंने पंचगुन की लय प्रारंभ की तो साथ लहरा बजाने वाले सज्जन तुरन्त बोल पड़े – अरे, आप भागते क्यों हैं? मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक! वे बेचारे यही समझे कि तबले वाले से चौगुन ठीक नहीं हो पा रही है। गोवा के पर्वत नामक छोटे से गाँव में रामकृष्ण पर्वतकर का जन्म हुआ। बचपन से ही ये संगीत के वातावरण में रहे। कई पीढ़ियों से उनका वंश-वृक्ष संगीत-कला तथा मुख्यतः तबला-वादन कला के रस सिंचित होता आया था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



स्वर-राग आदि के संस्कार उनमें जन्म से ही थे जो अनुकूल वातावरण पाने पर प्रबल होते गये। लय-ताल इत्यादि की विद्या तो उन्हें अपने पिता से ही उत्तराधिकार में प्राप्त हुई थी। उनके पिता श्री लक्ष्मणराव (उर्फ खाप्रु जी) पर्वतकर की सिद्धियाँ वर्णनातीत थीं। उनके समय के सभी संगीतज्ञ उनकी कला का लोहा मानते थे। स्व0 उस्ताद अल्लादिया खाँ ने उन्हें 'लयभास्कर' की उपाधि दी थी। संगीतोद्धारक पं0 विष्णु-दिगम्बर पलुस्कर जैसे लोगों के अत्यन्त प्रिय और सम्मान पात्र थे। लय और ताल में उनकी प्रवीणता का पता इसी से चल जाता है कि वे तबले पर किसी टेढ़ी लय में एक कायदा बजाते हुए उसी बोल का अथवा किसी दूसरे बोल का अन्य किसी टेढ़ी लय में मुँह से उच्चारण करते थे। सौभाग्य से उनके कुछ ग्रामोफोन रिकार्ड रह गए हैं अन्यथा आजकल तो लोग उपर्युक्त कथन को कपोल कल्पित ही समझते। श्री रामकृष्ण जी भी इसी प्रकार के चमत्कारों में सिद्धहस्त थे।

ऋषि के समान तपोमय जीवन व्यतीत करने वाले पिता को परिवार से कोई मोह नहीं था। ताल और लय ही उनका सब कुछ था। अतः बालक रामकृष्ण को जीवन में अपना मार्ग स्वयं बनाना पड़ा। मुख्यतः बम्बई में उनका प्रारम्भिक जीवन बीता। उनके मधुर बालकंठ और स्वाभाविक प्रतिभा से प्रभावित होकर नटसम्राट श्री बालगन्धर्व ने अपनी नाटक मंडली में रहते हुए उन्होंने 'शारदा' नाटक में नायिका शारदा की भूमिका बड़ी कुशलता से की। बाद में किशोरावस्था में आवाज फूट जाने पर उस कम्पनी में उनकी आवश्यकता नहीं रही और वे पूना चले आए। बीच का समय बड़ी अशांति और अस्थिरता का रहा। पूना में शिवाजी मराठा हाईस्कूल में शिक्षा प्राप्त की। वहाँ से मैट्रिक पास करने के बाद वे उसी स्कूल में संगीत-शिक्षक हो गये। तत्पश्चात् सन् 1938 में उन्होंने शारदा संगीत विद्यालय नामक संस्था

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



स्थापित की। इस संस्था में श्री रामकृष्ण जी द्वारा संगीत-शिक्षा प्राप्त किए हुए अनेक विद्यार्थी आज नामवन्त कलाकार सिद्ध हुए हैं। इन विद्यार्थियों के अतिरिक्त भी महाराष्ट्र में उनके अनेक शिष्य उनका नाम उज्ज्वल कर रहे हैं।

सन् 1948 में संगीतमार्तण्ड पं० ओंकारनाथ ठाकुर से उनका परिचय हुआ। पंडित जी ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और जब काशीहिन्दूविश्वविद्यालय में नवीन संगीत महाविद्यालय (कला संगीत भारती) की स्थापना हुई, जिसके कि वे प्रधान बनाये गये तो वे अत्यन्त आग्रहपूर्वक पर्वतकर जी को काशी ले आये, परन्तु विश्वविद्यालय में आकर भी आर्थिक एवं अन्य कष्टों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। विश्वविद्यालय के राजतन्त्र को सन्तुष्ट करने के लिये किसी विद्यालय की उपाधि उनके पास न होने के कारण वे साधारण लेक्चरर भी न बनाये जा सके। अन्त में अनेक कठिनाइयों के बाद उनकी नियुक्ति स्थायी हो सकी। परन्तु अब बहुत देर हो चुकी थी। दो वर्ष निरन्तर आमाजीर्ण की बीमारी ने उनकी जीवनी शक्ति हर ली थी। केवल आत्मबल पर शरीब कब तक टिकता? इस नियुक्ति के एक ही वर्ष पश्चात् 14 फरवरी 1959 को 51 वर्ष की अवस्था में बीमारी से लड़ते हुए अपने पाँच पुत्रियों और एक पुत्र वाले परिवार को बिलखता हुआ छोड़कर उन्होंने इस संसार से प्रस्थान किया। उनके शिष्य-प्रशिष्यों एवं मित्रों को अपार दुःख पहुँचा। उनकी असीम मनोवेदना को व्यक्त करने वाला एक पद इसमें दिया गया है, जो पर्वतकरजी के मित्र श्री बलवन्तराय भट्ट ने उनकी मृत्यु के बाद रचा था।

श्री पर्वतकर का तबला वादन एवं लय का काम जिसने देखा, वही दङ्ग रह गया। उनकी उँगलियाँ जिस हलके ढंग से तबले पर पड़ती थीं और कठिन से कठिन बोल को जिस सरलता और सफाई के साथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



निकालते थे, वह देखकर स्वतः उनके लिये प्रशंसा का भाव हृदय में जागरित हो जाता था। उनका कोई बोल साधारण नहीं था। प्रत्येक में मौलिकता, कलात्मकता और चमत्कारपूर्ण लयकारी का दर्शन होता था। तबले और मृदङ्ग के बोलों का उनके पास अक्षय भांडार था और आवश्यकतानुसार तुरन्त नया रचने की क्षमता भी। गोआ के मन्दिरों में जिस प्रकार के तबला-वादन से देवपूजा की जाती है, उसका भी प्रदर्शन अत्यन्त परिष्कृत रूप में वे करते थे। उस प्रकार के वादन को सुनकर एक अंग्रेज कवियित्री और नाटक-लेखिका फिलिपा बरेल्स इतनी अभिभूत हो गईं कि वह रात में सो न सकीं। अगले दिन आकर उसने हमें बताया कि रात भर वही लय मेरे मस्तिष्क में घूमती रही और मैं सोचती रही कि इसका उपयोग कैसे अपनी कविता में भी करूँ।

प्राचीन टेढ़ी-मेढ़ी और कठिन तालों पर उनका पूरा अधिकार था। अनेक बड़े संगीत सम्मेलनों में उन्होंने विचित्र ताल ( $9\frac{1}{2}$ मात्रा), योगताल ($15\frac{1}{2}$ मात्रा), परब्रह्मताल ( $15\frac{3}{4}$ मात्रा) जैसी तालों में सभी प्रकार की लयकारियों, कायदों, परन आदि का प्रदर्शन किया था। लोग अधिकतर उनके कार्य को तमाशे की दृष्टि से ही देखा करते थे क्योंकि उसे समझना सहज नहीं था। स्व. अनोखेलाल जी ने कहा भी था — "भैया, साधारण लोगों की क्या बात है, गुणी लोग भी इस काम को कहाँ समझते हैं?' स्मरण रहे कि जब वे गाकर विभिन्न लय, भेदों का प्रदर्शन करते थे तो एक मात्र अनोखेलाल जी ही उनकी संगत करते थे। इसी प्रकार उनके लय-प्रदर्शन के साथ लहरा पकड़ना भी हँसी-खेल नहीं था। उनके मित्र बलवन्त रॉय भट्ट ही लहरे की लय स्थिर रख सकते थे। उनकी विकट लयकारियों में 16 मात्राओं में 7, 9, 11, 13, 15, 17, जैसी विषम संख्याओं का संतुलित समावेश अर्थात् 7/16, 9/16, 11/16, इत्यादि मात्रा की लयकारियाँ उल्लेखनीय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



हैं। ऐसी क्लिष्ट लयकारियों का कोई उपयोग भले ही समझ ने आए पर लाभ ही ढूँढ़ने की वणिक्वृत्ति कला के क्षेत्र में हितकर नहीं है। हमें उस व्यक्ति की तपस्या का आदर करना चाहिये जो इस प्रकार के असाधारण कार्य कर दिखाता है। इन लयकारियों को वे तबले पर बजा भी सकते थे अर्थात् त्रिताल में रूपक, झपताल, आड़ा-चौताल, सवारी आदि ताल बजाने में भी सिद्धहस्त थे। बहुतों को यह कथन अविश्वसनीय लगेगा पर हमने स्वयं उनको विचित्र ताल ( $9\frac{1}{2}$ मात्रा) में आड़ा-चौताल (14मात्रा) बजाते हुए देखा है।

श्री पर्वतकर जैसे उत्कृष्ट लयकार थे वैसे ही कुशल गायक भी थे। स्वर और लय दोनों का संयोग ईश्वर ने उनमें कर दिया था। अत्यंत सुरीली आवाज से युक्त उनका गायन कुछ चंचल पर अत्यन्त निर्मल, मधुर और प्रसन्न होता था। गायन की शिक्षा उन्होंने मरहूम उस्ताद बशीरखाँ से पाई थीं ख्याल, ठुमरी एवं मराठी भावगीत वे अत्यन्त रस-पूर्वक गाते थे। यदि उन्होंने गायन की ओर अधिक ध्यान दिया होता तो वे प्रसिद्ध गायक होते क्यों कि तब इतने अभावों में उनका जीवन न बीता होता।

पर सच्चे कलाकार का मन तो जिसमें रमा सो रमा। ताल और लय के आगे उनको सुख-दुःख की चिन्ता नहीं थी। उनके निकट रहने वाले लोग जानते हैं कि उनके होंठ सदा हिलते रहते थे क्यों कि वे सदैव किसी नई लय या नए बोल का चिन्तन और अभ्यास करते रहते थे। मन, प्राण और शरीर तीनों की सतत साधना के फलस्वरूप ही उनमें वे सब अनोखी सिद्धियाँ आई थीं। उनकी तल्लीनता का यह हाल था कि अपने अन्तिम क्षणों में भी वे उसी धुन में थे और 'गदि गन धा' ये ही सम्भवतः उनके अन्तिम शब्द थे। उनके विचार में लय के माध्यम से ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है, जैसा कि किसी को अपने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



हस्ताक्षर देते समय उन्होंने साथ में लिखा था —By the sweet melody of Music and Laya (Timing) I will try my utmost to achieve God, the everlasting Happiness.

और सचमुच तबला-वादन की जिस तेजस्वी कला का परिचय उन्होंने दिया वह अलौकिक ही थी।

उनकी एक और विशेषता जिसका पता कम लोगों को है वह थी चित्रकला। विख्यात चित्रकार हलदंकर द्वारा बम्बई में संयोजित चित्र-प्रदर्शनी में श्री पर्वतकर द्वारा चित्रित एक साधु के चित्र को प्रथम स्थान मिला था। वह चित्र एक भिखारी को सामने बैठकर खींचा गया था। और उन्हें अत्यन्त प्रिय था। अन्त समय में भी वे 'स्वामी जी का चित्र कहाँ है?' यह कहकर उसकी याद कर रहे थे। वे वस्तुतः चारों ओर से कलाकार थे। ललित कला के प्रत्येक अङ्ग में उनका प्रवेश था। वैसे उनकी एक-एक कला ही उन्हें उच्च कलाकार के पद पर बिठाने में समर्थ थी।

इतने प्रतिभावान् कलाकार को गर्व छू भी नहीं गया था। 'विद्या विनयेन शोभते' वाक्य का प्रत्यक्ष रूप उन्हीं में देखने को मिला था। सदा दूसरों की कला की प्रशंसा तथा अपनी प्रशंसा होने पर मौन रह जाना ही उनका स्वभाव था। अपने कार्यक्रम के बाद केवल संगत करने वाले साथियों की ही प्रशंसा उनके मुख से सुनने को मिलती थी। अपनी अधिक प्रशंसा किये जाने पर कह देते थे कि मुझमें तो अपने पिता की विद्या का शतांश भी नहीं है। नम्रता, सौजन्य और सारल्य की वे साक्षात् मूर्ति थे। सच पूछा जाय तो उनकी अत्यधिक नम्रता और संकोच शीलता ही उनकी प्रसिद्धि में बाधक हुई। निन्दा तथा ईर्ष्या से दूर रहने वाला, सदा प्रसन्न और हँसमुख रहने वाला बालकों जैसा उनका व्यक्तित्व था। बीमारी से अत्यधिक कष्ट पाने पर कहा हुआ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



उनका निम्नलिखित कथन अपनी कला के प्रति असाधारण प्रेम का द्योतक है—

"मला माझा प्राण गेला तरी पर्वा नाहीं, पण माझी विद्या नाहीं राहणार त्याचें मला दुःख आहे।" प्राणों की मुझे पर्वाह नहीं है पर मेरी विद्या नहीं रहेगी उसी का दुःख है। सचमुच इस आलोक-मण्डित नक्षत्र के उठ जाने से लयकारी के आकाश में अँधेरा छा गया। उनके रूप में हमने एक आदर्श कलाकार खो दिया। उनके कार्य के चिन्ह-स्वरूप केवल कुछ रिकार्ड एवं उनके शिष्य-प्रशिष्यों के पास लिखे हुए तबले के कुछ बोल ही रह गये है। भारतीय संगीत अकादमी ने उनके उपलब्ध बोलों के प्रकाशन का आश्वासन दिया है। कला संगीता भारती की वर्तमान प्रधानाचार्या डा. प्रेमलता शर्मा एवं पर्वतकर जी के शिष्य दामोदर होता उन बोलों के संग्रह और संपादन में प्रयत्नशील हैं। इन दुर्लभ बोलों का प्रकाशन हो जाय तो संगीत-जगत् का बड़ा उपकार होगा।

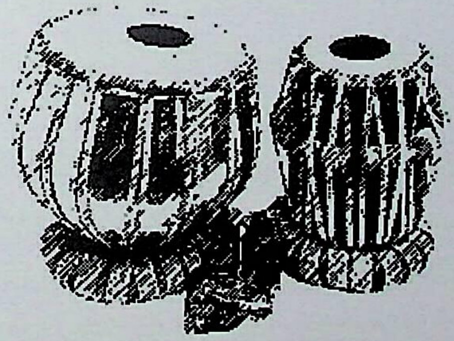

**साभार :** 'संगीत' पत्रिका जून 1960 पृष्ठ 31-34 । लेखक - श्री विष्णु कुमार अग्रवाल। स्व. रामकृष्ण पर्वतकर के विद्यार्थी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# एक सुसंस्कृत तबलावादक और गायक स्व. रामकृष्ण पर्वतकर

**– ना. र. मारुलकर**

मानव जीवन का क्षणभंगुरत्त्व यह प्रकृति का एक महान् सत्य है। यह क्षणभंगुरत्त्व क्षणमात्र में भूलकर वर्तमानकाल के सारे क्रियाकलाप चलते रहे यह इस नियती का मनुष्यमात्र को प्राप्त हुआ विशेष वरदान है। हम अमर हैं ऐसा सोचकर चलना, और नित्य के व्यवहार करना ये इस अनुत्तरित प्रश्न का उत्तर है। यह अनुत्तरित प्रश्न अनादिकाल से वैसे ही चला आ रहा है और सृष्टि के अंत तक भी वैसा ही चलता रहेगा। जीवन की यह पहेली हल करनेवाले संत-महंतों को छोड़ दें तो सामान्य मनुष्य इसी पहेली में फँसा रहता है। जिंदगी को जीने से जीवन समझ में आता है ऐसे विद्वान कहते हैं यही अंतिम सत्य है। जिंदगी क्या है, उसमें मनुष्य का अधिकार कितना, उससे प्राप्त होनेवाली सफलता कितनी और सफलता को उध्वस्त करने वाले प्रसंग कौन से ऐसे कुछ विकट प्रसंगों से मस्तिष्क बोझिल हो जाये, ऐसे कुछ प्रसंग मेरे जीवन में आये उसी में से एक शोकपूर्ण कहानी !

लयभास्कर खाप्रुमाम् पर्वतकर जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री. राकृष्णबुवा पर्वतकर मेरे निकटतम मित्र थे। 1941 से आपका और मेरा स्नेहसंबंध अधिकाधिक दृढ़ होता जा रहा था। प्रतिदिन हमलोग मिलते थे। घर पर ही मैफिल जमती थी। हमलोग एक दूसरे के सुखदुःख की बातें भी दिल खोलकर करते थे। सन् 1951 में सुविख्यात पंडित ओंकारनाथ ठाकुरजी ने "बनारस हिन्दू युनिव्हर्सिटी में संगीत विभाग में अध्यापन हेतु आपको आमंत्रित किया। हमें और उनके सभी प्रियजनों को इस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



बात की बहुत प्रसन्नता हुई। रामकृष्णबुआ प्रगतिपथ पर आगे बढ़ रहे थे, और प्रापंचिक दृष्टि से भी उनके जीवन में स्थिरता आ रही है यह सुनकर मुझे बहुत ही खुशी हो रही थी। उसी समय रामकृष्णबुआ जी का एक पत्र आया —

प्रिय श्री मारुलकर जी,

श्रीदत्त महाराज की कृपा से यहाँ सब कुछ उत्तम चल रहा है। आपकी बहुत याद आ रही है -क्योंकि लयकारी में कुछ विशेष कठिन विद्या मुझे अपने पिताश्री से प्राप्त हुई, आशीर्वाद से ही मेरे मस्तिष्क में उनका प्रकाश दिन प्रतिदिन द्विगुणित हो रहा है। मैं अपनी प्रसन्नता का वर्णन नहीं कर सकता हूँ। गतवर्ष और नयी लयकारियाँ मैंने साध्य की है। आप जैसे पुणे के मर्मज्ञ कलाकारों के सामने यह सब प्रदर्शित करने के लिए मेरा मन तड़प रहा है। आप सुनकर प्रसन्न होंगे युनिव्हर्सिटी ने मुझे स्थायी रूप से नियुक्त किया है और विद्यालय के अधिकारीगण ऊँचे पद हेतु प्रयत्नशील हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण अबतक मुझे स्वास्थ्यलाभ नहीं हुआ। परन्तु आशा करता हूँ यदि मुझे स्वास्थ्य लाभ हुआ तो मैं अच्छी तरह विद्या की सेवा कर सकूँगा और इसी लिए मैं बहुत ही खुश हूँ। मैं मई माह में आप सभी लोगों से मिलने हेतु आ रहा हूँ। उस समय मैं लयकारी संबंधी कुछ साध्य हुई बाते मैं आप के सामने प्रस्तुत करूँगा आपको भी खुशी होगी।

आपका

रामकृष्ण पर्वतकर

(बनारस)

रामकृष्ण बुआ के इस पत्र से मुझे अत्यधिक आनंद हुआ। उसके तीन कारण थे –एक कारण यह था कि संगीत कला की साधना करनेवाले मेरे अत्यधिक प्रिय मित्र का प्रगतिदर्शक वह पत्र था, दूसरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कारण यह पत्र मुझे ही भेजने की प्रेरणा मिली वह मेरे प्रति उनका अपनत्व मेरे लिए सुखदायी था। इसके अलावा आपने मुझे "पूणे का मर्मज्ञ रसिक कहकर अनजाने मेरा गौरव किया था। तीसरा कारण कुछ भी हो, मैं बहुत ही प्रसन्न था। इसी प्रसन्नतावश मैंने उन्हे सविस्तार पत्र भेजकर बनारस हिन्दू युनिव्हर्सिटी में स्थायी होने के कारण उनका मनःपूर्वक अभिनंदन किया। उन्हें उच्च पद प्राप्त हो, इस इच्छा से शुभचिंतन भी किया।

परन्तु नियति की गति अगम्य थी। "जीवन शाश्वत नहीं है" इस कटु सत्य का क्रूरदर्शन देनेवाली वह घटना थी। रामकृष्ण बुआ को मेरे पत्रप्राप्ति का योग नहीं था। रामकृष्ण बुआ ने जिस दिन मेरे लिए पत्र लिखा था उसके ठीक चार दिनों के बाद दि. 14 फरवरी 1959 के दिन रात के समय "रामकृष्ण बुआ के निधन" होने का हृदय विदारक समाचार उनकी जेष्ट कन्या द्वारा भेजे हुए तार से मिला। मेरा मस्तिष्क अक्षरशः सुन्न हुआ। मेरी यह सुन्न मनःस्थिति अनेक दिनों तक कायम रही। जिस नियति के कारण यह घटना घटित हुई उसी नियति ने मनुष्य को विस्मृति का दिव्य उपहार दिया है -इसी उपहार के कारण मैं धीरे धीरे.अपनी चेतन अवस्था में लौट आया।

रामकृष्ण बुआ का सारा जीवन कष्टमय था। जीवन में हर क्षेत्र में अस्थिरता ही उनके जीवन का स्थायी भाव बन गया था। यही कारण था कि 51वर्ष की इहलोक की यात्रा में उन्हें कभी स्वास्थ्यलाभ नहीं प्राप्त हो सका। परन्तु इस कठिन अवस्था में भी इस स्थितप्रज्ञ पुरुष ने कलात्मक यश प्राप्त किया है और वह सदैव प्रसन्न वदन से। निश्चित रूप से आप यदि कलाकार न बनते तो एक महान संत बनते!

अनेक गोमंतकीय कलाकारों ने कला की दिव्य साधना हेतु मुंबई को अपना आश्रय स्थान बनाया है। रामकृष्ण बुआ भी अपनी मातृभूमि को त्याग करके बाल्यकाल में मुंबई गये। उनकी अपनी तालविद्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पारंपरिक जन्मजात प्राप्त विद्या थी। मुंबई में आपने गायन कला का भी अभ्यास शुरु किया। कृष्णवर्ण के होकर भी, नाकनक्श आकर्षक एवम् छोटा कद –उस समय की परिस्थिति के अनुसार आपने गंधर्वनाटक मंडल में पदार्पण किया। नट सम्राट बालगंधर्व के गायन एवम् अभिनय आदि गुणसंपदा देखकर रामकृष्ण बुआ उनके भक्त बन गए। बालगंधर्व की यह श्रेष्ठ कला रामकृष्ण बुआा के लिए एक भक्तिस्थान बन गया था। भ्रमर वृत्ति का यह बाल कलाकार बालगंधर्व जी की गाय्रन कला एवं अभिनय कला आत्मसात करने लगा। "शारदा" नामक नाटक में आपने मुख्य-स्त्रीपात्र "शारदा" का अभिनय बहुत अच्छी तरह किया। कुछ वर्षों के बाद आवाज फटने के कारण गंधर्व कंपनी में काम करना छोड़ दिय। तरनंतर हैद्राबाद के सुविख्यात विद्वान गायक मरहूम उस्ताद बशीर खाँ से गायनकला ग्रहण की। श्री रत्नकांत रामनाथकार जी से कुछ रागों की बंदिशें सीखी। तबलावादन में तबले के बोल भरने की कला भी अनेक विद्वान तबलावादकों से आत्मसात की।

ऐसे ही कुछ कारणवश वे पूना आए। पुणे में "शिवाजी मराठा हायस्कूल" में आपने शिक्षण हेतु "रात्रिकालीन विद्यालय" में प्रवेश लिया वहाँ उन्होंने हाईस्कूल की परीक्षा भी पास की। उसी विद्यालय में "संगीत शिक्षक" के रूप में उनकी नियुक्ति हुई। पुणे में उनका कार्य सुचारु रूप से चल रहा था। आपको चाहनेवालों की संख्या में वृद्धि होने लगी। 1938 में आपने "शारदा संगीत विद्यालय" नामक अपनी संस्था स्थापित की। अल्पायु में ही प्रसिद्ध हुई। इस संस्था में शिक्षण-प्राप्तकर अनेक विद्यार्थी तैयार होने लगे। पुणे में रामकृष्ण के शिष्य स्व. मधुकर तिसगावकर ने आपसे शिक्षा ग्रहणकर तबलावादन के क्षेत्र में प्रगति करके ख्याति अर्जित कर अपने गुरु का नाम ऊँचा किया, इसके अलावा उनके शिष्य केशव नावलेकर, केलकर वकील, बारामती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



के श्री निलाखे, विनायकराव थोरात आदि तबलावादक एवम् गायिका मेनकाबाई शेळडेकर संगीत क्षेत्र में उत्तम कार्य कर रहे हैं।

पुणे के एक उत्तम व्हायालिन वादक श्री अनंतराव फाटक रामकृष्ण बुवा के अत्यधिक प्रिय शिष्य हैं। आपके कनिष्ट भ्राता श्री सूर्यकान्त पर्वतकर भी एक अच्छे तबलावादक हैं। आप मुंबई में "भारतीय विद्या भवन" में कार्यरत हैं। रामकृष्ण बुआ की कन्या वाराणसी में ही संगीत की प्राध्यापिका है और संगीत क्षेत्र में उत्तम कार्य कर रही है। उनकी कन्या सौ. शोभा अब्दागिरि भी सितार वादन में निपुण हैं। एवम् सुपुत्र चि. रवी महाविद्यालय में पढ़ रहा है।

मुझे रामकृष्ण बुआ की असंख्य महफिलें सुनने का अवसर मिला। इस कलाकार में दुर्लभ कलागुणों का समावेश हुआ है। वादन एवम् गायन दोनों ही कला में आप निपुण थे।

वे अनेक ताल स्वतंत्रतापूर्वक बजाते थे। लयकारी में खेलना तो उनके घर का ही विषय था। परन्तु अन्य वादन प्रकार, कायदे एवम् मुख्यतः रसग्रहण एवम् सौंदर्यदृष्टि—ये गुण उस्ताद थिरकवा जी जैसे कलाकारों के सान्निध्य के कारण उन्हें प्राप्त हुए थे। उनकी वादनकला भी उल्लेखनीय थी। न जाने कितनी कठिन लयकारियाँ वे अपने रसिक श्रोताओं को बहुत सरल करके समझा देते थे। त्रिताल, झपताल, आड़ाचौताल, सवारी जैसे ताल बजाते ही थे। इसके अलावा अनेक अप्रसिद्ध विषम और कठिन ताल बहुत ही सहज एवम् कुशलतापूर्वक बजाते थे। (रंगती ने वाजवीत) कन्हाड जिले की एक महफिल में त्रिताल में पौने सोलह (15 ।।।) मात्रा के हिसाब में पौनघंटा वादन किया। ठाय लय से आरम्भ करके द्रुतलय तक एक जैसे आत्मविश्वास के साथ वे तबलावादन करते थे उनकी उँगलियाँ छोटी थीं, परन्तु उनमें विलक्षण चपलता थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मैं स्वयं रामकृष्ण बुआ के गायन से बहुत ही प्रभावित था। उनकी आवाज में बहुत ही मधुरता थी। हार्मोनियम के सफेद पाँच स्वर में गाते थे। उनकी आवाज अत्यंत निर्दोष थी।

तीन सप्तक में बहुत ही सहजता से गाते थे। गाने में रंग होना चाहिये वह हमेशा स्थिर रहना चाहिये इसकी ओर विशेष ध्यान रखते थे। ख्याल, नाट्यगीत, ठुमरी एवम् भावगीत-भजन ये सभी प्रकार बहुत ही प्रसन्नता से गाते थे। उन्होंने बहुत ही परिश्रम करके संगीत शास्त्र का पठन किया था। अतः उनकी गायकी में स्थायी अंतरा, राग के नियमों का पालन आदि स्पष्ट रूप से दिखाई देता था परन्तु रसिक कलाकार का मन मूलतः सौन्दर्यनिर्मिति में ही लीन रहता होता है, इसीलिए आपकी रंगभरी महफिलों के कारण रसिकों के मन में आपके लिए आदर निर्माण होता था। रसिकों के मन को दुखी करने का पाप उनकी रसमयी कला द्वारा कभी नहीं हुआ। बनारस में अनेक परिषदों में उनके तबलावादन से भी अधिक उनकी गायनकला से लोग प्रभावित हुए हैं।

रामकृष्ण बुवा की विशेष महत्त्वपूर्ण कला उनकी चित्रकला थी। वे संगीतकार नहीं होते तो चित्रकार के रूप में प्रसिद्ध होते। उनके द्वारा रेखांकित अनेक चित्र मैंने देखे हैं। ख्यातिप्राप्त चित्रकार श्री हलदनकर द्वारा आयोजित चित्रकला प्रदर्शन में रामकृष्ण बुवा के बनाये 'ऋषि' के चित्र को प्रथम पुरस्कार मिला था। यह एक बात उनके चित्रकला नैपुण्य की साक्षी के लिये है।

रामकृष्ण बुवा बहुत सत्प्रवृत्त, पापभीरु और आचार विचार से अंतर्बाह्य सुसंस्कृत थे। उनके तीन दैवत थे श्री दत्त महाराज, संगीत विद्या, और गुरुजन। उनकी भक्ति एकनिष्ठ थी। इस भक्तिभाव व श्रद्धा के कारण वे अपने जीवन में समाधानी थे। उनके जीवन में यशकीर्ति में वृद्धि होने लगी थी। उनके संगीतसेवा का वृक्ष पल्लवित पुष्पित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



होकर मेरे समान चाहनेवालों को, मित्रों को कुछ आश्रय मिलेगा इस व्यवहारोचित कल्पना में हम आशान्वित हो रहे थे, इतने में अनुत्तरित प्रश्न का उत्तर "मृत्यु न माने ये कलाकार" इसका समर्थन करनेवाली तार द्वारा हमलोगों को सूचना मिली और मानवी जीवन की न हल होने वाली पहेली के क्षणभंगुरता का अश्रुपूर्ण नयनों ने पुनः चिंतन शुरु किया।

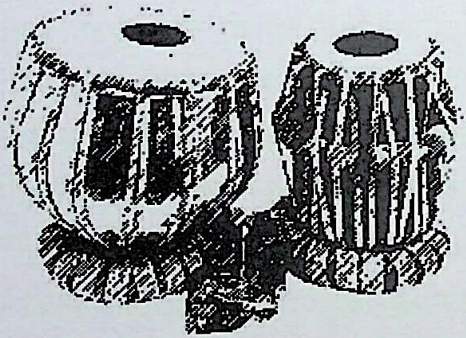

---

**साभार :** 'गोमंतकीय कलाकार', पृष्ठ 45-51 लेखक -डॉ. ना. र. मारुलकर सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ, लेखक, समीक्षक। पर्वतकर जी के घनिष्ठ मित्र।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# स्व. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर

**– पद्मश्री पंडित बलवंतराय भट्ट 'भावरंग'**

स्व. रामकृष्ण पर्वतकर ऐसे सत्पुरुष कलाकार थे जिनके चेतन और अचेतन मन में सदैव लय-ताल और सुरों का ही संसार था। मेरा प्रत्यक्ष परिचय लगभग तेरह वर्ष का रहा। 1951 में उनके काशी आगमन से 14 फरवरी 1959 को लयलीन होने तक प्रगाढ़ होते होते आत्मीय हो चुका था।

दुनिया के किसी विषय पर बात शुरू हो और चार-पाँच मिनट होते लय-ताल-तिहाई पर ही केन्द्रित हो जाता था, फिर समय का भान भी नहीं रहता था, घर से किसी और काम के लिये निकले, रास्ते में कोई मिल गया और चर्चा शुरू हो गई तो चर्चा के बाद वैसे ही घर पहुँच जाते थे –काम की सुध ही नहीं रही।

1946 में पू. गुरु जी के साथ पूना जाना हुआ। प्रभात होटल में रहने का इंतजाम था। कार के होटल में दाखिल होते ही वे तुरन्त कार के पास अये और अपना परिचय दिया कि मैं खाप्रुमामा का पुत्र हूँ, मिलने का समय चाहिये। गुरुजी खाप्रुमामा के नाम से पूर्व परिचित थे, शाम का समय दिया। खैर, पर्वतकर जी शाम को आये, बातचीत होने लगी। एक तिहाई की बात चली। पंडित जी ने मुझे आवाज दी, मैं कमरे  में गया तो परिचय कराया और बताया कि ये मेरा विद्यार्थी है, तबले का भी शौक है। फिर पर्वतकर जी से कहा आप तिहाई बोलिये -उन्होंने अपनी तिहाई पढ़न्त की–गुरुजी ने मुझसे पूछा याद हुई? मैंने कहा एक बार और बोलिये उन्होंने फिर पढ़ना शुरू किया, दो पल्ले के बाद तीसरी बार में मैं भी साथ हो लिया -**तकधिन तकधिन त्नाकिट धात्रकधि किटधिन त्नाकिट धाऽदिंऽ ता**। इधर मेरा धाऽदिंऽ "ता" आया और पर्वतकर जी ने उछल कर मेरा हाथ पकड़ लिया। ["ता"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पर पहली बार हाथ मिला था और और 14 फरवरी 1959 को आखिरी शब्द "गदिगिन धा" पर आखिरी बार मिला था।] पर्वतकर जी बड़े प्रसन्न हुए कि कई तबलावादकों को सुनाया किसी को याद नहीं हुआ, कमाल है एक ही बार में पकड़ लिया। ये मेरा उनके साथ पहला परिचय था। खैर, 1950 में मैं पंडित जी के साथ वाराणसी आया। यहाँ संगीत महाविद्यालय प्रारंभ हुआ था। 1951 में पर्वतकर जी किसी अन्य स्थानीय कार्यक्रम के लिये आये थे, तो गुरुजी से मिलने भी आये थे। महाराष्ट्रीय समाज का कार्यक्रम था, यद्यपि वहाँ उन्होंने गायन का कार्यक्रम दिया था।

कुछ वर्षों बाद यहाँ तबला विषय के लिये अध्यापक की जरूरत हुई तो पण्डित जी ने पर्वतकर जी को बुलाया। 1951 में वे काशी आ गये और अध्यापन कार्य शुरू किया। कक्षाओं के विद्यार्थी प्रारंभिक स्तर के थे, उनको अभ्यास के लिये कुछ बोल-बन्दिश बताकर फिर अपनी दुनिया में खो जाते थे। मेरा छोटा भाई ललित भी उनकी क्लास में जाता था। अन्य छात्रों में दामोदर होता उनका भी भक्त था और उनसे सीखता भी था। वादन के रूप में उनका हाथ हल्का चलता था, मगर बोल साफ थे। "त्रक" बहुत नज़ाकत से बजाते थे। उनके हाथ और शमसुद्दीन खाँ (जो उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब और हीराबाई बड़ौदकर के साथ अक्सर बजाते थे) के हाथ में काफी समानता थी – हल्का-मुलायम। उनसे उनकी तारीफ़ करने पर कहते थे–"मैंने सुन सुन के पाया है, ज्यादा साधना नहीं की है, जो मैं करता हूँ वो तो खाप्रुमामा के हिसाब से बहुत सामान्य चीजें हैं।"

एक बार हंगरी के राजदूत के साथ एक शिष्टमंडल BHU में आया था। शास्त्रीय संगीत सुनने की उनकी फरमाइश थी। उस कार्यक्रम में पर्वतकर का सोलो भी हुआ, पाँच मिनट के बाद उन्होंने लयकारी का मतलब समझा कर (थोड़ी अंग्रेजी बोलते थे) फिर 16

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मात्रा में क्रमशः 7, 9, 11,13 एवं 15 मात्रा का विभाजन कर दिखाया, वो भी केवल खड़ी पूर्ण मात्रा अर्थात् "धा" दिखाते हुए। सभी बहुत आश्चर्यचकित कि कैसे इतना सटीक लयपरिवर्तन होता है। मैं लहरा बजा रहा था -13 एवं 15 मात्रा एक के बाद एक सटीक सम पर आया तो पर्वतकर मेरी तरफ इशारा करके बोले "Only one man in India."

गुरूजी पं. ओम्कारनाथ जी की हीरक जयन्ती में भी उन्होंने मेरे साथ सोलो बजाया था। उस कार्यक्रम की तस्वीर भी मेरे पास है। अतुल देसाई उस समय यहाँ विद्यार्थी था, सुनने के बाद पास आकर पूछता है "ये सपना था, या हकीकत"!!

तबले के साथ पर्वतकर जी गाना भी अच्छा गाते थे। फिरतदार गला था, वनमाला को उनका ये गुण मिला है। चित्रकारी का भी शौक था और अच्छी खासी चित्रकारी कर लेते थे, उनका ये गुण रवि में उतरा है।

बनारस में अनोखेभैया को बहुत मानते थे, उनके बजाने से बहुत प्रसन्न होते थे। अनोखे भैया के स्वर्गवास के बाद पर्वतकर जी ने एक कालम अखबार के लिए लिखा था जिसका शीर्षक था – "नाधिंधिंना का बादशाह चला गया"। ये एक अजीब संयोग या विडंबना कहें अनोखेलाल जी के अवसान के एक वर्ष के भीतर स्वयं भी नहीं रहे। अस्पताल में अनोखेलाल जी को देखने-मिलने भी गये थे।

दुनियादारी में दीन थे। आमतौर पर लोगबाग सारी बातों के अन्त में अपना दुखड़ा रोते हैं, परन्तु पर्वतकर जी का बिल्कुल उल्टा हिसाब था। कोई दुख तकलीफ-बुराई-भलाई की बात शुरू होती थी और थोड़ी देर में तिहाई-लयकारी पर आ जाती है और फिर कहते थे "इससे बड़ा कोई सुख है क्या! वास्तव में इस अदृश्य सुख और आनन्द का वर्णन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सम्भव ही नहीं है। 'यूरेका-यूरेका'' कहते हुए भागने वाले वैज्ञानिक को जो अनुभूति और आनन्द हुआ होगा वैसा ही आनन्द कठिन तिहाई या लयकारी सिद्ध होने पर कलाकार को होता है। सारे वार्तालाप का अन्त "तिऽट कऽत्त गऽदि गऽन धा'' से ही होता था। हमारे बीच आपसी नमस्कार भी इन्हीं बोलों से होता था "तिटकट गदिगन धा''– "तिऽट कऽत्त गऽदि गऽन धा''। मेरे साथ का आखिरी संवाद भी यही था। मैं दामोदर होता और चित्तरंजन को लेकर सर सुन्दरलाल अस्पताल देखने गया था, किसी बात की परिवार की, बाल-बच्चों की चिंता जरूर रही होगी पर अन्त में "रज़ा घेतो'' के साथ **'गदिगिन धा'** कहकर हाथ में हाथ मिलाया।

उनकी पुण्यस्मृति में एक रचना मैंने अर्पित की जो भावरंग लहरी के द्वितीय भाग में प्रकाशित भी है :-

**स्थाई** -देत ताल काल के हाथ, अगम लय लीन भयो
रामकृष्ण पर्वतकर, पुनित रह्यो नित जल गंग सों।।

**अन्तरा** -खेलत खेल आड़ कुआड़ सों, अटक्यो नहीं अहर्निश
गरजत गैब से "**गदिगनधा**'', गयो सतप्रेमी भावरंग को।।

पुनः याद आया लयकारी की बात में बताते थे कि आड़-कुआड़-बिआड़-महाआड़ और इसी क्रम में सातवाँ स्तर बह्मआड़ तक खाप्रुमामा को सिद्ध था। इसी से अंदाज लग सकता है किस स्तर तक लय की सिद्धि की होगी। और इसीलिये इसे स्वर्गिक सुख के समकक्ष माना गया होगा। इसीलिये कहा गया होगा –

"तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं निगच्छति''

**"गदिगिन धा''**

(बलवन्तराय भट्ट)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पुत्री वनमाला के लिए चिन्तित थे कि गाना सीखेगी कि नहीं, कितना करेगी, और संयोग से उसी संकाय में प्रोफेसर पद से रिटायर हुई, जहाँ उसके पिता लेक्चरर थे, जहाँ वह छात्रा थी। बस उसको गाते हुए सुन नहीं पाये यही दुख रहा, सुन पाते तो कितना खुश होते!

उनके असमय चले जाने के बाद प्रतिभा बेटी ने बड़े धैर्य और संयम से घर परिवार की जिम्मेदारी उठाई, और सब अपने-अपने स्थान पर स्थिर हुए, इसकी शाबाशी प्रतिभा को। (संगीत से सीधे तौर जुड़े ने होते हुए भी, जीवन की लय स्थिर रखी, परिवार की लयकारी सिद्ध की, ये पर्वतकर जी का अदृष्य प्रसाद ही है।)

शोभा ने भी सितार सीखा। सिखाया। इस प्रकार संगीत अगली पीढ़ी तक आया।

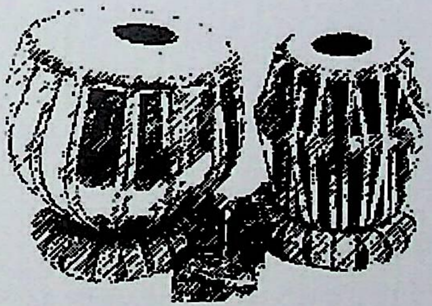

स्व. रामकृष्ण पर्वतकर जी के अभिन्न मित्र। सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ पद्मश्री पंडित बलवंतराय भट्ट 'भावरंग' वाग्गेयकार, भावरंग उपनाम से संगीत की अनेक रचनायें भावरंग लहरी नाम से 3 भागों में रचित, मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में प्रोफेसर पद पर कार्य से सेवा निवृत्त।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

## राग–गुर्जरी तोड़ी ताल–आड़ा–चौताल स्मरणाञ्जलि

स्थाई–देत ताल काल के हाथ, अगम लय में लीन भयो।
रामकृष्ण पर्वतकर पुनित रह्यो निज जल गंग सो।

गायनवादनाचार्य पं. बलवंतराय भट्ट 'भावरंग'

रचना तिथि 26.02.59

### स्थायी–

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | 3 | | 0 | | 7 | | 0 | | 11 | | 0 | |
| | | | | | | | | | | | म् | ध् | नि |
| | | | | | | | | | | | ग् | म् | ध् |
| | | | | | | | | | | | दे | ऽ | त |
| | | | | | | म् | | ग् | | | रे् | नि | |
| सां | — | नि | ध् | म् | ग् | रे् | ग् | रे् | — | सा | सा | नि ध् | ध् |
| ता | ऽ | ल | का | ऽ | ल | कें | ऽ | हा | ऽ | थ | अ | ग | म |
| | | ग् | रे् | | | ग् | | | म् | | नि | | |
| सा | रे् | रे् | ग् | — | — | म् | — | ध् | म् | ध् | — | म् | — |
| ल | य | में | ऽ | ऽ | ऽ | ली | ऽ | न | भ | यो | ऽ | रा | ऽ |
| | | | | | | | रें | नि | | ध् | म् | ध् | नि |
| ध् म् | ध् नि | सां | सां | सां | सां | सां नि | सां | ध् | ध् | म् | ग् | म् | ध् |
| मऽ | कृऽ | ऽ | ष्ण | प | र | बऽ | त | क | र | पु | नि | त | र |
| सां | | · | | | | म् | रे् | | | | | | |
| नि | रें | नि | ध् | म् | ग् | रे | ग् | रे् | सा | — | | | |
| ह्यो | ऽ | नि | त | ज | ल | गं | ऽ | ग | सो | ऽ | | | |
| × | | 3 | | 0 | | 7 | | 0 | | 11 | | 0 | |

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



## राग–गुर्जरी तोड़ी ताल–आड़ा-चौताल स्मरणाञ्जलि

**अन्तरा–खेलत खेल आड़ कुआड़ को अटक्यो नहीं अहोनिस।**
**गरजत गैब से गदिन धा गयो सत प्रेमी "भावरंग"॥**

**गायनवादनाचार्य पं. बलवंतराय भट्ट 'भावरंग'**

**रचना तिथि 26.02.59**

### अन्तरा–

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | 3 | | 0 | | 7 | | 0 | | 11 | | 0 | |
| | | | | | | | | | | म्<br>ग् | — | ध्<br>म् | धम् |
| | | | | | | | | | | खे | ऽ | ल | तऽ |
| ध्<br>सां | — | सां | सां | — | सां नि | रें | सां | — | सां | म्<br>ग् | — | ध्<br>म् | ध् म् |
| खे | ऽ | ल | आ | ऽ | ड़ ऽ | कु | आ | ऽ | ड़ | खे | ऽ | ल | त ऽ |
| सां | — | सां | सां | — | सां | रें सां | ग्<br>रें | ग् | रें | सां | — | ध् | सां |
| खे | ऽ | ल | आ | ऽ | ड़ | कुऽ | आ | ऽ | ड़ | को | ऽ | अ | ट |
| ग्<br>रें | रें<br>ग् | ग्<br>रें | रें<br>ग् | — | म् | ग्<br>रें | रें<br>ग् | ग्<br>रें | सा | सा ध्<br>म् | म्<br>ध् | म् | ग् |
| क्यो | ऽ | न | हीं | ऽ | अ | हो | ऽ | नि | श | ग | र | ज | त |
| म्<br>रें | ग् | रें | सा | — | ध्<br>सा नि | रें सा | नि<br>ध् | — | नि ध् | म् | ग् | ग् म् | म् ध् |
| गै | ऽ | ब | से | ऽ | ग दि | ग न | धा | ऽ | ग ऽ | यो | ऽ | स ऽ | त ऽ |
| ध् नि | नि रें | नि | ध् | म् | ग् | म्<br>रें | रें<br>ग् | रें | सा | — | | | |
| प्रे ऽ | ऽ ऽ | मी | भा | ऽ | व | रं | ऽ | ग | को | ऽ | | | |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# लयकारी के पर्वत थे
# पंडित रामकृष्ण पर्वतकर जी

**– प्रो. चित्तरंजन ज्योतिषी**

मुझे याद आ रहे हैं वे सुखद क्षण जब हम एक सामान्य दिखनेवाले अत्यन्त सरल व सीधे साधे व्यक्ति के रूप में परम श्रद्धेय पूज्य गुरु स्वर्गीय पंडित श्री रामकृष्ण पर्वतकर जी को देखा सुना करते थे। बात सन् 1951 की है जब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित "श्री कला संगीत भारती" (जिसे आज हम "संगीत एवम् मंचकला संकाय के नाम से जानते हैं) में पंडित पर्वतकर जी तबला विषय के प्राध्यापक के रूप में नियुक्त होकर आए थे जिन्हें पूज्य दादा गुरु संगीत मार्तण्ड पंडित ओम्कारनाथ ठाकुरजी पुणे से वाराणसी ले आए थे।

उस समय मैं तथा मेरे अन्य सहपाठी सभी कम आयु के थे जिनमें मैं सबसे छोटा था। हम सभी संगीत के स्वर-लय एवम् राग : ताल की शिक्षा ग्रहण करते हुए धीरे धीरे ज्ञानार्जन कर रहे थ। हम अपने पूज्य गुरु श्रद्धेय पंडित बलवन्तराय भट्ट "भावरंग" जी की कक्षा में बैठकर गायन सीखते थे। यहाँ उल्लेखनीय है कि पूज्य भट्टजी और पंडित पर्वतकर जी में बहुत ही प्रगाढ़ मित्रता थी। प्रायः प्रतिदिन पर्वतकर जी हमारी कक्षा में आते थे, तब वे पूज्य गुरुजी (पं. बलवन्तराय भट्ट) से नमस्कार के रूप में नमस्ते न कहकर "गदिगन धा" कहा करते थे, जिसे सुनकर पूज्य गुरुजी और पं. पर्वतकरजी मुस्कुराकर अभिवादन किया करते थे, जो अपने आप में अद्भूत क्षण थे।

यहाँ यह भी बता दें कि पंडित भावरंग जी मूलतः प्रख्यात गायक हैं साथ ही अत्यंत कुशल तबलावादक है। उसी प्रकार स्व. पर्वतकर मूलतः तबलावादक थे, साथ साथ एक अच्छे गायक भी थे, पतली-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सी मीठी आवाज में वे गाया करते थे। प्रायः भावरंग जी मंच पर गायन कर रहे होते और तबले पर संगत पूज्य पर्वतकरजी किया करते थे। लेकिन कभी कभी पूज्य पर्वतकरजी गायन करते थे और तबले पर भावरंग जी संगत करते थे। इस प्रकार के कार्यक्रमों का भरपूर आनंद हम विद्यार्थीगण लेते थे। सुना तो यह भी था कि, पूना में वे मराठी संगीत नाटकों में 'स्त्री पात्र' के रूप में अभिनय करते थे और गाते भी थे। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था।

बी. म्यूज पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को गायन के साथ एक वाद्य सीखना अनिवार्य था। अतः प्रायः गायन के सभी विद्यार्थी तबला सीखने के लिए पूज्य गुरुजी पर्वतकर जी की कक्षा में जाया करते थे। हमारे अन्य सहपाठियों में श्री गोपीकृष्ण नागर, श्री दामोदर होता, श्री लक्ष्मीपति शुक्ल एवम् श्री सीतापति शुक्ल आदि प्रमुख थे। हम सभी का अत्यन्त सौभाग्य रहा कि हमें महान् विद्वान तबलावादक से ज्ञानार्जन का अवसर मिला।

स्वर-लय का ज्ञान प्राप्त करना कितना कठिन है जिसे शब्दों में कहना संभव नही है। अतः विशेषकर मैं तथा भाई दामोदर होता जी विशेष रूप से संगीत सीखने के लिए पूज्य पंडित "भावरंग" गुरुजी के घर पर जाया करते थे। तब कहीं जाकर संगीत क्षेत्र में कुछ-कुछ समझ बढ़ने लगी जिसके फलस्वरूप हमलोग पूज्य "भावरंग" गुरुजी एवम् पूज्य पर्वतकर गुरुजी की विद्वत्तापूर्ण कलाकारिता को थोड़ा-थोड़ा समझने लगे और उसे अपनाने का प्रयत्न करने लगे।

इन दोनों महान विभूतियों के लिए रागों की गहराई, लय की पकड़ और आड़, कुआड़, बिआड़ जैसी लयकारियाँ खिलवाड़ करने जैसी रही हैं। काशी (वाराणसी) एवम् अन्य नगरों के दिग्गज कलाकारों का जब पर्वतकर जी से सामना होता था तो पर्वतकर जी से अनभिज्ञ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



लोग उन्हें (पर्वतकर जी को) हल्के में लेते थे, उन्हें लगता कि यह अदना-सा व्यक्ति क्या कर सकता है? किन्तु जब पर्वतकर जी को लयकारी में ''राई से पर्वत'' होते देखते तो वे आश्चर्यचकित रह जाते थे। उन्हें कोई लयकारी में छेड़ भर देता था तो वह अपनी आफत मोल लेता था।

कोलकाता की एक संगीत सभा में एक प्रसिद्ध तबलावादक पर्वतकर जी के साथ रूपक ताल में ठेका दे रहे थे और पंडित पर्वतकर जी ने जैसे ही सम से क्लिष्ट लय की उठान आरम्भ की, उन विशिष्ट कलाकार का हाथ उठा का उठा ही रह गया। वे अपनी मूल लय ही भूल गए यानि उनके हाथ से लय छूट गई। ऐसे प्रसंग एक नहीं बल्कि अनेक हैं जिनकी चर्चा कलाकारों में होती रहती थी।

यहाँ एक अन्य आयोजन का उल्लेख कर रहा हूँ जिसे हम भूल नहीं सकते हैं। सन् 1955 में विदेश से एक 'सांस्कृतिक दल' संगीत मंचकला संकालय में आया था। (उस समय संगीत की कक्षाएँ रुइया हॉस्टल की ऊपरी मंजिल पर चला करती थी) अतः संकाय की ओर से पंडित पर्वतकर जी का तबलावादन का कार्यक्रम रखा गया था। हार्मोनियम पर लहरा देने के लिए पं. भावरंग जी बैठे हुए थे। तभी पढंत रूप में विभिन्न लयकारियों में अर्थात् त्रिताल 16 मात्रा में 7 मात्रा, 9 मात्रा, 11, 12, 13, 14 और फिर 16 में 15, 17, 18, 20 इत्यादि की लयकारी को हिन्दी गिनती में कहकर और विदेशियों को समझाने हेतु अंग्रेजी में वन-टू-थ्री-फोर इस प्रकार गिनते हुए उपरोक्त सभी लयकारियाँ पं. पर्वतकर जी ने करके दिखायी जिसे देख सुनकर भारतीय विद्वान कलाकार ही नहीं विदेशी मेहमान भी आश्चर्यचकित रह गए।

जिस समय पं. पर्वतकरजी अत्यन्त क्लिष्ट लयकारियाँ कर रहे थे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तभी स्वयं पर्वतकरजी ने मंच से घोषणा की थी कि इस प्रकार क्लिष्ट लयकारी करते समय मेरे साथ सटीक रूप से लहरा केवल पंडित बलवन्तराय भट्टजी ही दे सकते हैं और कोई नहीं, अतः भारत में सिर्फ बलवन्तराय जी ही एकमात्र विद्वान हैं। इस वाक्य को उन्होंने अंग्रेजी में भी कहा, ''ही इज् ओनली वन मैन इन इंडिया''।

ऊपर लिखित कार्यक्रम के समय दर्शकों में संगीत मार्तण्ड पं ओंकार नाथ ठाकुरजी (लेखक के पूज्य दादा गुरु), पं. लालमणि मिश्र जी एवम् काशी के अनेक संगीत विद्वतजन कलाकार साक्षी रहे हैं। उपरोक्त महत्वपूर्ण कार्यक्रम की रिकार्डिंग भी की गयी थी, परन्तु न जाने किस प्रकार वह रिकार्ड किसने गायब कर दी थी? यदि वह रिकार्डिंग सुरक्षित रखी जाती तो वह संगीत जगत के लिए अपूर्व थाती होती। खैर!

उपरोक्त अद्भूत प्रसंगों के संदर्भ में यदि कहा जाए कि पं. रामकृष्ण पर्वतकरजी ''लयकारी के पर्वत'' थे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। कहने का आशय यह है कि जो लयकारी को पर्वत जैसी ऊँचाई प्रदान करे अर्थात् पर्वताकार कर दे, वही है स्वनाम धन्य ''पर्वतकरजी''!

यहाँ थोड़ी चर्चा स्व. पं. रामकृष्ण पर्वतकर जी के पिताजी स्वर्गीय पं. लक्ष्मणराव पर्वतकर जी (प्रसिद्ध गायिका डॉ. वनमाला पर्वतकर के दादाजी) के संबंध में करना चाहता हूँ। स्व. पं. लक्ष्मणराव पर्वतकर जी को स्थानीय जन आदर से खाप्रुमाम नाम से पुकारते थे तथा संगीत के विद्वानों ने उन्हें ''लयभास्कर'' की उपाधि से सम्मानित किया था। पूज्य दादाजी के बारे में कहा जाता है कि जब वे लयकारी करते थे तो उनके साथ लहरा देनेवाले कलाकार गल्ती से लय न छूट जाय इसलिए कानों में रुई तथा आँखों पर पट्टी लगाते थे, तभी वे लहरा दे सकते थे। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि वे किस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



प्रकार की क्लिष्ट लयकारी करते होंगे।

आ. पर्वतकरजी मेरे पूज्य गुरुजी (पं. भावरंग जी) को अपने पिताजी के बारे में संस्मरण सुनाया करते थे जिसे पूज्य गुरुजी मुझे भी बताया करते थे और अभी भी सुनाते हैं। खाप्रुमामा एक साथ पाँच तालों की सम एक साथ दिखाते थे, अर्थात् एक हाथ से एक ताल, दूसरे हाथ से दूसरा ताल, बाँए पैर से तीसरा ताल, दायें पैर से चौथा ताल और मुँह से पाँचवें ताल बोल बोलकर पाँचों तालों को प्रदर्शित करते थे। कैसी अचम्भित करनेवाली बात है। मुझे एक कहावत याद आ रही है —''बड़े भैया तो बड़े बड़े भैया छोटे भैया सुभान्ल्ला'' (बड़े भैया से तात्पर्य खाप्रुमामा तथा छोटे भैया से तात्पर्य उनके सुपुत्र रामकृष्ण पर्वतकर जी से है) लेकिन यह सब असंभव भी नहीं क्योंकि न केवल मैंने बल्कि अनेक लोगों ने मेरे पूज्य गुरुजी को क्लिष्ट लयकारी करते देखा है–सुना है। 16मात्रा के त्रिताल में रूपक, झपताल, एकताल, आड़ा चौताल की बंदिशें मंच पर तिहाई सहित गाकर सुनायी हैं, जिसे अनेक लोगों ने सुना है।

कहने का आशय यह है कि संगीत में स्वर, राग एवम् लय-ताल में हर तरह का सृजना करना संभव है जिसे हमारे पूर्वजों ने कर दिखाया है तथा वर्तमान में भी कुछ विद्वान आश्चर्यजनक रूप से असंभव को संभव कर देने में सक्षम हैं। यही तो हमारी भारतीय परंपरा है जिसने हमें संगीत जगत् में श्रेष्ठ एवम् अनूठा बनाया है।

अत्यन्त दुखद तो यह है कि हमारे संगीत जगत् के कुछ ऐसे कलाकार रहे हैं जो अपने आप में अनूठे विद्वान कलाकार थे जिन्होंने अपनी विद्वत्तापूर्ण कला से विश्व को चमत्कृत करते हुए अचानक अल्पआयु में ही इस संसार से बिदा हुए। जैसे पं. डी. वी. पलुस्कर, पं. अनोखेलाल मिश्र एवम् पं. गोपाल मिश्रा जिनके अचानक अल्पायु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



में चले जाने से सभी संगीत प्रेमी अत्यधिक दुःखी है। इन कलाकारों में महान् विद्वान एवम् अनूठे कलाकार स्व. पं. रामकृष्ण पर्वतकरजी का भी नाम जुड़ा हुआ है जिन्हें ईश्वर ने अचानक रूप से हमारे बीच से 14 फरवरी 1959 के दिन अपने पास बुला लिया।

इस अचानक दुःखद घटना से पर्वतकरजी का पूरा परिवार संकट में पड़ गया था। सभी पाँच बहनें एवम् एकमात्र भाई। सभी आयु में बहुत छोटे थे। लेकिन जैसे महाकवि सूरदास ने अपने भजन में कहा है—"निर्बल के बल राम"। अतः ईश्वर की कृपा और परिवार के सभी बच्चों का धैर्य एवम् साहस के साथ परिश्रम के फलस्वरूप आज सभी सदस्य अपने पैरों पर खड़े हो सके और प्रिय बहन डॉ. वनमाला पर्वतकर ने संगीत की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए गायन के क्षेत्र में अपनी प्रतिष्ठा बनाने में सफलता प्राप्त की है।

स्व. पं. रामकृष्ण पर्वतकरजी के निधन के बाद उनके घनिष्ट मित्र पं. बलवन्तराय भट्ट "भावरंग" जी ने श्रद्धांजलि के रूप में एक अद्भूत सांगीतिक रचना निर्मित की जिसे यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ।

**राग गुर्जरी तोड़ी**, ताल-आड़ा चौताल

स्थायी – देत ताल काल के हाथ, अगम लय में लीन भयो,
रामकृष्ण पर्वतकर, पुनीत रह्यो नित जल सों।

अंतरा – खेलत खेल आड़-कुआड़ सो अटक्यों नहीं,
अहो-निश गरजत गैब से "गदिगन धा",
गयो सतप्रेमी "भावरंग" को।

पूज्य गुरुजी ने अपनी इस बंदिश में राग गुर्जरी तोड़ी के स्वरों द्वारा अपने करुणामय सत्भाव से पं. पर्वतकर जी के भावुक सरल व्यक्तित्व को व्यक्त करते हुए आड़ा चौलाल के द्वारा आड़ कुआड़ लययुक्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


व्यक्तित्व को निखारते हुए पर्वत जैसी ऊँचाई और सागर जैसी गहराई को "गागर में सागर" प्रसिद्ध उक्ति को चरितार्थ कर दिया है, इसके बाद पर्वतकरजी के संबंध में कुछ भी कहना शेष नहीं रह जाता है। अतः केवल मौन रहकर मनन करना ही श्रेयस्कर है।

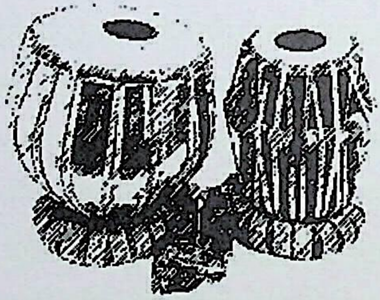

---

लेखक प्रोफेसर चित्तरंजन ज्योतिषी –काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मंचकला संकाय के भूतपूर्व संकाय प्रमुख, पूर्व कुलपति संगीत कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर मध्यप्रदेश एवं सदस्य कार्यकारिणी परिषद्, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# स्मरणांजलि

## ताल शास्त्र के प्रकांड पंडित रामकृष्ण पर्वतकर जी

– प्रोफेसर पुष्पा बसु

भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षितिज पर अनेकानेक ऐसे सितारे जगमगाते रहे हैं, जिन्हें बहुत कम लोगों ने जाना, उन्हें किसी प्रकार की ख्याति नहीं मिली। वैसे भी आज से साठ-सत्तर वर्ष पूर्व ख्याति प्राप्त करने की अपेक्षा स्वान्तः सुखाय में अधिक विश्वास करते थे। मैं एक ऐसे ही गुणी एवं विद्वान् तबलावादक के सम्बन्ध में चंद शब्दों के माध्यम से अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहती हूँ, जिनकी स्मृतियाँ आज भी मेरे दिमाग में संग्रहीत हैं। उनका नाम था, गोवा निवासी तबले के मूर्धन्य विद्वान् पं. रामकृष्ण पर्वतकर। 1957 की जुलाई में प्रयाग महिला विद्यापीठ से बी. ए. की परीक्षा पास करके काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित संगीत महाविद्यालय (तत्कालीन नाम श्री कला संगीत भारती) में प्रवेश लेकर मुझे एम. ए. करने व आगे सितार सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बी. ए. में सितार मेरा प्रिय विषय था। प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या हिन्दी की विख्यात कवियित्री श्रीमती महादेवी वर्मा थीं। मैं अत्यन्त गर्व के साथ विद्यापीठ का नाम लेती थी। विद्यापीठ में सितार के शिक्षक श्री राजभान सिंह जी मेरे सितार के प्रथम गुरु थे। सन् 1956 में उनकी नियुक्ति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संगीत महाविद्यालय में हो गई। अतः उन्होंने मुझे यहाँ आने का सुझाव दिया। 1957 की जुलाई में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कला संकाय से एम. ए. (राजनीति शास्त्र) तथा सायंकाल श्री कला संगीत भारती से बी. म्यूज प्रथम वर्ष (सितार) में प्रवेश लेकर दोनों पाठ्यक्रम की पढ़ाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



प्रारम्भ कर दी। छात्रावास में रहने का प्रबन्ध भी हो गया। उस समय संगीत महाविद्यालय का सांगीतिक वातावरण शान्त, शालीन व सौहार्दपूर्ण था। गायन के विद्यार्थियों के अतिरिक्त वादन के विद्यार्थियों के लिए गायन व तबले की प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य होती थी। विद्यालय का समय तीन बजे से सायंकाल आठ बजे तक था, और कक्षायें रूइया छात्रावास के ऊपर के कमरों में होती थी। गायन, सितार, वायलिन, बाँसुरी व तबला सिखाया जाता था।

मैं प्रतिदिन सितार की कक्षा समाप्त होने के पश्चात् गायन व तबले की कक्षा में जाती थी। तबले के शिक्षक पंडित रामकृष्ण पर्वतकर जी थे। मैं नियमित रूप से उनकी कक्षा में जाकर तबला सीखती थी। वे प्रारम्भिक विद्यार्थियों को अत्यन्त स्नेहपूर्वक सिखाते थे। तबले पर हाथ रखकर बोलों को सही ढंग से निकालने की विधि उनके शिक्षण की विशेषता थी। वे एक सुरीले गायक भी थे। सितार की कक्षा करने के बाद जब मैं उनकी कक्षा में आती थी, तो अक्सर पूछते थे कि कौन सा राग सीख रही हो? जब मैं राग का नाम बताती तो वे गाने लगते थे।

पर्वतकर जी सीधे, सरल, विनम्र व मृदुभाषी व्यक्ति थे। उनमें किसी प्रकार की दिखावा नहीं था। इसी प्रकार समय निर्बाध रूप से व्यतीत हो रहा था। 1958 के मार्च में एक दिन संगीत महाविद्यालय जाने पर ज्ञात हुआ कि आज तबले की कक्षायें नहीं होंगी, पर्वतकर जी अस्वस्थ हैं। कई दिनों तक वे नहीं आये, और मालूम हुआ कि उनकी तबीयत ज्यादा खराब है, इसलिये अस्पताल में भर्ती हैं। एक दिन हम सब लड़कियाँ उन्हें देखने अस्पताल गये। वहाँ उन्हें केवल लेटे हुए देखा बात नहीं हुई। उसके दो दिन बाद ही पता चला कि उनका निधन हो गया। मैं अत्यन्त मर्माहत हुई। लेकिन विधि के विधान को मिटाना असम्भव है। यहाँ आकर मनुष्य विवश हो जाता है। आज उन्हें गये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



प्रायः सत्तावन वर्ष हो गये हैं, किन्तु उस समय की स्मृतियाँ मस्तिष्क में संग्रहीत हैं। उनके हाथ से लिखे हुए कुछ तालों के ठेके मेरे पास आज भी सुरक्षित हैं। मुझे आठ महीने उनके सानिध्य में रहने का सौभाग्य मिला था। वे उतने दिन चिरस्मरणीय रहेंगे। जीवन में घटित कुछ घटनायें धुँधली पड़ जाती हैं, किन्तु भूलती नहीं हैं। जीवन एक नदी के समान हैं, सुख दुःख दो किनारे हैं, जिसमें लहरों का आरोह-अवरोह निरन्तर प्रवाहित होता रहता है।

आज के युग में इस प्रकार के सीधे-सरल निःस्वार्थ सेवी शिक्षक मिलना कठिन है। पर्वतकर जी सशरीर हमारे मध्य नहीं हैं, लेकिन उनका व्यक्तित्व वंदनीय है। ऐसे गुणी तबलावादक को शतःशतःप्रणाम।

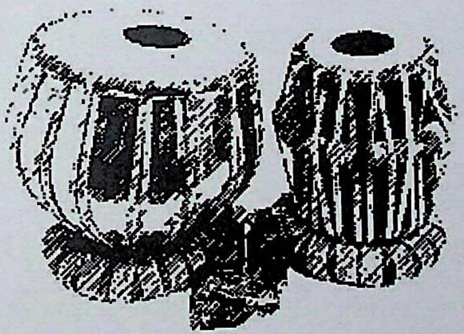

प्रोफेसर पुष्पा बसु सेवानिवृत्त-संगीत संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# आदरणीय गुरुजी
# स्व. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर

– श्री नरेन्द्रनाथ शर्मा

प्रातः स्मरणीय संगीत विद्वान आदरणीय रामकृष्ण पर्वतकरजी की चरण रज मस्तिष्क पर लगाकर मैं अपने को धन्य मानता हूँ। अब तो बस उनकी स्मृतियाँ ही शेष हैं और जो मुझे लिखने के लिये प्रेरित कर रही हैं।

मेरा उनसे प्रथम साक्षात्कार ट्रेन में हुआ था। उस समय पूज्यनीय गुरुजी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संगीत कला भारती संस्थान में तबला प्राध्यापक के पद पर कार्यरत थे। मैं संगीत सीखने की ललक पर सवार होकर बनारस जा रहा था।

नरिया गांव के दीवार से सटा उनका क्वार्टर था। मुझे जब भी अवसर मिलता, बिना संकोच उनके पास आ जाता। कितना सरल व्यक्तित्व था उनका। अपनी प्रशंसा सुनना उन्हें कदापि अच्छा नहीं लगता था।

जून मास की दोपहर मैं उनके घर गया। पूरा घर अग्निकुंड के समान तप रहा था। अंदर झांका तो पूज्यनीय गुरुजी तबला लेकर साधना में तल्लीन थे। मुझे पास बिठाकर लय देने का आदेश हुआ और स्वयं बंदिश साधने में जुट गये। थोड़ी देर में पूरा कमरा धुएँ से भर गया। साहस बटोरकर मैं बोला गुरुजी कुछ जलने की दुर्गंध आ रही है। रुष्ट होकर बोले तुम्हारा ध्यान एकाग्र क्यों नहीं रहता। साधक की साधना तो पूरी हो गई, परंतु अंगीठी पर पकने रखी खिचड़ी जलकर लगभग राख हो गई। परंतु मुख मंडल चमक उठा। मान अपमान से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कोसों दूर थे वो। चार-पांच चम्मच खिचड़ी बटोरकर मुझे भी खाने के लिये दी। ये था उनका गंगा समान निर्मल स्वभाव।

एक शाम मुझे कहने लगे कि मुझे साइकिल पर बैठाकर विश्वविद्यालय गेट पर ले चलो। उनका आदेश मैं कैसे टाल सकता था। अचानक साइकिल का संतुलन बिगड़ गया। गुरु और चेला दोनों चारो खाने चित्त। अपनी जेब से मुट्ठीभर मूंगफली के दाने निकालकर मुझे देने लगे और घबड़ा कर बोले कहीं चोट तो नहीं लगी। इतने भोले थे गुरुजी।

अगर मैं भूला नहीं हूँ, तो अमेरिका से संगीत से सम्बद्ध शिष्टमंडल विश्वविद्यालय में आया हुआ था। कुछ समय निकालकर उनके डायरेक्टर संगीत कला भारती पधारे। बड़े गुरुजी पंडित ओंकारनाथ ठाकुर जी से लयकारी जानने की जिज्ञासा प्रकट की। उन्होंने इस लयसम्राट को आदेश दिया। डायरेक्टर साहब अभिभूत हो गये। कहने लगे कि ये सब कैसे संभव हुआ। फिर बोले आपके सफेद बाल आपकी विद्वत्ता का आभास करवा रहे हैं।

बनारस तबला पखावज घराने के सरताज माने जाने वाले पंडित अनोखेलाल जी और पं. किशन महाराज जी आपसे लय संबंधी चर्चा करते थे। पूज्यनीय गुरुजी एक अच्छे चित्रकार भी थे। आज भी भारतरत्न लता मंगेशकर और गुरु माँ के पेन्सिल के चित्र उनकी सुपुत्री वनमाला के पास है।

उनका जीवन बहुत सरल था। धोती कमीज में ही मैंने उनको सदा देखा है। शीतलहरी में भी वे सूती कोट ही पहना करते थे।

वे विद्वानों का बहुत सम्मान करते थे। प्रातःस्मरणीय पंडित बलंवतराय भट्टजी के बहुत प्रशंसक थे। उन्होंने अपनी अंतिम सांस काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में ही ली और ब्रह्मलीन हो गये। विश्वविद्यालय में गणेश चतुर्दशी का आयोजन था उन्होंने मुझे अपने साथ भजन गाने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



के लिए कहा। मैं मौन हो गया। हँसकर मेरी तरफ देखा और स्वयं भजन गाने में मगन हो गये।

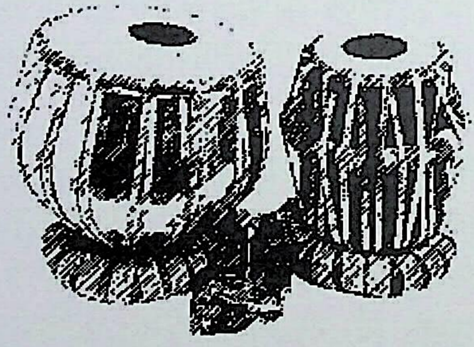

श्री नरेन्द्र नाथ शर्मा पिताजी के शिष्य थे, अभी 2.12.2015 को उनका देहांत हुआ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# संस्मरण

## पं. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर जी के विषय में

**– पं. ईश्वरलाल मिश्रा**

मैं स्वर्गीय पं. रामकृष्ण पर्वतकर जी को सन् 1957 से जानता हूँ। उस समय पंडित जी संगीत एवं मंचकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में तबला शिक्षक के रूप में कार्यरत थे। उस समय विद्यालय के प्रिंसिपल के पद पर संगीत मार्तण्ड पद्मश्री स्वर्गीय पंडित ओमकारनाथ जी पदासीन थे। श्रीमान् पर्वतकर जी एक कुशल तबलावादक एवं शास्त्रीय संगीत गायन के भी विद्वान् थे। इसके अलावा वे चित्रकार भी थे। इनके वादन शैली में लय एवं छन्द की विविधता विशेष रूप से थी। किसी भी बंदिश के ठाह, आड़, कुआड़, दुगुन, तिगुन, चौगुन, पंचगुन, सात गुन, आठ गुन के लय में बजाना इनकी विशेष कला थी।

इनके पिताजी खाप्रुमामा की विशेषता थी दाहिने हाथ से एकताल, दूसरे हाथ से तीनताल, एक पैर से कोई दूसरा ताल, दूसरे पैर कोई अन्य ताल और मुख से कोई और ताल, सब एक साथ समाप्त होते थे। यह एक विचित्र साधक थे। यह कार्य अन्य किसी के लिये करना नामुमकिन था। इनके प्रशंसक उस समय के सभी कलाकार जिसमें मेरे गुरुजी स्वर्गीय पं. अनोखेलाल जी, स्वर्गीय पं. किशन महाराज, भारतरत्न स्वर्गीय पं. रविशंकर जी विशेष थे।

सन् 1957 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित शिवाजी हाल में स्वर्गीय पं. ओमकारनाथ जी के हीरक जयन्ती में श्रीमान् रामकृष्ण पर्वतकर जी का गायन सुनने को मिला जिसमें ध्रुपद शैली का गायन प्रस्तुत कर रहे थे। संगत में पखावज पर स्वर्गीय बाबूलाल जी एवं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


स्वर्गीय श्री भगवानदास पण्ड्या थे।

मैंने इस विशिष्ट कलाकार के गायन एवं वादन में विलक्षणता देखी। उस समय उम्र कम थी लेकिन मैं आश्चर्यचकित था। मेरी याद्दास्त में वह कार्यक्रम अभी भी है।

एक बार पं. किशन महाराज जी के घर पर सरस्वती पूजा के अवसर पर संगीत के कार्यक्रम थे। उसमें अनेक कलाकार उपस्थित थे। उस अवसर पर श्रीमान् पर्वतकर जी भी वहाँ आये थे। उस समय मैं सबसे छोटा था और बाल कलाकार के रूप में तबला वादन रक्खा था। मैंने वहाँ तबला बजाया तो श्रीमान् पर्वतकरजी इतने प्रसन्न हुये कि जेब में रक्खा मात्र 4 रुपया था उसे मुझे इनाम के रूप में दिया। यह उनकी उदारता और कलाप्रेमी रूप का उदाहरण था। मैं इनाम पाकर बहुत प्रसन्न हुआ था।

1951 से फरवरी 1959 तक इन्होंने विश्वविद्यालय में तबला शिक्षक के रूप में कार्य किया। मेरे गुरुजी पं. अनोखेलाल जी के मृत्युपरांत 1वर्ष बाद इनका भी देहावसान हुआ। इनके जैसे कलाकार का स्थान रिक्त हो गया वो हमेशा रिक्त रहेगा।

मैं स्वयं ऐसे साधक कलाकार को शतः शतः नमन करता हूँ। दुःख की बात है कि आज के लोग ऐसे लोगों के बारे में न जानते हैं और न किसी ने बताने का प्रयास किया।

---

श्री ईश्वरलाल मिश्रा कुशल तबला वादक-सेवानिवृत्त मंचकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# मेरे श्रद्धेय गुरुजी

**– डॉ. अविनाश बा. जगताप**

मानस पटल पर अंकित एक अविस्मरणीय दिन का मध्याह्न समय था। श्री शिवाजी मराठा हायस्कूल के प्रांगण में चिपळूणकर छात्रावास की इमारत के पास लगभग दो-तीन मंजिल जितने ऊँचे विशाल काय वृक्ष थे। इनके नीचे चबूतरे बने थे। इन्हीं शानदार वृक्षों की शीतल छाया में हमारा विद्यार्थी जीवन व्यतीत हुआ इन्हीं वृक्षों की छाया में वंडेकर पुस्तकालय के सामने विद्यालय के सामुहिक कार्यक्रम हुआ करते थे। अब तो वे वृक्ष अतीत की गोद में समा गये हैं। लेकिन हमारे विद्यार्थी जीवन का वह एक दिन मेरे स्मृति-पटल पर आज भी स्पष्टतः आ जाता है। वह शिव-जयन्ती का दिन था। हम सभी छात्र भव्य वृक्षों की छाया में पंक्तिबद्ध खड़े थे। आगे मेज पर धवल मेजपोश बिछा था और उसपर छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा रखी थी। पास में ही शुभ्र आसन पर एक हारमोनियम रखा था। विद्यालय के प्रधानाचार्य (मेरे पिताजी) के द्वारा प्रतिमा को पुष्पहार अर्पित करने के साथ सभा का आरम्भ अबतक के अपरिचित श्री रामकृष्ण लक्ष्मण पर्वतकर जी की सरस्वती वन्दना एवं स्वागत गान से हुआ मेरे पिताजी श्री बाबूराव जगताप जिन्हें सभी लोग "साहेब" के नाम से जानते थे उस समय विद्यालय के प्रधानाध्यापक थे। उन्होंने सभी विद्यार्थियों से उनका परिचय कराते हुए कहा, "आप हैं हमारे विद्यालय के नये गायन शिक्षक राजमान्य राजेश्री श्री रामकृष्ण लक्ष्मण पर्वतकर जी"। उनका वह सस्वर गान अभी भी मेरे कानों में अनुगुञ्जित है।

श्री पर्वतकरजी विद्यालय के शिक्षक होने के नाते प्रायः हमारे घर आया करते थे। उनका डीलडौल खास प्रभावशाली नहीं था। वामनमूर्मि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कहना ही यथेष्ट होगा। श्यामवर्ण परंतु कान्तिमय चेहरा सरल नासिका और स्वभाव शांत था। श्वेतवर्ण धोती-कुरता, नीलवर्ण कोट और सिरपर टोपी यह उनका दैनन्दिन पोशाक था। उनकी मधुरवाणी बरबस ही सबको आकर्षित करती थी। समधुर गायकी व तबलावादन में अपूर्व कौशल के धनी श्री पर्वतकर सर अपने मृदुल स्वभाव एवम् मिलनसार व्यक्तित्व के कारण ही सभी के साथ मैत्रीपूर्ण सहकार्य सम्पादित कर सकने में समर्थ थे।

वह एक कुशल गायक तो थे ही एक उत्कृष्ट तबलावादक भी थे। तबलावादन का प्रभावपूर्ण शिक्षण उन्हें अपने पिता स्वर्गीय लयभास्कर श्री खाप्रुजी पर्वतकर के स्नेहिल सान्निध्य में प्राप्त हुआ। श्री खाप्रुजी पर्वतकर की ख्याति केवल गोवा ही नहीं अपितु पूरे भारतवर्ष में थी। आज भी महाराष्ट्र के क्रमिक पुस्तकमाला में उनके जीवन-चरित्र से संबन्धित एक पाठ है।

यद्यपि पर्वतकर सर पाठशाला में गायन शिक्षक के पद पर कार्यरत थे। तथापि वे उच्चकोटि के बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। गायन और वादन के क्षेत्र में उनकी योग्यता अप्रतिम थी। ‘‘तबला केवल थाप और अँगुलियों से पीटने का संगीत वाद्य नहीं है बल्कि यह नादब्रह्म का उद्‌गम स्थान है।’’ इसे यह बड़ी कुशलता पूर्वक अपने विद्यार्थियों को समझा देते थे। तबला एवम् डग्गेपर अँगूठा, दर्शिका, अनामिका व कनिष्का से अलग-अलग ध्वनि निकालकर हम सबको आश्चर्यचकित कर देते थे। गले से कुछ बोल बोलकर ठीक वही बोल तबले से निकालने का उनका दक्षपूर्ण कौशल किसी अद्‌भुत चमत्कार से कम नहीं जान पड़ता था। वैसा चमत्कार पूर्ण संगीत हमने न पहले कभी सुना था न ही उनके विद्यालय छोड़ जाने के बाद श्रवण करने का अवसर मिला। उस समय श्री कृ. भा. खांबेटे जी विद्यालय में सुविज्ञ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


शिक्षक थे। एक बार उन्होंने "सः" शब्द के रूप बताते समय प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष के, विभिन्न वचनों के रूप इस प्रकार सस्वर उच्चरित किया कि उसमें समाहित संगीतमय नाद सुनते ही मेरे मनमन्दिर में श्री. पर्वतकर गुरुजी की पुनीत प्रतिमा उभर आयी। क्षणभर को लगा कि मैं उन्हीं का तबला वादन श्रवण कर रहा हूँ। संगीत कला में मेरी रुचि श्री. पर्वतकर जी की प्रेरणा से ही जागृत हुई। अब तो श्री खांबेटे सर एवम् श्री. पर्वतकर सर जैसे गुरु का मिलना ही असंभव है। कालाय तस्मै नमः।

श्री पर्वतकर सर केवल तबला व हारमोनियम वादन में ही निपुण नहीं थे वरन् एक उत्कृष्ट गायक भी थे। उनकी अमृतवाणी से लोगों के बोझिल मन को सुखद शान्ति का आरम्भ उनके सरस्वती वन्दना एवम् स्वागतगीत से और समापन भी उन्हीं के गाये वन्देमातरम् से हुआ करता था। "वन्दे मातरम्" की उनके जैसी सरस प्रस्तुति मैंने कभी अन्यत्र सुनी नहीं। श्री. पर्वतकर सर के गायनकला एवम् तबलावादन की कुशलता से तो हम भली भाँति परिचित थे परन्तु आप एक उत्तम चित्रकार भी हैं यह मुझे काफी दिनों के बाद ज्ञात हो सका। मेरे जेष्ट भ्राता श्री. जयवंतराव जगताप जी "भगिनी" नामक मासिक पत्रिका (खासकर महिलाओं के लिए) का सम्पादन किया करने थे। उसी के एक दीपावली अंक में श्री. पर्वतकरजी द्वारा चित्रांकित लता मंगेशकर का एक चित्र आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित हुआ। सन् 1050-51 के दौरान लताजी के आद्य चित्रों में शायद वह पहला रेखाचित्र रहा होगा।

सन् 1951 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संगीत विभाग के प्रधानाचार्य महान् संगीतज्ञ पद्मश्री पण्डित ओंकारनाथ ठाकुर जी के आमंत्रण पर पर्वतकर सर विद्यालय से सेवामुक्ति लेकर बनारस चले गए और संगीत कॉलेज में तबला अध्यापक के रूप में पदारूढ़ हुए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



यह सोचकर कि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में श्री. पर्वतकर सर को योग्य कार्य सम्पादन का अवसर मिलेगा तथा उनके गुणों का विकास होगा और उनकी कला का उत्कर्ष होगा, मेरे पिताजी को प्रसन्नता हुई। परंतु मेरे भाईसाहब जो पर्वतकर गुरुजी के अच्छे मित्र थे, उनके पूना छोड़ जाने से काफी दुखी हुए। बनारस के कार्यकाल में ही एक बार आपको अफगानिस्तान में अपनी कला प्रदर्शन करने का अवसर मिला। आपकी गायनकुशलता एवम् तबलावादन की निपुणता की वहाँ के संगीत प्रेमियों ने काफी प्रशंसा की। पण्डित जी के गायन और पर्वतकर जी के तबला वादन की युगलबन्दी जब जब स्वर एवम् ताल चरमबिन्दु को स्पर्श करती, संगीत के अफगान रसिक स्वर्गीय आनन्द की अनुभूति में तालियाँ बजाकर "माशाल्ला, सुभानअल्ला" के आह्लादित स्वर से जलसा महल को गुञ्जायमान कर देते। स्वदेश वापसी के समय अफगानी संगीत प्रेमियों की ओर से काबुल के बादशाह ने श्री. पर्वतकर जी को एक सुन्दर गलीचा भेंट किया। सीमा पर सीमा शुल्क अदा न कर पाने के कारण कस्टम अधिकारियों द्वारा उन्हें गलीचा साथ नहीं लाने दिया गया, पर्वतकरजी अपनी प्रशंसा के प्रतीक को नजरभर देख लेने के अतिरिक्त कर भी क्या सकते थे। अफगानिस्तान की यात्रा के बाद जब वे पूना आये तो उन्होंने अपनी यात्रा के संस्मरण हमें सुनाये। पुरस्कृत गलीचा को भी बिनामूल्य (बिना सीमा शुल्क के) न देने वाली अपनी सरकार के प्रति मेरे मन में घृणा उत्पन्न हुई। परन्तु पर्वतकरजी के मुखमण्डल पर किसी प्रकार का रंज अथवा खेद परिलक्षित नहीं हो रहा था। इस संबन्ध में उन्होंने कभी कुछ कहा भी नहीं। ऐसे विशाल मन के थे हमारे गुरुजी। कितना निश्चल हृदय था उनका।

पर्वतकर गुरुजी 1955 में अपने परिवार के साथ वाराणसी में स्थायी हुए और पण्डित ओंकारनाथ ठाकुर के स्नेहिल सान्निध्य में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



उनकी विद्या उत्तरोत्तर परिष्कृत होती रही। विश्वविद्यालय के शिक्षक एवम् शिक्षार्थीगण उनकी कला से प्रभावित थे। पर ईश्वर की लीला को कौन समझ पाया है? पर्वतकर परिवार पर अचानक विपत्ति के बादल घिर आए 14 फरवरी को 1959 को पर्वतकर गुरुजी का देहावसान हो गया। परिवार ने इस संकट के समय भी धैर्य और संयम से काम लेते हुए दुर्दम्य कष्टों का अदम्य साहस के साथ सामना किया।

दुर्देव यही है कि पर्वतकर गुरुजी का जीवनवृत्त, उनकी कलासाधना और तपश्चर्या के बाद अर्जित किया हुआ उनका ज्ञान आज लिखित उपलब्ध नहीं है। इससे पर्वतकर जी जैसे महान् कलाकार का दर्जा कम नहीं होगा। मैं स्वयं को भाग्यशाली मानता हूँ जो आप जैसे गुरु का सान्निध्य मुझे प्राप्त हुआ। आपकी ज्ञानज्योति मेरे जीवन पथ को सदा ही आलोकित करते रहेगी। इस लेख के द्वारा मैं श्रद्धेय गुरुजी के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ। यही मेरी अल्प अल्प गुरु-दक्षिणा है।

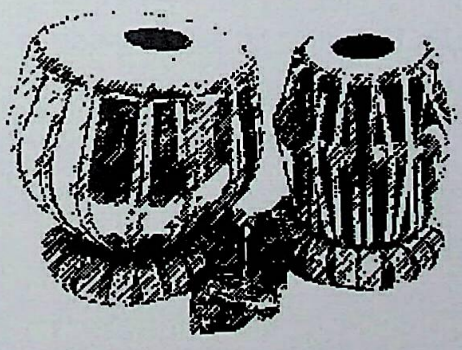

शिवाजी मराठा हाईस्कूल (पुणे) के प्रधानाचार्य स्व. श्री. बाबूराव ग. जगताप के सुपुत्र डॉ. अविनाश जगताप।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पूज्य गुरुजी रामकृष्ण पर्वतकर

**– डॉ. दामोदर होता**

मेरे परम पूज्य तबला और पखावज गुरुजी पंडित रामकृष्ण पर्वतकर, हर दिन मैं उनको नमन करता हूँ। उनके बारे में जितनी बातें की जाये बहुत कम हैं। मुझे उन्होंने शिष्य और पुत्रवत् स्नेह दिया है। इतने बड़े महान् कलाकार की मैं सेवा कर पाया हूँ, उनसे कुछ सीख पाया हूँ इसके लिये मैं अपने को धन्य मानता हूँ।

जब पर्वतकरजी यहाँ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संगीत कॉलेज में सीखाने आये थे उस समय मैं छोटा था। मैं उनसे तबला सीखने गया तो उन्होंने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया, दूसरे विद्यार्थियों को सीखा रहे थे। मैं वहाँ से उठकर मेरे गायन के गुरुजी पं. बलवंतराय भट्टजी के पास गया और उनसे कहा कि पर्वतकर गुरुजी मुझे नहीं सिखाते हैं मैं वहाँ नहीं जाऊँगा। तो मेरे गुरुजी ने मुझे समझाया कि वे वैसे नहीं हैं, किसी और काम में व्यस्त होंगे, तुम उन्हें समझे नहीं, वे बहुत सरल हैं। कल तुम फिर जाना उन्हें बताना मुझे आपसे तबला सीखना है, मुझे आपका कुछ प्रसाद चाहिये। मैं दूसरे दिन गया। पर्वतकर गुरुजी से बोला मुझे आपका प्रसाद चाहिये तो गुरुजी बोले क्यों तुम कल मेरी शिकायत कर रहे थे? तब मैंने कहा गुरुजी मैं छोटा बालक हूँ, मुझसे गलती हो गई, मुझे माफ कर दीजिये। वे मेरी विनम्रता से प्रभावित हो गये तब उन्होंने कहा कि कभी घर आओ। मैं उनके घर गया। मुझे प्रेम से बैठाकर तबले के कुछ बोल सिखाये। फिर पूछा तुम्हारा मुँह क्यों सूखा सा लग रहा है? कुछ खाकर आये कि नहीं? घर में माताजी से कहा उसे खाने को कुछ दो। माताजी ने गुरुजी को कहा घर में कुछ नहीं है और आप कहते हैं कुछ खिला दो, कैसे खिलाये? तभी मुझे पता चला कि गुरुजी कितने अभाव में हैं, फिर भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मुस्कराते विद्या दान दे रहे हैं। इसी से मेरा पेट भर गया उसके बाद जब उनके घर गया तब तबले के अनेक बोल सिखाये। उनसे तबले के साथ साथ अभाव में मुस्कराते जीना सीखा।

एक बार जाड़े के दिनों में गुरुजी के साथ कॉलेज से लंका जाते समय रास्ते में मूंगफली खाते खाते आ रहे थे। गुरुजी स्वयं भी खा रहे थे मुझे भी दे रहे थे। खाते खाते मूंगफली खतम हो गयी, मुझे कहा मूंगफली खतम हो गई। उनके पास पैसे नहीं थे। मैंने कहा मैं लाता हूँ तो वे बोले नहीं रहने दो। आज मैं सोच रहा हू गुरुजी मुझे खिलाते जा रहे थे और मैं खाते जा रहा था। कितना पुत्रवत् उनका प्रेम था। आज इस तरह का प्रेम गुरु-शिष्य देखने मिलता है क्या?

कक्षा में तिऽट कऽत्त गऽदि गऽन धा इस प्रकार बोलते हुये मेरे गायन के गुरुजी से हाथ मिलाते हुये मुस्कराकर प्रवेश करते थे। दोनों गुरुजी का मुस्कुराते हुये एक दूसरे के प्रति अभिवादन दर्शनीय और श्रवणीय होता था।

एक बार कॉलेज के प्रवक्ता कनकराय त्रिवेदी के घर गाने बजाने का आयोजन था मेरा गायन, राजभान सिंह (सितार प्रवक्ता) का सितार वादन और अंत में पर्वतकर गुरुजी का ध्रुपद-धमार का वादन था। मैंने केदार गाया था। राजभान सिंह ने श्यामकल्याण बजाया था। अंत में पर्वतकर गुरुजी गाने बैठे उनके साथ पखावज पर महंत अमरनाथ मिश्रजी थे। उस दिन पर्वतकरजी ने ऐसा ताल का काम दिखाया ऐसी-ऐसी लयकारियाँ की कि महंतजी उनके गाने की लयकारियों का जवाब पखावज से दे रहे थे। दोनों कलाकार सवाल जवाब में इतने लीन थे कि दोनों को होश नहीं था। कलागत प्रस्तुति में स्वयं लीन होकर पूरे श्रोतावर्ग को लय-लीन कर दिया था। कार्यक्रम समाप्त होने पर देखा तो पखावज खून से लथपथ था महंतजी की ऊंगलियां बजाते बजाते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



फट गईं थी लेकिन इसका आभास उन्हें बजाते समय नहीं हुआ। कार्यक्रम समाप्ति पर ही सबको पता लगा। महंतजी बोल उठे कि आज क्या पर्वतकरजी ने गाया है। सचमुच लयभास्कर के पुत्र थे इसका सबको आभास कराया इतना सुंदर उन्होंने गाया था। मैं उनके स्वरूप का चिंतन करता हूँ।

आज पता लगता है कि ऐसे ज्ञानी गुणी तबला वादक, अनेक रागों को जाननेवाले गायक पर्वतकरजी को जीवन में जितना सम्मान मिलना चाहिये था वो मिला नहीं। मुझे पर्वतकर गुरुजी ने एक तिहाई बताई थी —(धा त्रक धींधी धाधा धिंधि तधा धतिधा) जिसे सुनकर पं. रविशंकर जी अत्यंत प्रसन्न हुये थे ऐसे मेरे गुरुजी पं. बलवंतराय भट्टजी ने मुझे बताया था। उनके पास बहुत सुंदर सुंदर तबले के बोल थे। मुझे अफसोस है कि मेरी तबले के बोल की कॉपी मिल नहीं रही है।

मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ उनकी पुत्री वनमाला उनके जीवन पर पुस्तक लिख रही है। वनमाला का प्रयास बहुत सुन्दर है। उनकी पुस्तक का बहुत प्रचार प्रसार हो। उनके लिये मेरी शुभकामनायें। वह फलवती हो ऐसा मेरा आशीर्वाद है।

शिष्य

डॉ. दामोदर होता

---

डॉ. दामोदर होता उत्कल संगीत महाविद्यालय के विभागाध्यक्ष, और प्रिंसिपल पद पर कार्य किया। पारंपरिक उडिसी संगीत तथा उड्डूय संगीत पद्धति के विद्वान, पर्वतकर जी के प्रिय शिष्य हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# स्व. श्रीरामकृष्ण ल0 पर्वतकर की कुछ चमत्कारपूर्ण रचनाएँ

## श्री दामोदर होता एम0 म्यूज0 द्वारा संकलित

## ताल सवारी*

### चक्करदार परन –1

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तित् तित् | ते टे ते टे | ता गे ते टे | घि घि ते टे | ता गे ते टे | घि घि ते टे | धा तिर किट धे | किट कता |
| × | | 0 | | 5 | | 0 | |
| घि घि ना ना | घि धि त क | घा -- -- -- | ति--टि क | --त ग-- | दि ग | --- न | धा--ता-- |
| 9 | | 0 | | 13 | 13 $\frac{1}{2}$ | 14 | |
| धा--ति-- | टि क--त | ग--दि ग | --न घा-- | ता--धा-- | ति--टि क | --त ग-- | दि ग--न |
| × | | 0 | | 5 | | 0 | |
| धा--ता-- | धा - - - | --तित्- | तित्--ते टे | ते टे ता गे | ते टे | घि घि | ते टे ता गे |
| 9 | | 0 | | 11 | 13 $\frac{1}{2}$ | 14 | |
| ते टे घि धि | ते टे धा तिर | किट धे किट | क ता घि घि | ना ना घि घि | तक धा -- | -- --ति-- | टि क --त |
| × | 0 | | 5 | | 0 | | |
| ग -- दि ग | -- न धा-- | ता--धा-- | ति--टि क | - त ग - | दिग | -- न | धा - ता - |
| 9 | | 0 | | 13 | 13 $\frac{1}{2}$ | 14 | |
| धा--ति-- | टि क--त | ग--दि ग | --नधा-- | ता--धा-- | - - - - | तित् तित् | ते टे ते टे |
| × | | 0 | | 5 | | 0 | |
| ता गे ते टे | धि धि ते टे | ता गे ते टे | घि घि ते टे | धा तिर किट धे | किट | तक | धि धि ना ना |
| 9 | | 0 | | 13 | 13 $\frac{1}{2}$ | 14 | |
| धि धि तक | धा – – – | ति – टि क | –त ग– | दिग–न | धा–ता– | धा–ति– | टि क –त |
| × | | 0 | | 5 | | 0 | |
| ग––दि ग | ––न धा–– | ता––धा— | ति— ट क | —त ग— | दि ग | — न | धा—ता— |
| 9 | | 0 | | 13 | 13 $\frac{1}{2}$ | 14 | |

*सवारी ताल के आरंभ में अथवा अन्त में तीन मात्रा का ऐसा विभाग रहता है जिसके बीचोंबीच मात्रा पर ताली रहती है। श्री पर्वतकर जी यह विभाग आवर्तन के अन्त में रखते थे। तदनुसार मात्रा के बाद ही यानी 14 वीं मात्रा के उत्तरार्ध पर यहां ताली दिखाई गई है। —संपादक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

## चक्करदार परन –2

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धा-नधे किटकत | कतकधे किटधिन | धात्रकधे किटधिन | नाकधिन तूना- - | धी ना किटतक ता तिर किटतक | त—कड़ान्धिनाना | कतिटधा | त्रकधे-त्तागे-न |
| × | | 0 | 5 | | 0 | | |
| त्रकधे-त्तागे-न | ति-टि क-त | ग-दिन ग-न | धा-गे-धे | धे-धे-धे— | धा | तिटकत | धा-गे-धे |
| 9 | | 0 | | 13 | $13\frac{1}{2}$ | 14 | |
| धे-धे-धे | धा-तिटकत | धा-गे-धे— | धे-धे-धे | धा | -’- - - धा-नधे | किटकत कतकधे | किटधिन धात्रकधे |
| × | | 0 | | 5 | | 0 | |
| किटधिन नाकधिन | तूना--धी-ना-किट तक | ता-तिर किटतक त-क्ड़ान् | धिधिनाना क ति | टधा त्रकधे— | त्तागे-न | त्रकधे— | त्तागे—न, ति-टि |
| 9 | | 0 | | 13 | $13\frac{1}{2}$ | 14 | |
| क-त ग-दि | ग-न धा-गे | —धे- धे-धे | —धे-धा - - | तिटकत धा-गे | —धे-धे-धे | -धे- धा- - | तिटकत धा-गे |
| × | | 0 | 5 | | 0 | | |
| —धे-धे-धे | धे- धा— | — — | घा-नधेकिटकत | कतकधेकिटधिन | धात्रकधे | किटधिन | नाकधिनतूना— |
| ऽ | | 0 | | 13 | $13\frac{1}{2}$ | 14 | |
| धी–ना–किटतक ता–तिरकिटतक | त–क्ड़ान् घिधिनाना | क ति ट धा | त्रकधे–त्तागे–न | त्रकधे–त्तागे–न | ति–टि क–त | ग–दिग–न | धा–गे-धे- |
| × | | 0 | 5 | | 0 | | |
| घे-घे-धे- | धा– तिटकत | धा–गे–घे | घे–घे–धे – | धा– तिटकत | घा–गे | –घे- | घे–घे– घे– |
| 9 | | 0 | | 13 | $13\frac{1}{2}$ | 14 | |
| घा | | | | | | | |
| × | | | | | | | |

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



# आड़ा चौताल

## चक्करदार परन

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धा तिर किट ता<br>× | तिर किट धे कि | ट ता गि न<br>3 | धा तिर किट ता | तिर किट धे कि<br>0 | ट ता गि न | धा तिर किट तक<br>7 | ता--धिर धिर |
| कत्—ति ट | ता गे तिर किट | तक् ता कति<br>11 | ट धा धि धि | तिट कत गद्दि गन<br>0 | धा - -धि धि | | |
| तिट कत गदि गन<br>× | धा—धिधि | तिट कत गदि गन<br>3 | धा | ति ट ता गे<br>0 | तिर किट तक् ता | क ति ट ता<br>7 | धि धि तिट कत |
| गदि गन धा–<br>0 | धि धि तिट कत | गदि गन धा–<br>11 | धि धि तिट कत | गदि गन धा—<br>0 | -- --तिट | | |
| ता गे तिर किट<br>× | तक ता कति | ट ता धि धि<br>3 | तिट कत गदि गन | धा—धिधि<br>0 | तिट कत गदि गन | धा—धि धि<br>7 | तिट कत गदि गन |
| धा<br>0 | — — | धा तिर किट ता<br>11 | तिर किट धे कि | ट ता गिन<br>0 | धा तिर किट ता | | |
| तिर किट धे कि<br>× | ट ता गिन न | धा तिर किट तक<br>3 | ता--धिर धिर | कत्—ति ट<br>0 | ता गे तिर किट | तक् ता क ति<br>7 | ट धा धि धि |
| तिट कत गदि गन<br>0 | धा—धि धि | तिट कत गदि गन<br>11 | धा--धि धि | तिट कत गदि गन<br>0 | धा | | |
| ति ट ता गे<br>× | तिर किट तक ता | क ति ट ता<br>3 | धिधि तिट कत | गदि गन धा–<br>0 | धिधि तिट कत | गदि गन धा–<br>7 | धिधि तिट कत |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गदि गन धा | — — ति ट | ता गे तिर किट | तक् ता कति | ट ता घि घि | तिट कत गदि गन | | |
| 0 | | 11 | | 0 | | | |
| धा-घि घि | तिट कत गदि गन | धा—घिघि | तिट कत गदि गन | धा | — | धा तिर किट ता | तिर किट धे कि |
| × | | 3 | | 0 | | 7 | |
| ट ता गि न | धा तिर किट ता | तिर किट धे कि | ट ता गि न | धा तिर किट तक | ता--घिर घिर | | |
| 0 | | 11 | | 0 | | 7 | |
| कत्—तिट | ता गे तिर किट | तक ता कति | ट ता घि घि | तिट कत गदि गन | धा--घि घि | तिट कत गदि गन | धा--विधि |
| × | | 3 | | 0 | | 7 | |
| तिट कत गदि गन | धा | तिट ता गे | तिर किट तक् ता | क टि ट ता | घिघि तिट कत | | |
| 0 | | 11 | | 0 | | | |
| गदि गन धा- | घि घि तिट कत | गदि गन घा- | घिघि तिट कत | गदि गन धा- | — —तिट | ता गे तिर किट | तक् ता कति |
| × | | 3 | | 0 | | 7 | |
| ट ता घि घि | तिट कत गदि गन | धा-घि घि | तिट कत गदि गन | धा--घि घि | तिट कत गदि गन | | |
| 0 | | 11 | | 0 | | | |
| धा | | | | | | | |
| × | | | | | | | |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



# स्व. श्रीरामकृष्ण ल0 पर्वतकर की कुछ चमत्कारपूर्ण रचनाएँ

श्री दामोदर होता एम0 म्यूज0 द्वारा संकलित

## रुद्रताल मात्रा 22

## परन

| | | | |
|---|---|---|---|
| घिघि तिरकिट तकृता – कति | ट धा -- धिं--त धा -- | धागे धीं धा क्ड़ान् | धा -- कत् – धा --धा |
| × | | 0 | |
| तूना कत् धिं–तिर किटतक | ता--कता घिघि | तुं तक्धेत् | -- --कता धिं--तरा |
| 5 | | 7 | |
| --न् धा तू ना | कतिटधा | —धिं तिरकिट तकता– | धा, धिं तिरकिट तकता– |
| 9 | | 0 | |
| धा, धिं तिरकिट तकता– | धा — — क | तिटधा, धिं | तिरकिट तकता–धा धिं |
| 13 | | 15 | |
| तिरकिट तकता– धा धिं | तिरकिट तकता– धा– | — क ति ट | धा धिं तिरकिट तकता– |
| 17 | | 19 | |
| धा धिं तिरकिट तकता– | धा धिं तिंरकिट तकता– | धा | |
| 0 | | × | |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



# स्व. श्रीरामकृष्ण ल0 पर्वतकर की कुछ चमत्कारपूर्ण रचनाएँ

श्री दामोदर होता एम0 म्यूज0 द्वारा संकलित

## लक्ष्मी ताल मात्रा 21

### चक्करदार परन

| | | | |
|---|---|---|---|
| किट तक तिं तिं<br>× | ना ति ट ता | — धा तू ना | क ति ट ता |
| — ता तू ना | क ति ट ता | क्ड़ धे -- त्ता | --- न् धा ति |
| धा -- क्ड़ धा | तू ना कत् -- | -- धा तू ना | क ति ट धा |
| क ति ट धा | -- धिं -- त | धा | क ति ट धा |
| -- धिं -- त<br>धा | धा | क ति ट धा | -- धिं -- त |
| -- -- किट तक<br>× | तिं तिं ना ति | ट ता -- धा | तू ना क ति |
| ट ता -- ता | तू ना क ति | ट ता क्ड़ धे | -- त्ता -- न् |
| धातिधा -- | क्ड़ धा तू ना | कत् -- -- धा | -- तू ना क ति |
| ट धा क ति | ट धा -- धिं | -- त धा -- | -- -- क ति |
| टधा -- धिं | -- त धा -- | -- -- कति | ट धा -- धिं |
| — त धा —<br>--<br>× | किट तक तिं तिं | ना तिट ता | -- धा तू ना |
| क ति ट ता | -- ता तू ना | क ति ट धा | क्ड़ धे -- त्ता |
| --न् धति | धा --क्ड़ धा | तू ना कत् -- | -- धा तू ना |
| क ति ट धा | क ति ट धा | -- धिं -- त | धा |
| कतिट धा | -- धिं -- त | धा | क ति ट धा |
| -- धिं --त<br>धा<br>× | | | |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# प्रसंग पुण्य स्मृति

## स्व. पं. रामकृष्ण पर्वतकर

### (महान तबला कलाकार)

– प्रो. सुशीला पंत

महाराष्ट्र की पुण्यसलिला धरती पर अनेक महान् संगीतज्ञ, गायक, वादक, नर्तक तथा लोक कलाकार, भावगीत अभंग विधाओं से सम्पन्न पैदा हुए। उन्हीं में से एक अद्भुत् गुणी तथा सहृदय व्यक्तित्व उभरा जिसने न तो कभी प्रचार प्रसार अथवा विज्ञापन का सहारा लिया न पुरस्कारों व सम्मान समारोहों की अपेक्षा की चुपचाप भीड़ से अलग हटकर अपने हुनर को सँवारता रहा। स्व. रामकृष्ण पर्वतकर जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में (तबला वादक) प्राध्यापक के पद पर वर्ष 14 फरवरी 1959 तक नियुक्त रहे। वर्षों तक अपने कुशल प्रशिक्षण मार्गदर्शन द्वारा कई प्रतिभाओं को शिखर तक पहुँचाया। आपके शिष्यों में स्व. हरिशंकर झा, डॉ. दामोदर होता, डॉ. एम. एन. पुरंदरे, स्व. नरेन्द्र नाथ शर्मा, स्व. सूरज शर्मा, लक्ष्मपति शुक्ल, सीतापति शुक्ल, प्रो. चित्तरंजन ज्योतिषि, प्रो. आर. पी. शास्त्री आदि।

स्व. रामकृष्ण जी पर्वतकर का जन्म गोवा के एक सभ्रान्त परिवार में हुआ था। पिता स्व. खाप्रूमाम लक्ष्मणराव पर्वतकर तथा माताश्री के अन्य पुत्रों में आप पहले क्रम पर थे। प्रारम्भ में परिवार के उत्तरदायित्व के साथ बच्चों के भरण पोषण का अकेले ही भार उठाया। संघर्ष ही जीवन है को अपनी नियति के रूप में अकेले चलकर जीवन निर्वाह का मार्ग प्रशस्त किया। आपके परिवार में एक सुयोग्य पत्नी के साथ पाँच पुत्रियाँ एवं एक पुत्र भी है। सभी संताने सुयोग्य, शिक्षित तथा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



संस्कारजन्य गुणों से पूर्ण हैं। यहाँ विशेष रूप से उनकी सुपुत्री प्रो. वनमाला पर्वतकर का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा जिन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से न केवल डी म्यूज की उपाधि ग्रहण की, संगीत समारोहों में देश विदेशों तक ख्याति अर्जित की। सुश्री वनमाला पर्वतकर को उत्तर प्रदेश संगीत कला अकादमी लखनऊ तथा अन्य संस्थाओं से उनकी कुशल गायकी तथा शोध कार्यों के लिए अभिनन्दन पत्र प्रदान किये गये। आपके अनेक छात्र भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कला का प्रसार कर रहे हैं। डॉ. वनमाला के शोध आलेख, संगीत के ग्रंथों तथा संगोष्ठियों में प्रस्तुत सार वक्तव्य प्रशंसनीय हैं। मैं व्यक्तिगत रूप में उनके प्रति आभारी हूँ जिन्होंने अपने पिताश्री (स्व.) रामकृष्ण जी पर्वतकर के अप्रकाशित महत्त्वपूर्ण आलेखों, सम्मतियों को प्रकाशित करने का निश्चय किया है एतदर्थ साधुवाद। (स्व.) पर्वतकर जी ने तबला प्रशिक्षण अपने कुशल निष्णात गुरु (स्व.) पिताश्री लक्ष्मणराव पर्वतकर के मार्गदर्शन में लिया। आप की प्रतिभा के पारखी आपकों अनेक प्रलोभन दे कर प्रभावित करते रहते थे कि वह उनको अपनी सेवाएं प्रदान करें किन्तु रामकृष्ण जी ने गुरु के प्रति समर्पण की उक्ति को साकार कर 'प्राण जायँ पर वचन न जाहीं' को चरितार्थ किया। न किसी रियासती महफिल, न किसी दरबारी जलसे में आपने केवल वाहवाही के लिये प्रदर्शन किया वरन् 'स्वान्तः सुखाय' भाव से जीवन के अंतिम पड़ाव तक लय, ताल एवं बोल बनाव की पगडंडियों पर मौन मुखर कलाकार की तरह तबले को अँगुलियों से सहलाते रहे, मानों एक पिता अपने बच्चे को ताल-गति की सीमा रहने का संकेत समय पर सम के आगे का संकेत दे रहा हो। अनूठा कलावन्त! अद्भुत था हुनरमंद!

पूज्य (स्व.) रामकृष्ण पर्वतकर तबला सम्राट 'तबलाधिराज' वाद्यश्री, वाद्यविभूषण अथवा 'विलक्षण वाद्याचार्य' आदि उपाधियों के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मोहताज कभी न रहे, तथापि उनकी पुण्यस्मृति स्वरूप उनकी अनुवांशिकता का परिचय किसी न किसी रूप में उनकी सुयोग्य सन्तानें देकर अपनी यशस्वी पिता के तपोबल का प्रमाण दे रही हैं।

स्वनामधन्य पर्वतकर जी को तबला सम्राट या तबला प्रवीण आदि अतिरिक्त उद्बोधनों की आवश्यकता न थी। तबला उनका व्यवसाय न होकर उनकी जिंदगी थी। उनका अहसास था, जिसे उन्होंने चलते फिरते जिया। वस्तुतः पूज्यवर का जीवन स्वयं एक छन्द था, लय और ताल जहाँ निर्द्वन्द थे, बोल बनाव, यात्राओं के बीच के रिक्त अंतराल कुल मिलाकर एक निर्झर के समान अविरल बहने वाली गति थी। तबले के इस अनूठे कलाकार की विशेषताओं में से कुछ तथ्य अनजाने से रह गए। आपके वादन की खास बारीकियों में तबले पर अत्यन्त मृदुथापें, ऊँगलियों का मधुर संतुलन, तथा सबसे बढ़कर बोलों का साफ तथा सही प्रयोग जिसे हम संवेदनशील वादक का कमाल कह सकते हैं। (स्व.) पर्वतकर जी का तबला वादन आहद् अनहद् नाद के बीच कभी कर्कशता या शोर वाला नहीं लगता था। स्वरों में तो कोमल, तीव्र प्रयोग द्वारा संवेदनशीलता लाई जा सकती है किन्तु तबले जैसे वाद्य में एक संवेदनशील प्रयोग जो मृदु हो कर्कश नहीं, मन को अस्थिर न कर, विश्रान्ति करें कल्पना से परे है।

मेरे मानस पटल पर हल्की सी स्मृति है जब हम विद्यार्थी थे और कोई विद्वान कलाकार म्यूजिक एण्ड फाइन आर्ट्स में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करते थे तो तत्कालीन प्राचार्य (स्व.) पं. ओंकारनाथ जी ठाकुर से संगत की चर्चा होती थी। गुरुजी, अपने स्वविवेक से एक ही बात कहते थे, देखों चाहे बड़े गुलाम अली खाँ साहेब हों, बी. जी. जोग हों, कुमार गंधर्व हों इनके साथ केवल एक ही वादक ऐसा है जो मन, वचन और कर्म से तबला बजाता है और वो है केवल 'रामकृष्ण'। उस समय हमलोग इतने परिपक्व न थे, यह सब आया और चला गया। किंतु अब लगता है क्या एक वादक इतना सामरस्य एक साथ ला सकता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


है? धन्य हैं उनके अभिभावक धन्य हैं उनके विद्यार्थी एवं प्रशंसक जिन्हें उनका सानिध्य प्राप्त हुआ।

(स्व.) रामकृष्ण जी का जीवन एक कर्मयोगी सा था, जो गृहस्थ होकर भी सादा जीवन उच्चविचार रखते थे। आचरण की सभ्यता, संस्कृति का सम्मान उन्हें विरासत में मिला था। किसी प्रकार के आडम्बरपूर्ण व्यवहार से दूर वह नैतिक मूल्यों के लिए ही जीते रहे। कभी सिद्धान्तों से समझौता न किया। (स्व.) रामकृष्ण जी पर्वतकर वस्तुतः तबले का एक **शब्दकोश** थे। लय, ताल-मान प्रमाण, की पारिभाषिक शब्दावली थे। जब मंच पर हाथ पर ताली देकर बोल बोलते तो लगता वैदिक ऋचाओं का उच्चारण हो रहा है, इतनी सुंदर उनकी वाचाशक्ति थी, एक मधुर छन्द सी। कालिदास की उक्ति यहाँ साकार होती है। 'न रूपं पाप वृत्तए' अर्थात् रूप ऐसा हो जिसमें पाप वृत्ति न हो। आपके वादन से भी इतनी शांति, सुकून और पावन भावनाएँ मिलती थीं मानों वरदान।

ऐसे महान, स्वनाम धन्य! गुरुश्रेष्ठ श्री (स्व.) पं. रामकृष्ण जी पर्वतकर जी को सादर प्रणाम करते हुए, उनके कीर्त्तिशेष व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धांजलि देते हुए अभिभूत हूँ, कृतकृत्य हूँ।

अंततोगत्वा उनकी स्मृतियों को कतिपय पंक्तियों में व्यक्त कर अपना सौभाग्य मानूंगी यदि सुधीजन हृदयंगम कर सकें।

(1)

नाद ब्रह्म के साधक रामकृष्ण पर्वतकर।
धन्य धन्य मात पिता कुल वंश पर्वतकर।।
वादन के कुशल सिद्ध तबले के जादूगर।
वादन तुमसे तुम थे वादन के बाजीगर।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



(2)

तुम्ही थे खुद मृदंग वाद्य अंग।
तुम्ही थे तबले के भावगीत और अभंग।
तबले की थापों में मानों थे जल तरंग।।
सुनते ही श्रोता का खिल उठता अंग अंग।
नाद ब्रह्म के साधक रामकृष्ण पर्वतकर।।

(3)

अनहद् आहद का संगत में किया मधुर मेल।
खाली, ताली, सम में समाँ बाँध महामेल।।
थिरकन ऊँगलिन की मानों यंत्र चलित तेज रेल।
नाद ब्रह्म के साधक रामकृष्ण पर्वतकर।।

(4)

तुम थे एक शक्तिमान साधक थे तुम महान।
ख्याति लब्ध सर्जक थे वादन के सामगान।।
साधक, समराधक, आराधक का मिला मान।
कला की विरासत में देवतुल्य तु समान।।
नादब्रह्म के साधक रामकृष्ण पर्वतकर।

सादर

समर्पित

डॉ. सुशीला पंत

---

प्रो. सुशीला पंत पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म. प्र.) अनेक संस्थानों की पूर्व मानद निदेशक भी रह चुकी हैं। पूर्व सदस्य कार्यकारिणी भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् () नई दिल्ली। बनारस हिन्दू युनिव्हर्सिटी, संगीत कॉलेज की भूतपूर्व छात्रा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# संगीताचार्य स्व. पं. रामकृष्ण पर्वतकर जी

**– प्रो. आर. पी. शास्त्री**

श्री कला संगीत भारती महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के अद्भुत संगीत साधक, श्री रामकृष्ण लक्ष्मण पर्वतकर जी संबंधित संस्मरण।

पर्वतकर जी अत्यंत सरल तथा मृदुस्वभाव के महान् संगीत-साधक थे। मैंने अपने छात्र जीवन में अनेक अवसरों पर यह अनुभव किया कि उनका जीवन संगीत के लिए समर्पित था। छात्र-छात्राओं को सदैव स्नेहिल उत्साह देते थे।

अपने महाविद्यालय में छात्रों द्वारा वार्षिक मंच-प्रदर्शन कार्यक्रम, रुइया छात्रावास के ऊपरी सभागार में आयोजित होता था। सभागार में प्रधानाचार्य संगीत मार्तण्ड पं. ओंकार नाथ ठाकुर, पं. बलवंत राय भट्ट, डॉ. प्रेमलता शर्मा, श्री पर्वतकर जी, श्री राजाभाउ सोनटक्के तथा समस्त शिक्षक तथा छात्र उपस्थित रहते थे। इस आयोजन में शिक्षकों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती थी।

पर्वतकर जी अत्यन्त भावुक तथा उदारमना शिक्षक तथा श्रोता थे, उनके एक 'शाबासी' से छात्र का भय भाग जाता था। मेरे कार्यक्रम में भी ऐसा ही हुआ। मंच पर बैठने में घबड़ाहट, भय लग रहा था परन्तु जैसे ही वायलिन पर स्वर लगाया तो सामने बैठे पर्वतकर जी ने कहा, "शाबास, बहुत अच्छे।" मैंने पूरियाधनाश्री की अवतारणा करते हुए बड़ा ख्याल, तथा छोटा ख्याल, की रचना प्रस्तुत की। कार्यक्रम में श्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



बाबूलाल जी सुन्दर संगत कर रहे थे। पर्वतकर जी तथा अन्य शिक्षकों के निरंतर प्रशंसा से, उत्साह तथा आत्मविश्वास पैदा हो गया। मुझे आज भी वह कार्यक्रम स्मरण है जबकि इसके हुए पचास वर्ष से अधिक हो चुका है।

मेरे वायलिन वादन से संतुष्ट होकर पं. ओंकारनाथ ठाकुर ने डॉ. सोनटक्के को बुलाकर, आशीर्वाद तथा बधाई दी और कहा कि यह छात्र होनहार है इसे खुलेमन से और सिखाओ, इसका भविष्य उज्ज्वल है।

पर्वतकर जी को अधिकांश छात्र-छात्राएं तथा शिक्षक प्रेमपूर्वक आग्रह करते थे कि गुरुजी मेरे कार्यक्रम में आप सामने बैठें। आपके स्नेह तथा आशीर्वाद से, मूड बन जाता है, और कार्यक्रम सम्पन्न हो जाता है। छात्रों को सुनकर पर्वतकर जी स्वयं स्वर-लय में मग्न हो जाते थे।

**पर्वतकर जी, सफल गायक के रूप में –**

पर्वतकर जी का मूल विषय तबला था, परन्तु गायन में भी अद्वितीय थे। उनके गायन का आनन्द 1958 में वाराणसी के अस्सी क्षेत्र के साधुबेला आश्रम में प्राप्त हुआ। उन्होंने राग वागेश्वरी में ध्रुपद अंग से गायन प्रारंभ करते हुए कहा कि कृपया लाइट बंद कर दें, लाइट बंद हो जाने से वातावरण और गंभीर तथा नादमय हो गया। आलाप और जोड़ के पश्चात् ध्रुपद की रचना आरंभ किया, मृदंग पर कुशल संगति दे रहे थे संकटमोचन मंदिर के महंत पं. अमरनाथ मिश्र जी। परस्पर स्वर तथा लय का संवाद बेजोड़ था। ध्रुपद के पश्चात् धमार की प्रस्तुति हुई गायन तथा मृदंग वादन का ऐसा संयोग कम अवसरों पर मिलता है। इस कार्यक्रम के समापन पर जब लाइट जला दी गई तो सबने देखा महंत जी की अँगुली फट गई है, मृदंग की दाहिनी पूड़ी खून

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


से भीगी है। सबलोग आश्चर्यचकित थे, महंत जी ने कहा पर्वतकर जी के गायन का सम्मोहन है, मुझे दिनों बाद संगीत में इतना अलौकिक आनन्द आया।

ध्रुपद धमार में, लयकारी, सृजनशीलता का अपूर्व संगम था। महंत जी ने कहा कि आनन्द के कारण मुझे वेदना का एहसास नहीं हुआ।

**सफल शिक्षक के रूप में पर्वतकर जी –**

आप अत्यन्त सफल शिक्षक के रूप में स्मरण किये जाते रहे हैं। जिज्ञासु विद्यार्थियों के शिक्षण के लिए सदैव तत्पर रहते थे, उस समय गायन, वादन, किसी भी विषय के विद्यार्थी तबला या लय संबंधी जानकारी के लिए उनके पास आकर ज्ञान प्राप्त करते थे। शिक्षा देते समय किसी ताल के विलक्षणता को वर्णन करना अत्यन्त रूचिकर होता था, वह कहते थे राग-रागिनियों का व्यक्तित्व होता है उसी भांति तालों का भी अपना रूप-रस व्यक्तित्व होता है। दादरा बजाते थे तो कहते थे कि यह मस्तहाथी-गजगामिनी की चलन है।

मुझे पंचम सवारी 15 मात्रा की ताल बताते कहते थे कि इसमें एक वीररस के नायक की कल्पना है जो अपने हांथ में तलवार लेकर विभिन्न मुद्राएं प्रदर्शित कर रहा है।

धीं तत धिन नक तिक्ड तूना तिरकिट तूना किडनग कत्ता
धी धी ना धि धी ना धी ना क धीं ना क।

विभिन्न लयकारियों के प्रकांड पंडित थे। तबला पर त्रिताल, मुंह से दूसरा ताल, तथा पांव से मंजीरा के सहारे तीसरा ताल, एक साथ प्रस्तुत करना विलक्षण प्रयास था। चमत्कारी साधना थी।

उस समय सामान्य रूप से तबला वादकों की सामाजिक पहचान बहुत सामान्य थी, परंतु श्रद्धेय पर्वतकर जी की विद्या, स्वभाव चरित्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



इतना आदर्श था कि उन्हें लोग महान शिक्षक, गुरु तथा कलाकार के रूप में सम्मान देते थे। स्व. हरिशंकर झा, दामोदर होता, स्व. लक्ष्मपति शुक्ला, स्व. सीतापति शुक्ला, डॉ. श्री एम. एन. पुरंदरे, स्व. सूरज शर्मा, स्व. नरेन्द्रनाथ शर्मा, लेखक स्वयं भी उनके शिष्य थे।

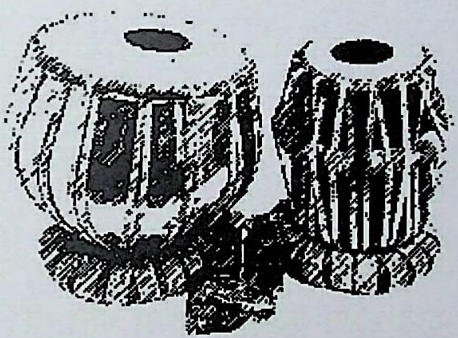

प्रो. आर. पी. शास्त्री, वायलिन वादक, भूतपूर्व संकायप्रमुख, संगीत एवं मंच कला संकाय, का. वि. वि. वाराणसी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# स्व. रामकृष्ण पर्वतकर

– श्री. काशीनाथ पर्वतकर

प्रिय बेबी,

सस्नेह शुभाशीर्वाद

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। तुम्हारे पूज्य पिताजी की स्मृतियों को तुम लोग पुस्तक रूप में प्रसिद्ध कर रहे हो यह पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। मैंने तुम्हारे पिताजी को मेरे बाल्यकाल से ही देखा है, जाना है, पहचाना है। उनके विवाह समारोह में भी मैं उपस्थित था। मैंने उनका बचपन भी देखा है और गृहस्थाश्रम में उनकी परेशानियों का भी मैं प्रत्यक्षदर्शी हूँ। सभी स्मृतियों को शब्दरूप में लिखना कठिन है परन्तु प्रयत्न कर रहा हूँ।

रामकृष्ण पर्वतकर का जन्म गोवा में चन्द्रनाथ पर्वतपर हुआ। बचपन से उन्हें पठन-पाठन एवम् संगीत में रुचि थी। आपके पूज्य पिताजी ''लयभास्कर खाप्रूजी पर्वतकर'' ही आपके गुरु थे। उनसे ही आपने संगीत की शिक्षा ग्रहण की। विद्यालयीन शिक्षण के साथ साथ कलाक्षेत्र में भी आपने पदार्पण किया और गायन, वादन नाट्य आदि विभिन्न कलाओं में आपने सुयश प्राप्त किया।

मुझे याद है, जब भी वे पूना से गोवा आते थे हमारे घर महफिल जमती थी। तरह तरह की नकल करके हम बच्चों को खूब हँसाते थे। सब्जी बेचनेवाला, बर्तन बेचने वाली बाई, भिखारिन सब की नकल करने की कला उनके पास थी।

एक गाना अभी भी याद है -

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



गोमु जाऊ ग चौपाठी बंदराला
राणीचा बाग तिथे मोठे मोठे वाघ
त्याना पाहून गोमू भिशील ग !
आता खंडाळयाचा धाट, तिथे झाड़ी झाली दाट
बोगद्यातून गाड़ी कशी जाईना।

आदि मराठी गीत गाकर, स्टेशनमास्टर की नकल करते थे। तबले पर रेलगाड़ी की धीमी गति, कभी तेज गति, कभी सीटी की आवाज सुनाकर हमलोगों को खूब हँसाते थे। उन दिनों घर घर में सारंगी के स्वर या तबले पर थाप सुनाई देती थी।

रामकृष्ण पर्वतकर जी को चित्रकला में विशेषतः पेन्सिल स्केच करने में बहुत रुचि थी। उन्होंने बालगन्धर्व, पलुस्कर जी, लता मंगेशकर आदि अनेक संगीतज्ञों के पेन्सिल स्केच किए हैं। अपने विद्यार्थियों के भी स्केच बनाते थे। उन्हें उचित प्रतिसाद या अवसर मिलता तो इस क्षेत्र में भी आप उत्कृष्ट चित्रकार के रूप में पहचाने जाते।

शिक्षण महर्षि बा. ग. जगताप द्वारा संचालित शिवाजी मराठा हाईस्कूल में आप संगीत शिक्षक पद पर कार्यरत हुए। उन दिनों एक शिक्षक का वेतन जीविकोपार्जन की दृष्टि से बहुत कम होने के कारण गृहस्थी का भार उठाना बहुत कठिन था। आर्थिक परिस्थिति अच्छी न होने के कारण वे अक्सर चिन्ताग्रस्त दिखाई देते थे। परन्तु किसी के सामने हाथ फैलाना और अपने दुःख का प्रदर्शन करना उन्हें पसन्द नहीं था। परन्तु भविष्यकाल के लिए वे हर समय चिन्तित रहते थे।

एक दिन मैं किसी कारणवश मुंबई से पुणे गया था। उस समय उन्होंने मुझे एक आनंददायक समाचार सुनाया। उन्होंने मुझसे कहा,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



"पंडित ओंकारनाथ ठाकुर एक बहुत बड़े संगीतज्ञ हैं। बनारस हिन्दू युनिव्हर्सिटी के संगीत विभाग में तबला प्राध्यापक के पद पर कार्य करने हेतु पंडितजी ने मुझे आमंत्रित किया है। वेतन भी अच्छा मिलेगा और रहने के लिए परिसार में ही स्थायी निवास मिलेगा।" उस समय मैं उम्र में उनसे छोटा ही था तब भी मैंने कहा, "देखिए, ये बड़े लोग सिर्फ आश्वासन देते हैं। आप सिर्फ मौखिक बातों पर विश्वास न करें। लिखित रूप से स्पष्टीकरण लीजिए आप अभी अकेले जाइए, बाद में परिवार को ले जाइए!" उनको मेरी सलाह शायद अच्छी नहीं लगी। उन्होंने निर्णय लिया और बनारस गए। 4-5 वर्षों के बाद बनारस में ही वे स्थायी हो गए। इसके बाद क्या हुआ, बेबी मुझसे अधिक तुम ही सब जानती हो।

हाँ, मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ कि तुम्हारे पिताश्री "एक शापित गन्धर्व" थे उन्हें यदि उचित अवसर मिलता तो उनकी कला और वृद्धिंगत हो जाती। "ईश्वरी इच्छा बलीयसी।" बनारस में उन्हें अच्छा अवसर प्रतिसाद मिला या वहाँ भी उनका अपेक्षाभंग हुआ यह तुम ही अच्छी तरह से बता सकती हो।

शुभाशीर्वाद सहित

तुम्हारा

काशीनाथ मामा

---

स्व. रामकृष्ण पर्वतकर के स्नेही।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# स्वर्गीय रामकृष्ण पर्वतकर

**– श्रीमती कुसुम चं. पर्वतकर**

"रामकृष्ण पर्वतकर" नाम का उच्चारण करते ही स्मृतिपटल पर आती है एक साँवले वर्ण की मुस्कुराती हुई मोहक मूर्ति!

मेरे पति के जेष्ट भ्राताश्री मेरे जेठजी थे वे। परन्तु मेरे लिए, एक बड़े भाई के समान थे। मुझे वे बेटी कहकर ही बुलाते थे। मेरा उनके साथ प्रत्यक्ष रूप से अधिक सम्बन्ध नहीं रहा। मैं मुंबई में रहती थी और आप पुणे में। बाद में आप बनारस गए और वहीं स्थायी रूप से रहने लगे। किसी कारणवश या विवाह समारोह निमित्त कभी कभी आया करते थे। कुछ समय के लिए हमारे घर भी आते थे। बच्चों के लिए खिलौने, मिठाई और कपड़े जरुर लाते थे। बच्चे खुश! वापिस जाते समय कहते "तुम्हें किसी तरह की परेशानी हो तो मुझे सूचित करना मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

एक बार मैंने अपने पतिदेव से पूछा "आपके भाऊराय क्या बहुत अमीर हैं? अक्सर कहते हैं, कभी परेशानी हो तो कहना, मैं पैसे भेज दूँगा।" अरे नहीं, वे भी हमलोगों की तरह साधारण आदमी हैं लेकिन दिल बहुत बड़ा है।

आपके बारे में मैंने बहुत कुछ सुना था। पुणे में आपका संगीत विद्यालय है। आप बहुत ही प्रेम से विद्यार्थी को गायन और तबलावादन सिखाते हैं। इतना ही नहीं उनकी परेशानियों को दूर करने में भी आप बहुत ही अपनत्व से निरपेक्ष भाव से मदद करते हैं। अपने विद्यार्थी की मदद करने वाला व्यक्ति अपनी भाभी को भी मदद किए बिना कैसे रह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सकता है? मुझे एक ही बात का दुःख है कि उनके अंतिम समय में रुग्णावस्था में हमलोग उनकी मदद नहीं कर सके। आपके सभी बच्चे आप ही की तरह कलाकार हैं और अत्यधिक मोही हैं। इन बच्चों की मैं चाची हूँ इस बात का मुझे बहुत अभिमान है।

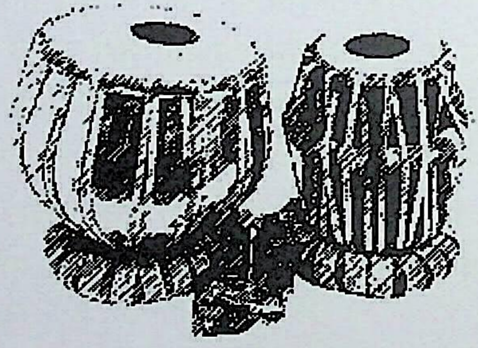

स्व. श्री. रामकृष्ण पर्वतकर जी के भाई स्व. श्री चन्द्रकान्त पर्वतकर की पत्नी श्रीमती कुसुम चं. पर्वतकर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# स्मृतियों के झरोखों से—

– प्रतिभा पर्वतकर

लयताल की अपनी परिष्कृत शैली से सामयिक संगीतज्ञों को अपने मोहपाश में बाँधकर सभी का दिल जीतनेवाले श्री रामकृष्ण पर्वतकर, मेरे पिता जी आज हमारे साथ नहीं हैं लेकिन वे आज भी हम सब के हृदय में विराजमान हैं।

मन्द मुस्कान की आभा, मधुरता, विनम्रता और वात्सल्य से ओतप्रोत मेरे पिताजी के साथ व्यतीत किए हुए वे मधुर क्षण मुझे आज भी आनन्दित करते हैं। हम सब भाई बहन उन्हें "बाबा" कहकर पुकारते थे। मेरा हाथ पकड़कर स्लेट पर "श्री गणेशाय नमः" लिखवाना, बाबा का हाथ पकड़कर विद्यालय जाना, बगीचे में घूमने जाना। कितने मधुर क्षण थे वे। सुबह सूर्योदय होने के पहले "घनःश्याम सुंदरा श्रीधरा, अरुणोदय झाला उठी उठी लवकरी वनमाली.........." यह गीत गाकर हमलोगों को उठाते थे। सुबह सुबह उठना, और शाम को भगवान के सामने दीया प्रज्वलित करने के बाद प्रार्थना करना और एक से तीस तक के पहाड़े याद करना अनिवार्य था।

मेरे बाबा शिवाजी मराठा हाईस्कूल (पुणें) में संगीत शिक्षक थे। उसी विद्यालय में मैं पढ़ती थी। छोटी छोटी कविताओं को स्वरलय में निबद्ध कर गेय रूप देकर हमलोगों को सीखाते थे जिससे कविताएँ खूब अच्छी तरह याद हो जाती थी। आज भी मैं उन कविताओं को गुनगुनाती रहती हूँ। एक गीत .......

"भोवरा फिरे गरगरा पहा हा जरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


विसावा नाहीं विसावा नाही
त्या किती ही फिरवा
थकवा येई न काहीं''

मेरे पिताजी का जीवन भी उसी लट्टू की तरह था। उन्हें क्षणभर भी आराम करने को नहीं मिला था। इसके बावजूद वे हम बच्चों के मनोरंजन हेतु अपना मूल्यवान समय देते थे। हम बच्चों को सामने बिठाकर तबले पर तरह तरह के बोल बजाते थे। रेलगाड़ी चलने की आवाज, कभी धीमी गति, कभी तेज गति, कभी सीटी की आवाज, तो कभी सुरंग में जाते समय की आवाज तबले पर बोल बजाकर निकालते थे। कभी चायवाले का अभिनय, तो कभी सब्जीवाले का अभिनय करके खूब हँसाते थे। उस समय हमलोगों को मालूम नहीं था कि मेरे बाबा भी अभिनय करने में निपुण हैं और वे गंधर्व नाटक मंडली में ''स्त्री पात्र'' का अभिनय करते थे। हमलोग इतना ही जानते थे कि मेरे बाबा गायन शिक्षक हैं। आकाशवाणी में गाते हैं, घर में तबला सीखाते हैं। घर में विद्यार्थियों को तबला सीखाते समय हार्मोनियम पर लहरा देने के लिए मुझे बिठाते थे। लहरा देते समय यदि मेरी लय बिगड़ गयी तो तुरन्त नाराज होते थे। एक लयकार पिता कभी अपनी कन्या की लय बिगड़ते हुए देख सकता है?

मेरे बाबा को चित्रकला का भी शौक था। जब विद्यार्थी तबले पर रियाज करते थे तब कापी लेकर बैठे बैठे पेन्सिल से स्केच करते थे। उन्होंने विद्यालय के प्रधानाचार्य का, लता मंगेशकर एवम् अनेक संगीतज्ञों के पेन्सिल स्केच बनाए हैं।

पिताजी नभोवाणी में कार्यक्रम देने हेतु मुंबई जाते थे। रात को पकौड़ी और चाय पीकर मुंबई जाते थे। उन दिनों हमारे घर रेडिओ नहीं था। पड़ोसी के घर जाकर हमलोग, और आसपास के लोग गाना सुनते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



थे। शास्त्रीय गायन की आलापचारी समझ में नहीं आती थी। लेकिन नाट्यगीत ''वद जाऊँ कुणाला शरणाला'' मुझे बहुत पसंद भी था। मुझे सीखाया भी था। बाबा होते तो मैं उनकी तरह नाट्यगीत और भावगीत गाने में जरुर निपुण होती!

आज मोबाइल एवम् टेपरिकार्डर के युग मे छोटे छोटे बच्चों की आवाज ध्वनिमुद्रित करके रखी जाती है। लेकिन उन दिनों ये सुविधाएँ न होने के कारण आज हमलोग उनकी आवाज भी नहीं सुन सकते हैं। आगे की पीढ़ी कैसे जानेगी कि उनके दादाजी एक अच्छे गायक थे, उत्कृष्ट तबलावादक थे लयकारी में निपुण थे। उनके लिए ये सब बातें कल्पनातीत ही होंगी। यह हमारा दुर्भाग्य है कि संगीत की जानकारी होने से पहले ही हमारे बाबा परलोक वासी हो गए।

जब मैं स्मृतियों के झरोखों से झाँकती हूँ मुझे याद आते हैं वे दिन! पिताजी अक्सर हम बच्चों को सैर कराने किसी बाग में ले जाते थे। लेकिन यदि रास्ते में कोई उनका कलाकार साथी मिल जाये तो भूल जाते थे कि बच्चे उनके साथ हैं फिर सड़क पर ही घंटों उनकी लयकारी चलती थी। मैं उनका शर्ट खींचकर उनको याद दिलाती थी कि हम बच्चे उनके साथ हैं। लेकिन पिताजी अपने में ही मगन!

हमारे बाबा अपने पिताजी (खाप्रुमांम) की तरह लयकारी में इतने लीन हो जाते थे कि वे स्वयं को भी भूल जाते थे। एक बार उनके साथी प्रो. राजभान सिंहजी (सितार प्राध्यापक) पिताजी से मिलने आए थे। उस समय बाबा भोजन कर रहे थे। जैसे ही मैंने उनको राजभान सिंह सर के आने की सूचना दी, भोजन की थाली सरका दी। पहनी हुई धोती से ही हाथ पोंछा, तबला डग्गा उठाया और बैठ गये बजाने। फिर क्या राजभान सिंह जी की सितार और पिताजी का तबला –जुगलबंदी शुरु! और मैं दरवाजे के पीछे खड़ी होकर उनको इशारा करती रही आपने मुँह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



नहीं धोया। लेकिन वह कहाँ सुननेवाले –वे अपनी संगीत की दुनिया में पहुँच चुके थे। उन्हें किसी बात की परवाह नहीं थी। उनकी क्रियाशीलता संगीत साधना में उनकी साँस बन गयी थी।

सन् 1951 में बनारस हिन्दू युनिव्हर्सिटी में संगीत विभाग में तबला प्राध्यापक के पद पर उनकी नियुक्ति होने के कारण पिताजी पुणे से बनारस गए। लेकिन हम भाईबहन माँ के साथ पुणे में ही थे। संगीत कॉलेज के प्रधानाचार्य पद्मश्री पं. ओंकारनाथ ठाकुर जी को अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में आमंत्रित किया गया था। आपके साथ मेरे पिताजी भी उनकी संगत करने गए थे। उस समय दीपावली का त्योहार था। चारों ओर दीप जगमगा रहे थे। लेकिन मेरे घर में अँधेरा था। आर्थिक संकट में होने के कारण हम बच्चे पड़ोसियों के घर की सजावट देखकर, अन्य बच्चों को पटाखे, फुलझड़ियाँ जलाते हुए देखकर, और उनके घर से आयी मिठाई खाकर प्रसन्न थे। लेकिन पिताजी काबुल से आने के बाद दीपावली का त्योहार बहुत उत्साह से मनाया गया। उन दिनों की याद करती हूँ तो आँखों से आँसू झलकने लगते हैं। कितना प्यार करते थे हम बच्चों से! हम पाँचों कन्याएँ उनके लिए प्राणों से प्रिय थी। कहते थे, "पंचकन्या स्मरे नित्यम्, महापातक नाशनम्"।

मेरे बाबा बहुत ही सरल हृदय के थे। वे सादगी एवम् सद्भाव के प्रतिमूर्ति थे। उनके कोई सगे भाई नहीं थे। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के बावजूद न जाने कितने संबंधियों की लड़कियों को उन्होंने घर में आश्रय देकर उनके अंधेरे जीवन में ज्ञान के दीप जलाए।

जन्म से ही संगीत के संस्कार उन्हें अपने पिताजी "खाप्रुमाम" से मिले थे। उनके पिताजी ही उनके प्रेरणास्रोत थे और पिताजी ही उनके वंदनीय गुरु थे। मननशील गुरु के सान्निध्य का परिणाम था कि संगीत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



एवम् लयकारी छोड़कर किसी का भी व्यसन उन्हें नहीं था।

मैंने अपने बचपन में पिताजी एवम् आ. दादाजी को "ए ए ए एक दो ओ ओ" कहकर ताली देकर लयकारी करते हुए देखा है। परन्तु उस समय संगीत शास्त्र से अनभिज्ञ होने के कारण मुझे सिर्फ हँसी आती थी। हम सब साथ बैठकर "ए ए ए एक, दो ओ ओ" कहकर ताली बजाते थे। मैं सोचती थी शायद गिनती ऐसे ही याद की जाती है। अब याद आती है तो मैं सोचती हूँ हम लोग कितने नादान थे?

हम लोग प्रतिवर्ष ग्रीष्मकालीन अवकाश में पुणें से गोवा जाते थे। मेरे दादाजी (खाप्रुमाम) का घर चंद्रेश्वर पहाड़ पर था। उस पहाड़ पर 20-25 परिवार अपना घर बनाकर रहते थे। माँ के पिताजी का घर पहाड़ की तलहटी में था। हमलोगों के आगमन का समाचार सुनकर आ. दादाजी पर्वत से उतरकर नीचे माँ के घर आते थे। आते समय पिताजी के लिए सांभर जरुर लाते थे। अड़ोस पड़ोस के सभी संगीतज्ञ इकट्ठा हो जाते थे। और प्रतिदिन देर रात तक महफिल जमी रहती थी।

पर्वतपर एक मन्दिर है। वहाँ तीन दिन लगातार चौबीस घन्टे गायन वादन से ईश्वर की सेवा की जाती थी। वत्सलाबाई पर्वतकर गाना गा रही हैं, दत्ताराम मामा पर्वतकर सारंगी बजा रहे हैं, रामकृष्ण पर्वतकर तबला बजा रहे हैं। खाप्रुमाम पर्वतकर लयकारी कर रहे हैं शांबा मामा, बसंत मामा बारी बारी से तबला बजा रहे हैं। यह दृश्य अभी भी मेरे स्मृतिपटल पर आता है और मैं मन मन में ही अन्य बच्चों के साथ भजन गाने लगती हूँ।

"असा कसा देवांचा देव बाई लंगड़ा
गवळ्या धरी जातो दही दूध खाते।"

(यह देव कैसा है जो ग्वाले घर जाकर चोरी से दूध पीता है, मक्खन खाता है) यह भजन हम सब बच्चों को बाबा ने ही सीखाया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


था।

गतवर्ष ग्रीष्मावकाश में मैं अपनी कुलदेवता का दर्शन करने अपने गाँव (चंद्रेश्वर पर्वत) गयी थी। जिस गाँव में कभी घर घर से संगीत के स्वर सुनाई देते थे आज वहीं गाँव "चंद्रेश्वर पर्वत" सुनसान हो गया है। मैं अपने स्वर्गीय दादाजी के घर के सामने खड़ी थी। ऐसा आभास हुआ कि दादाजी ने "गदिगन धा" कहते हुए दरवाजा खोला और स्नेह भरे आवाज में बोले, "यो बाय, फणसा गरे खावून जा" (बेटा आओ, कटहल के गरे खाकर जाना)। वह आभास ही था।

मैं चन्द्रेश्वर देवता का दर्शन करके, वहाँ की पवित्र मिट्टी को मस्तक पर लगाकर गत सुखद क्षणों को याद करती हुई वापिस आई।

मेरे पिताजी सर्वगुण संम्पन्न थे। उस विद्या वारिधि से जिन्होंने विद्या प्राप्त की वे सब भाग्यशाली रहे। परन्तु दुर्भाग्यवश हम बच्चों को कुछ बूँदें भी प्राप्त न हो सकी। पिताजी का अचानक देहान्त होने के कारण हम सब की जीवन नौका डगमगा रही थी। मेरे पिताजी के अभिन्न मित्र पद्मश्री पं. बलवंतराय भट्ट (आ. भैयाजी) उसी कॉलेज में गायन के प्राध्यापक थे। पिताजी के पश्चात् आ. भैयाजी एवम् आदरणीय भाभीजी ने हम बच्चों पर स्नेह का वर्षाव किया। हमारे पड़ोस में डॉ. सहस्त्रबुद्धे जी (विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र के प्राध्यापक) का परिवार रहता था। उनकी ममता की छाँव में हम बढ़े हुए और शिक्षा क्षेत्र में प्रगति कर के अपने पैरों पर खड़े हो सके।

आदरणीय भैयाजी (पद्मश्री बलवंत राय भट्ट, डॉ. गौतम जी, डॉ. ठकार जी, श्री कनकराय जी, डॉ. देवधर जी, डॉ. पं. लालमणी मिश्रा जी इन सभी गुरुजनों ने पर्वतकर जी की कन्या वनमाला को अपनी पिताजी इच्छा पूर्ण करने के लिए अपनी ही पुत्री समझकर बहुत ही सहयोग दिया और संगीत के क्षेत्र में आगे बढ़ाया। इन सब गुरुजनों के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



स्नेहिल सान्निध्य में रहकर वनमाला भी सदैव उन्नति के पथ पर अग्रसर होती गयी। गुरुजनों, हमलोग आप के सदैव ऋणी रहेंगे।

आज वनमाला उसी महाविद्यालय में (जहाँ पिताजी कार्यरत थे) गायन विभाग में सेवा कर के निवृत्त हुई है। उनकी एक कन्या एक कन्या श्रीमती शोभा सितारवादन में एम् म्युझिक कर चुकी है और उनके सुपुत्र रवीकुमार अपने पिता की ही तरह चित्रकार है।

बाबा, आपके आशीर्वाद के कारण हम लोगों के जीवन की डूबती नैया सकुशल किनारे लग गयी है।

लता दीदी (मंगेशकर) ने गाया एक गीत मैं गुनगुनाती रहती हूँ।

"कल्पवृक्ष कन्येसाठी लावूनिया बाबा गेला
वैभवा ने बहरुनि आला
याल का हो भेटायाला?"

बाबा, आपने अपनी कन्या के लिए कल्पवृक्ष का पौधा लगाया। आज उसमें बहार आयी है। फूलों की सुगंध चारों ओर फैली है। आप आयेंगे न हमलोगों से मिलने?

श्री रामकृष्ण पर्वतकर की प्रथम पुत्री ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# मेरे प्रिय बाबा
# स्व. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर

**– वनमाला पर्वतकर**

भारत में सृष्टि सौन्दर्य, नैसर्गिक समृद्धि के लिये सर्वप्रथम काश्मीर का नाम आता है लेकिन दक्षिण में गोमंतक प्रदेश भी उसी प्रकार समृद्ध है। उस समृद्ध भूमि के दर्शन मात्र से ऐसा प्रतीत होता है कि यह भूमि ईश्वर ने आध्यात्म साधना और कला साधना के लिए निर्माण की है।

गोमंतक प्रदेश में अनेक संगीत कलाकार पैदा हुये जिन्होंने अपनी तपस्या से भारतीय संगीत को समृद्ध किया। नादब्रह्म और लयब्रह्म की उपासना करने में अपने जीवन की आहुति दी और साधना से कलाकार समाज में अपने विशेष स्थान बनाने में समर्थ हो गये। आज सभी संगीत प्रेमी इन सभी कलाकारों का नाम आदर से लेते हैं जिनमें गायन क्षेत्र में गानदेवता अंजनीबाई मालपेकर, सुरश्री केसरबाई केरकर, गान तपस्विनी मोगुबाई कुर्डीकर, पं. रत्नकांत रामनाथकर, पं. जितेन्द्र अभिषेकी, पंडिता किशोरी आमोणकर, लयब्रह्म के साधक लयभास्कर पर्वतकर उर्फ 'खाप्रुमाम' आदि अनगिनत कलाकार हुये।

इन्हीं 'खाप्रुमाम'' लक्ष्मणराव पर्वतकरजी के सुपुत्र रामकृष्ण जी का जन्म गोवा के 'पर्वत' नामक स्थान में हुआ। रामकृष्ण जी का संगीतमय वातावरण में ही जन्म हुआ। कई पीढ़ियों से आपके वंश में संगीत की धारा प्रवाहित थी।। स्वर और लय के संस्कार जन्मजात थे। आपको यह लय-ताल विद्या अपने पिताजी से ही विरासत में मिली थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण पिता के सान्निध्य में रहना आपके लिये कठिन था अतः परिवार के भरण-पोषण के लिये गोवा प्रांत छोड़कर अन्यत्र जाना पड़ा।

सर्वप्रथम बालगन्धर्व नाटक कम्पनी में आपने प्रवेश किया। यहाँ पर नाट्यकला से संबंधित गुणों को सीखते-सीखते स्त्रीपात्र का अभिनय करने में कुशलता प्राप्त की (एक समय स्त्री पात्र की भूमिका पुरुष पात्र ही अदा करते थे) आपकी आवाज ऊँची थी। ऊँची आवाज में मधुर गायन कर सकते थे। उस समय संगीत नाटकों में अभिनय करनेवाले पात्रों को गाना अनिवार्य था। बाद में आवाज में परिर्वतन आने के कारण आपने नाटक कंपनी छोड़ दी। बीच का काल अत्यंत कठिनाई से व्यतीत हुआ।

गायन की शिक्षा हैद्राबाद के उस्ताद बशीर खाँ से प्राप्त की। पं. रत्नकांत रामनाथकर जी से भी अनेक राग एवं बंदिशों की शिक्षा प्राप्त की।

तबले की शिक्षा प्रारम्भ में अपने पिताश्री 'खाप्रुमाम' लयभास्कर लक्ष्मणराव पर्वतकरजी से प्राप्त की। बाद में जीवनचर्या के लिये गोवा छोड़कर बाहर जाना पड़ा इस कारण पिता के पास रहने का मौका कम मिला और अन्य विद्वानों के पास तबले की शिक्षा ली।

विद्या व्यासंग के कारण इधर उधर भटकते हुये पुणे में आये और शिवाजी मराठा हायस्कूल से मैट्रिक पास हो गये। वहीं पर तत्कानीन प्रधानाध्यापक, बाद में पुणे के मेयर बाबूराव जगतापजी ने उन्हें उसी स्कूल में संगीत शिक्षक की नौकरी दी।

सन् 1938 में पुणे में 'शारदा संगीत विद्यालय' नामक संस्था शुरु की। इस संस्था के कारण अल्पावधि में ही पुणे के कलाकार समाज में आपको काफी प्रसिद्धि मिली। भारतरत्न पं. भीमसेन जोशीजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



के घर नित्य संगत करने जाना शुरु हुआ। बंबई में तत्कालीन कलाकार गानतपस्वीनी मोगुबाई कुर्डीकरजी के साथ संगत करने जाते थे। पुणे में आपका शिष्यवर्ग तैयार हुआ। स्व. मधुकर तिसगावकर, केशवराव नावलेकर, केलकर वकील, विनायकराव थोरान, गायिका मेनकाबाई शेलडेकर, वायलिन वादक श्री अनंतराव फाटक आदि अनेक गायक वादक शिष्य तैयार किये। सब कुछ व्यवस्थित ही चल रहा था। ज्ञानपिपासा के कारण कलाकार एक जगह ठहर नहीं पाता।

अचानक एक दिन पुणे में संगीत मार्तण्ड, पद्मश्री पं. ओमकारनाथ ठाकुर का दर्शन हुआ। उनके साथ पद्मश्री पं. बलवंतराय भट्टजी 'भावरंग' थे। उनसे मिलकर आपने पं. ओमकारनाथजी से बात की। पंडितजी खाप्रुमामा को जानते थे। इसीलिये आपको बनारस में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आमंत्रित किया। सन् 1951 में तबला प्राध्यापक के रूप में आपकी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में नियुक्ति हुई।

उस समय बनारस कलाकारों को गढ़ था। सभी कलाकारों ने आपका तबला वादन सुना। जिनमें से अभी कोई जीवित नहीं है। पं. अनोखेलालजी, पं. कंठे महाराज जी, पं. किशन महाराज जी, पं. शामताप्रसादजी (गुदई महाराज) सभी उच्च कोटि के तबला वादक, अनेक गायक पं. छोटे रामदास जी, पं. बड़े रामदास जी, पं. हरिशंकर जी जैसे विद्वानों ने आपकी खूब प्रशंसा की। मेरे गुरुजी शिवकुमार शास्त्री अभी भी आपकी खूब प्रशंसा करते हैं।

यह थे मेरे पिताजी (रामकृष्ण पर्वतकर) जिनकी सभी लोग प्रशंसा करते थे। हम पांच बहनें और एक भाई सब छोटे थे तथा उनके गुणों से अनभिज्ञ थे। हम लोगों का काम स्कूल जाना, पढ़ना-लिखना, घर आने पर अपनी मांगे पिताश्री के सामने रखना –ये पुस्तकें चाहिये, ये स्कूल ड्रेस चाहिये, नित्य की आवश्यकताओं का भंडार उनके सामने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



रखते थे। उस समय यह जानकारी भी नहीं थी कि इनको पूरा करते समय आर्थिक समस्याओं के कारण उन्हें कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ता होगा। चेहरा हमेशा प्रसन्न मुद्रा में रहता था। कभी भी हमलोगों को डाँट नहीं पड़ती थी। अपने भरसक हम सबकी इच्छाओं को पूर्ण करने का प्रयास करते थे।

हमलोगों के लिये उनका तबला खेल था। हम लोग साथ बैठकर पिताजी से कहते थे कि रेलगाड़ी की आवाज तबले से निकालिये। गाड़ी टनेल में जाती है तो आवाज बदलती है, बाहर आने पर अलग आवाज, गति धीमी, तेज करने पर अलग आवाज। सब हम लोगों के लिये खेल की तरह करके दिखाते थे। कुछ गीत –

(1) कशासाठी पोटासाठी खंडाळयाच्या घाटासाठी
चला खेळू आगगाडी इंजिना तून धूर काढी

(2) गाडी आली गाडी आली झुक झुक झुक
सीटी कशी वाजे बधा कुक कुक कुक

(3) तपेलीची लांब दोरी तपेली सांभाळ पोरी।

इन गीतों को गाकर लयबद्ध बजाते थे तो लगता था तबला ही सब कुछ कह रहा है। इस तरह अनेक तरह की आवाजें निकालकर हम बच्चों का मनोरंजन करते थे। तब नहीं मालूम था कि ये इतना बड़ा कलाकार है। यही मालूम था ये हमारे प्रिय 'बाबा' हैं।

जब पुणें में रहते थे तो एक बार पिताजी बीमार पड़े। उस समय खाप्रुमामा हमारे पिताजी को देखने आये थे। एक तरफ पिताजी का बिस्तर, दूसरी तरफ दादाजी (खाप्रुमामा) का बिस्तर। दादाजी दिन रात ए ऽ ऽ ऽ एक, दो ऽ ऽ ऽ ऽ, ती ऽ ऽ ऽइन इस प्रकार लयकारी करने में लीन थे। हम सब भाई बहन बाहर उनकी नकल करने में आनंदित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


होते थे। तब यह पता नहीं था कि यह योगी विश्वप्रसिद्ध लयभास्कर मेरे दादाजी हैं और वे अपनी लय साधना में लीन हैं। कितना बड़ा अज्ञान!

पिताजी के साथ हम सब 1955 में बनारस आये। तब तक पिताजी अकेले ही रहते थे। सबेरे हम सब बच्चे स्कूल पढ़ने जाते थे। पिताजी 3 बजे कॉलेज जाते थे और रात में साढ़े आठ बजे घर आते थे। तब हमलोग सब थककर सो जाते थे। दूसरे दिन से वही नित्यचर्या। पिताजी से मुलाकात ही कम होती थी। ऐसे करते करते स्कूल का जीवन समाप्त हो गया और उसी समय काल ने हमारे पिताजी को हमसे छीन लिया। पिताजी से कुछ सीख नहीं पाये, उनको जान नहीं पाये, उनकी सेवा नहीं कर पाये।

पिताजी के सामने ही मैंने संगीत विद्यालय में जाना शुरु किया था। रोज रात में उनके साथ घर वापस आती थी। रोज रास्ते में एक बात जरूर कहते वनमाला! बेटी पढ़ाई करना क्योंकि मेरे जाने के बाद तुमलोगों को देखने वाला कोई नहीं। मैं गुस्सा करती कि क्या बाबा! एक ही बात रोज क्यों कहते हैं? लेकिन संभवतः उन्हें अपने मृत्यु का आभास हो चुका था। उसी वर्ष वे हम सबको छोड़कर चले गये।

उसी कॉलेज में मैंने अपनी पढ़ाई शुरु की। सभी गुरुजनों ने बहुत प्रेम से पढ़ाया। पं. कनकरायजी त्रिवेदी, पं. माधव वामन ठकारजी, पद्मश्री पं. बलवंतरायजी भट्ट 'भावरंग', डॉ. एम. आर. गौतम, डॉ. प्रेमलता शर्माजी सभी ने बहुत प्रेम से पढ़ाया। कॉलेज में हमेशा अच्छे विद्वान् आते थे। उनके कार्यक्रम सुनने का अवसर मिलता था। एकबार पं. रविशंकरजी आये थे। बापूजी (पं. बलवंतराय भट्टजी) ने यह पर्वतकरजी की लड़की है ऐसा परिचय दिया तब पंडित रविशंकरजी ने कहा कि इसके दादाजी और पिताजी कितने बड़े लयकार थे इसे तो कुछ भी पता नहीं होगा। मैंने अनभिज्ञ सा चेहरा बनाकर उन्हें केवल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



प्रणाम मात्र किया क्योंकि मैं वास्तव में कुछ नहीं जानती थी।

एक बार पं. शामताप्रसाद जी से कार्यक्रम के सिलसिले में मुलाकात हुई। गणेशोत्सव में मेरा गाना था उसके बाद उन्हें बजाना था। मेरे गाने के बाद मैं बाहर आई। किसी ने उनसे परिचय करवाया ये पर्वतकरजी की लड़की है तो उसी समय अपना कान पकड़कर बोले बेटा! तुम बहुत बड़े बाप की बेटी हो और वे रोने लगे। मुझे समझ में नहीं आया कि वे क्यों रो रहे हैं? मैंने उन्हें भी प्रणाम किया।

एक बार पं. किशन महाराज जी के पास बनारस घराने पर साक्षात्कार लेने गई थी तो उन्होंने यही कहा था बेटा! तुम्हारे दादाजी और पिताजी जन्मजात कलाकार थे। तुम बहुत गुणी बाप की बेटी हो। तुम मुझे अपने दादाजी की फोटो देना। मैं अपने घर में उनकी फोटो लगाऊँगा। मैंने उन्हें खाप्रुमामा की फोटो मढ़वाकर दी। प्रमाणस्वरूप वह फोटो पुस्तक में लगाई है।

ये सब घटनायें इसीलिये दे रही हूँ कि ये सब बातें मैं बड़े कलाकारों से सुनती रही लेकिन मैं इस लय की विकटता, दादाजी व पिताजी का उनपर अधिकार इन सब बातों से बहुत वर्ष क्यों कहें अभी तक अनभिज्ञ थी। इन दोनों के लय के चमत्कार दूसरे लोगों से सुनती रही। उसकी कठिनता को समझने की समझ अभी भी नहीं है। लेकिन इन दोनों के बारे में विद्वानों ने जो भी लिखा उसे पढ़कर यह समझ में आया कि इसे आज की पीढ़ी को अवगत कराना बहुत जरूरी है।

मेरे पिताजी के गायन के साथ पं. अनोखेलालजी संगत करके बहुत प्रसन्न होते थे। इन दोनों में बहुत स्नेह संबंध था। जब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अस्पताल में पं. अनोखेलालजी भरती थे। मुझे किसी कारण से अस्पताल ले गये थे। वहीं पता लगा कि पं. अनोखेलालजी का निधन हुआ। मुझे एक जगह बैठाकर बोले अभी आता हूँ। वापस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



आये तो चेहरे पर उदासी, एकदम गंभीर आवाज में डॉ. माथुर उस समय दंत चिकित्सक थे, संगीत प्रेमी भी थे उनसे कहा पं. अनोखेलाल जी नहीं रहे। और मुझे साथ लेकर पं. ओमकारनाथ जी ठाकुर के घर ले गये और मुझे बाहर खड़ा किया। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि पिताजी को क्या हो गया? मैं अनोखेलाल जी के बारे में कुछ नहीं जानती थी। उसी वर्ष पिताजी 'संगीत' पत्रिका में लेख लिखा 'ना धिं धिना का बादशाह चला गया। वह सन् 1958 था। उसके एक वर्ष बाद ही सन् 1959 में पिताजी भी लय ब्रह्म में लीन हो गये।

विदेशी सांस्कृतिक दल के सामने भी पं. ओमकारनाथजी ठाकुर ने पिताजी का तबला वादन रक्खा था। उसमें उनके साथ हार्मोनियम पर लहरा दे रहे थे पं. बलवंतराय भट्टजी 'भावरंग' जो कि पिताजी की लयकारी के साथ स्थिर होकर लहरा देने में एकमात्र थे ऐसा पिताजी कहते थे। He is only one man in India ऐसा विदेशियों के सामने भी बोले थे। उसे सुनने हम लोग गये थे लेकिन उस समय स्वर और लय के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। अंत में तालियों की गड़गड़ाहट से इतना ही समझ में आया कि विदेशियों को मेरे पिताजी का तबला बहुत पसंद आया।

तबले पर पिताजी का हाथ बहुत मधुर था। बहुत सरलता व स्पष्टता से बोल निकलते थे कि लगता था कि तबला लय के साथ भावों का भी प्रदर्शन कर रहा है। प्रत्येक बोल में मौलिकता, कलात्मकता और चमत्कारपूर्ण लय प्रयोग और कौशल का दर्शन होता था। तबले और मृदंग के बोलों का विशाल भंडार तो आपके पास था ही, स्वल्प काल में नये बोल रचने की अपूर्व क्षमता आप में थी।

गायन के क्षेत्र में पिताजी का कंठ अत्यधिक सुरीला और मधुर था। सफेद पांच से आप गाते थे। एक बार का किस्सा मेरे कालेज के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



गुरुजनों ने मुझे बताया था। तब हम लोग बनारस नहीं आये थे। पिताजी गा रहे थे, विकट लयकारी कर रहे थे उनके साथ प्रसिद्ध पखावज वादक संगत कर रहे थे। दोनों अपनी लयकारी में इतने लीन थे कि पखावज वादक की ऊँगलियाँ बजाते बजाते फट गई थी उनसे खून निकल रहा था और वैसे ही उनका बजाना चालू था। कार्यक्रम खतम होने पर लोगों ने देखा दोनों ही अपने गायन वादन में कितने लीन थे। दोनों के साथ दर्शक और श्रोता भी लीन थे। पिताजी ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, मराठी भावगीत, नाट्यगीत व भजन बहुत आकर्षक ढंग से गाते थे। उनके कुछ प्रिय नाट्यगीत –'वदजाऊ कुणाला शरणगत' 'बोला अमृत बोला'। शरदाचे चांदणे मधुबनी फुलला निशिगंध, बाजवी पावा गोविंद ये भावगीत भी बहुत प्रिय थे। गायन में लय के साथ जो खिलवाड़ करते थे उससे श्रोता चमत्कृत होते थे।

गायन वादन के अतिरिक्त पिताजी बहुत बड़े चित्रकार थे। आपके पेन्सिल से बने चित्र को बंबई के श्री हळदणकरजी द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में 'साधु' शीर्षक चित्र को प्रथम पुरस्कार मिला था। सामने व्यक्ति को बैठाकर चित्र बनाया था।

प्रसिद्ध साहित्यकार पु. ल. देशपांडेजी ने कहा है कि "पूना में रामकृष्णबुवा का तबला तो सुना ही है उसी के साथ उनकी चित्रकला भी देखी है। लय के साथ आड़-कुआड़ में नाचने वाली उनकी ऊँगलियों से रेखा भी कितनी सुंदर ढंग से नृत्य कर सकती है ये भी देखा।"

प्रसिद्ध संगीतकार डॉ. ना. न. मारुलकर जी ने कहा है –"वे प्रसिद्ध संगीतकार नहीं होते तो उत्तम चित्रकार कहकर उनकी प्रसिद्धी होती।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पिताजी के बनाये कई चित्र इस पुस्तक में दिये जा रहे हैं। इनकी इस कला से बहुत लोग अनभिज्ञ हैं।

स्वभाव से पिताजी बहुत सरल थे, भोले थे। एक बार आपका मंच पर कार्यक्रम था। बहुत सुंदर कार्यक्रम हुआ। सब विद्यार्थी बहुत प्रसन्न थे। दूसरे दिन अपने विद्यार्थियों से पूछा, कल हमने आपको देखा था। आपने हमको देखा था क्या? कितना भोलापन था स्वभाव में।

अपने अंतिम समय में संभवतः आपको आभास हो चुका था कि अंतिम समय आ गया है। मैं पास खड़ी थी। अस्पताल का एक सफाई कर्मचारी सफाई करने आया। उससे बोले मुझे जल्दी ठीक कर दो मैं तुम्हें मुफ्त में तबला सिखाऊँगा। कितना निर्मल मन था उनका।

पिताजी सामान्य जीवन में गुणग्राही थे। हमेशा कहते थे गुण और दोष सभी होते हैं। गुणों को ग्रहण करो, दोषों की ओर ध्यान मत दो। निन्दा, ईर्ष्या से दूर रहकर कला के आनंद में मग्न रहते थे। 'विद्या विनयेन शोभते' के प्रतीक थे। अपनी प्रशंसा सुनकर निस्पृह भाव से आप तत्काल कह उठते "मेरे पिताजी की विद्या का एक शतांश भी मेरे पास नहीं है।" कला द्वारा प्राप्त आनंद में बाह्य अभावों को भूलकर ब्रह्मानंद सहोदर आनंद में डूब जाते थे। अपने अंतिम समय में बार-बार बिस्तर से उठकर कहते पंडितजी (पं. ओमकारनाथ जी) का कलकत्ते में कार्यक्रम है, वे मुझे बुला रहे हैं, मुझे जाना है। पता नहीं शरीर में शक्ति नहीं थी लेकिन उठकर बैठ जाते। उन्हें चार-पांच व्यक्ति पकड़कर लेटाते गुरुजी! चलेंगे, अभी चलेंगे करके उन्हें सुला देते थे। कितना अपने विद्या से प्रेम था। दिन रात उसी के चिंतन में लगे रहते थे।

आपका कलाकार व्यक्तित्व आपको उच्चकोटि के कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित करने में समर्थ था किन्तु दुर्भाग्य से अकाल मृत्यु के कारण आपको उचित सम्मान, प्रतिष्ठा, अर्थलाभ से वंचित रहना पड़ा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तत्कालीन सभी बड़े कलाकार भारतरत्न पं. रविशंकर, उ. विलायत खाँ, पुणे के सभी कलाकार भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी, पं. विनायकराव पटवर्धन, पं. नारायणराव व्यास, गंगूबाई हंगल, पं. ओमकारनाथ ठाकुर, डॉ. बी. आर. देवधर, मोगुबाई कुर्डिकर, हीराबाई बडोदकर, केसरबाई केरकर, किशोरी आमोणकर, प्रभा अत्रे, ज्योत्स्ना भोळे आदि अनेक कलाकार आपको जानते थे। इनमें से अनेक कलाकारों के साथ आपने तबले पर संगत की है।

ऐसे ये हमारे "बाबा" हम सबको छोड़कर 14 फरवरी सन् 1959 में लयब्रह्म में लीन हो गये।

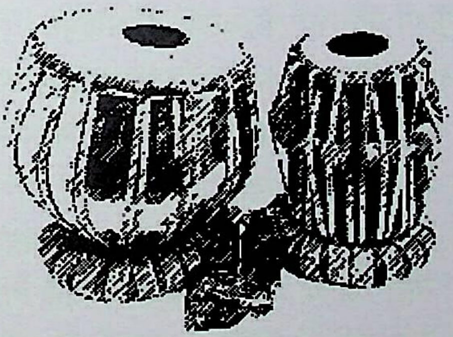

---

श्री रामकृष्ण पर्वतकर की द्वितीय पुत्री ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# बचपन के बाबूजी

**– शोभा पर्वतकर ( अब्दागिरी )**

एक था बचपन, एक था बचपन,
बचपन के एक बाबूजी थे,
अच्छे सच्चे बाबूजी थे,
हम सब का था सुंदर सा मेल,
एक था बचपन
एक था बचपन . . .. . .

मेरा एक लघु मनोगत, अपने स्वर्गीय पू. दादाजी ताल योगी श्री लक्ष्मणराव पर्वतकर (उर्फ खाप्रूमामा पर्वतकर) व उनके सुपुत्र, हमारे पिताजी पू. रामकृष्ण पर्वतकर के चरणों में समर्पित।

. . . .. लिखने की शुरुआत कैसे करूँ कहाँ से करूँ कुछ समझ में नहीं आ रहा, क्योंकि पू. दादाजी जब गुजर गये तब मेरी उम्र 5 साल की थी, वो कैसे थे, वो कैसे दिखते थे, कैसे हँसते थे, कैसा व्यक्तित्व था, इसकी कुछ जानकारी नहीं थी, और जब पू. पिताजी गुजर गये, तब मेरी उम्र10 साल की थी, जैसे जैसे उम्र बढ़ती गई, पुस्तकों के ज्ञान से और बड़े बड़े नामी कलाकारों के मुख से दादाजी व पिताजी के ताल लय विद्या के तारीफ सुन कर ज्ञात हुआ कि, दादाजी तो लयब्रह के तालयोगी थे, पखावज और सारंगी में भी निपुण थे। और पिताजी ने भी दादाजी के आशीर्वाद से तबले के रियाज में लीन होकर दादाजी का नाम रोशन किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पू. दादाजी के जीवन चरित्र के बारे में मैं क्या लिखूं मैं तो उस समय नन्ही उमर से गुजर रही थी, इसलिये ज्यादा कुछ लिख नहीं सकती। भारतवर्ष बड़े बड़े नामी कलाकारों के मुख से उनकी तारीफ सुनकर आत्मा तृप्त हो जाती है, उन्होंने तबला, पखावज, गायन और सारंगी विद्या में भी कई एक विद्यार्थी तैयार किये थे। पू. दादाजी ने तो तबले की नानाविध लयकारियों से गोवा के संपूर्ण गोमंतकवासियों को अचंभित कर दिया था और अभी भी बड़े बड़े कलाकार तौबा तौबा करते हैं। उनका कहना है कि ऐसा लयकारी का जादूगर इस भूमि पर न तो जन्मा है न तो भविष्य में कोई जन्म लेगा। वे विनम्र और विरक्त प्रवृत्ति के थे महान् दादाजी के कमल चरणो में मेरा कोटिकोटि प्रणाम.....।

अब रहे पू. पिताजी की यादें उस समय हम सभी भाई बहन छोटी उमर से आगे पल्लवित हो रहे थे। मेरी 10 साल की उम्र में कुछ धुंधली धुंधली यादें मेरे दिल में बसी हुई हैं और ये यादें मेरे दैनिक जीवन में अंतिम सांसों तक दिन दूनी रात चौगुनी भुलाये न भूलेगी।

पू. पिताजी ने हम सबको संगीत विद्या सिखाना आरंभ किया था, हारमोनियम बजाकर सा रे ग म . . . . .उस समय संगीत क्या है, सुरताल क्या है, ये मेरे दिलोदिमाग में भी नहीं था, बस थोड़ा बहुत गुनगुना लेती थी। (वो भी याद नहीं) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के संगीत संकाय में पिताजी तबला शिक्षक होने के कारण बड़ी दीदी (कु. प्रतिभा पर्वतकर) को सितार की शिक्षा और दूसरी दीदी (कु. वनमाला पर्वतकर) को शास्त्रोक्त गायन की शिक्षा देने की शुरुआत की थी। उस समय संगीत संकाय दोपहर 3 बजे से रात आठ बजे तक हुआ करता था। हम सब छोटे पिताजी की बड़ी आतुरता से राह देखते रहते थे, (वो भी मूँगफली के लिये) पिताजी अपने काले कोट के जेब में मूंगफली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



लाते थे, हर एक को दो ही मूंगफली मिलती थी (उसमे भी हम सबका झगड़ा हुआ करता था) परंतु हम समाधानी थे। कुछ धुंधली सी याद- पिताजी के एक पलथी पे मैं सोई रहती, और उनके तबले का रियाज चलता रहता था, कभी पढ़ाई भी लेते थे (बहुत ही मन के खिलाफ काम था वह मेरा) ऐसी छोटी छोटी यादें दिल को छू जाती हैं। विनम्र, सरल स्वभाव, शांत चित्त, हँसमुख चेहरा ही उनका व्यक्तित्व था। किसी विद्यार्थी की कला पर खुश होते तो, उनके जेब में लगी पेन, या जेब में कुछ पैसे हो, रुमाल हो, चॉकलेट हो, वो उसे भेंट के रूप में दे देते, विद्यार्थी तन, मन, घन से प्रफुल्लित हो जाता। हमारी माँ भी कलाकार थीं, गायन हारमोनियम में कुशल थीं, परंतु पिताजी बहुत ही कम उम्र में गुजरना परिवार के लिये एक शाप हो गया परिवार बिखर गया, सपने टूट गये . . . . .हम सभी भाई बहनों के खून में सुर लय होने के बावजूद भी, हम उनका नाम रोशन नहीं कर पाये। दोनों बड़ी दीदीयों पर पारिवारिक जिम्मेदारी आने के बावजूद भी बड़े ही साहस से हम छोटों को बड़ा किया, और सुशिक्षित बनाया। मैंने भी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से सितार में एम. म्यूज किया, परंतु नाम नहीं कमाया। आज पिताजी होते तो उनके बच्चे भी दादाजी-पिताजी का नाम रोशन करते।

एक दीदी डॉ. वनमाला पर्वतकर बनारस में एक गायिका कहलाती हैं। वह अभी भी घर में छोटे बड़े विद्यार्थियों को शास्त्रोक्त संगीत विद्या में प्रवीण कर रही हैं। पिताजी मराठी नाटक में भी काम करते (स्त्री भूमिका में)। हमारे पिताजी बहुत बड़े चित्रकार भी थे। बड़े बड़े कलाकारों के हुबहुब स्केच किए हैं, इस कला में हमारे भाई रविकुमार पर्वतकर और भतीजी कु. शुभांगी रविकुमार पर्वतकर भी कुशल है।

लिखना तो बहुत कुछ चाहती हूँ, पर दादाजी व पिताजी के नाम से मन व्यथित हो जाता है, क्योंकि हम सबके सपने अधूरे रह गये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पिताजी के निधन के बाद कुछ सालों बाद हमारी पू. माँ गुजर गईं (वो भी पिताजी की दुःख में)। पिताजी ने अपने जमाने में कई विद्यार्थियों को तबले के लय ताल विद्या से प्रशिक्षित कर उन्हें इस विद्या में निपुण किया।

अंत में दादाजी व पिताजी के आशीर्वाद से दीदी के पुस्तक लेखन में कोई बाधा ना आये, और उसे पढ़कर दुनिया जान जाय कि हमारे दादाजी व पिताजी क्या थे?

पुनः पुनः पू. दादाजी व पू. पिताजी के कमल चरणों में कोटि कोटि प्रणाम...... और दीदी के पुस्तक के लिये

शतशत मनोकामनायें........।

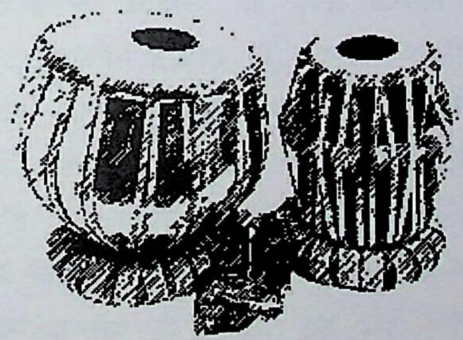

---

शोभा पर्वतकर (अब्दागिरि) स्व. रामकृष्ण पर्वतकरजी की चतुर्थ कन्या हैं। सितार की शिक्षा ली है (मास्टर ऑफ म्युजिक)। अब केवल गृहस्थाश्रम निभा रही हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# कविता

– श्री रामदास पाल

सन् उन्नीस सौ आठ में जागा पर्वत 'गोमंतक' का भाग,
गंगा ने सुत-साधक जाया, ललित कला का अमर सुहाग।
'रामकृष्ण' का नाम मिला था, रामकृष्ण सम उन्नत भाल,
पिता लक्ष्मण पर्वतकर, पुत्र देख हो गये निहाल।
सुर से सुरभित घर-आंगन था, लय से लसित पूरा गाँव,
संगीत-सुधा से सिंचित बचपन, पूज्य पिता का स्नेहिल छाँव।
पिता पुरोधा थे सुरलय के, साँसों में बजता था तबला,
"लयभास्कर" वह ताल कंठमणि" से भूषित सम्मान मिला।
प्रगति शक्ति से ओतप्रोत, था सतत कर्मठता का एहसास,
क्रियाशील संगीत-साधना में, बसती रहती थी साँस।
हँसता-गाता घर-आंगन था, ना कोई शिकवा ना गिला,
पत्नी कुंदबाला-सन्तति संग, जीवन का उत्थान मिला।
उन्नीस सौ उनसठ की फरवरी चौदह, काल बनकर आयी,
उठ गया पिता का प्यार अचानक, दुःख की बदली घहरायी।
उनके अमिय-स्नेह से वंचित, छः छः बचपन मुरझाये,
स्मृति के अधखुले द्वार से, अश्रु व्यथा के बह आये।
स्नेहमयी उन सुखद क्षणों को, कैसे मन से बिसरायें,
हाय! स्वप्न संकेतों से हम, कैसे उनको पास बुलायें।

श्री रामदास पाल, प्रधानाचार्य ज्योति बधिर विद्यालय, कानपुर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्व. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर जी
के जीवन से संबंधित चित्र एवं
उनके द्वारा बनाये पेन्सिल स्केच

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्व. रामकृष्ण पर्वतकर खाप्रूमाम के सुपुत्र और शिष्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खाप्रूमाम के सुपुत्र एवं शिष्य स्व. सूर्यकान्त पर्वतकर
उनकी पत्नी स्व. वसुंधरा पर्वतकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खाप्रूमाम के प्रिय शिष्य स्व. मलबाराव सरदेसाई एवं पुत्रवधू
स्व. वसुंधरा पर्वतकर ( पहला चित्र नाम पता नहीं )

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खाप्रूमाम के शिष्य स्व. सुब्रायमाम पर्वतकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

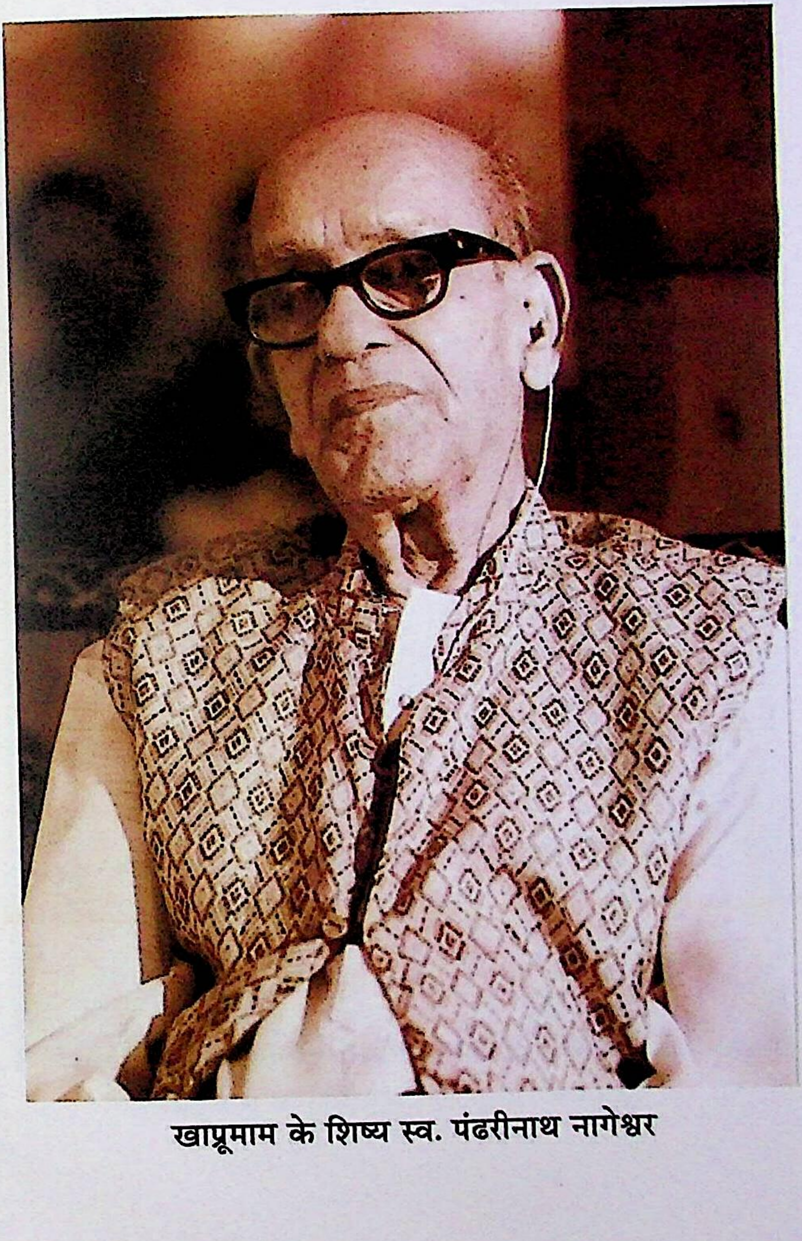

खाप्रूमाम के शिष्य स्व. पंढरीनाथ नागेश्वर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खाप्रूमाम के शिष्य स्व. गनपत पर्वतकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खाप्रूमाम के शिष्य स्व. नंदकुमार पर्वतकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खाप्रूमाम के शिष्य श्री नरोत्तम पर्वतकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

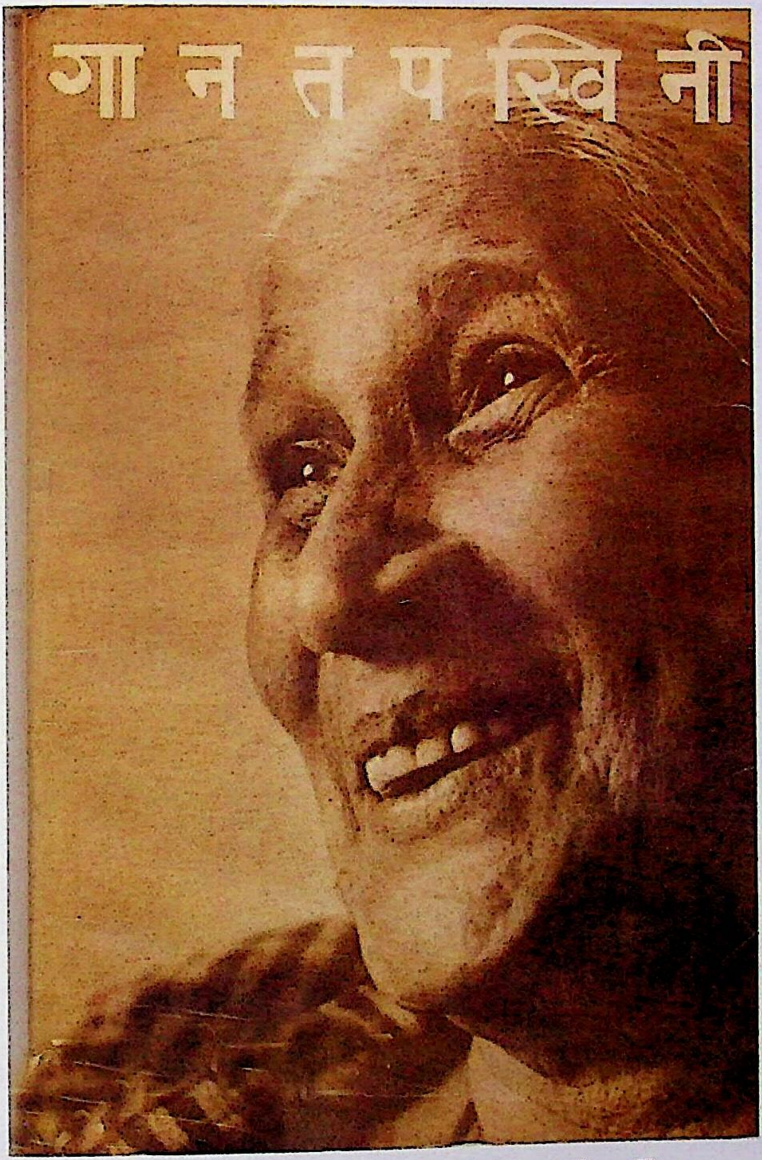


खाप्रूमाम की शिष्या गान तपस्विनी मोगूबाई कुर्डीकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

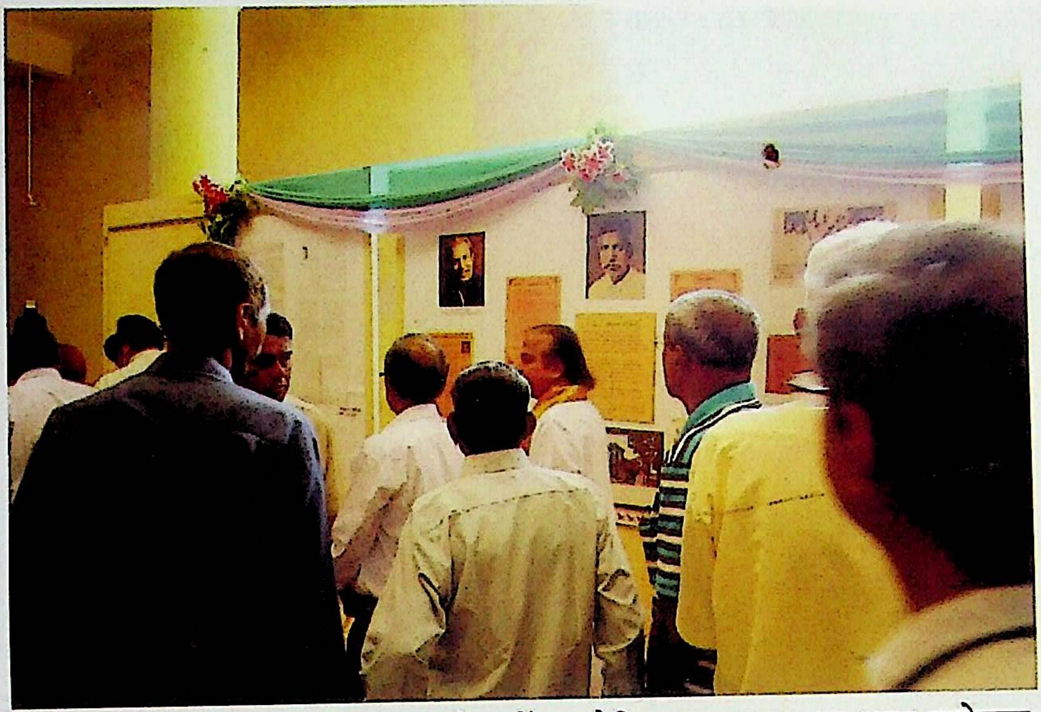

2 अक्टूबर 2011 में रविन्द्रभवन गोवा में आयोजित खाप्रूमाम ताल-वाद्य-महोत्सव में प्रदर्शनी में रक्खा खाप्रूमाम का कोट और टोपी -साभार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

2 अक्टूबर 2011 में रविन्द्रभवन, गोवा में आयोजित खाप्रूमाम ताल-वाद्य-महोत्सव का दीप प्रज्वलन करते ताल योगी श्री सुरेश तळवलकर और अन्य -साभार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

20-21 फरवरी ताल-महोत्सव में उपस्थित मंच पर पर्वतकर परिवार की तीसरी पीढ़ी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

20-21 फरवरी ताल-महोत्सव के मंच पर लयभास्कर खाप्रूमाम का चित्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्व.पंडित किशनमहाराज जी को खाप्रूमाम की फोटो भेंट की गई
वनमाला पर्वतकर द्वारा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## स्व. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकरजी के हस्तलिखित तबले के बोल

तिलवाड़ा ॥ मात्रा १६

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
धा तिरकिट धीं धीं धा धा तीं तीं
\+ ० +
ता तिरकिट धीं धीं धा धा धीं धीं
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
० +

आड़ा चौताल मात्रा १४

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
धीं तिरकिट | धीं ना | तू ना | क ता | तिरकिट
\+ + ० + ०
धीं | ना धा | धीं ना
१० | ११ १२ | १३ १४
\+ ०

(+) ९ ॥

धी ना धी धी ना ती ना धी ना धी धी तिरकिट

झुमरा मात्रा

धीं न धा तिरकिट धीं धीं धागे तिरकिट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## स्व. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकरजी के हस्तलिखित तबले के बोल

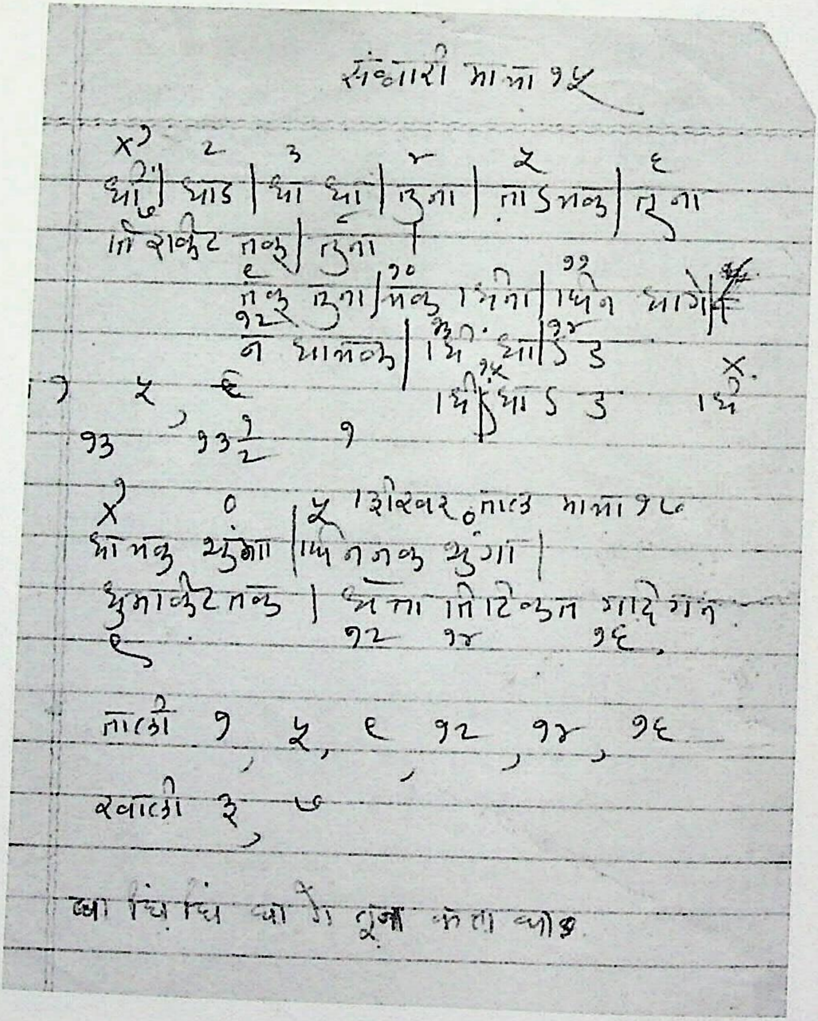

सवारी मात्रा १५

x 2 3 ४ ५ ६

धीं धाऽ | धा धा | तुना | ताऽधक | तूना

ति राकिट तक | तुना |

तक तुना | धक | धीना | धीन धागे

न धातक | धीं धाऽ ऽ

| धीं धा ऽ ऽ | धीं

१, ५, ६,

१३, १३½, १

x 0 ५ | ईश्वर ताल मात्रा १८

धा तक थुंगा | धि नतक थुंगा |

धुमकिट तक | धेता तिटकत गदिगन

ताली १, ५, ९, १२, १४, १६

खाली ३, ८

धा धिं धिं धा धा तूना कत्ता धा४.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## स्व. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकरजी के हस्तलिखित तबले के बोल

अधताल — कुरवडा

धा — धा गेन धागे तुना |
धागेन | धागे तुना किडनग | तातिर किडताक |
तिरकिड तकुना तिरकिड | धाति धा
धाति धा
धाति | धा

त्रिताल — कायदा

धाधा तिरकिट धा धा तुना
तिरकिट धा धा तुना
तिरकिट धाति धाधा तुना
तिरकिट धाति धाति धाधा तुना
ताता तिरकिट ताता तुना
तिरकिट धा धा तुना
तिरकिट धाति धाधा तुना
तिरकिट धाति धाति धाधा तुना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## स्व. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकरजी के हस्तलिखित तबले के बोल

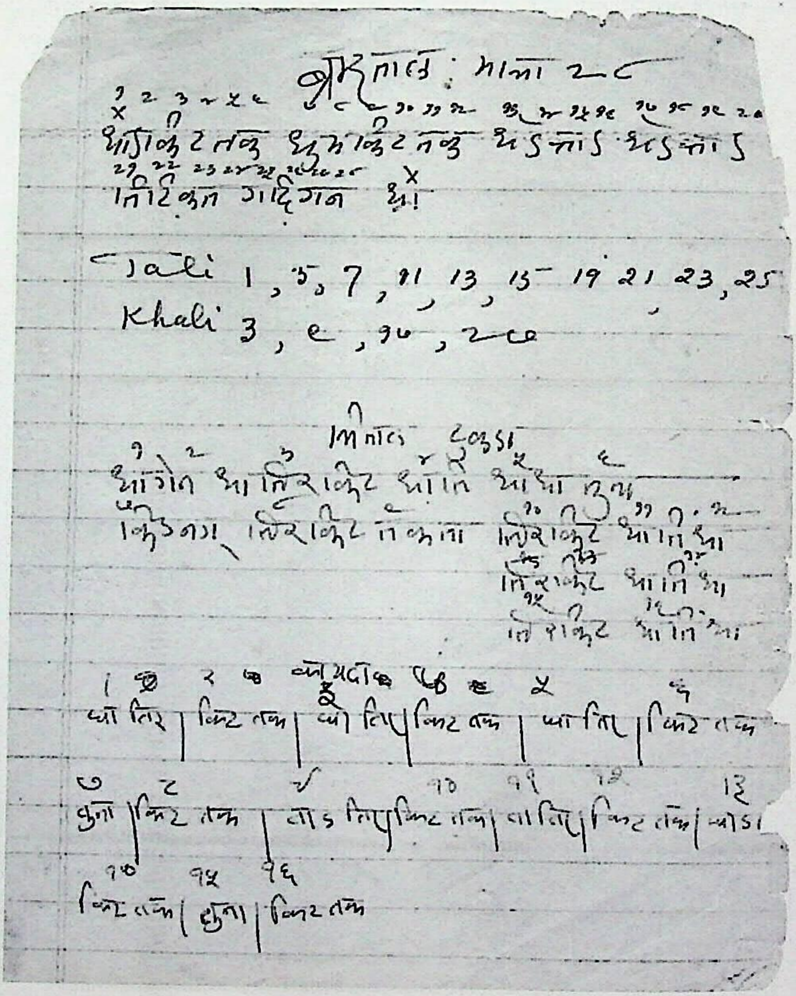


Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

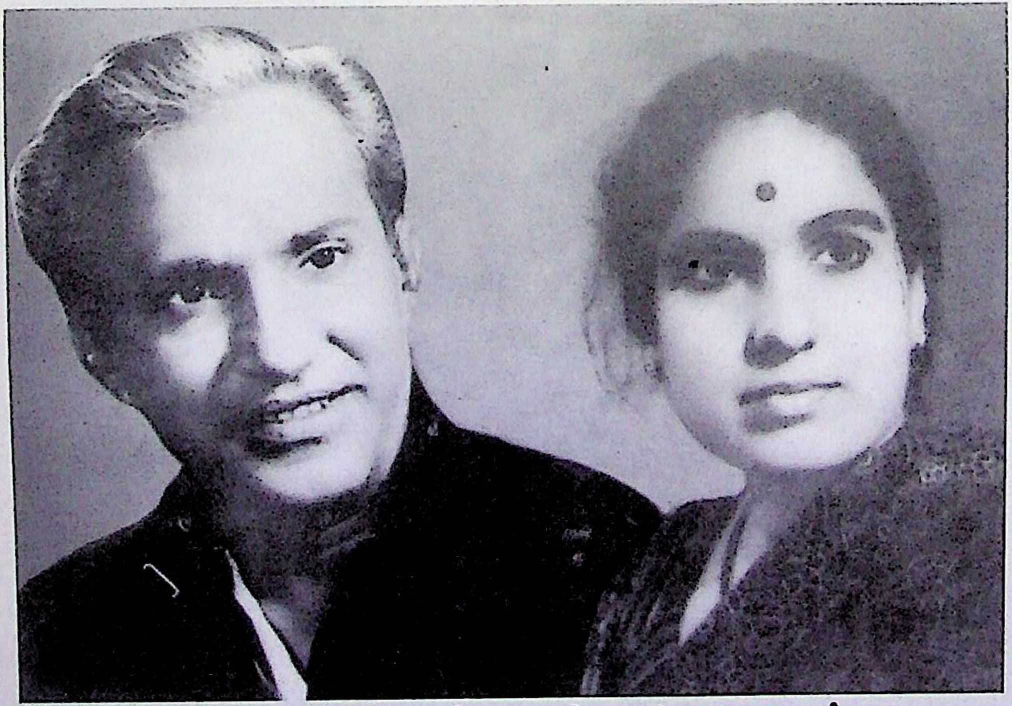

स्व. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर पत्नी स्व. कुंदबाला रा. पर्वतकर

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

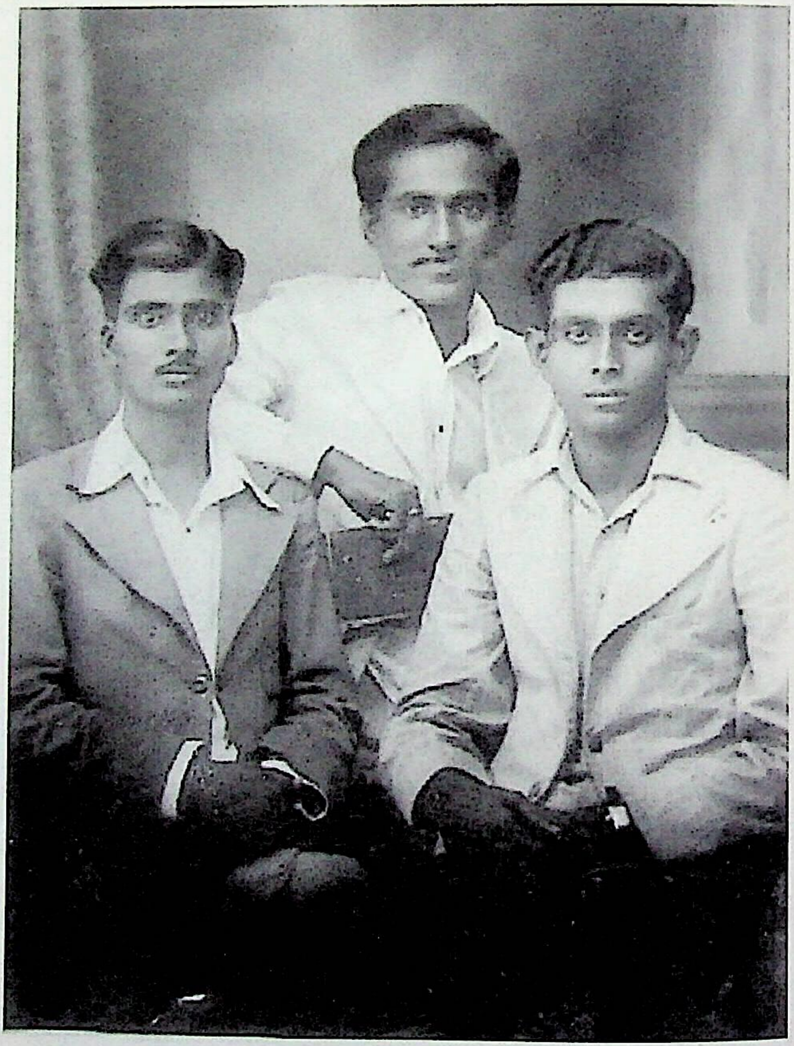

स्व. रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकरजी की युवावस्था की फोटो
( बीच में )

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रुईया हॉस्टल की छत पर झंडा फहराते पर्वतकर जी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

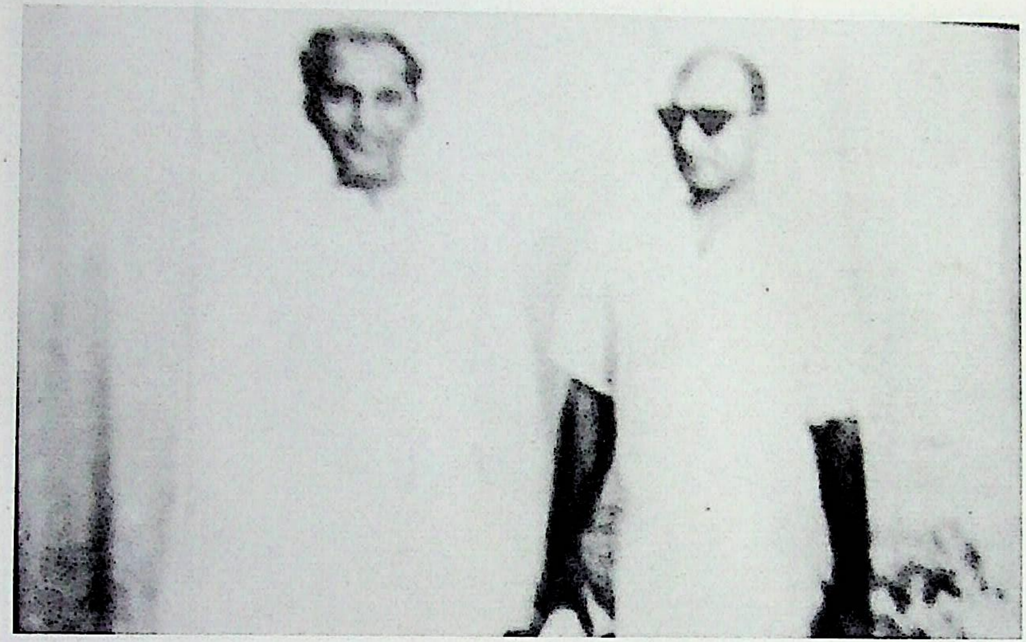

हैदराबाद कॉलोनी के मकान में पं. बलवंत राय भट्ट 'भावरंग' अनन्य मित्र पर्वतकर जी के साथ, जिनसे मिलने पर औपचारिक नमस्कार के स्थान पर 'तिऽट कऽत गऽन धाऽऽ' बोलकर ही अभिवादन होता था

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री पर्वतकरजी के तबला वादन के साथ हारमोनियम पर
लहरा बजाते पं. बलंवतराय भट्ट जी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काबुल यात्रा में दरबार में पं. ओमकार नाथ जी ठाकुर बीच में, बायें टोपी पहने पं. बलवंतराय जी भट्ट, दाहिने तंबूरा वादक के पीछे पर्वतकर जी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काबुल ( अफगानिस्तान ) की यात्रा में दरबार में बीच में पं. ओमकारनाथजी ठाकुर
नीचे दाहिने काला कोट पहने श्री रामकृष्ण पर्वतकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुणे के भरत गायन समाज में पिताजी की फोटो का अनावरण
सुश्री हीराबाई बडौदेकर जी के हस्ते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

स्व. पर्वतकरजी द्वारा बनाया गया (व्यक्ति को सामने बैठाकर पेन्सिल स्केच जिसे बंबई के हळदणकर जी द्वारा प्रथम पुरस्कार प्राप्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## पेन्सिल स्केच्च

लयभास्कर खाप्रूमाम लक्ष्मणराव पर्वतकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

स्व. बाबूराव जगताप प्रिंसिपल शिवाजी मराठा हायस्कूल,
पुणे तथा पुणे के भूतपूर्व मेयर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

श्री सुभाष चन्द्र बोस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

श्री सुभाष चन्द्र बोस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

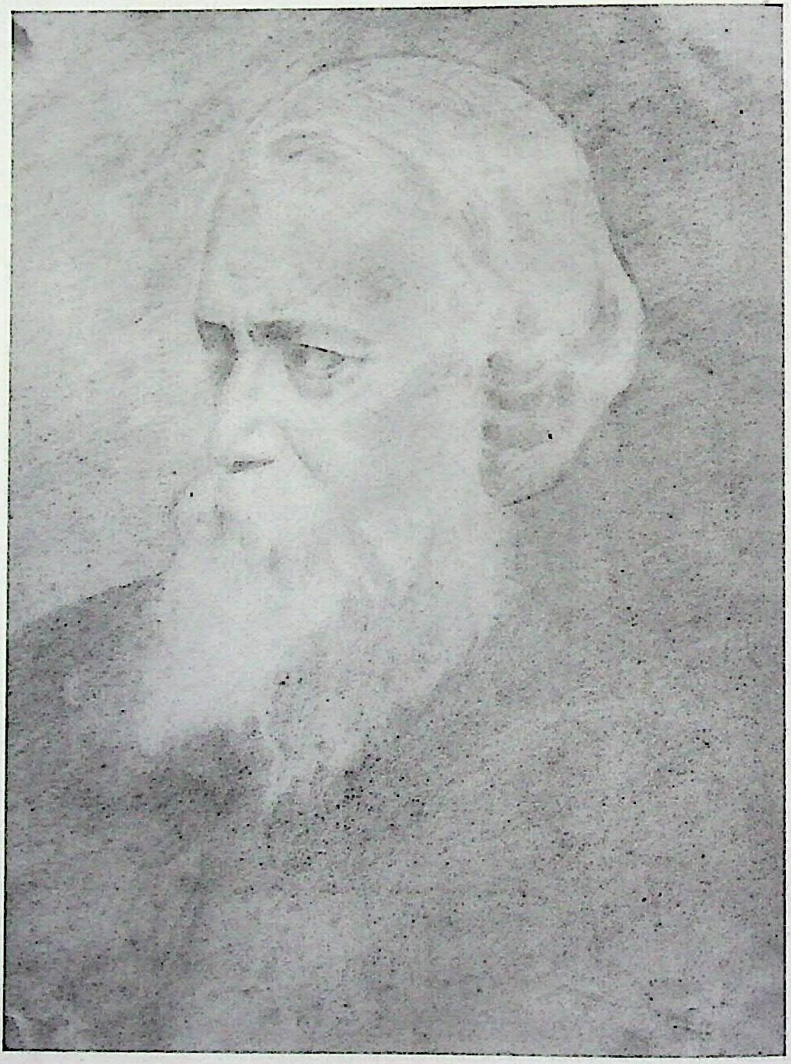

श्री रविन्द्रनाथ टैगोर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

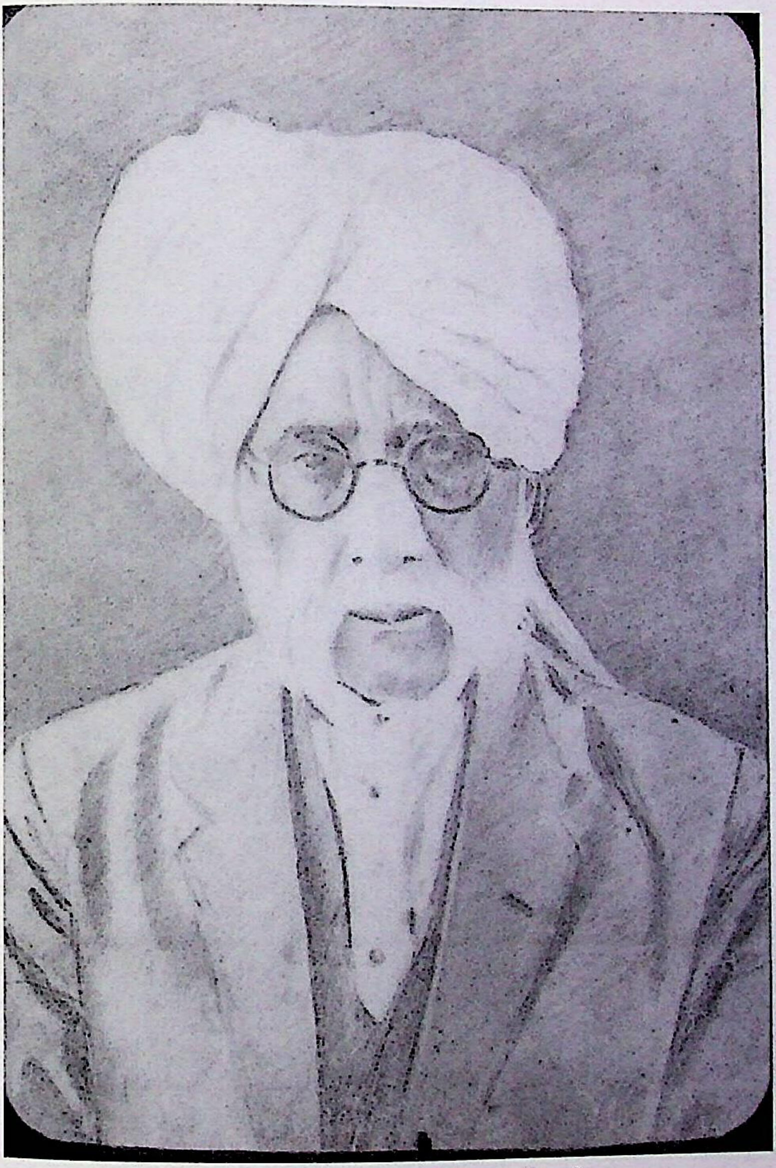

उ. गान सम्राट अल्लादिया खाँ साहेब
इन्हीं के हाथ से खाप्रूमाम को लयभास्कर की उपाधि दी गई है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

बाल गंधर्व

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

पं. भास्कर बुवा बखले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

पं. विष्णु नारायण भातखंडे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## पेन्सिल स्केच

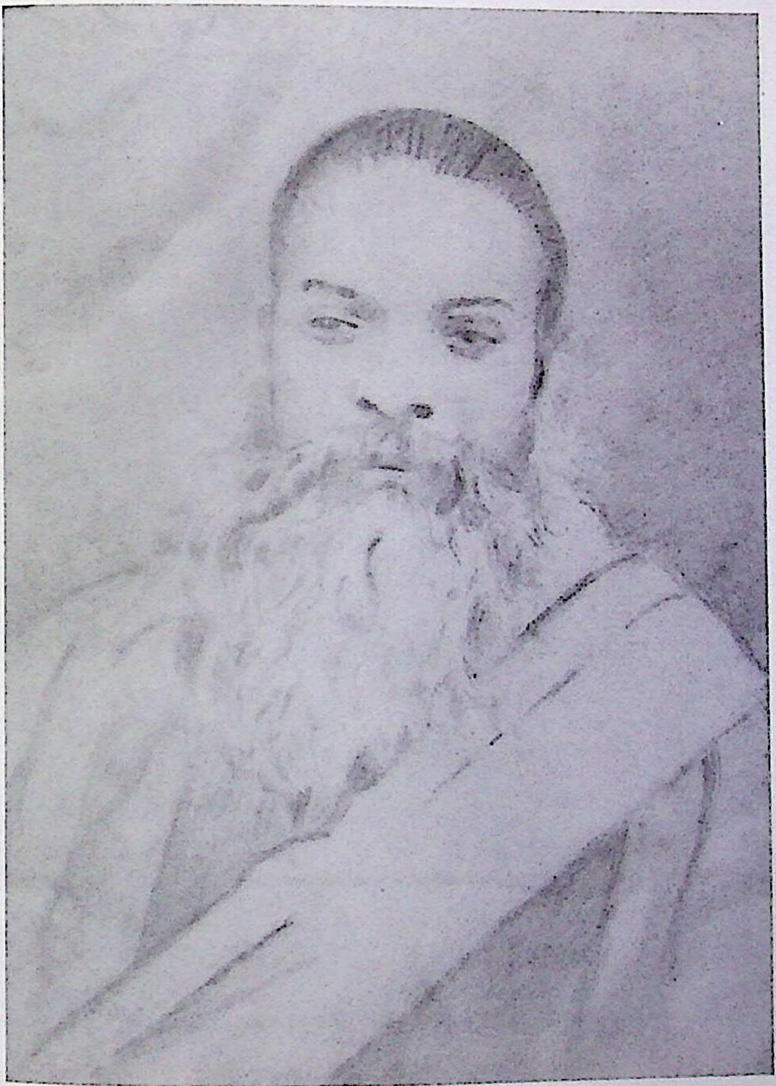

पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## पेन्सिल स्केच

स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

स्व. कुंदबाला रा. पर्वतकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

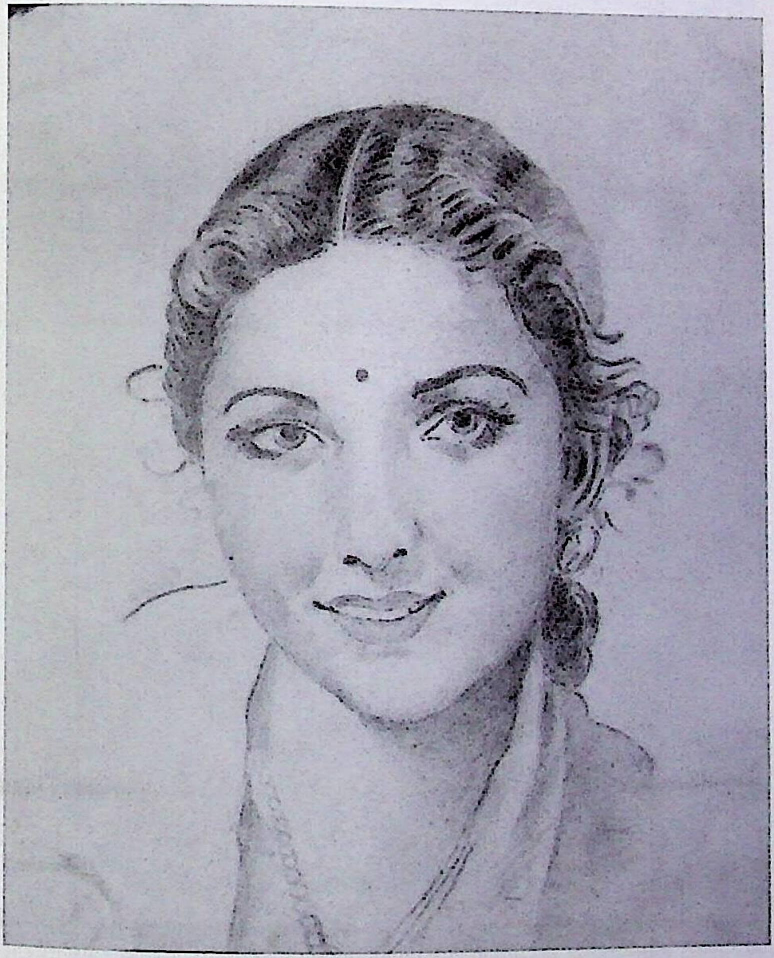

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

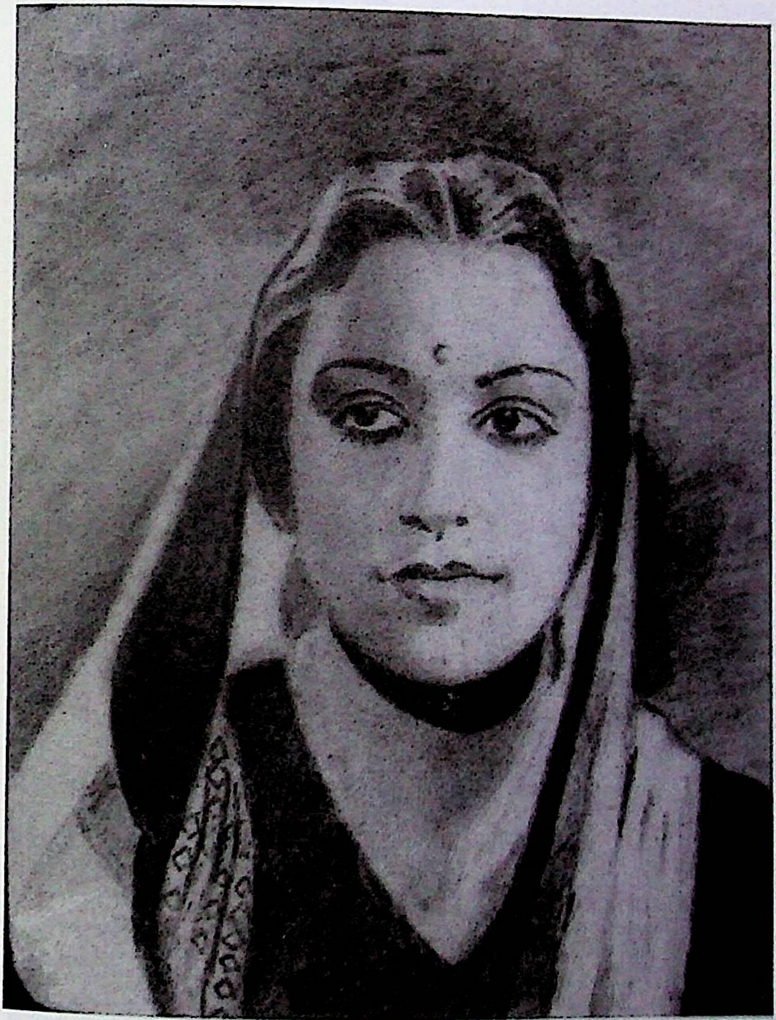

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

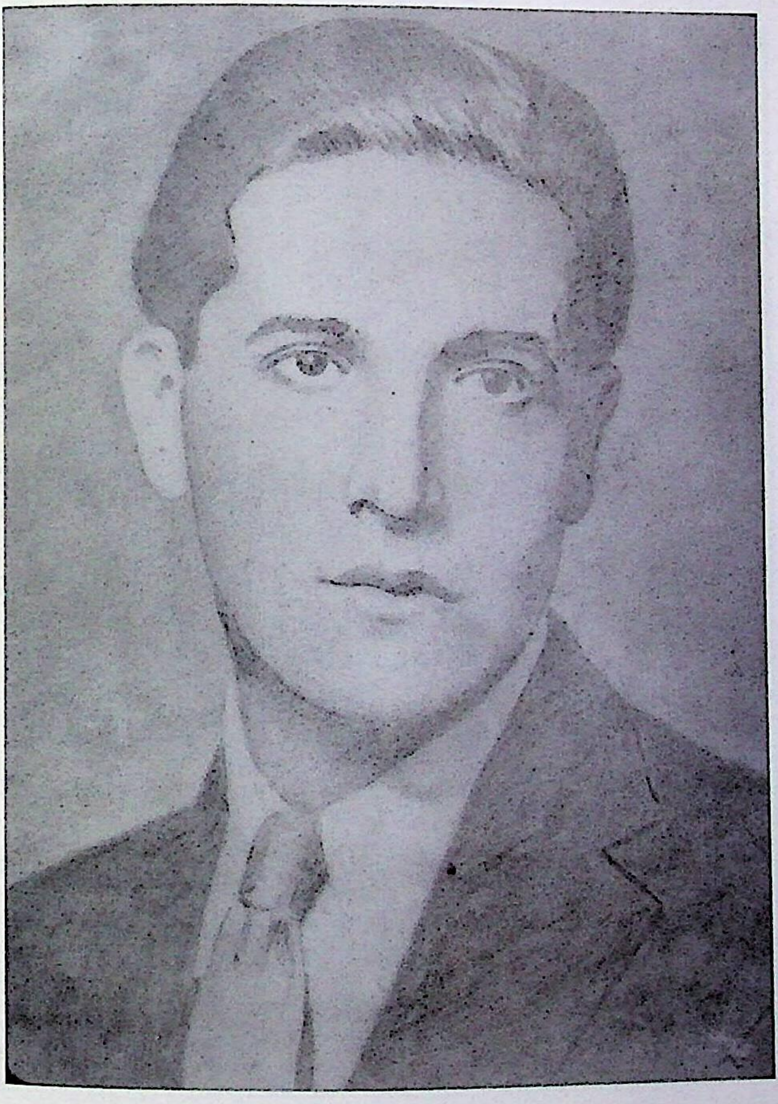

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

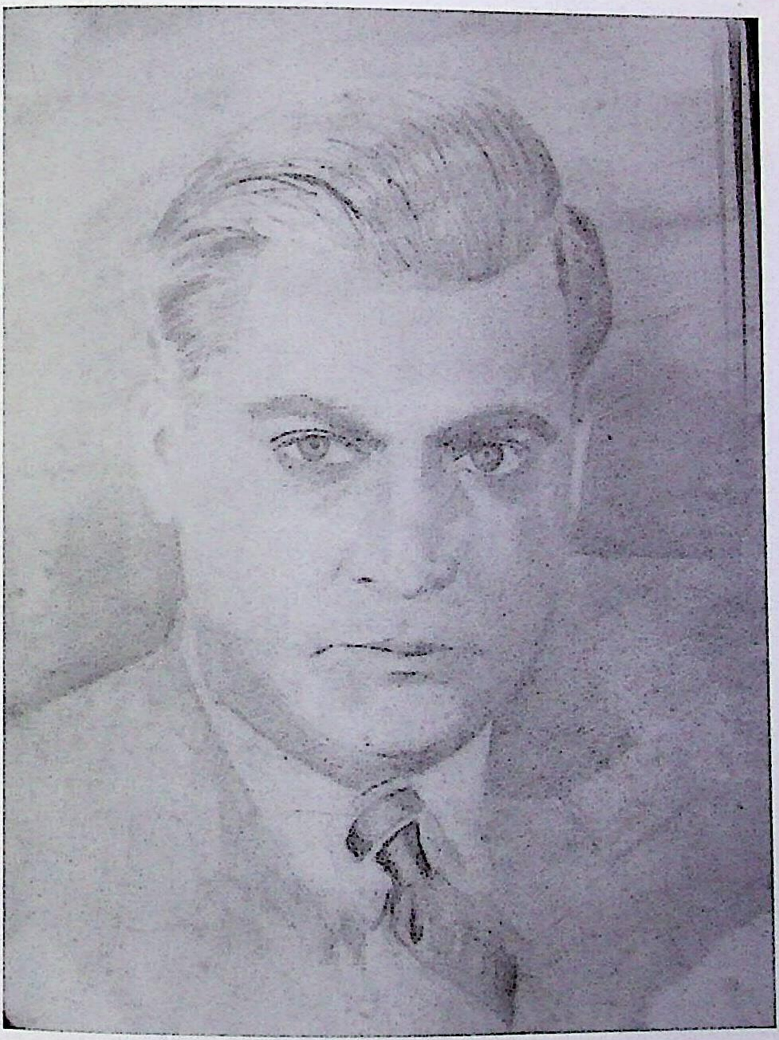

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## पेन्सिल स्केच

पर्वतकर जी के शिष्य वसंन्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

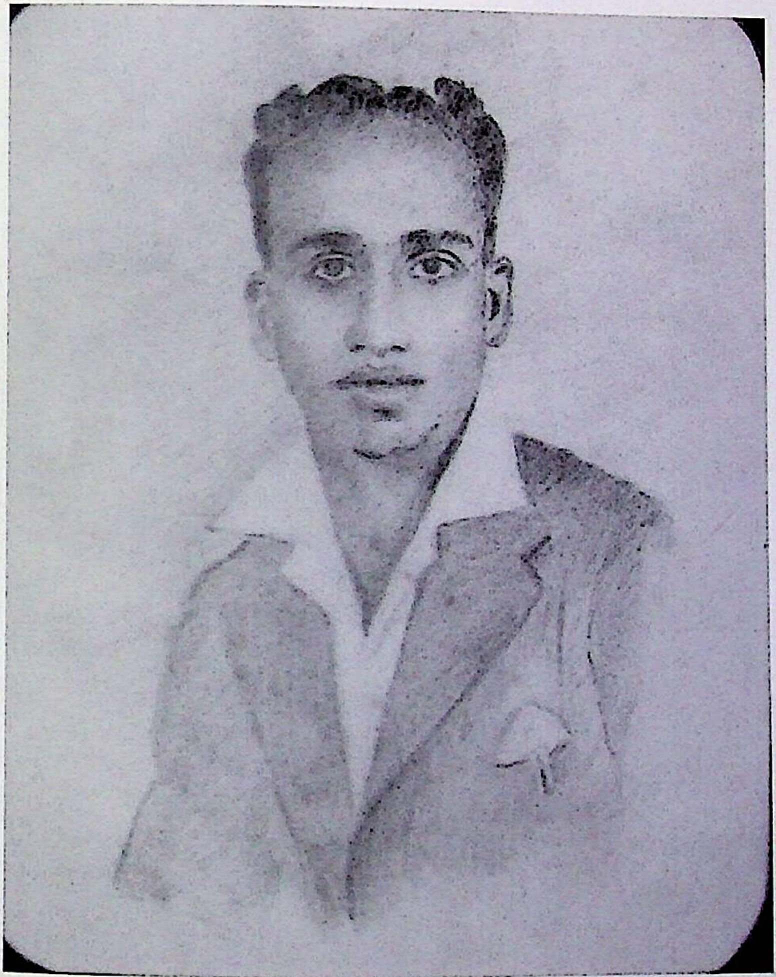

अनंत शेळडेकर, पर्वतकर जी के शिष्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# पेन्सिल स्केच

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# डॉ. वनमाला पर्वतकर

* गोवा के प्रसिद्ध संगीत घराने में जन्म ।
* पितामह लयभास्कर श्री लक्ष्मणराव पर्वतकर उर्फ 'खाप्रूमाम', पिता रामकृष्ण लक्ष्मणराव पर्वतकर से स्वर और लय संस्कार रूप में प्राप्त ।
* काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में शिक्षा दीक्षा ।
* स्व. डॉ. एम्. आर्. गौतम, स्व. पद्मश्री पं. बलवंत राय भट्ट 'भावरंग', स्व. एम्. ठकार, स्व. श्री कनक राय त्रिवेदी से संगीत की शिक्षा ।
* पंडित शिवकुमार शास्त्री से शास्त्रीय संगीत के साथ बनारस की होली, चैती, कजली का विशेष अध्ययन ।
* आर्य महिला डिग्री कालेज तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मंच कला संकाय में 36 वर्ष शिक्षण कार्य का अनुभव ।
* दो वर्ष विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य ।
* देश-विदेश में अनेक कार्यक्रम ।
* बनारस में अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मान ।
* गोमंतक समाज, मुंबई द्वारा 'गौरव सम्मान' ।
* सुरसिंगार संसद्, मुंबई 'सुरमणि' उपाधि ।
* काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष में विशेष पुरा छात्र पुरस्कार प्राप्त ।
* बाबा भगवान् राम संकीर्तन, वैष्णवस्तोत्र, शैवस्तोत्र, होली-चैती एवं प्रसाद निराला के गीतों की रिकार्डिंग ।
* मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्राप्त फेलोशिप पर किये शोध को 'संगीतमय बनारस' के नाम से पुस्तक रूप में प्रकाशन ।
* उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा अकादमी पुरस्कार ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi